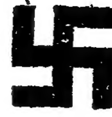
आ बुक अमदावाद घीकांटा जेशंगभाइनी वाडीमां आवेला
जैन एडवोकेट प्रीन्टींग प्रेसमां वाडीलाल बापुलाल शाहे छापी

ॐ अर्हँ नमः

॥सर्वसमीहितदायकाय नवपदमयश्रीसिद्धचक्रयन्त्राधिराजाय नमः॥

॥ सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-सूरिचक्रचक्रवर्ति-शासनसम्राट्-
तपागच्छाधिपति-जगद्गुरु-भट्टारकाचार्य
श्रीमद्विजयनेमिसूरिभगवद्भ्यो नमः ॥

नवपदमय श्रीसिद्धचक्राराधन-विधि विगेरे संग्रह.

ध्यात्वा श्रीस्तम्भतीर्थेशं, पार्श्वं नवपदीं तथा ॥
नेमिसूरिं गुरुं नुत्वा, वक्ष्ये विध्यादिसङ्ग्रहम् ॥१॥

अरिहं सिद्धायरिया, उज्झाया साहुणो य सम्मत्तं।
नाणं चरणं च तवो, इय पयनवगं परमतत्तं ॥ १ ॥

श्री तीर्थंकरदेवप्रणीत वीतरागशासनमां श्री अरिहंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय, साधु, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप आ नवपदो परमतत्त्वरूप छे १ (कारण)

एएहिं नवपएहिं, रहियं अन्नं न होइ परमत्थं ।
एएसुच्चिय जिणसा-सणस्स सव्वस्स अवयारो ॥२॥
एएसु नवपएसु, अवअरिअं सासणस्स सव्वस्स ।
ता एआइं पयाइं, आराहह परमभत्तीए ॥ ३ ॥
जे किर सिद्धा सिज्झंति,जे अ,जे आवि सिज्झइस्संति।
ते सव्वे विहु नवपय-झाणेणं चेव निब्भंतं ॥ ४ ॥
एयं च परमतत्तं, परमरहस्सं च परममंतं च ।
परमत्थं परमपयं, पन्नत्तं परमपुरिसेहिं ॥ ५ ॥

आ नवपदोथी रहित (शीवायनुं) वीजुं कोइ परमार्थ नथी, कारण आ नवपदोमां ज समस्त श्रीजिनशासननो (अथवा शासनना सर्वस्वनो) समावेश छे. २. (उपदेश)

आ नवपदोमां श्रीवीतरागशासनना सर्वस्वनो समावेश थयेलो छे तें माटे (हे भव्य जीवो !) उत्कृष्ट (वहुमानपूर्वक) भक्तिथी आ नवपदोनी आराधना करो. ३. (नवपदाराधन प्रभाव).

पूर्वकाले जेओ सिद्धिपद पाम्या, वर्तमानकाले जेओ सिद्धिपद पामे छे (महाविदेहक्षेत्रादिमां), अने भविष्यकाले जेओ सिद्धिपद पामशे तेओ सर्व पण निश्चयथी आ नवपद(वा नवपद पैकीनुं एकादिपद) ना ध्याने करीने ज जाणवुं ४. (नवपदमाहात्म्य सार).

श्री तीर्थंकर सर्वज्ञ गणधर पूर्वधर युगप्रधानादि महापुरुषोए

तत्तो तिजयपसिद्धं, अट्ठमहासिद्धिदायगं सुद्धं ।
सिरिसिद्धचक्कमेयं, आराहह परमभत्तीए ॥ ६ ॥

आ श्री सिद्धचक्रयंत्र परमतत्त्वरूप, परमरहस्यरूप, परम मंत्ररूप परमार्थस्वरूप अने परमपद स्वरूप वर्णव्युं छे (दशमा विद्याप्रवादपूर्व मांथी ऊद्धर्युं छे). ५. (नवपदाराधनना फलरूप माहात्म्य तथा उपदेशसार).

ते माटे (विवेकि भव्य जीवो !) 'त्रण जगत्मां प्रसिद्ध' आठ महासिद्धिओने आपनार विशुद्ध आ श्री सिद्धचक्रयंत्रनुं उत्कृष्ट (बहुमान युक्त) भक्तिथी 'आराधना करो !' ६.

अनुष्ठानमां विधिनुं माहात्म्य.

आसन्नसिद्धियाणं, विहिपरिणामो य होइ सयकालं ।
विहिचाओ अविहिभत्ती, अभव्वजिअदूरभव्वाणं ॥१॥

अर्थ—थोडाकालमां मुक्तिगामि जीवोने विधिनो परिणाम सदाकाल (हमेशां) होय छे, अभव्य अने दीर्घ संसार परिभ्रमणकरनार दूर भव्यजीवोने विधिनो त्याग अने अविधि प्रत्ये भक्ति रहे छे. १.

धन्नाणं विहिजोगो, विहिपक्खाराहगा सया धन्ना ।
विहिबहुमाणी धन्ना, विहिपक्ख अदूसगा धन्ना ॥ २॥

विधिनो योग (आराधननी प्राप्ति) धन्यपुरुषोने होय छे. विधिपक्षनुं आराधन करनार सदाकाल धन्य पुरुषो छे. विधिनुं बहुमान करनार धन्यपुरुषो छे अने विधिपक्षनुं दूषण नाहि देनार पण धन्य छे. २.

विधिसहित उत्तमयोगनी आराधन सामग्री मळवा पूर्वक ते सफळ करवा आराधनामां उद्यमवंत थवुं ते अपूर्व भाग्योदयथी पुण्यवान् जीवोनेज होय छे; आ आराधना मोक्षप्राप्तिना साधनरूप आलंबनना अवलंबनथीज थाय छे. अविच्छिन्न प्रभावशालि त्रिकालाबाधित श्री वीतरागशासनमां शाश्वत अव्याबाध मुक्ति सुखने आपनार आराधना करवा लायक असंख्य योगो पैकी श्रीसिद्धचक्र महाराज जेवो परम योग एक पण नथी, कह्युं छे के—

आलंबणाणि जइवि हु, बहुप्पयाराणि संति सत्थेसु ।
तहवि हु नवपयज्झाणं, सुपहाणं बिंति जगगुरुणो॥१॥

अर्थ—जोके शास्त्रोमां घणा प्रकारना आलंबनो (मोक्ष साधनो) छे. तो पण निश्चयथी जगद्गुरु श्री तीर्थंकर

भगवंतो श्री नवपद ध्यानने सर्वथी मुख्य (आलंबन) फरमावे छे.

श्री सिद्धचक्र भगवान्नी आराधनामां तत्पर थयेल भव्यजीवोने जेम जेम ते आराधननो दिवस नजीक आवतो जाय छे तेम तेम उल्लास परिणाम तीव्र थतो जाय छे, भाग्यवान् जीवना हृदयमां एज विचार उद्भवे छे के चीकणा कर्म खपाववाना परम साधनरूप अनन्त पुण्योदये आ श्री सिद्धचक्र महाराजनी आराधना प्राप्त थई छे. जगत्मां तेवुं कोई ध्येय [ध्यान करवा लायक] बाकी नथी के जे आ श्री सिद्धचक्रजी भगवान्ना ध्यानमां न आवतुं होय, अर्थात् सर्वध्येयनो आना ध्यानमां समावेश थयेल छे, कारण आ श्रीसिद्धचक्रभगवंतनी आराधनामां धर्मप्रासादना मुख्य अंगरूप पायो, भींतो, पाटडातुल्य आराध्य त्रणे तत्त्वोनो समावेश थाय छे.

"तन्नास्ति जगति ध्येय-मन्तर्भवति नात्र यत्।
सिद्धचक्रे सन्निविष्टं यस्मात्तत्त्वत्रयं परम् ॥१॥"

सर्व क्रियाओमां तेनी सफलता माटे राखवुं जोईतुं सावधानपणुं ?

सद्गुरुना उपदेशमां [आज्ञानुसार] वर्त्तनार, विधि प्रत्ये बहुमान राखनार, जे क्रिया चालती होय ते क्रियामां चित्तनी एकाग्रता करनार, लघु[हलु]कर्मी भव्य जीवनी समजणपूर्वक नियाणा रहित थती शुभक्रियाओ अवश्य फल आपनार होय छे, अने साचे साचुं मुक्तिनुं कारण पण तेज छे.

दरेक क्रिया करतां अनुष्ठानोनुं स्वरूप जाणवा लायक छे, तेमांथी हेय [त्याज्य] अनुष्ठानो त्याग करवा, अने उपादेय (आदरणीय) अनुष्ठानो आदर करवा खास प्रयत्न करवो.

रोगग्रस्त अने आरोग्यवान् जीवना भेदथी जेम भोजनादि क्रियाना फलमां भेद पडे छे. एकने जे भोजन रोग वृद्धि करनार होय छे ज्यारे बीजाने तेज भोजन बल पोषण करनार होय छे, तेम क्रिया करनारनी परिणतिना भेदथी अनुष्ठानो पण विभिन्न फल आपनार थाय छे.

१ धार्मिक क्रिया(अनुष्ठान)करतां आ भव संबंधी द्रव्य, स्त्री, पुत्र, वैभव, भोग, यश, कीर्त्ति आदिनी अभिलाषा करवाथी विषानुष्ठान कहेवाय छे, के जे स्थावर जंगम झेरनी जेम शुभ अन्तःकरणने तत्काल मारनार थाय छे.

२ आ भवनी अपेक्षा न होय पण परभव संबंधी देव ऋद्धि चक्रवर्त्ति आदि वैभव विगेरे अभिलाषा करवाथी गरानुष्ठान थाय छे, के जे संयोग ज झेर कालान्तरे झेरविकारना परिणामनी जेम भवान्तरमां पुण्यक्षय करनार थाय छे.

३ कोईपण जातना फलनी अपेक्षा न होय परन्तु सन्निपातमां मुझायेल अगर संमूर्च्छिम जीवनी प्रवृत्तिनी जेम शून्यचित्ते क्रिया करवाथी अननुष्ठान थाय छे. आ अनुष्ठानमां कायक्लेशादि हेतुथी अकामनिर्जरा थायछे पण मुक्तिनुं विशिष्ट साधन सकामनिर्जरा तो उपयोगप्रवृत्तिना अभावे थती नथी.

४ उत्तम अनुष्ठानना रागथी क्रिया करवाथी तद्धेतु अनुष्ठान थाय छे.

५.श्री वीतरागदेव जिनेश्वर भगवंते बतावेल मार्ग प्रत्ये उल्लास पामती तीव्रश्रद्धाथी असंख्य प्रदेश वीर्य स्फूर्ति साथे उछळता आनन्दथी शुद्धविधि साचववाथी अमृतानुष्ठान थाय छे.

अमृतानुष्ठान [अमृतक्रिया] ना लक्षणो—जे क्रिया करता होय तेमांज शुद्ध एकाग्र उपयोग होय, आडी अवळी दृष्टि न होय, तथा मननी व्यग्रतारूप क्षेप दोष न होय ते 'तद्गतचित्त'. १.जे क्रियानो शास्त्रमां जे काल कह्यो होय ते समयेज करवा योग्य शुभ क्रिया करता होय ते 'समयविधान'२.चित्तनो उल्लास अने परिणामधारानी पुष्टि होय ते 'भाववृद्धि' ३. जेम नारकी जीव नरकथी त्रास पामतो होय, केदी केदथी भयवाळो होय छे तेम संसारनुं जन्म-जरा-मरणादि दुःख स्वरूप जाणी संसारथी भयवाळो होय ते 'भवभय' ४. जे क्रिया करतो होय ते क्रिया मुक्तिनुं परम साधन छे पूर्वे कोई वखत मळेली नथी तेम विचारतो आश्चर्यवन्त थाय ते 'विस्मय'

५. आवुं मुक्तिनुं परम कारण म्हने प्राप्त थयुं तेम हर्ष थवाथी रुंवे रुंवा उंचा थाय ते अथवा आ क्रिया करता संसारथी त्रासेल होवाथी भयथी रुंवाटा उंचा थाय ते 'पुलक', ६. अपूर्वमुक्तिदाता क्रिया प्राप्त थयेल होवाथी जन्मान्धपुरुषने पुण्योदये नेत्रप्राप्तिथी अथवा सुभटने रणसंग्राममां शत्रु जीतवाथी जे आनन्द थाय तेनाथी पण अधिक तात्त्विक आत्मसुख उत्पन्न थाय ते 'प्रमोद' ७. आ सर्व अमृत क्रियानां मुख्य लक्षणो छे. आ लक्षणोथी अमृतक्रियानो अनुभव थाय छे. आ अमृतक्रिया आभव अने परभवमां अवश्य फल आपे छे. अमृतनो बिन्दु मळ्यो होय त्यां आरोग्यता माटे बीजा औषधनी जरुर होई शके नहि तेम अमृतक्रिया एकवार पण मळी होय तो बीजा कारणो शिवाय पण मुक्ति पामवामां कोई बाधक आवतुं नथी.

"अमृतनो लेश लह्यो इकवार,
बीजुंरे औषध करवुं नहि पडेजी ।

अमृतक्रिया तिम लहि एकवार,

बीजारे साधन विण शिव नवी अडेजी ॥१॥"

टुंकाणमां सारी रीते शास्त्रार्थनुं चिन्तवन, क्रियाने विषे मननी एकाग्रता, तथा कालादि साधनोमां अविपरीतपणुं ते अमृतानुष्ठाननुं लक्षण छे. अमृतानुष्ठाननो आनन्द भव्यजीवनना हृदयमां समातो नथी.

क्रियानो अंगीकार, क्रिया करवामां प्रीति, धर्मने विषे व्याघाताभाव, ज्ञानादि संपत्तिनी प्राप्ति, वास्तविक स्वरूपनी जिज्ञासा, वस्तु धर्मना जाणकार गीतार्थोनी उपासना, ए सदनुष्ठानना लक्षणो छे.

आ पांचे अनुष्ठानोमां प्रथमना त्रण अनुष्ठानो त्याज्य छे कारण तेमां क्रिया दूषित थाय छे, अने छेवटना बे अनुष्ठानो आदरणीय छे. वळी क्रियाना दग्ध १ शून्य २ अविधि ३ अतिप्रवृत्ति ४ दोषो पण वर्जवा. क्रिया साथे भावनी खास प्रधानता राखवी, कारण एकली क्रियाथी थएल कर्मक्षय देडकाना चूर्ण तुल्य कह्यो छे, अने भावपूर्वक क्रियाथी थएल कर्म-

क्षय देडकानी भस्म तुल्य कह्यो छे, देडकाना चूर्णने पाणीनो संयोग मळता जेटला चूर्णना कणीया छे तेटला नवा देडका उत्पन्न थाय छे, तेम अज्ञानताने योगे निमित्त मळता पाछो क्लिष्ट कर्मबन्ध थाय छे. अने देडकानी राख थइ होय तो ते राखमांथी गमे ते संयोगे पण पुनः देडकानी उत्पत्ति थती नथी, तेम पुनः कर्मबन्ध पडतो नथी.

क्रिया कूवो खोदवा तुल्य अने भाव शिरा (सेर) पाणी तुल्य छे, कूवो खोद्या शिवाय शिरा (सेर) प्रकटती नथी अने सेर शिवाय अखुट पाणी रहेतुं नथी. माटे बेउनी खास आवश्यकता छे.

अज्ञानी जीव वर्ष कोटिओमां जेटलुं कर्म खपावे तेटलुं कर्म ज्ञानी श्वासोच्छ्वासमां खपावे छे, तेमां पण भावपूर्वक क्रियानी मुख्यता बतावी छे,

आ दिवसोमां जेम बने तेम आश्रव-कषायनो त्याग विशेष करवो, आरंभोनो त्याग करवो कराववो, बनी शके तेटली अमारि प्रवर्त्तावबी. देवपूजनना कार्य

शिवाय वापरवाना कार्यमां सचित्त पाणीनो पण त्याग ज राखवो.

आ दिवसोमां विशेषे करी जुठुं बोलवुं नहि. कोइने कठोर वचन कहेवुं नहि, भाषा उपर काबु राखवो, हितकारी प्रिय लागे तेवुं सत्य अने प्रमाणोपेत ज बोलवुं.

पहेला अने पाछळना दिवसो साथे खास शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळवुं, पोताने वापरवाना वस्त्रो अने दागीना विगेरेनुं प्रमाण करवुं.

आ दिवसो माटे खास अमुक प्रमाण दिशानो नियम करी लेवो.

जता आवता ईर्यासमितिनो खास उपयोग राखवो.

उपाश्रय देहरासरमां प्रवेश करतां 'नीसीही' त्रण बोलवां, पण ते मात्र बोलवा पुरतुं नहि पण तेनो अर्थ विचारी खास उपयोगमां रहेवुं.

कोइ पण चीज लेता मुकता कटासणुं–संथारीयुं पाथरता विगेरेमां खास जयणा करवी पुंजवा प्रमार्जवानो उपयोग राखवो.

थुंक--बळखो विगेरे जेम तेम नांखी न देवा. जग्या जोइ परठववा, तेना उपर धूळ या रक्षा नांखवी. मात्रुं, स्थंडिल विगेरेमां पण लीलफूल, कीडीना नगरा, वनस्पति विगेरे तमाम जोइने जयणाथी वर्त्तवुं.

आर्त्त रौद्र ध्यान, अशुभलेश्या, उपाधि संकल्पविकल्पो वर्जवां.

कोइनी साथे कलह, क्रोध विगेरे करवो नही तेमज तेनी उदीरणा पण करवी नहि.

प्रतिक्रमण, पडिलेहण, देववन्दन, प्रभुपूजन, विगेरे क्रिया करतां तथा गुणणुं गणवुं, आहार वापरवो, मार्गे जता आवता, स्थंडिल मात्रुं करवा जतां विगेरे प्रसंगे बोलवुं नहि.

आयंबिल करती वखते नवकार गणी आहार स्वादिष्ट के विरस होय तो पण आहारनी वस्तु उपर के आहार बनावनार विगेरे उपर राग द्वेष करवो नहि, वापरतां 'सुरसुर' 'चबचब' शब्द थाय नहि. तेम बहु उतावळ के बहु धीमुं नहि; दांणो छांटो पडे नहि

तेवी रीते उपयोग पूर्वक आहार करवो, तेमां द्रव्योनी गणतरी राखवी, बनी शके तो चौद नियमो धारवा उपयोग राखवो.

दरेक सूत्रोनुं उच्चारण करतां तेमां रहेला लघु, गुरु, संयुक्त, असंयुक्त वर्णोनुं लक्ष्य राखवुं पद, संपदा (अर्थाधिकार युक्त विश्रामस्थानो) नो उपयोग राखवो, अर्थ उपर खास ध्यान राखवुं. न्यूनाधिक अक्षरो न करवा, कानो मात्रा अनुस्वार विगेरेनो बीलकुल फेरफार थाय नहि. वर्ण, अर्थ, अने आलंबन प्रतिमाजी, गुरु, स्थापना विगेरेनुं अवलंबन करी उपयोगमां वर्त्तवुं.

दरेक क्रियामां जे जे आलंबन होय तेनाथी बाकीनी ऊर्ध्वदिशा (ऊंचे) अधोदिशा (नीचे) तिर्यग्दिशा (अडखे पडखे) ए त्रणे दिशाओ तरफ जोवानो त्याग करवो, एकज सन्मुखभावे क्रिया करवी.

दरेक क्रियामां रुपुं अने महोर छापना दृष्टान्ते बहुमान अने भक्तिनी चउभंगीनुं स्वरूप खास समजी आराधक दशाना भांगानो आदर करवो.

वळी प्रीति, भक्ति वचन अने असंग ए चार अनुष्ठानोना स्वरूप पण अवश्य जाणवा लायक तथा उपादेय ते आदरवालायक छे.

देवपूजा, गुरुभक्ति प्रतिक्रमण, देववन्दन, प्रतिलेखनादि दरेक शुभक्रियाओ करतां खेदादि चित्त-अन्तःकरणना दोषोनो अवश्य त्याग करवो.

खेद—क्रिया करता कंटाळो आववो, त्यां विचारवुं के हे चेतन ? बीजाओनी द्रव्यादि लालसाए गुलामगीरी करतां, आरंभादि कामोमां त्हने कंटाळो आवतो नथी के जे केवळ संसारवृद्धिनुं कारण छे. अने आ क्रिया त्हने मुक्तिनुं निदान प्राप्त थइ छे माटे आमां कंटाळो लावीश नहि.

उद्वेग—क्रिया उपर अरुचिभाव, हे चेतन ! अहितकारिणी क्रियाओ करी करी भव बगाडयो त्यां अरुचि न आवी आ क्रिया एकान्त हितकारिणी छे आमां अरुचि लावीश नहि.

क्षेप—एक पण आरंभेली क्रिया प्रत्ये चित्तनी

स्थिरता नथी अन्योन्य क्रियाओ प्रत्येनी चंचळता, हे चेतन ! अशुभ प्रवृत्तिओमां, व्यापारमां, लेवड देवडमां, हीसाबो तपासवामां रहने अस्थिरता नडती नथी तो एकान्त शुभ प्रवृत्तिरूपी क्रियामां तुं अस्थिरता करीश नहि इत्यादि क्रियाना फलने विनाशकारक महान् दोषोनो अवश्य त्याग करवो.

क्रियानो बाह्यशरीरोपयोग.

१ प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन, देववंदन, खमासमण, कांउसग्ग विगेरे तमाम क्रिया करवाना पवित्र उचित स्थानके चंद्रवा बांधेला होवा जोइये.

२ आयंबिलनी रसोइ, भोजन करवुं पाणी ठारवुं विगेरे स्थले पण चंद्रवा बांधेला होवा जोइए.

३ यतना साचववा माटे स्थंडिल मात्रुं परठववानी जग्यानो खास उपयोग राखवो.

४ थाळी, वाडका, पाटला, पवाला, कळशा, पहेरवाना धोतीयां, खेस, कामळ विगेरे तमाम वापरवानी

चीजो नाम (अक्षरो) विनाना होवा जोइए तथा धोतीया विगेरे वस्त्रो खेळ विनाना धोयेला राखवा, फाटेला तथा सांधेला राखवा नहि, पाटलाओ डगता होवा न जोइए.

४ पाणी पीधा पछी तुरतज तें प्यालो खास ल्होइ नांखवो, कारण तेमां अनुपयोग थवाथी भीनो रही जाय तो बे घडी पछी संमूर्छिम जीवोनी उत्पत्ति थाय छे तेथी ते माटे खास स्वच्छ लुगडाना कटका अगर रुमाल राखवा.

५ पूजा माटेना उपकरणोनी शुद्धिनो खास उपयोग राखवो.

६ पूजा भणावतां भावशुद्धि विशेष थवाना साधनो अवश्य राखवा.

७ पूजा करतीं वखते पूजाना उपकरणो जेवा के कलश, धूपधाणुं, केशर चंदननी वाटकी, नैवेद्य, फलनो थाळ विगेरे नाभिनी उपर अने मुख तथा नासिकानो श्वास न लागे तेवी रीते हाथमां राखवा.

८ नवकारवाली तथा पुस्तक विगेरे पवित्र उंचे स्थानके मुकवानो उपयोग राखवो, चरवळे भरावी देवानी तथा कटासणा उपर के जेम तेम मुकी देवानी घणीखरी प्रथा देखाय छे पण तेम करवाथी आशातना थाय छे माटे तेम न करवुं.

९ पुरुषोए चरवळा गोळ दांडीवाळा अने स्त्रीओए चोरस दांडीवाळा राखवा.

१० सामायिक, प्रतिक्रमण करतां पहेलां मात्रु-स्थंडिलनी बाधानो उपयोग करी लेवो, कदाच सामायिकमां प्रतिक्रमणमां बाधा थाय तो ते माटे माथे ओढवानी कामळी तथा पुंजवाना दंडासणनो तथा अचित्त पाणीनो खास उपयोग राखवो, घणे ठेकाणे कामळीना अभावे कटासणुं माथे नांखी जता देखाय छे पण तेम करवाथी विराधना थाय छे माटे ते संबंधी खास उपयोग राखवो पडिलेहणादि वखते काजो उद्धरवा काजा उद्धरणी (पुंजणी) सुपडीनो उपयोग राखवो.

पुस्तक वांचता राखवो जोइतो उपयोग.

१ अविनय आशातना न थाय माटे बहुमान सहित पवित्र उंचे आसने पुस्तकने राखवुं.

२ वांचती वखते तेना वर्णों उपर खास लक्ष्य राखवुं पद क्यां पुरुं थाय छे, संपदा क्यां अटके छे, ह्रस्व, दीर्घ, लघु, गुरु, संयुक्त, असंयुक्त, अनुस्वार, कानो, मात्रा विगेरेमां फेरफार न थइ जाय माटे खास उपयोग राखवो.

३ अर्थविचारणा करवी तथा ते आत्मामां घटाववा काळजी राखवी.

४ नाभिथी उपर पुस्तक रहे तेवी रीते सांपडा या बाजोठ विगेरे उपर राखी हाथनो परसेवो न लागे, डाघ विगेरे न पडे तेनो उपयोग राखवो. हालमां केटलाक अज्ञानताथी या संकोचवृत्तिथी या सगवडतानी खातर सांपडाओ तद्न न्हाना राखे छे माटे ते संबंधी काळजी राखवी.

५ पुस्तकने थुंक लगाडवुं नहि, पानुं फेरवतां केटलाको थुंकवाळी आंगळी करे छे ते मोटामां मोटी भुल छे, पुस्तक पासे छते वाछूट करवी नहि; पग लगाडवो नहि, पुस्तक पासे छते झाडो, पेशाब, करवा नहि, पुस्तक उपर बेसवुं के सुवुं नहि, पुस्तक पासे राखी भोजन करवुं नहि, अक्षर थुंकथी भूसवो नहि, पुस्तकने जेम तेम उंचेथी पटकवुं नहि, पुस्तकनो अग्नि के पाणीथी नाश करवो नहि, पुस्तकने फाडवुं के बीजी कोइ रीते नाश करवो नहि.

॥ आवश्यक (प्रतिक्रमण) विगेरे क्रियामां राखवो जोइतो उपयोग तथा साचववानो विधि ॥

वांदणानुं नाम द्वादशावर्त्तवन्दन[1] अथवा गुरु[2] महाराजनुं उत्कृष्टवन्दन कहेवाय छे, वांदणा देता २५

---

१ आ सूत्र बोलतां बार आवर्त्तो साचववाना होवाथी द्वादशावर्त्तवन्दन सूत्र कहेवाय छे.

२ गुरु महाराजनी वन्दना पूर्वक सुखशाता (कुशळ) पृच्छा

आवश्यक साचववाना छे, शिष्ये हमेशां पोताना श्वासोच्छ्वास, अधोवात विगेरेथी गुरुनी आशातना टाळवा माटे गुरुना अवग्रहथी बहार रहेवुं जोइये. त्यां रह्यो छतो उभा उभा "इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नीसीहीआए अणुजाणह मे मिउग्गहं" आटलुं बोली अवग्रहमां पेसवानी आज्ञा मांगवा मस्तक नमाववुं.

खमासमण विधिमां बतावेल नव संडासा प्रमार्जी 'नीसीही' बोलता अवग्रहमां प्रवेश करवो.

उभडक पगे बेसीने खमासमण विधिमां कहेला १० थी १४ सुधीना पांच संडासा प्रमार्जी चरवळा उपर मुहपत्ती मुकवी (गुरु चरण स्थाने स्थापवी) बेउ हाथ बे ढींचणनी अंदर राखी दस

साथे तमाम प्रकारनी अविनय आशातनाओ वर्जवानो अर्थ होवाथी गुरुवन्दन सूत्र कहेवाय छे, आ सूत्रथी कोनी कोनी वन्दना करवी विगेरे विचार खास समजवा योग्य छे.

आंगळीओ भेगी करी जेम भींत उपर थापो मारता होय तेवी रीते गुरुचरण स्थानापन्न चरवला उपर मुकेली मुहपत्ती (साधु साध्वीए मुहपत्ती ढींचण उपर राखवानी होवाथी ओघानी दशीओ) उपर उंधा हाथे दश आंगळीयोथी हळवे स्पर्श करतां 'अ' अक्षर बोलवो, तेवीज रीते चत्ता हाथे कपालने स्पर्श करता 'हो' अक्षर बोलवो.

पूर्वनी माफक उंधे हाथे मुहपत्तीने स्पर्श करतां 'का' अक्षर बोलवो, कपाले स्पर्शता 'यं' अक्षर बोलवो, वळी मुहपत्तीने स्पर्शता 'का' अक्षर बोलवो अने कपाले स्पर्शता 'य' अक्षर बोलवो, बन्ने हाथो मुहपत्ती उपर चत्ता मुकी तेमां मस्तक अडाडता 'संफासं' पद बोलवुं 'खमणिज्जो भे किलामो' ए पदो बोलता बे हाथ अंजलि जोडेला मस्तके लगाडवा पूर्वनी माफक बेउ हाथे मुहपत्तीने स्पर्शता 'ज' अक्षर बोलवो, वच्चे हाथ राखता 'त्ता' अक्षर बोलवो, ललाटे (कपाले) स्पर्शता 'भे' अक्षर बोलवो. एज प्रमाणे

पूर्वनी माफक 'ज' 'व' 'णि' ए त्रण अक्षरो बोलवा, वळी तेज प्रमाणे 'ज्जं' 'च' 'भे' ए त्रण अक्षरो उच्चारवा, वळी मस्तक अडाडता 'खामेमि खमास-मणो' ए पदो बोलवा, 'देवसिअं वइक्कमं' बोली छेल्हा त्रण संडासा प्रमार्जता 'आवसिआए' ए पद बोली अवग्रह बहार नीकळवुं,आज प्रमाणे बीजे वांदणे पण करवुं. मात्र बीजे वांदणे अवग्रहथी बहार नीकळवानुं न होवाथी 'आवस्सियाये' पद बोलवुं नहि. एटले ते आवश्यक ओछुं समजवुं, मन, वचन, कायानी एका-ग्रता राखवी. 'अहो' विगेरे बवे अक्षरोमां पहेलो अक्षर उदात्त, (उंचे स्वरे) बोलवो, बीजो अनुदात्त (नीचे स्वरे बोलवो, ' जत्ताभे ' विगेरे त्रणमां पहेलो उदात्त, बीजो स्वरित (मध्यमस्वरे)अने त्रीजो अनुदात्त बोलवो, [आ विधिनो खास उपयोग राखवो कारण विधिनी अज्ञानताए प्रमादवशे क्रियानुं यथार्थ फल पामी शकातुं नथी] आज प्रमाणे मुहपत्ती पडिलेहवी, काउ-स्संग्ग करवा विगेरे विधिओमां पण उपयोग राखवो.

प्रतिक्रमण (श्रावकोने वंदित्तु) सूत्र बोलता केवुं 'वीरासन' करवुं, देववन्दनमां मुद्राओ केवी करवी, सूत्रो बोलतां केवी विधि साचववी विगेरे विधिना जाणकार पासेथी समजी यथार्थ रीते वर्तवुं (आमानो केटलोक विधि आगळ पण कहेवाशे.





॥ आराधनाना दिवसोनो विचार-काल रहस्य. ॥

आराधनानी शरुआत–कर्मना क्षय, क्षयोपशम, उपशम विगेरे करवामां द्रव्यक्षेत्रादिनी माफक काल पण एक विशिष्ट कारण छे. आम्रना परिपाकमां तथा खेती विगेरे करवामां जेम अमुक काल आवश्यक छे, तेम धर्मना परिपाकमां, तथा तपः क्रिया ध्यान विगेरे साधनोथी राग, द्वेष, काम, क्रोध, विषयवासना आदि कांटाओ दूर करी आत्मभूमिमां धर्मबीज आरोपण करवामां कालनी पण खास अगत्यता छे. विद्या-मंत्रादिनी साधना करवामां पण काल तथा जाप विगेरे साधनोनी पण जरुरीयात होय छे. आवा अनेक हेतुओने लइने प्राचीन महापुरुषोए श्री सिद्धचक्रजी भगवानना आराधन माटे आश्विन अने चैत्र मासना नव नव दिवसो बताव्या छे, आ दिवसोने १ तीर्थ-

यात्रा २ रथयात्रा ३ अष्टाह्निकायात्रा ए त्रण यात्राओ [महोत्सवो] पैकी अष्टाह्निकायात्राना भेदोमां शाश्वत-यात्रा (महोत्सव) तरीके गणाव्या छे, तेमां पण प्रथम शरुआत परम निवृत्तिमय काल होवाथी आश्विन मासमां करवामां आवे छे, अने ते क्रमथी पूर्णाहुति पण आश्विन मासमांज थाय छे. वळी आ शरद् अने वसन्त ऋतुना लगभग मध्य दिवसोमां आंयबिलनी तपस्या शारीरिक आरोग्यताने अंगे वैद्यकीय(डाक्टरी) सिद्धान्त प्रमाणे पण केटली लाभप्रद छे ते कालविचारस्वरूपज्ञ पुरुषो पासे समजवा लायक छे. हालनी प्रवृत्तिए शुदि ७ थी १५ सुधीना नव दिवसोनुं आराधन छे. वचमां तिथिनी वृद्धि होय तो आठमथी, अने तिथिनी हानि होय तो छठथी शरु-आत थाय छे. सातम बे होय तो बीजी सातमथी अने आसो बे होय तो बीजा आसोमां शरुआत थाय छे. एज प्रमाणे बे चैत्र होय तो बीजा चैत्रमां आराधना कराय छे.

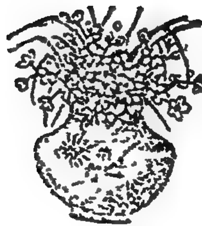
आराधक भव्य जीवोनुं प्रारंभ कृत्य.

शरूआतमां दीन अनाथादि जीवोने मनमां संतोष उपजाववाने दान आपवुं, छ री पाळवी, एटले के १ शुद्ध ब्रह्मचर्य धारी.२ भूमि संस्तारी. ३ एकाहारकारी. ४ उभटंक प्रतिक्रमणकारी ५ सचित्त त्यागकारी. ६ पादचारी (जोडा विगेरेनो त्याग करी ऊघाडा पगे नियमित भूमिमां चालनार) थवुं अमारी प्रवृत्ति करावनी, जेटली बनी शके तेटली द्रव्यादि आपीने पण जीवदया प्रवर्त्तावनी, घाणी भट्ठी विगेरे तमाम आरंभो बंध कराववा, चैत्योमां आंगी पूजाओ रचाववी विगेरे पूर्व सेवाकृत्यो करवा.

आराधक जीवोनुं अधिकारिपणुं.

आराधक जीव शान्त होवो जोइए. अल्प आहारवान्, अल्प निद्रा करनार, कामना (अभिलाषा) रहित, कषायरहित, धैर्यतावान्, परनिन्दा नहि कर-

नार, गुरु उपासनामां प्रीतिवान्, कर्मक्षयनो अर्थी, रागद्वेषनी मन्दतावाळो, दयालु विनयनी अपेक्षा राखनार, आलोक परलोकना फलनी स्पृहा नहि करनार, इत्यादि गुणवान् जीव तपनो अधिकारी छे. अल्प गुणवाने यथाशक्ति गुणो मेळववा उद्यम करवो.



प्रथम दिवसनो कर्त्तव्यविधि.

रात्रिनो चार घडी काल शेष रहे त्यारे जाग्रत थाय, परमेष्ठिमंत्रनुं स्मरण करे, पोताना स्वरूपनो विचार करे—'हुं कोण छुं,' 'क्यांथी आव्यो छुं,' 'क्यां जवानो छुं,' 'मारुं कुल कयुं,' 'मारो धर्म कयो' 'मारा देव कोण,' 'मारा गुरु कोण,' 'मारा धर्मने मारा कुलने उचित कर्त्तव्य शुं छे, में उत्तम कर्तव्यो शा शा कर्यां अने शा शा बाकी छे' इत्यादि विचारणा करवी, अनन्त पुण्योदये आराधननो काल प्राप्त थयेल होवाथी अपूर्व उत्साह अने वीर्योल्लास साथे स्वस्थ थइ श्री अरिहंत महाराजना आराधनानो पवित्र दिवस होवाथी श्री तीर्थंकर भगवानना द्रव्यगुण पर्यायोनी चिन्तवना करी तेमना ध्यानमां आपणा आत्माने लीन करी सामायिक अंगीकार करे. कुसुमिण दुसुमिणनो काउस्सग्ग (कर्म परिणामनी विचित्रताथी जीवघात–मैथुनादि संबंधी रौद्रस्वप्न आव्युं होय तो 'सागरवरगंभीरा' सुधी

४ लोगस्स अने सामान्य विचारथी 'चंदेसु निम्मलयरा' सुधी ४ लोगस्स) करी अप्रमत्तपणे वीर्य न छुपावता विधिसहित उपयोग पूर्वक प्रतिक्रमण करवुं.

सूर्योदय लगभगमां तमाम पडिलेहणा संपूर्ण थाय ते प्रमाणे क्रियामां वापरवाना तथा रात्रे संथाराना उपयोगी सर्व उपकरणोनी पडिलेहणा करी संपूर्ण पडिलेहण कर्या बाद आठ स्तुति अने पांच शक्रस्तवे देववंदन करे 'मन्हजिणाणं' (श्रावककर्तव्य सूचक) सज्झाय करे, पवित्र उंचे स्थानके श्री सिद्धचक्र भगवाननुं यंत्र पूर्व दिवसे प्रतिष्ठावी स्थापन कर्युं होय तो ठीक, नहि तो ते दिवसे स्थापन करावे, वासक्षेपथी पूजन करे त्रण खमासमण देवा.

---

१ दरेक पूज्य वस्तुओ तथा पूज्यनी पूजामां उपयोगी चीजो उपकरणो विगेरे नाभिप्रदेशथी उंचे स्थानके राखवा.

॥ गुणो प्रत्येनुं बहुमान तेज गुणिनुं बहुमान होवाथी गुणोनुं स्मरण करवा साथे प्रदक्षिणापूर्वक खमासमण (पंचांग प्रणिपात) देवां ॥

श्री केवलज्ञान उत्पन्न थये श्री तीर्थंकर प्रभुनी श्री तीर्थंकर नामकर्म उदयथी प्रातिहार्य तथा अनेक अतिशयो गर्भित चार मूलातिशय स्वरूप अतिशयोथी थयेली विशिष्टता ध्यानमां लाववा माटेना बार गुणो—

अशोकाख्यं वृक्षं सुरविरचितं पुष्पनिकरं ।
ध्वनिं दिव्यं श्रव्यं रुचिरचमरावासनवरम् ॥
वपुर्भासंभारं सुमधुररवं दुन्दुभिमथ ।
प्रभोः प्रेक्ष्यच्छत्रत्रयमाधिमनः कस्य न मुदः ॥१॥

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि-र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनञ्च ।
भामण्डलं दुन्दुभिरातपत्रं सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्व-
राणाम् ॥२॥

१ प्रायः दरेक क्रियामां इरियावहिनी प्रधानता (प्रथम करवापणुं) होवाथी कोइस्थळे खमासमण देतां पहेलां इरियावही करवानुं पण बतावे छे.

अपायापगमो ज्ञानं, पूजा वचनमेव च ।
श्रीमत्तीर्थकृतां नित्यं, सर्वेभ्योऽप्यतिशेरते ॥३॥
प्रातिहारज आठ छे, मूल अतिशय चार ।
बार गुण अरिहंतदेव, नमो नमो बहु वार ॥४॥

अर्हत्पदनमस्कार अर्हत्स्वरूपमां लीनता करनारनुं स्वरूपसूचक दुहाओ.



परम पंच परमेष्ठिमां, परमेश्वर भगवान ।
चारनिक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिनभाण ॥१॥
अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जायरे ।
भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थायरे ॥१॥
वीर जिनेश्वर उपदिशे, तुमे सांभळजो चित्त लावीरे ।
आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मळे सवी आवीरे ॥२॥

आ प्रमाणे दूहा बोली जयणा पूर्वक प्रदक्षिणा दइ १ स्वास्तिक करी यथाशक्ति फल, नैवेद्य, नाणुं विगेरे मूकी १७संडासा प्रमार्जवापूर्वक खमासमण देवुं.



॥ खमासमणा (पंचांग प्रणिपात)देवानो विधि. ॥

'इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, नीसीहिआए' एटला पदो उभा उभा बोली चरवलाथी जमणा पगनो पाछलनो भाग [केडथी न्हानी सुधी]प्रमार्जवो १ बे पगनो मध्यभाग २ तथा डाबो पग ३. एज प्रमाणे आगळना पंजा सुधीना त्रण भाग ६. ढींचणो स्थापवानी आगळनी जमीन त्रणवार ९ प्रमार्जी ढींचणभर बेसी जमणा हाथमां मुहपत्ती लइ मुहपत्तीथी कपालनी जमणी बाजुथी आखो डाबो हाथ पाछळ कोणी सुधी १० तेज प्रमाणे डाबा हाथमा मुहपत्ती लइ डाबा कपालथी जमणो आखो हाथ चरवलानी दांडी मुहपत्तीथी प्रमार्जी ११ ज्यां बे हाथ साथे माथुं स्थापवुं छे ते चरवलानी दशीओना भागनी आगळ मुहपत्तीथी त्रणवार १४ प्रमार्जी 'मत्थएण वंदामि' ए पद बोलतां बे हाथ जोडी माथुं नीचे नमाववुं (जमीन उपर लगाडवुं) एटले के आ सूत्र बोलतां बे ढींचण बे हाथ अने मस्तक ए पांचे

अंगो जमीन उपर लगाडवाना होवाथी पंचांग प्रणिपात दंडक कहेवाय छे.

उपरनी चौद संडासा (संदंशक) प्रमार्जनामां ऊठती वखत प्हानीओ स्थापवानी पाछळनी जमीन त्रणवार पुंजवी, आ प्रमाणे सत्तर १७ संडासा जाणवा, आ प्रमाणे विधि साचववा साथे दूहा बोली प्रदक्षिणा दइ स्वस्तिक करवा पूर्वक खमासमण देवा. एकेक खमासमण दइ एकेक गुण संभारवा पूर्वक नमस्कार पद बोलवुं.

॥ बार गुणगर्भित नमस्कार पदो.

१ श्री अशोकवृक्षप्रातिहार्यविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः॥

आ प्रमाणे गुणसूचक नमस्कारपद बोलवुं. वळी पूर्वनी माफक दूहा बोली प्रदक्षिणा दई स्वस्तिक करी खमासमण देवुं. ए प्रमाणे दरेक गुणे समजवुं.

२ श्रीपुष्पवृष्टिप्रातिहार्यविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः॥

३ श्रीदिव्यध्वनिप्रातिहार्यविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः॥

४ श्रीचामरयुगलप्रातिहार्यविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः॥
५ श्रीस्वर्णसिंहासनप्रातिहार्यविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः
६ श्रीभामण्डलप्रातिहार्यविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः॥
७ श्रीदुन्दुभिप्रातिहार्यविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः ॥
८ श्रीछत्रत्रयप्रातिहार्यविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः ॥
९ श्रीलोकालोकप्रकाशककेवलज्ञानस्वरूपज्ञानातिशय-विभूषिताय श्रीमदर्हते नमः॥
१० श्रीसुरासुरनरगणनायककृतसमवसरणप्रातिहार्यादि-विशिष्टपूजातिशयविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः ॥
११ श्रीसर्वभाषानुगामिसकलसंशयोच्छेदकपंचत्रिंशद्गु-णालंकृतवचनातिशयविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः ॥
१२ श्रीस्वपरापायनिवारकापायापगमातिशयविभूषिताय श्रीमदर्हते नमः ॥

छेवटे एक खमासमण दइ अविधि आशातना मिच्छामि दुक्कडं' कहेवुं.

॥ आ बार गुणोनी हृदयमां भावना रहेवा माटे तेनी अर्थविचारणा. ॥

श्री तीर्थंकर प्रभुना बाह्य ऐश्वर्य सूचवनार प्रतिहार भक्त (सेवक देवो)ना भक्ति कर्त्तव्य आठ प्रातिहार्यो तथा आन्तर ऐश्वर्य अने अनेक अतिशयना बीजक रूप चार मूलातिशयो ए बार गुणोए श्री अरिहंत प्रभुने ध्यान करवा.

१ प्रभु ज्यां ज्यां स्थिरता करे त्यां त्यां सर्व शोकादि दूर करनार प्रभुना बार गुणो अशोकवृक्ष देवताओ रचे छे, वायुथी फरकती तथा चमकती अनेक ध्वजाओ अने घूघराओथी सुशोभित अशोक वृक्ष रूप प्रातिहार्य.

२ एक योजन प्रमाण क्षेत्रमां अधोमुखवाळा ढींचण प्रमाण पांचवर्ण पुष्पवृष्टिरूप प्रातिहार्य.

३ मालव कौशिक रागे थती भगवंतनी वाणीने अनुसरता दिव्य ध्वनिरूप प्रातिहार्य.

४ भगवंतनी बे बाजु वींजाता उत्तम चामररूपप्रातिहार्य.

५ भगवंतने बेसवा माटे उत्तम कान्तिवाळा रत्नजडित सिंहासनरूप प्रातिहार्य.

६ भगवंतनीपीठेरहेलदेदीप्यमानभामंडलरूपप्रातिहार्य.

७ भगवंतना विहारादि अवसरे आकाशमां अदृश्य दुंदुभिरूप प्रातिहार्य.

८ अर्जुन सुवर्णनी सळीओवाळा मोतीओना गुच्छा समेत अनेक सफेद पुष्पमालाओथी वींटायेल श्वेत दिव्य वस्त्रमय छत्रत्रयरूप प्रातिहार्य ए आठ प्रातिहार्यो तथा.

९ लोकालोक प्रकाशकरनार श्रीकेवलज्ञानरूपज्ञानातिशय

१० सुर असुर मनुष्यादिए करेली समवसरण प्रातिहार्यादि स्वरूप विशिष्ट पूजातिशय.

११ देव, मनुष्य, तिर्यंच सर्वनी भाषाने अनुसरती सकल संशयने उच्छेद करनार, पांत्रीश गुणोए शणगारायेल वाणीरूप वचनातिशय.

१२ पोताना घातीकर्मोरूप कष्टनिवारण थया तथा

परना अपायना निवारण करवा स्वरूप अपायापगमातिशय ए चार मूलातिशय,आ बार गुणोथी विभूषित श्री अरिहंत भगवंतने मारो नमस्कार थाओ.

शक्तिवंत धनाढ्य पुरूषोए स्वस्तिक उपर बार हीरा मुकवा. बीजा पण फल नैवेद्य विगेरे मूकवा, सोना-रूपा नाणु विगेरे यथाशक्ति मूकवुं.

सिद्धचक्रने दिवसे आठ माणेक मुकवा.

आचार्यपदने दिवसे ३६ गोमेदक रत्न अगर ३६ सुवर्ण फूल मुकवा.

उपाध्यायपदने दिवसे २५ मरकत मणि मुकवा.

साधुपदने दिवसे २७ श्याममणि मुकवा.

दर्शनपदने दिवसे ६७ उज्ज्वल मोती स्वच्छ मोटा मुकवा.

ज्ञानपदने दिवसे ५१ उज्ज्वल मोती स्वच्छ मोटा मुकवा.

चारित्रपदने दिवसे ७० उज्ज्वल मोती स्वच्छ मोटा मुकवा.

तपपदने दिवसे ५० उज्ज्वल मोती स्वच्छ मोटा मुकवा.

वळी श्रीफल,द्राक्ष,नारंगी,बीजोरा,दाडम, केळां, बदाम विगेरे फळो. लाडु, पेंडा विगेरे नैवेद्य छती शक्तिए दररोज जुदीजुदी जातनुं मुकवुं, जो दरेक दिवसे करवा शक्ति न होय तो दरेक ओळी दीठ एक एक दिवस करवुं, छेवटे बनी शके तो एक ओळी तो संपूर्ण विधिसमेत आराधवी.

॥ काउस्सग्ग विधि. ॥

पूर्वोक्त विधिए खमासमण दइ उभा थइ पगना वचगाळाने त्रणवार पुंजतो जिनमुद्राए पग राखी योगमुद्राए हाथ राखी गुरु आदेश पूर्वक प्रथम [1]इर्यावहिया प्रतिक्रमी (पडिक्कमी) खमा० इच्छा०

१ इरियावहिया ए कांइ सामान्य क्रिया नथी शुद्ध उपयोग पूर्वक इरियावही पडिक्कमनार कठिन कर्मोनी निर्जरा करे छे. अवधिज्ञान अने केवलज्ञान जेवी विशिष्ट स्थितिए पहोंचे छे. आ इरियावहिनो अर्थ विचारवामां आवे तो आमां एकेन्द्रियथी मांडी यावत्

दुवालसगुणविभूसियसिरिअरिहंतपयाराहणत्थं (द्वादशगुणविभूषितश्रीअर्हत्पदाराधनार्थं) काउस्सग्गं करेमि-

पंचेन्द्रिय सुधीना जीवोनी विराधनाना मिच्छामिदुक्कडं आवे छे जेनी संख्या १८२४१२० थाय छे, **'जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया'** जे मे जीवो विराध्या एकेन्द्रिय थी यावत् पंचेन्द्रिय सुधी, अहीं एकेन्द्रियथी पंचेन्द्रिय सुधीना ५६३ जीवभेद लेवा, [एकेन्द्रिय २२. पृथ्वीकाय (४) सूक्ष्म अपर्याप्त, सूक्ष्म पर्याप्त, बादर अप०, बा०प०. एवं अप्काय (४). तेउकाय(४). वायुकाय (४). साधारण वनस्पतिकाय (४). आगळना तमाम जीवो बादर ज होय छे जेथी प्रत्येकवन०. अप० (१) प्रत्येक वन० प० (२). द्वीन्द्रिय २. अप० द्वी०. १. प० द्वी २. त्रीन्द्रिय २. चतुरि० २. पंचेन्द्रियतिर्यंच २०. जलचर (४) सम्मू० अप०, सं०प०, गर्भज अप०, गर्भज पर्याप्ता. चतुष्पद (४). उरःपरिसर्प (४). भुजपरि० (४). खेचर (४). नारक १४. सात अप०, सात प०. मनुष्य ३०३ पांच भरत, पांच ऐरवत, पांच महाविदेह, ए १५ कर्मभूमि, पांच हिमवंत, पांच हिरण्यवंत, पांच हरिवर्ष, पांच रम्यक्, पांच देवकुरु, पांच उत्तरकुरु, ए ३० अकर्मभूमि, छप्पन अंतर्द्वीप, कुल १०१. सम्मू० मनु० अपर्याप्ताज होय माटे ते १०१, अने गर्भज अप० १०१ पर्याप्ता १०१ (३०३). देवता १९८, दश भुवनपति, पंदर परमाधामी, ८ व्यंतर, ८ वाणव्यंतर, १० तिर्यग् जृंभक, ५ चरज्योतिष, ५ स्थिर ज्यो०, ३ किल्बिषिक, बार देवलोक, ९

१ जो गुरुनी जोगवाइ होय तो गुरु आदेश आपे ' करेह ' इच्छं, दुवालसगुणविभूसियसिरि

लोकान्तिक, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर, (१०, १५, ८, ८, १०, ५, ५,३,१२,९,९,५,कुल ९९). अप० ९९, पर्या० ९९ (१९८) सर्व मळी जीवभेद (२२, २, २, २, २०, १४, ३०३, १९८) ५६३ विराधनाना ' अभिहिया ' सामा आवता हण्या १, ' वत्तिया ' धूळे ढांकया २, 'लेसिया' जमीन साथे घस्यां ३, 'संघाइया' शरीरे शरीर एकठा कर्या. ४. ' संघट्टिया ' स्पर्शथी दूहव्या ५, 'परियाविया' परिताप्या ६, 'किलामियां' मृतप्राय कर्या ७,'उद्दविया'त्रास पमाडया ८,'ठाणाओ ठाणं संकामिया' एकस्थानथी वीजे स्थाने मूक्या ९, ' जीवियाओ ववरोविया ' प्राणथी जुदा कर्या (मार्या) १०, ए दश भेदे गुणतां ५६३०,रागद्वेषथी विराधना थाय छे माटे राग अने द्वेष वेथी गुणतां ११२६०, मन वचन कायाए विराधना कराय छे जेथी ए त्रणे गुणतां ३३७८०,करवुं कराववुं अने अनुमोदवुं ए त्रण विराधनाना भेदो होवाथी त्रणे गुणतां १०१३४०, वर्त्तमान अतीत अने अनागत ए त्रण काले गुणतां ३०४०२०,ते विराधनाने अरिहंत सिद्ध साधु देव गुरु आत्मा ए ६ साक्षिए मिच्छामि दुक्कडं होवाथी ६ ए गुणतां १८२४१२० भेद थाय छे. विचारसित्तरीमां उपयोग अने अनुपयोगे विराधना थती होवाथी ते वे भेदे गुणतां ३६४८-२४० भेद पण बताव्या छे.

अरिहंतपयाराहणत्थं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ति० अन्नत्थ० वार लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयरा' सुधी काउसग्ग करवो. यथाशक्ति उभा उभा काउसग्ग करवा उपयोग राखवो अने तेमां 'जिनमुद्राए' उभा रहेवुं एटले बेउ पगना आगळना पंजाना भागमां [चार आगळनुं] अंतर राखवुं. अने पाछल प्हानीना भागमां 'किंचिन्न्यून चार आंगळनुं' अंतर राखवुं. डाबा हाथमां चरवळो अने जमणा हाथमां मुहपत्ती राखवी, काउसग्ग माटे तेना आगारो तथा दोषो तरफ खास उपयोग राखवो, काउसग्गमां आगार शिवाय अंग बीलकुल चलाववुं नहि, केटलाक संख्या गणवा माटे आंगलीना वेढा गणवा, होठ फफडाववा विगेरे करे छे, परन्तु तेम करवाथी दोष लागे छे वास्तविक रीतिए अंदर जीभ पण हालवी जोईये नही. दांते दांतनो स्पर्श करवो नही, इत्यादि खास उपयोग राखवानी आवश्यकता छे. काउसग्ग पारी प्रकट लोगस्स कही खमा०दइ अविधिआशातना मिच्छा मि दुक्कडं कहेवुं.

॥ नव चैत्यवन्दन विधि ॥

ऋद्धिमंत भाग्यवान् जीवे दरेक मन्दिरे तेना उपयोगी पूजोपकरण कलश, धूपधाणुं, पूजानी वाटकी, फूलछाबडी, केसर, सुखड, वाळाकुंची, बरास, वरख विगेरे तमाम यथासंपत्तिए लइ जवा तथा फल फूल नैवेद्य सोनानाणुं, रूपानाणुं विगेरे ... भुनी स्तुति ...शक्ति करी चैत्यवन्दन त्सव सहित दीन, अनाथ... णमुद्रानो विधि साचववो, योग-जइ विधि साचव... तमुद्रा, जिनमुद्रा, 'योगमुद्रा' एटले बेउ करवुं. सर्व म... आंगलीओ मांहेमांहे अन्तरित करी कम-एक मन्दि... डा आकारे बेउ हाथ पेट उपर कूणीओ रहे स्वस्ति... राखवा, आ मुद्राथी प्रभु प्रत्ये आपणी नम्रता अ... थ छे, प्रभु गुणनी अधिकतानो भास थाय छे, अने यथार्थ एकतानवृत्ति थाय छे, 'मुक्ताशुक्तिमुद्रा' एटले मोती उत्पन्न थवानी छीपना जोडाना आकारे बेउ हाथ सरखा गर्भित राखी ललाट (कपाल)ना मध्यभागे लगाडवा. बीजा आचार्य मध्यभाग आगल राखवा.

संबंधी तमाम चिन्तानो त्याग करी हुं प्रवेश करुं छुं. त्यारबाद दहेरासर संबंधी संभाळवानुं कार्य (आशातना विगेरे दूर करवुं इत्यादि) संभाळी बीजी नीसीही कही ते संबंधी चिन्तानो हवे आगळ गभारा पांसे आवता त्याग कर्यो अने चैत्यवन्दन करवा बेसता भावस्त- आंगळनुं] अ... करवा त्रीजी नीसीही बोलवी. ' किंचिन्न्यून चार आंगळ ...दृष्टिमां आवे के तुरत हाथमां चरवळो अने जमणा हाथ...णाम करवो. त्रण काउसग्ग माटे तेना आगारो तथा द...परणमां प्रभुना उपयोग राखवो, काउसग्गमां आगार ...चार तरफ बीलकुल चलाववुं नहि, केटलाक संख्या गण...नी. आंगलीना वेढा गणवा, होठ फफडाववा विगेरे छे, परन्तु तेम करवाथी दोष लागे छे वास्तविक र...ग्रह तिए अंदर जीभ पण हालवी जोईये नही. दांते दांतनो स्पर्श करवो नही, इत्यादि खास उपयोग राखवानी आवश्यकता छे. काउसग्ग पारी प्रकट लोगस्स कही खमा०दइ अविधि आशातना मिच्छा मि दुक्कडं कहेवुं.

सेववुं नहि, 'आशातना' एटले के आय-सम्यग्दर्शनादि निज गुणोनो लाभ, तेनी शातना-खंडना एटले विनाश थवो. आ आशातनानो सामान्य अर्थ पण जोतां तेमां आत्माने हानि थाय छे माटे ते स्थान सेववुं नही. प्रभुनी सन्मुख गभाराद्वारे उभा रही प्रभुना स्वरूपनुं चिन्तवन करी असाधारण गुणसूचक प्रभुनी स्तुति करवी, पछी स्वस्तिकादि यथाशक्ति करी चैत्यवन्दन करवुं, चैत्यवन्दनमां त्रणमुद्रानो विधि साचववो, योग-मुद्रा, मुक्ताशुक्तिमुद्रा, जिनमुद्रा, 'योगमुद्रा' एटले बेउ हाथनी दशे आंगलीओ मांहेमांहे अन्तरित करी कम-ळना डोडा आकारे बेउ हाथ पेट उपर कूणीओ रहे तेम राखवा, आ मुद्राथी प्रभु प्रत्ये आपणी नम्रता थाय छे, प्रभु गुणनी अधिकतानो भास थाय छे, अने यथार्थ एकतानवृत्ति थाय छे, 'मुक्ताशुक्तिमुद्रा' एटले मोती उत्पन्न थवानी छीपना जोडाना आकारे बेउ हाथ सरखा गर्भित राखी ललाट (कपाल)ना मध्यभागे लगाडवा. बीजा आचार्य मध्यभाग आगल राखवा

पण लगाडवा नहि तेम कहे छे. स्त्रीओए हाथ उंचा करता स्तनादि अवयवो देखाय तेम थवुं न जोईये, जिनमुद्रा एटले बेउ पग आगलनी आंगलीओना भाग (पहोंचा)नुं अंतर चार आंगल थाय अने पाछलनी प्हानीओनुं अंतर किंचिन्न्यून थाय तेवी रीते राखी उभा रहेवुं.

मुद्राओनो उपयोग.

स्तुति स्तोत्र, खमासमण, चैत्यवन्दन, शक्रस्तव (नमुत्थुणं) स्तवन विगेरे सूत्रो योगमुद्रा साचवी बोलवाना छे.

प्रणिधानसूत्र चैत्योनी वन्दनानुं सूत्र "जावंति चेइआइं" मुनिवन्दन सूत्र "जावंत केवि साहू" अने प्रार्थना सूत्र "जयवीयराय—आभवमखंडा" सुधी ए सूत्रो मुक्ताशुक्तिमुद्रा साचवी बोलवाना छे.

वांदणा देवा, अरिहंत चेईयाणं विगेरे कार्योत्सर्गना सूत्रो बोलवा, काउस्सग्ग करवो विगेरेमां जिनमुद्रा साचववानी छे.

चैत्यवन्दन करता बनता सुधी जे प्रभु सन्मुख चैत्यवन्दन करता होईए तेमनुंज चैत्यवन्दन, स्तवन, स्तुति बोलवी.

चैत्यवन्दन करता वर्ण-अर्थ अने आलबंनने अवश्य उपयोग राखवो जेनुं स्वरूप प्रथम कह्युं छे.

स्वस्तिकादि तथा चैत्यवन्दनादि प्रभुभक्तिमां लीन थता आत्माओने ते समये धर्मना चारे अंग दान, शील, तप अने भावनी समकाले आराधना थाय छे. आश्रव कषायादि कर्मबन्धना साधनोनो त्याग थाय छे, तथा किंचिदंशे भव्यजीवोने बारे व्रतोनी पण आराधना थाय छे. तथा सम्यक्त्वशुद्धि, दृढता तथा वृद्धिनुं तो मुख्य साधन छे.

गुरुवन्दन व्याख्यानश्रवण प्रत्याख्यान ग्रहणविधि.

प्रभु दर्शन-पूजन जेटलुं अगत्यनुं छे तेटलुंज गुरुवन्दन पण खास अगत्यनुं छे माटे गुरुना स्थानमां आवी विधिपूर्वक गुरुवन्दन करवुं, स्वस्तिक

करवा पूर्वक गुरुमुख कमलथी श्रवण विधिपूर्वक श्री-सिद्धचक्र महाराजना माहात्म्यनुं, संसारनी असारतानुं, पोतानी सामाचारीनुं विगेरे मुक्तिमार्गने देखाडनारुं व्याख्यान श्रवण करवुं, विधिसहित प्रत्याख्यान ग्रहण करवुं, प्रत्याख्यान ग्रहण करतां दायक–ग्राहकनी जाणग–अजाणगनी चउभंगी खास ध्यानमां राखी आराधक भांगो लेवो, प्रत्याख्यानमां म्हारे केवी रीते वर्त्तवुं, शो त्याग कर्यो आवा शा शा आगारो छे विगेरे तमाम समजवा उपयोग राखवो.

प्रभातमां प्रतिक्रमण वखते, दहेरासरे चैत्यवंदन कर्या पछी प्रभुसमक्ष पच्चक्खाण ग्रहण कर्युं छे तो पण गुरुसमक्ष लेवानी खास जरुर छे, मनमां दृढ-नियम कर्यो होय तो पण शास्त्रोक्त सूत्रोच्चार सहित गुरु समक्ष लेवाथी सील मारवामां आवे छे.

स्वस्थाने आवी पूजा सामग्री तैयार करी स्नान करवुं, स्नाननुं पाणी कोइ वासणमां झीली लेवुं के विधिए स्नान करे, हम्मेंशा स्नान परनालवाला

जमीनथी उंचा बाजोठ उपर स्नान करे, जेथी तेनो रेलो जवाथी, कीडी, कुंथुंआ, लीलफुल आदि कोइ जीवनी विराधना न थाय अने ते पाणी निर्जीव शुद्ध स्थंडिल भूमि जोइ छुटुं छुटुं परिठववुं के जेथी तुरतमां सुकाइ जवाथी संमूर्छिम जीवोत्पत्ति तथा लीलफूल विगेरे थवानो संभव न रहे, शरीर लोही नाखी निर्जल थये बीजुं वस्त्र फेरवी शुद्ध सफेद बी जाए नहि वापरेल पवित्र वस्त्रो पूजा माटे राखवा, पूजामां रेशमी दुकूल-वस्त्रो बीजा उत्तम वर्णना होय तो पण चाले छे. स्त्री अने पुरुषोना वस्त्रोमां बीलकुल फेर-फार करवो नहि, फाटेला सांधेला मेला वापरवा नहि वस्त्र शुद्धि राखवी.

अंग वसन मन भूमिका, पूजोपकरण सार।
न्यायद्रव्य विधिशुद्धिता, शुद्धि सात प्रकार ॥ १ ॥

ए सात शुद्धिनो बनतो उपयोग राखवो, अंग, अग्र, भाव विगेरे अनेक पूजा भेदोनुं स्वरूप समजी जेम विशिष्ट पूजन थाय तेम वर्तवुं, जे जे पदाराधननो दिवस होय ते ते दिवसे ते ते पदनी विशिष्ट पूजा करवी विगेरे, संपूर्णविधि साचववासाथे पूजा अष्टप्रकारी आदि विस्तारथी करवी श्री अरिहंतपदनी विशेष पूजा करवी.

॥ श्री सिद्धचक्र यंत्रनी पुनः धूपादिथी पूजा करवी. ॥

मध्याह्नकाले पुनः देववंदन आठ थोइए करवुं. देववंदनमां श्री तीर्थंकर देवना चारे निक्षेपानी आराधना तथा ज्ञानादि गुणोनी, तीर्थादिनी आराधनाओ थाय छे. देववंदनना बार अधिकारोनो घणो विचार समजवा लायक छे.

" ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं " ए मंत्र जाप पदनो बे हजार [वीश नवकारवाळी] जाप करवो, पच्चक्खाणनो टाइम थये पच्चक्खाण पारवुं.

॥ पच्चक्खाण पारवानो विधि. ॥

खमा० इरियावही पडिक्कमी खमा० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं? इच्छं, जगचिन्तामणिथी यावत् जयवीयराय सुधी चैत्यवन्दन करवुं, खमा० इच्छा० सज्झाय करुं, इच्छं नवकार गणी " मन्ह-जिणाणं आणं " ए पांच गाथानी सज्झाय (आ सज्झायमां श्रावकनी उत्तम करणीनुं स्वरूप बतावेलुं

छे ते खास विचारवा लायक छे तेमांनी आपणी शक्ति अनुसार केटली करणी करी अने हवे केटली बाकी छे ते खास स्मरणमां राखी यथोचित अवसर मळ्ये ते ते करणीओ करवा प्रयत्न करवो) करवी.

खमा० इच्छा० मुहपत्ती पडिलेहुं, इच्छं, कही मुहपत्ती पडिलेहवी, खमा० इच्छा० पच्चक्खाण पारुं 'यथाशक्ति' खमा० इच्छा० पच्चक्खाण पार्युं, 'तहत्ति' कही, मुट्ठि सहित जमणो हाथ चरवळा उपर स्थापी एक नवकार गणी "उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पोरिसी साढपोरिसी सुरे उग्गए पुरिमड्ढ मुट्ठिसहियं पच्चक्खाण कर्युं चोवीहार आयंबिल एकासणुं पच्चक्खाण कर्युं तिविहार पच्चक्खाण [1]फासियं [2]पालियं [3]सोहियं

१ 'फासियं' लीधेलुं पच्चक्खाण तेना काल सुधी सारी रीते स्पर्श्युं (आराध्युं.)

२ 'पालियं' पच्चक्खाणनो काळ पूरो न थाय त्यांसुधी वारंवार संभारी साचव्युं.

३ 'सोहियं' गुर्वादिने निमंत्रण करी व्होरावी वापरवाथी शोभाव्युं.

[१]तीरियं [२]किट्टियं [३]आराहियं जं च न आराहियं तस्स " मिच्छा मि दुक्कडं " आ प्रमाणे पाठ बोली पच्चक्खाण पारवुं. एक नवकार गणवो.

आयंबिलना पच्चक्खाणनी साथे काल संबंधी पोरिसी, साढ्ढपोरिसी, पुरिमड्ढ, अवड्ढ विगेरे पोतानी शक्ति प्रमाणेनुं पच्चक्खाण छे, एकवार भोजननुं एकासण पच्चक्खाण छे, प्रासुक पाणीनुं पाणस्सनुं पच्चक्खाण छे, ते साथे मुट्ठिसहियं, पोते धारेलुं गंठसहियादि पच्चक्खाण छे.

---

१ 'तीरियं' काल पूर्ण थया पछी तेनी शुद्धि माटे थोडा अधिक काल सुधी सबुर राखीने पारवाथी पार उतार्युं.

२ 'किट्टियं' वापरती वखते आज म्हारुं अमुक पच्चक्खाण हतुं ते में संपूर्ण आराध्युं, हवे हुं वापरुं छुं तेम पच्चक्खाणनी स्तवना (स्मरण) करवाथी वखाण्युं.

३ 'आराहियं' आ म्हारुं पच्चक्खाण उपर प्रकारनी सर्व शुद्धि सहित श्री जिनाज्ञा पाळवा पूर्वक फलाशंसा रहितपणे केवळ कर्मक्षयनी अभिलाषाथी कर्युं छे.

पछी आहार (आयंबिल) करवाना स्थानके आवी श्रीसिद्धचक्र भगवान्नुं ध्यान धरतो छतो बनता सुधी [1]उत्कृष्ट आयंबिलना प्रकारवाळुं तथा श्री अरिहंतप्रभुनुं ध्यान तथा सात्त्विक वृत्ति रहेवा माटे उज्ज्वलवर्णों चोखानुं आयंबिल करे, आयंबिल करतां आहार करता जे विधि प्रथम बताव्यो छे ते उपर खास लक्ष्य राखवुं.

आयंबिल कर्या बाद स्वच्छ म्हों (मुखशुद्धि) करी ठाम चउविहार बनी शके तो ते, नहि तो तिविहारनुं पच्चक्खाण करे, साथे उपयोगनी तीव्रता माटे मुट्ठिसहियादि पच्चक्खाण करवुं, त्यारबाद पाणी पीवुं होय तो चैत्यवन्दन करी, जो मुट्ठिसहियादि पच्चक्खाण होय तो ते नवकार गणी पारी पाणी पीवुं, पुनः मुट्ठिसहियादि पच्चक्खाण करी लेवुं, आ

१ आयंबिलना प्रकारो गीतार्थ गुरुमहाराज पासे समजी यथाशक्ति उत्कृष्ट थाय तेवो उपयोग राखवो, उत्कृष्ट न थइ शके तो पण यथाशक्ति आराधना अवश्य करवी.

प्रमाणे करवाथी उपयोगनी तीव्रता साथे विशेष लाभनुं कारण विरतिपणुं आत्माने रहे छे.

॥ शेषकालनुं कर्त्तव्य. ॥

आ दिवसोमां जेम बने तेम प्रमाद सेववो नहि, विकथा करवी नहि. कषायने अवकाश आपवो नहि अने श्री सिद्धचक्र भगवान्‌नुं अपूर्व माहात्म्य हृदयमां स्फुरायमान थाय, तेमना ध्यानमां आत्मानी विशेष लीनता थाय ते माटे तेमनुं आराधन करनार श्रीपालमहाराजना चरित्रगर्भित श्री श्रीपालमहाराजनो रास वांचवो अगर सांभळवो, तेनी अर्थविचारणा करवी. सांजनुं पडिलेहण करवुं, देववन्दन करवुं.

देववन्दन कर्या बाद पाणी पीवातुं नथी, सन्ध्याकालनी आरती, धूप, दीप विगेरे पूजा करवी, श्री सिद्धचक्र यंत्रनी पण संध्याकाले धूपादि यथोचित पूजा करवी, सांझे दैवसिक प्रतिक्रमण करवुं, प्रतिक्रमण कया बाद गुरुमहाराजश्रीनी जोगवाई होय

तो गुरुशुश्रूषा करवी, श्री अरिहंत प्रभुनुं ध्यानादि स्वरूप विगेरे धर्मकथा करवी,

प्रहर रात्रि लगभग थये संथारा पोरिसी सांभळवी संथाराविधि उपर लक्ष्य राखी ते प्रमाणे वर्त्तवुं, पोताना आराधन करेला दिवसनी सफलता मानतो, श्री पंचपरमेष्ठि मंत्रनो जाप करतो संथारो पाथरवानी जग्या चरवलाथी प्रमार्जी संथारीयुं, उत्तरपट्टो पाथरी श्री अरिहंत प्रभुनुं शुक्लवर्णे ध्यान करतो तेमना गुणोने हृदयमां भावतो अल्प निद्रा करे,

॥ इति प्रथम दिवस कर्तव्य विधि ॥





॥ श्री सिद्ध पदाराधन बीजा दिवसनु कर्तव्य ॥

उपर प्रमाणेज जाग्रत थयाथी तमाम कृत्य समजवुं, मात्र आज सिद्ध परमात्मानुं ध्यान करवानुं छे, अविनाशि स्वभावनो बोध आपवारूप भव्यजीवो उपर असाधारण उपकार करनार सिद्ध परमात्मा सकल कर्मरहित थइ केवी शुद्ध अवगाहनामां त्यां बीराजमान छे, तेमना आत्मानी साथे पोताना आत्मानो भेदाभेद चिन्तववो, तेमना ज्योति स्वरूप रूपातीत अवस्थाना शुद्ध ध्यानमां आत्माने तन्मय बनाववो,

॥ श्री सिद्ध भगवंतना गुणोनो विचार.

जो के कर्मक्षयना योगे सिद्ध परमात्माना अनन्त गुणो प्रकाशित थयेला छे, तो पण महापुरुषोए ध्यान करवाने माटे एकत्रीश गुणोनो अथवा पंद्र भेदे सिद्ध थता होवाथी पंद्र भेदोना जाप विगेरे विधि अन्य तप विगेरेमां आवे छे, तो पण अहीं आठ कर्ममलथी लेपायेल आत्मा ते कर्मना क्षयथी कया कया गुणने प्राप्त करे छे तथा आत्मानुं निर्लिप्त दशानुं स्वरूप केवुं होय ते विगेरे ध्यान करवा तथा आत्माने ते ध्यानमां लीन करवा आठ कर्मक्षयथी ऊपजेल आठ गुणोनुं ग्रहण कराय छे.

॥ सिद्धपदना ८ गुणो ॥

एक एक कर्मना क्षय थकी, नीपन्यो गुण एक एक।
आठ गुणे इम प्रणमीये, सिद्ध प्रभु सुविवेक ॥ १ ॥

अनन्तं केवलज्ञानं, ज्ञानावरणसंक्षयात् ।
अनन्तं दर्शनं चापि, दर्शनावरणक्षयात् ॥ १ ॥
क्षायिके शुद्धसम्यक्त्व--चारित्रे मोहनिग्रहात् ।
अनन्ते सुखवीर्ये च, वेद्यविघ्नक्षयात्क्रमात् ॥२॥
आयुषः क्षीणभावत्वात्, सिद्धानामक्षया स्थितिः।
नामगोत्रक्षयादेवाऽ--मूर्तानन्तावगाहना ॥ ३ ॥

आ प्राचीन श्लोकोथी सिद्ध परमात्माना आठ गुणो बताव्या छे, जो के उपरोक्त श्लोकोमां मोहनीय क्षयथी सम्यक्त्व १ अने क्षायिकचारित्र २ ए बे गुणो बताव्या छे, अने नाम तथा गोत्र ए बेउ कर्मना क्षयथी 'अमूर्त्त अनन्त अवगाहना' नामनो एक गुण बताव्यो छे, संख्यामां गुण ८ छे, परन्तु बीजा अनेक स्थलोए मोहक्षयथी उत्पन्न थयेल बेउगुणने एकज लीधा छे,अने नाम कर्मक्षयथी अरूपी गुण अने गोत्रक्षयथी अगुरुलघुस्वभाव गुण एम जुदा जुदा बे गणाव्या छे, अने तेज प्रमाणे अहीं पण खमासमण देवामां ते मुजब गुणो गणाव्या छे.

॥ सिद्धपद नमस्कारपूर्वक सिद्ध स्वरूपमां करवानुं लीनता स्वरूप सूचक. खमासमणना दूहाओ एवुं.

गुण अनन्त निर्मल थया, सहज स्वरूप ऊजास ।
अष्ट कर्म मल क्षय करी, भये सिद्ध नमो तास॥१॥
रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसण नाणीरे ।
ते ध्याता निज आत्मा, होय सिद्ध गुण खाणीरे॥२॥

वीर जिनेश्वर उपदिशे०

॥ सिद्धना ८ गुणगर्भित नमस्कार पदो.

१ ॥ज्ञानावरणीयकर्मक्षयोद्भूतानन्तज्ञानगुणविभूषितेभ्यः श्रीसिद्धेभ्यो नमः॥

२ ॥दर्शनावरणीयकर्मक्षयोद्भूतानन्तदर्शनगुणविभूषितेभ्यः श्रीसिद्धेभ्यो नमः॥

३ ॥वेदनीयकर्मक्षयोद्भूताव्याबाधसुखगुणविभूषितेभ्यः श्रीसिद्धेभ्यो नमः॥

अनन्तं नेकर्मक्षयोद्भूतानन्तसम्यक्त्वचारित्रगुणवि-
भूषतेभ्यः श्रीसिद्धेभ्यो नमः॥

५ ॥ आयुष्कर्मक्षयोद्भूताक्षयस्थितिगुणाविभूषितेभ्यः
श्रीसिद्धेभ्यो नमः ॥

६ ॥ नामकर्मक्षयोद्भूतारूपित्वादिगुणविभूषितेभ्यः
श्रीसिद्धेभ्यो नमः ॥

७ ॥ गोत्रकर्मक्षयोद्भूतागुरुलघुगुणविभूषितेभ्यः श्री-
सिद्धेभ्यो नमः ॥

८ ॥अन्तरायकर्मक्षयोद्भूतानन्ताकरणवीर्यगुणविभूषि-
तेभ्यः श्रीसिद्धेभ्यो नमः ॥

काउस्सग्ग वखते 'अडगुणविभूसियसिरिसिद्ध-पयाराहणत्थं काउस्सग्गं करेमि' (अष्टगुणविभूषित-श्रीसिद्धपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे बोलवुं जापमां 'ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं' जपवुं, सिद्धपदनुं विशेष पूजन करवुं,

बाकी तमाम विधि पूर्वनी माफक जाणवो,

मात्र श्री सिद्ध परमात्मानुं रक्तवर्णे ध्यान करवानुं होवाथी आयंबिलमां पण रक्तवर्ण घउंनुं द्रव्य लेवुं.

श्री सिद्धगुणोनी हृदयमां भावना रहेवा माटे नमस्कार पदोना अर्थ.

१ ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल, अनन्त ज्ञान (केवलज्ञान) गुण.

२ दर्शनावरणीय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अनन्त केवल दर्शन गुण,

३ वेदनीय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अव्याबाध सुख गुण.

४ मोहनीय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल क्षायिक सम्यक्त्व अने अनन्त चारित्रगुण,

५ आयुष्य कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अक्षय स्थिति (फरी पाछुं आववुं न होवाथी) गुण.

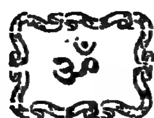
६ नाम कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अनन्त अवगाहना सहित अमूर्त्त गुण,

७ गोत्र कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अनन्त अवगाहना सहित अगुरुलघु गुण.

८ अन्तराय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अनन्त अकरण [आत्मिक] वीर्य प्रभृति गुण.

आ आठ गुणोथी विभूषित श्री सिद्धभगवानने नमस्कार थाओ.





આચાર્યપદારાધન ત્રીજા દિવસનું કર્ત્તવ્ય.

શ્રી આચાર્યપદ માહાત્મ્ય તથા તેમના ગુણોનો વિચાર.

પાંચ આચારના શુદ્ધ સ્વરૂપને આરાધન કરી બતાવવા રૂપ ઉપકારથી ધ્યાન કરવા યોગ્ય શ્રી આચાર્યભગવંતના અનેક ગુણો પૈકી છત્રીશ છત્રીશીઓ મુખ્ય છે, સંબોધપ્રકરણમાં શ્રી હરિભદ્રસૂરિ ભગવંતે તેથી પણ વધારે છત્રીશીઓ ગણાવી શ્રી આચાર્યભગવંતના ગુણો ગાયા છે. તેમનું ધ્યાન કરવા મુખ્ય છત્રીશી (૩૬ ગુણો) એ જાપ કરવામાં આવે છે.

॥શ્રી આચાર્ય પદના ૩૬ ગુણો॥

પડિરૂવાઇ ચઉદ્દસ, ખંતિમાઇય દસવિહો ધમ્મો ।
બારસ ય ભાવણાઓ, સૂરિગુણા હુંતિ છત્તીસં ॥૧॥
પડિરૂવાદિક ચૌદગુણ, ક્ષાન્ત્યાદિક દશ ધર્મ ।
ભાવના બાર છત્રીશ એ, સૂરિગુણનું મર્મ, ॥૧॥

श्री आचार्यपद नमस्कार पूर्वक तन्मयतासूचक खमासमणना दूहा ॥

छत्रीश छत्रीशी गुणे, युग प्रधान मुणींद ।
निजमत परमत जाणता, नमो तेह सूरींद ॥१॥
ध्यातां आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानीरे ।
पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणीरे ॥१॥
॥ वीर० ॥२॥

प्रदक्षिणा दइ स्वस्तिक करी खमा० देइ बोलवाना आचार्यपदना ३६ गुणगर्भित नमस्कार पदो.

—०—

१ श्रीप्रातिरूपगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः
२ श्रीतेजस्वितागुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः
३ श्रीयुगप्रधानागमगुणविभूषिताय श्रीआचार्यायनमः
४ श्रीमधुरवाक्यगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः
५ श्रीगाम्भीर्यगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः
६ श्रीधैर्यसुबुद्धिगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

७ श्री उपदेशतत्परतागुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

८ श्रीअपरिश्राविगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

९ श्रीसौम्यप्रकृतिगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

१० श्रीसंग्रहशीलतागुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

११ श्रीअभिग्रहगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

१२ श्रीअविकत्थकगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

१३ श्रीअचपलतागुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

१४ श्रीप्रशान्तहृदयगुणविभूषिताय श्रीआचार्यायनमः

१५ श्रीक्षमाधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

१६ श्रीमार्दवधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

१७ श्रीआर्जवधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

१८ श्रीमुक्तिधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचायाय नमः

१९ श्रीतपोधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचायाय नमः

२० श्रीसंयमधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

२१ श्रीसत्यधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचायाय नमः

२२ श्रीशौचधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

२३ श्रीआकिंचन्यधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः
२४ श्रीब्रह्मचर्यधर्मगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः
२५ श्रीअनित्यभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्री-
आचार्याय नमः
२६ श्रीअशरणभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्रीआ-
चार्याय नमः
२७ श्रीसंसारभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्रीआ-
चार्याय नमः
२८ श्रीएकत्वभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्रीआ-
चार्याय नमः
२९ श्रीअन्यत्वभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्री-
आचार्याय नमः
३० श्रीअशुचित्वभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्री-
आचार्याय नमः
३१ श्रीआश्रवभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्रीआ-
चार्याय नमः
३२ श्रीसंवरभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्रीआ-
चार्याय नमः

३३ श्रीनिर्जराभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

३४ श्रीलोकस्वभावभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्री आचार्याय नमः

३५ श्रीबोधिदुर्लभत्वभावनाभावितत्वगुणविभूषिताय श्रीआचायाय नमः

३६ श्रीधर्मकथकार्हन्त एव इति भावनाभावितत्वगुण-विभूषिताय श्रीआचार्याय नमः

—०—

श्रीआचार्य भगवंतना ३६ गुणोनी हृदयमां भावना रहेवा नमस्कारपदोनो अर्थ.

१ जेमना देखतां पूर्वमहापुरुषो श्री गौतमस्वामी आदि स्मृतिमां आवे तेवा स्वरूपवन्त होय ते प्रतिरूप गुण.

२ सुर्य समान तेजस्वी प्रतापवंत॰ते तेजस्विता गुण.

३ युगप्रधान भगवंत समान ज्ञानवंत॰ ते युगप्रधानागम गुण.

४ अमृतसरखा मधुरवचनवान्० ते मधुर वाक्य गुण.

५ समुद्र सरखा गंभीरता गुणवान्० ते गाम्भीर्य गुण.

६ उत्तमबुद्धिनिधान धैर्यतावान्० ते धैर्य सुबुद्धि गुण.

७ उपदेश देवामां हमेशां परायण० ते उपदेश तत्परता गुण.

८ जेमने निवेदन करेली गुह्य वात होठ बहार जाय नहि ते अपरिश्रावि गुण.

९ चन्द्र समान सौम्य शीतल स्वभाववंत० ते सौम्य-प्रकृति गुण.

१० गच्छ हितने माटे जोइतो संग्रह करवाने स्वभाव-वंत० ते संग्रहशीलता गुण.

११ द्रव्य क्षेत्र काल भावथी विविध अभिग्रहधारी होय ते अभिग्रह गुण.

१२ आत्मश्लाघा नहि करनार ते अविकत्थक गुण.

१३ पर्वत सरखा चलायमान थाय नहि ते अचल स्थि-रता गुण.

१४ वैराग्यरंजित हृदयवंत होय ते प्रशांत गुण.

१५ क्षमाधर्मथी विभूषित० ते क्षमा गुण.

१६ कोमळता धर्मथी विभूषित० ते मार्दव गुण.

१७ सरळता धर्मथी विभूषित० ते आर्जव गुण.

१८ बाह्याभ्यन्तर परिग्रहथी मुक्त मुक्तिधर्मथी विभूषित० ते मुक्ति गुण.

१९ बाह्याभ्यंतर बारभेदे तपधर्मथी विभूषित० ते तपो गुण.

२० सत्तरप्रकारे संयमधर्मथी विभूषित० तें संयम गुण.

२१ सत्यता धर्मथी विभूषित० ते सत्य गुण.

२२ शुचिगुणपवित्रता संयममां निरतिचारपणारूप धर्मथी विभूषित० ते शौच गुण.

२३ शरीर धर्मोपकरणादि विषे पण निर्ममत्व धर्मथी विभूषित० ते आकिंचन्य गुण.

२४ नववाड सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य धर्मथी विभूषित० ते ब्रह्मचर्य गुण.

२५ शरीरादि सर्व अनित्य छे ते अनित्यत्व भावनाभावितत्व गुण.

२६ मात पिता विगेरे कोइनुं पण शरण नथी ते अशरणत्वभावनाभावितत्व गुण.

२७ चतुर्गति संसार केवल दुःखनी खाण छे विगेरे संसारभावनाभावितत्व गुण.

२८ जीव एकलो आव्यो छे एकलो जाय छे एकलो कर्म बांधे छे, भोगवे छे विगेरे एकत्वभावना० गुण.

२९ शरीरादि बाह्य वस्तुथी आत्मा भिन्न छे तेवी अन्यत्व भावना० गुण.

३० मलमूत्रनी खाण शरीर अशुचिनो भंडार छे तेवी अशुचित्व भावना० गुण.

३१ मिथ्यात्व अविरति कषाय अने योग विगेरे कर्म आववाना मार्ग छे ते आश्रव भावना० गुण.

३२ समिति गुप्ति आदि कर्म अटकाववाना मार्ग छे ते संवर भावना० गुण.

३३ बाह्य अभ्यन्तर तप कर्म खपाववाना मार्ग छे ते निर्जरा भावना० गुण.

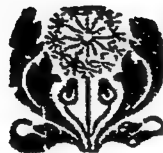
३४ चौदराज लोकनुं षड्द्रव्यादिनुं स्वरूप चिन्तववा रूप लोकस्वभाव भावना० गुण.

३५ सर्व वस्तु सुलभ छे पण केवली प्रणीत धर्मनी श्रद्धारूप बोधि दुर्लभ छे ते बोधि भावना० गुण०

३६ धर्मना कहेनार श्री तीर्थंकर प्रभुज छे ते धर्म-कथक दुर्लभत्वभावना० गुण.

आ ३६ गुणे विभूषित श्री आचार्य भगवंतने म्हारो नमस्कार थाओ श्री आचार्य पदाराधननो काउस्सग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र "छत्तीसगुणविभूसिय सिरिआयरियपयाराहणत्थं काउस्सग्गं करेमि" (षट्-त्रिंशद्गुणविभूषितश्रीआचार्यपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे बोलवुं ३६ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो जा-पपद ओँ ह्रीँ नमो आयरियाणं" जपवुं आ दिवसे श्री आचार्य पदमां जेम विशेष लीनता थाय तेम आचार्य गुणोनुं ध्यान स्मरण विशेष करवुं.

शेष तमाम विधि पूर्वनी माफक [प्रथम दिवसनी जेम] जाणवो, मात्र शासनस्तंभ गच्छधोरी आचार्य भगवंतनुं ध्यान पीतवर्णे करवानुं होवाथी चणानी दाळना द्रव्यनुं आयंबिल करवुं उचित छे.





श्री उपाध्यायपदाराधन

चतुर्थ दिवसनुं कर्त्तव्य.

श्री उपाध्याय माहात्म्य तथा तेमना गुणोनो विचार.

शास्त्रप्रतिपादित यथार्थ विधिसहित सकल शास्त्राध्ययन पूर्वक शुद्ध चारित्राराधनमां लीन रही केवल उपकारक दृष्टिथी साधुसमुदायने अनेक प्रकारे संयम सेवनामां, मुक्तिमार्गमां साहाय्यता आपी पत्थर समान जडबुद्धि शिष्योने पण शास्त्रप्रवीण बनावे, उत्तम आचारमां सुविनीत नीपजावे, तेवा आचार्य पदनी योग्यतावान् सकल श्री संघना साहाय्यक श्री उपाध्याय भगवंतना अनेक गुणो पैकी अगीयार अंग

तथा चौद पूर्वना पाठकता रूप तेमना असाधारण पचीश गुणोनुं ध्यान तथा जाप विगेरे करी आत्माने तन्मय बनाववा आ दिवसनी आराधना छे. जो के श्री उपाध्यायजी भगवान्ना पचीश गुणोनी अनेक पचीशीओ शास्त्रमां वर्णवेली छे तो पण मुख्य उपरोक्त पचीशीनुं अथवा अन्यत्र आराधनामां ११ अगीयार अंग १२ बार उपांग, १ चरणसित्तरी, १ करणसित्तरी [अथवा १ द्वादशांगी सूत्रपाठकता अने १ द्वादशांग्यर्थपाठकता,) रूप पचीशीनी आराधना कराय छे.

श्री उपाध्याय पदना २५ गुणो.

इक्कारस अंगाइं, चउदस पुव्वाइं जो अहिज्जेइ ।
अज्झावेइ परेसिं, पणवीसगुणो उवज्झाओ ॥१॥
अंग अग्यार भणे तथा, चउद पूर्व वळी जेह ।
परने भणावे प्रेमथी, उपाध्याय गुण एह ॥१॥

श्रीउपाध्यायपद नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक खमासणना दूहा.

बोध सूक्ष्म विणु जीवने, न होय तत्त्व प्रतीत।
भणे भणावे सूत्रने, जयजय पाठक गीत ॥१॥

तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्यातारे।
उपाध्याय ते आतमा जगबंधव जगभ्राता रे॥१॥वीर०

॥ श्री उपाध्याय भगवंतना २५ गुण ...गुणविभू- नमस्कार पदो.

१ श्रीआचारांगसूत्रपठनपाठन ठनतत्परतागुणविभू- नमः ॥
तेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नम

२ श्रीसूत्रकृतांगसूत्रपठनपाठनत ठनतत्परतागुणविभू- मः ॥
भ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

३ श्रीस्थानांगसूत्रपठनपाठनतत्परत तत्परतागुणविभूषि-
श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनपाठनतत्परतागु नतत्परतागुण-
भ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

५ श्रीभगवत्यंगसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूषिते-
भ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

६ श्रीज्ञाताधर्मकथांगसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणवि-
भूतेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

७ श्रीउपासकदशांगसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
षितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

अ॰ श्री अन्तकृद्दशांगसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
[अथवा १ ४॰ श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥
ग्यर्थपाठकता,) रू॰ तिकदशांगसूत्रपठनपाठनतत्परता-
श्री उपाध्यायेभ्यो नमः
श्री उपा गांगसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणवि-
उपाध्यायेभ्यो नमः

इक्कारस अंगाइं
अज्झावेइ परो सूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूषिते-
अंग अग्यार पाध्यायेभ्यो नमः

परने भ॰ दपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूषिते-
ः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

१३ श्रीअग्रायणीयपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
षितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

१४ श्रीवीर्यप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
षितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

१५ श्रीअस्तिनास्तिप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परता-
गुणविभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

१६ श्रीज्ञानप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
तेभ्यःश्री उपाध्यायेभ्यो नमः ॥

१७ श्रीसत्यप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
षितेभ्यः श्री उपाध्यायेभ्यो नमः ॥

१८ श्रीआत्मप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
षितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

१९ श्रीकर्मप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूषि-
तेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

२० श्रीप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुण-
विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

२१ श्रीविद्याप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

२२ श्रीकल्याणप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

२३ श्रीप्राणावायपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥

२४ श्रीक्रियाविशालपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूषितेभ्यः उपाध्यायेभ्यो नमः ॥

२५ श्रीलोकबिन्दुसारपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूषितेभ्यः श्री उपाध्यायेभ्यो नमः ॥

॥ श्रीउपाध्याय भगवंतना २५ गुणोनी हृदयमां भावना रहेवा नमस्कार पदोना अर्थ ॥

---

१ श्रीआचारांग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

२ श्री सुयगडांग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

३ श्रीठाणांग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

४ श्री समवायांग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

५ श्री भगवतीअंग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

६ श्रीज्ञाताधर्मकथांग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

७ श्री उपाशकदशांग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

८ श्री अंतगडदशांग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

९ श्री अणुत्तरोववाइय सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

१० श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

११ श्री विपाकअंग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर.

१२ एक क्रोड पदप्रमाण द्रव्यना उत्पाद, व्यय अने ध्रौव्यपणानुं स्वरूप बतावनार पहेलुं उत्पाद-पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

१३ ९६ लाख पदप्रमाण, सर्व प्रकारना बीजनी कुल संख्या बतावनार बीजुं अग्रायणीय पूर्व भणवा भ-णाववामां तत्पर.

१४ ७० लाख पदप्रमाण, वीर्य जे बळ-प्रयत्न तेनो अर्थ वीर्यवन्तनुं स्वरूप कहेनार त्रीजुं वीर्यप्रवाद भणवा भणाववामां तत्पर.

१५ ६० लाख पदप्रमाण कुल अस्तिनास्तिस्वभाव-रूप सप्तभंगीने स्याद्वादनुं स्वरूप बतावनार चोथुं अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

१६ एक उणा क्रोड पद प्रमाण मति विगेरे पांचे ज्ञाननुं स्वरूप बतावनार पांचमुं ज्ञान प्रवाद पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

१७ एक क्रोडने छ पद प्रमाण सत्यादि भाषानुं स्वरूप अने भाष्यभाषक तेमज वाच्यवाचकनुं स्वरूप कहेनार छठ्ठुं सत्यप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

१८ छवीशक्रोड पदप्रमाण आत्मद्रव्यनुं कर्तृत्व, भोक्तृत्व व्यापकत्व नित्य, अनित्यादि स्वरूप कहेनार सातमुं आत्मप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

१९ एक क्रोडने एंशीलाख पद प्रमाण आठे कर्मोना बंध, उदय, उदीरणा विगेरेनुं स्वरूप कहेनार आठमुं कर्मप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

२० ८४ लाख पद प्रमाण सर्व प्रकारना पच्चख्खाणनुं

स्वरूप द्रव्य, भाव, निश्चय, व्यवहारथी उपादेय प्रमुख सर्व शैली बतावनार नवमुं पच्चक्खाणप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

२१ एक क्रोडने दश लाख पद प्रमाण गुरु लघु अंगुष्ठसेना प्रश्नादि सातसें विद्याआनुं तेमज रोहिणी प्रमुख ५०० महाविद्याओनुं स्वरूप बतावनार दशमुं विद्याप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

२२ छवीश क्रोड पदप्रमाण, सर्व ज्योतिष् शास्त्रनुं स्वरूप, त्रेशठ शलाका पुरुषोनुं स्वरूप, चार प्रकारना देवोनुं स्वरूप अने पुण्यना फलनुं स्वरूप बतावनार अग्यारमा कल्याणप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

२३ तेर क्रोड पदप्रमाण आयुर्वेदादि आठ प्रकारनी चिकित्सा, प्राण, अपान उदानादि वायुनुं स्वरूप तथा पंच महाभूतनुं स्वरूप अने प्राणायामादि योगनुं स्वरूप बतावनार बारमा प्राणावायपूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

२४ नव क्रोड पदप्रमाण छंदःशास्त्र, शब्दशास्त्र, व्याकरण, सर्वशिल्प, सर्वजातनी कला, सर्व गुण ज तात्त्विक उपाधिरूप छे तेनुं स्वरूप बतावनार तेरमुं क्रियाविशाल पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

२५ बार क्रोडने पचास लाख पदप्रमाण, अथवा कर्मग्रंथ अभिप्राये साडाबार लाख पदप्रमाण. [तत्त्व केवलिगम्य] छ आरा विगेरे काळनुं स्वरूप व्यवहार विधि, सर्व वस्तुना परिकर्म अने निःशेष श्रुतसंपदाथी भरपूर चौदमुं 'लोकबिन्दुसार' पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

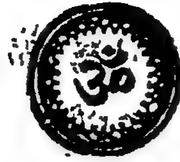
आ अगीयार अंग तथा चौद पूर्व भणवा भणाववामां तत्परता रूप २५ गुणोथी विभूषित श्री उपाध्याय भगवंतने म्हारो नमस्कार थाओ.

श्री उपाध्याय पदाराधननो काउस्सग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र "पणवीसइगुणविभूसियसिरि उवज्झायपयाराहणत्थं काउस्सग्गं करेमि" (पञ्चविंशतिगुणविभूषित श्री उपाध्यायपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे बोलवुं.

२५ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, जापपद ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं " जपवुं आ दिवसे श्री उपाध्याय पदमां जेम विशेष लीनता थाय तेम श्री उपाध्यायना गुणोनुं ध्यान स्मरण विशेष करवुं.

शेष तमाम विधि पूर्वनी माफक जाणवो. मात्र भव्य जीवोना महान् उपकारक श्री उपाध्यायजी भगवाननुं नीलवर्णे ध्यान करवानुं होवाथी मगनी दाळना द्रव्यनुं आयंबिल करवुं उचित छे,





श्री साधुपदाराधन पंचम दिवसनुं कर्त्तव्य

श्री साधुपद माहात्म्य तथा तेमना गुणोनो विचार ॥

आत्माने तत्त्वज्ञानथी वासित करी, सांसारिक सुखोनी असारता जाणी, जन्म मरणना अनन्त दुःखोना बन्धनथी त्रास पामी, संसारभ्रमण टाळवा तथा शाश्वत सुखोमां उत्तरोत्तर स्थिर थवा आत्मशक्ति प्रकाश करनार, सांसारिक बन्धनो तोडी अनन्तभवे दुर्लभ, शाश्वत आनन्दमय मुक्तिपदप्रापक, उज्वल रत्नत्रयिनुं आराधन करवा तेना पालक सद्गुरु चरणनुं अवलंबन लइ अप्रमत्तपणे केवल आत्मामां ज लक्ष्य राखी आवता कर्मने रोकनार, शुद्ध संयमनुं प्रतिपालन करनार अने आत्मार्थी जनोने जिनशासन रूप प्रासादमां प्रवेश करवाने द्वारसमान, प्रवेश करेलाओने यथाशक्ति सत्य मार्ग बतावी साहाय्य आपनार, भव्य

जीवोना महान् उपकार करनार, रमणीय गुणोना भंडार साधु भगवंतोना अनेक गुणो पैकी २७ गुणोनुं ध्यान तथा जापादि करी आत्माने तद्रूप बनावना आ दिवसनी आराधना छे. जो के साधु भगवंतोना गुणोनी सत्तावीशीओ अनेक प्रकारे शास्त्रोमां वर्णवी छे छतां मुख्यताए आ आगळ बतावेल २७ गुणोए ध्यान तथा जाप कराय छे.

॥ श्री साधुपदना २७ गुणो ॥

छव्वय ६ छकायरक्खा १२, पंचिंदिय १७ लोहनि-
ग्गहो १८ खंती १९ ॥
भावविसुद्धी २० पडिले-हणाइकरणे विसुद्धी २१य ॥१॥
संजमजोगे जुत्तो २२, अकुसलमणवयणकायसंरोहो २५।
सीयाइपीडसहणं २६, मरणंतुवसग्गसहणं २७ च ॥२॥
सत्तावीस गुणेहिं, अन्नेहिं जो विभूसिओ साहू ।
जिणपासायपवेसे, दुयारसमो रम्मगुणनिवहो ॥ ३ ॥
व्रत छ काय रक्षण तथा, इन्द्रिय लोभनिरोध ।
क्षमाभाव शुद्धि वळी, पडिलेहणादि विशोध ॥१॥

संयमयोगे युक्तता, अशुभ मन वच काया शान्त ।
शीतादि परीषह तथा, मरणोपसर्ग सहंत ॥ २ ॥
इम सगवीस गुणावलि, मौक्तिकमाल धरंत ।
मुक्तिमार्गसाधक मुनि, रमणीय गुण सोहंत ॥ ३ ॥

श्रीसाधुपदना नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक

॥ खमासमणना दुहाओ ॥

स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समतासंग ॥
साधे शुद्धानन्दता, नमो साधु शुभरंग ॥ १ ॥
अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवी हरखे नवि शोचेरे ।
साधुसुधा ते आतमा, शुं मुंडे शुं लोचेरे ॥वीर०॥

॥ श्रीसाधुपदना २७ गुणगर्भित नमस्कार पदो ॥

१ सर्वतः प्राणातिपातविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्यः श्रीसाधुभ्यो नमः

२ सर्वतो मृषावादविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्यः श्रीसाधुभ्यो नमः

३ सर्वतोऽदत्तादानविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्यः श्री-
साधुभ्यो नमः

४ सर्वतो मैथुनविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्यः श्री-
साधुभ्यो नमः

५ सर्वतः परिग्रहविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्यः श्री-
साधुभ्यो नमः

६ सर्वतो रात्रिभोजनविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्यः श्री-
साधुभ्यो नमः

७ सर्वतः पृथ्वीकायरक्षणगुणविभूषितेभ्यः श्रीसाधु-
भ्यो नमः

८ सर्वतोऽप्कायरक्षणगुणविभूषितेभ्यः श्रीसाधुभ्यो
नमः

९ सर्वतः तेजस्कायरक्षणगुणविभूषितेभ्यः श्रीसाधु-
भ्यो नमः

१० सर्वतो वायुकायरक्षणगुणविभूषितेभ्यः श्रीसाधु-
भ्यो नमः

११ सर्वतो वनस्पतिकायरक्षणगुणविभूषितेभ्यः श्री-
साधुभ्यो नमः

१२ सर्वतो द्वीन्द्रियादित्रसकायरक्षणगुणविभूषितेभ्यः श्रीसाधुभ्यो नमः

१३ सर्वतः स्पर्शनेन्द्रियविषयनिग्रहगुणाविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः

१४ सर्वतो रसनेन्द्रियविषयनिग्रहगुणाविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः

१५ सर्वतो घ्राणेन्द्रियविषयनिग्रहगुणाविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः

१६ सर्वतश्चक्षुरिन्द्रियविषयनिग्रहगुणाविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

१७ सर्वतः श्रोत्रेन्द्रियविषयनिग्रहगुणाविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

१८ सर्वतो लोभनिग्रहगुणाविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

१९ सर्वतः क्षमागुणाविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

२० सर्वतो भावविशुद्धिगुणाविभूषितेभ्यः साधुभ्यो नमः ॥

२१ सर्वतः प्रतिलेखनादिक्रियाविशुद्धिगुणविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

२२ सर्वतः संयमयोगयुक्ततागुणविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

२३ सर्वतोऽकुशलमनोयोगनिरोधगुणविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

२४ सर्वतोऽकुशलवचनयोगनिरोधगुणविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

२५ सर्वतोऽकुशलकाययोगनिरोधगुणविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

२६ सर्वतःशीतादिपरिषहसहनशीलतागुणविभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः ॥

२७ सर्वतो मारणान्तिकोपसर्गसहिष्णुतागुणविभूषितेभ्यः श्रीसाधुभ्यो नमः ॥

साधुना सत्तावीस गुणोनी हृदयमां भावना रहेवा माटे नमस्कार पदोना अर्थ ॥

---

१ सर्वथा जीवहिंसाथी विरमवा रूप पहेलुं महाव्रत.

२ सर्वथा असत्य वचनथी विरमवारूप बीजुं महाव्रत

३ सर्वथा नही दीधेलुं लेवाथी विरमवारूप त्रीजुं महाव्रत
४ सर्वथा मैथुन सेववाथी विरमवारूप चोथुं महाव्रत.
५ सर्वथा परिग्रहमूर्छाथी विरमवारूप पांचमुं महाव्रत.
६ सर्वथा रात्रिभोजनथी विरमवारूप छठ्ठुं महाव्रत.
७ सर्वथा पृथ्वीकायजीवोना रक्षणरूप साधुधर्म.
८ सर्वथा अप्काय जीवोना रक्षणरूप साधुधर्म.
९ सर्वथा तेउकाय जीवोना रक्षणरूप साधुधर्म.
१० सर्वथा वायुकाय जीवोना रक्षणरूप साधुधर्म.
११ सर्वथा वनस्पतिकाय जीवोना रक्षणरूप साधुधर्म.
१२सर्वथा वेइंद्रियादित्रसकायजीवोना रक्षणरूप साधुधर्म.
१३ सर्वथा स्पर्शेन्द्रियनो विषयनिग्रह करवारूप साधुधर्म.
१४ सर्वथा रसनेन्द्रियनो विषयनिग्रह करवारूप साधुधर्म.
१५ सर्वथा घ्राणेंन्द्रियनो विषय निग्रह करवारूप साधुधर्म.
१६ सर्वथा चक्षुरिन्द्रियनो विषयनिग्रह करवारूप साधुधर्म
१७ सर्वथा श्रोत्रेन्द्रियनो विषयनिग्रह करवारूप साधुधर्म.
१८ सर्वथा लोभकषायने निग्रह करवारूप साधुधर्म
१९ सर्वथा क्रोधने उपशम करवारूप क्षमा धर्मरूप साधुधर्म

२० सर्वथा भावविशुद्धिरूप साधुधर्म

२१ सर्वथा पडिलेहणादिक क्रियामां शुद्धि राखवा स्वरूप साधुधर्म.

२२ सर्वथा संयम व्यापारमां उपयोग राखवा स्वरूप साधुधर्म.

२३ सर्वथा अशुभमनोयोगने रूंधवा स्वरूप साधुधर्म.

२४ सर्वथा अशुभ वचनयोगने रूंधवा स्वरूप साधुधर्म.

२५ सर्वथा अशुभ काययोगने रूंधवा स्वरूप साधुधर्म.

२६ सर्वथा शीतादिपरिषहोने सहनशीलता स्वरूप साधुधर्म

२७ सर्वथा मारणान्तिक उपसर्गोने पण सहन करवा स्वरूप साधुधर्म.

आ २७ गुणोथी विभूषित श्री साधु भगवंतोने म्हारो नमस्कार थाओ. श्रीसाधु पदाराधननो काउस्सग्ग पूर्वनी माफक जाणवो. मात्र "सगवीसइगुणविभूसियसिरिसाहुपयाराहणत्थं काउस्सग्गं करेमि" (सप्तविंशतिगुणविभूषित श्रीसाधुपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे बोलवुं २७ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, जाप पद "ॐ ह्रीं नमो लोए

सव्वसाहूणं जपवुं, आ दिवसे श्रीसाधुपद स्वरूपमां आत्मानी विशेष लीनता थाय तेम साधु भगवंतना गुणोनुं ध्यान स्मरण करवुं.

शेष तमाम विधि पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र मुक्तिमार्गना साधनभूत श्री साधुभगवंतोनुं श्यामवर्णे ध्यान करवानुं होवाथी अडदनी दाळना द्रव्यनुं आयंबिल करवुं उचित छे.





श्री सम्यग्दर्शनपदाराधन छठ्ठा दिवसनुं कर्त्तव्य.

श्री सम्यग्दर्शन माहात्म्य तथा गुणविचार.

श्री सर्वज्ञ भगवंते प्रतिपादन करेला जीव, अजीव, पुण्य पाप, आश्रव, संवर, बंध, निर्जरा, मोक्ष ए नवे तत्त्वो, षड्द्रव्यो, चार निक्षेपा, सप्तनय प्रमाण सप्तभंगी, द्रव्य क्षेत्र काल भाव आदि तमाम पदार्थोनी श्रद्धामय अनन्तानुबन्धी ४ तथा मिथ्यात्वमोहनीयादि क्षय क्षयोपशम उपशमथीज प्रगट थयेल निर्मल आत्मपरिणाम स्वरूप, ज्ञान चारित्रादि सकल आत्मगुणोनो पायो श्री सम्यग्दर्शन रूप आत्मधर्म अनेक स्वरूपो पैकी ६७ स्वरूपोए जीवोना सात्विक आनन्द रूप उपकार गुणे ध्यान–जाप करवा योग्य छे. एक बाजु लौकिक लोकोत्तर सर्वधर्मो एकत्रित करो अने एक बाजु एकलुं सम्यग्दर्शन मुको पण सम्यग्दर्शन-

नी तुलनामां कोइ आवी शके तेम नथी, आवा अनेक परमगुणमय सम्यग्दर्शनना प्रतापेज देवनुं देवत्व अने गुरुनुं गुरुत्व, पूजा, वन्दन, भक्ति, बहुमानादिने योग्य छे ते ध्यान करवा योग्य सम्यक्त्वनुं ६७ भेद स्वरूप आ छे. श्रीतीर्थंकर प्रतिपादित आराधित श्री सम्यग्दर्शनादि चारे गुणोनुं उज्वल श्वेतवर्णे ध्यान करवानुं होवाथी उज्वल चोखाना द्रव्यनुं आयंबिल करवुं उचित छे.

श्री सम्यग्दर्शनना ६७ भेद स्वरूप

चउसद्दहण ४ तिलिंगं ७, दसविणय १९ तिसुद्धि २० पंचगयदोसं । २५ अट्ठपभावणं ३३ भूसण ३८ लक्खण ४३ पंचविहसंजुत्तं ॥१॥

छव्विहजयणा ४९ गार ५५ छब्भावणभावियं ६१ च छट्ठाणं ६७॥ इयसत्तसट्ठि लक्खण भेयविसुद्धं च सम्मत्तं ॥२॥

चउसद्दहणा ४ तिलिंग ७ छे, दशविध विनय १७ विचारोरे ॥

त्रणशुद्धि २० पण दूषण २५ आठ प्रभावक धा
३३ ॥ १ ॥

प्रभावक अडपंच भूषण ३८ पंचलक्षण ४३ जाणीये,
षट् जयणा ४९ षट् आगार ५५ भावना छव्विहा ३१
मन आणीये ॥

षट्ठाण समकित तणा, सडसठ, भेद एह उदार ए, ।
एहनो तत्व विचार करतां लहीजे भवपार ए ॥२॥

श्रीसम्यग्दर्शनना नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक
खमासमणना दूहाओ.

लोकालोकना भाव जे, के वलिभाषित जेह ।
सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ॥१॥
शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशमे जे आवेरे ।
दर्शन तेहीज आतमा, शुं होय नाम धरावेरे ॥१
श्रीस वीर जिने०

॥ दर्शनपद ६७ भेदगर्भित नमस्कार पदो ॥

१ परमार्थसंस्तवश्रद्धानस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
२ परमार्थज्ञातृसेवनस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
४ कुदर्शनवर्जनस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
५ शुश्रूषालिङ्गस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
६ धर्मरागलिंगस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
७ वैयावृत्त्यलिंगस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
८ अर्हद्विनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
९ सिद्धविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
१० चैत्यविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
११ श्रुतविनय स्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
१२ क्षमादिधर्मविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
१३ साधुवर्गविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
१४ आचार्यविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
१५ उपाध्यायविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

१६ प्रवचनरूपसंघविनयस्व० श्री सम्यग्दर्शनाय नमः

१७ दर्शनविनयस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

१८ मनः शुद्धि स्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

१९ वचनशुद्धिस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२० कायशुद्धिस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२१ शंकादूषणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२२ कांक्षादूषणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२३ विचिकित्सादूषणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२४ मिथ्यादृष्टिप्रशंसादूषणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२५ मिथ्यादृष्टिसंसर्गदूषणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२६ प्रवचनप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२७ धर्मकथिकप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२८ वादिप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२९ नैमित्तिकप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३० तपस्विप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३१ विद्याभृत्प्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३२ सिद्धप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३३ कविप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३४ जिनशासनक्रियाकौशलभूषणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३५ प्रभावनाभूषणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३६ तीर्थसेवाभूषणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३७ स्थैर्यभूषणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३८जिनशासनभक्तिभूषणस्वरूप श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३९ उपशमलक्षणस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

४० संवेगलक्षणस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

४१ निर्वेदलक्षणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

४२ अनुकम्पालक्षणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

४३ आस्तिक्यलक्षणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

४४ परतीर्थिकदेवपरतीर्थिकगृहीताजिनप्रतिमावन्दनत्यागरूपयतनास्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

४५ परतीर्थिकदेवपरतीर्थिकगृहीतजिनप्रतिमानमन-
त्याग० यतनास्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

४६ मिथ्यादृष्टिसहालापवर्जन०यतनास्व०श्रीसम्यग्द-
र्शनाय नमः

४७ मिथ्यादृष्टि सहसंलापवर्जन०यतनास्व०श्रीसम्यग्-
दर्शनाय नमः

४८ मिथ्यादृष्टिअन्नपानदानवर्जन०यतनास्व० श्रीस-
म्यग्दर्शनाय नमः

४९ मिथ्यादृष्टिवारंवारान्नपानदानवर्जन०यतनास्व०
श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

५० राजाभियोगाकारयुक्ततास्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय०

५१ गणाभियोगाकार „ „ श्रीसम्यग्दर्शनाय०

५२ बलाभियोगाकार „ „ श्रीसम्यग्दर्शनाय०

५३ देवाभियोगाकार „ „ श्रीसम्यग्दर्शनाय०

५४ गुरुनिग्रहाकारयुक्तस्व० श्री „ „

५५ श्रीवृत्तिकान्ताराकारयुक्ततास्वरूप श्रीसम्य०

५६ श्रीधर्मवृक्षमूलमिति भावनास्व० श्रीसम्य०

५७ श्रीधर्मपुरद्वारमिति भावनास्व० श्रीसम्य० „
५८ श्रीधर्मप्रासादप्रतिष्ठानमिति भावनास्वरूपश्रीसम्य०
५९ श्रीधर्माधार इति भावनास्व० श्रीसम्यग्० „
६० श्रीधर्मभाजनामिति भावनास्व० श्रीसम्यग्० „
६१ श्रीधर्मनिधानमिति भावनास्व० श्रीसम्यग्० „
६२ श्रीअस्ति जीव इति श्रद्धास्थानस्वरूपश्रीसम्यग्०
६३ श्रीनित्यानित्यो जीव इति श्रद्धास्थानस्वरूप श्री „
३४ श्रीकर्मणः कर्ता जीव इति श्रद्धास्थानस्व० श्री „
६५ श्रीकर्मणो भोक्ता जीव इति श्रद्धास्थानस्व० श्री „
६६ श्रीजीवस्य मोक्षोऽस्तीति श्रद्धास्थानस्व० श्रीसम्यग्
६७ श्रीमोक्षोपायोऽस्तीति श्रद्धास्थानस्व० श्रीसम्यग्०

सम्यग्दर्शनना ६७ भेदोनी हृदयमां भावना राखवा माटे नमस्कार पदोनो अर्थविचार.

---

१ प्रवचनप्रतिपादित जीवादिक नवतत्त्वोनी अर्थ-विचारणा करी श्रद्धा राखवी ते परमार्थसंस्तव.

१ परमार्थना जाणनार मुनिओनी आराधना करवी ते परमार्थज्ञातृसेवन.

२ समकितथी भ्रष्ट थयेला निन्हवो, पासत्था, कुशलीया, वेषविडंबको तेओथी अलग रहेवा रूप व्यापन्नदर्शनवर्जन.

३ मिथ्यात्ववासित जीवोना संसर्गने त्याग करवो ते कुदर्शनवर्जन.

५ धर्मश्रवण करवानी तीव्र अभिलाषा ते शुश्रूषा.

६ धर्मउपर गाढरुचि ते धर्मराग.

७ देवगुर्वादिकनुं अप्रमत्तपणे वैयावच्च करवुं ते वैयावृत्य.

८ अरिहंत परमात्मानी भक्ति आदि जे विनय ते अर्हद्विनय.

९ कर्मरहित सिद्धभगवंतोनी भक्ति आदि विनय ते सिद्धविनय.

१० जिनेश्वर देवनी प्रतिमानो तथा चैत्योनी भक्ति आदि विनय ते चैत्यविनय.

११ आचारांग विगेरे अंग उपांग विगेरे सिद्धान्तोनो भक्ति आदि विनय ते श्रुतविनय.

१२ क्षमा आदिक दशधर्म प्रत्ये वहुमानादिक भक्ति आदि विनय ते क्षमादिधर्मविनय.

१३ क्षमादि धर्मना पालणहार साधु भगवंतोनो विनय ते साधुविनय.

१४ पांच आचारना पालक आचार्य भगवंतोनो भक्ति आदि विनय ते आचार्यविनय.

१५ सूत्र सिद्धान्तना भणावनार उपाध्याय भगवंतोनो भक्ति आदि विनय ते उपाध्यायविनय,

१६ तीर्थंकर देवोए स्थापन करलां चतुर्विध संघनो भक्ति आदि विनय ते प्रवचनविनय,

१७ क्षायिकादि सम्यक्त्वना भेदोनो भक्ति आदि विनय ते दर्शनविनय,

१८ श्री जिनेश्वर तथा जिनेश्वरप्रतिपादित तत्त्वो ते शिवाय तमाम जुठुं छे एवी जे दृढ अंतःकरणनी विचारणा ते मनःशुद्धि,

१९ जिनेश्वरनी भक्तिथी जे सिद्ध न थाय ते बीजाथी होइ शकेज नही एवी जे दृढता ते वचनशुद्धि,

२० छेदन भेदनादि अनेक प्रकारे सहन करता पण जिनेश्वर शिवाय बीजा देवने नमे नही ते कायशुद्धि,

२१ जिनेश्वरदेवना वचनमां सर्वथी के देशथी शंका न करवी ते शंकादूषणत्याग,

२२ अन्यमतनी सर्वथी के देशथी अभिलाषा न करवी ते कांक्षादूषणत्याग,

२३ धर्मना फळना संदेहादि न करवां तथा साधुना मळादिकनी जुगुप्सा न करवी ते विचिकित्सादूषणत्याग,

२४ मिथ्यादृष्टिना मिथ्यात्ववृद्धिकारक गुणोनी स्तवना न करवी ते मिथ्यादृष्टिप्रशंसादूषणत्याग.

२५ मिथ्यादृष्टि जीवोनी संगति न करवी ते मिथ्यादृष्टिसंसर्गदूषणत्याग,

२६ वर्त्तमानश्रुतना सूत्र अर्थना पारगामी ते प्रावचनिकप्रभावक,

२७ उपदेशादिकथी अनेक जीवोने रंजित करी प्रतिबोध करे ते धर्मकथिकप्रभावक,

२८ निपुणतर्कशास्त्रना जाणकार राजमंदिरमां पण जीतने मेळवनार ते वादिप्रभावक,

२९ परमतने जीतवा माटे अविरुद्धपणे निमित्तादिकने कहेनारा ते नैमित्तिकप्रभावक,

३० निर्निदानपणे शुद्धज्ञानपूर्वक तीव्र तपस्याने करनारा तपस्वीप्रभावक,

३१ विद्यामन्त्रादिके करीने वज्रस्वामि भगवाननी पेठे शासनोन्नति करनार ते विद्याभृत्प्रभावक,

३२ अंजनचूर्णादिकना योगथी कालिकाचार्य भगवंतनी माफक शासन उन्नति करनारा ते सिद्धप्रभावक,

३३ मधुर अर्थथी भरपूर अलंकारयुक्त धर्महेतुथी उत्तम काव्यो बनावी सिद्धसेनदिवाकरजीनी पेठे राजाने प्रतिबोध करनारने कविप्रभावक,

३४ प्रवचनप्रतिपादित क्रिया अनुष्ठानने विषे दक्षपणुं ते जिनशासनक्रियाकौशलभूषण,

३५ जेम जिनशासननी घणा जीवो अनुमोदना करे तेवा उत्तम प्रभावनाना कृत्यो करवां ते प्रभावना भूषण,

३६ संसार समुद्रथी तारनार स्थावर अने जंगम तीर्थोनी आराधना करवी ते तीर्थसेवाभूषण.

३७ सम्यक्त्वधर्मथी कोइनाथी पण चलायमान थाय नही ते स्थैर्यभूषण,

३८ देवगुर्वादिकनी भक्ति करवी ते जिनशासनभक्तिभूषण.

३९ अपराधी जीवो उपर पण कोइजातनुं प्रतिकूल चिंतववुं नही ते उपशमलक्षण,

४० देव मनुष्यना सुखोने पण दुःखरूपे मानी केवल मुक्ति सुखनी अभिलाषा करवी ते संवेगलक्षण;

४१ केदीने केदमांथी, नारकीने नरकमांथी जेम नीकळवानी इच्छा, तेम संसारथी नीकळवानी इछा, ते निर्वेदलक्षण,

४२ दुःखी जीवो प्रत्ये द्रव्यथी अने धर्महीन प्रत्ये

भावथी जे अनुकम्पा करवी ते अनुकम्पालक्षण,
४३ जे जिनेश्वर देवे फरमाव्युं ते अन्यथा होइ शके नही, एवी जे दृढता ते आस्तिक्यलक्षण,
४४ परतीर्थी देवो तथा परतीर्थीओए ग्रहण करेली अर्हत्प्रतिमाओ ते प्रत्ये हाथ जोडवा विगेरेनो त्याग करवो ते वन्दनत्यागयतना कहेवाय.
४५ तेमना प्रत्ये मस्तक नमाववानो त्याग करवारूप बीजी नमनत्यागयतना,
४६ मिथ्यादृष्टिओए नहि बोलाये छते पहेलवहेलुं एक वखत बोलाववुं ते आलाप, तेनो त्याग करवो ते आलापत्यागयतना,
४७ वारंवार बोलाववानो त्याग ते संलापत्यागयतना,
४८ मिथ्यादृष्टिओने गौरवभक्तिसहित इच्छित अन्नादिआपवानो त्याग ते दानत्यागयतना,
४९ वारंवार ते प्रमाणे त्याग ते अनुप्रदानत्यागयतना,
५० नगरस्वामी राजा विगेरेनी आज्ञाथी जे करवुं पडे ते राजाभियोग आगार, १,

५१ लोकसमुदायने आधीन थइ करवुं पडे ते गणा-भियोग आगार, २

५२ चौरादिकना जोरथी जे करवुं पडे ते बलाभियोग आगार, ३

५३ क्षेत्रपाल विगेरे देवोना आधीनपणाथी करवुं पडे ते देवाभियोग आगार, ४

५४ पिता माता विगेरे वडीलोना हुकमथी करवुं पडे ते गुरुनिग्रह आगार, ५

५५ ज्यां आजीविकानी दुर्लभता होय तथा महामारी आदिना उपद्रवथी जे कांई करवुं पडे ते वृत्तिकान्तार आगार, ६

५६ धर्मरूप कल्पवृक्षनुं मूल सम्यग्दर्शन छे तेवी चिन्तवना करवी ते धर्ममूलभावना,

५७ धर्मरूप नगरमां प्रवेशकरवानो दरवाजो सम्यग्दर्शन छे तेवी जे भावना ते धर्मद्वारभावना.

५८ धर्मप्रासादना मजबूत पायारूप सम्यग्दर्शन छे तेवी जे भावना भाववी ते धर्मप्रतिष्ठानभावना,

५९ शम दम विगेरे धर्मना गुणोनो आधार सम्यग्दर्शन छे तेवुं जे भाववुं ते धर्माधारभावना.

६० शान्ति संवरादि स्वरूप अमृतरसने जीलवाने भाजन सरखुं सम्यग्दर्शन छे तेवुं जे मानवुं ते धर्मभाजनभावना.

६१ श्रुतज्ञान, शील विगेरे रत्नोनो भंडार सम्यगुदर्शन छे एवुं जे चिन्तववुं ते धर्मनिधानभावना.

६२ चैतन्यलक्षणथी जीवनामनो पदार्थ छे एवी जे श्रद्धा ते पहेलुं स्थान.

६३ पर्याये करीने जीव अनित्य छतां स्वस्वरूपे नित्य छे तेवी जे नित्यानित्यत्वविचारणा ते बीजुंस्थानक.

६४ कर्मनो कर्त्ता चेतन छे तेवुं भाववुं ते त्रीजुंस्थानक.

६५ कर्मना फलनो भोक्ता पण पोतेज छे तेवुं जे भाववुं ते चोथुं स्थानक,

६६ सकल कर्मनो क्षय थवाथी जीवनो मोक्ष थाय छे तेवुं जे भाववुं ते पांचमुं स्थानक.

६७ सम्यग्ज्ञानाक्रियास्वरूप मुक्ति पामवाना उपायो छे

तेवुं जे चिन्तववुं ते छट्ठुं स्थानक,

उपर कहेली ४ सद्दहणा ३ लिंग, १० विनय,३ शुद्धि, ५ दूषणत्याग, ८ प्रभावक, ५ भूषण, ५ लक्षण, ६ यतना ६ आगार, ६ भावना, ६ स्थान ए प्रमाणेना ६७ भेदे विभूषित श्रीसम्यग्दर्शनपदने मारो नमस्कार थाओ. सम्यग्दर्शनपदाराधननो काउसग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र सगसट्ठिगुणाविभूसियासिरिदंसणपयाराहणत्थं काउसग्गं करेमि (सप्तषष्टिगुणविभूषितश्रीदर्शनपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे बोलवुं. ६७लोगस्सनो काउसग्ग करवो, जाप पद ॐ ह्रीँ नमो दंसणस्स जपवुं, आ दिवसे श्रीसम्यग्दर्शन स्वरूपमां जेम विशेष लीनता थाय तेम सम्यग्दर्शनना स्वरूपनुं ध्यान स्मरण विशेष करवुं.

बाकीनो तमाम विधि पूर्वनी माफक, मात्र सम्यगदर्शन पदनुं शुक्लवर्णे ध्यान करवानुं होवाथी चोखाना द्रव्यनुं आंयंबिल करवुं उचित छे.



श्री ज्ञानपदाराधन सप्तम दिवसनो विधि.

श्रीज्ञानपदमाहात्म्य तथा तेना भेद विचार

जीवनुं शुद्ध चैतन्य स्वरूप, जड चेतननो विभाग, गुणदोष, भक्ष्याभक्ष्य, पेयापेय, हिताहित, कर्त्तव्याकर्त्तव्य, हेयोपादेय प्रमुख विवेकने जणावनार निविड कर्मोनी निर्जरानु परम साधन, मोह हाथीना मदने उतारवामां केसरी सिंह समान, श्रीसम्यग्दर्शननी निर्मलता तथा वृद्धिनुं कारण, इन्द्रियादि आश्रवस्थानोने काबुमां राखी कर्मबन्धने अटकावनार, राग द्वेषनी मन्दता करी शान्तिपदनुं परमस्थान देनार, जड वस्तुथी आत्मानो भेद समजवानुं मुख्य लिङ्ग; आत्माना मुख्य गुणरूप ज्ञानपदनुं आराधन करवा जो के अन्यत्र मुख्यभेदनी अपेक्षाये पाच

भेदोथी आराधन करवानुं जणावाय छे. तोपण आ स्थळे तेना ५१ भेदोथी ध्यान, नमस्कार विगेरे कराय छे.

श्री ज्ञानपदना ५१ भेद स्वरूप.

अष्टाविंशति भेदाढ्या, मतिः पूर्वमितं श्रुतम् ॥१॥
षोढा चाप्यवधिर्द्वेधा, मनःपर्यवमीरितम् ॥ १ ॥
एकं केवलमाख्यात-मेकपञ्चाशादित्यमी ।
ज्ञानभेदा जिनैरुक्ता भव्याम्भोजविकासकाः ॥ २ ॥
मति अठावीस भेद छे, श्रुतना चौद प्रकार ।
षड्विध ओही वर्णव्यो, मनःपर्यव दुगधार ॥ १
केवल एक वखाणीये, इम एकावन मान ।
ज्ञानभेद जिनवर कह्या, वंदु धरी बहुमान ॥ २

श्री ज्ञानपद नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक खमासमणना दूहाओ.

अध्यातम ज्ञाने करी, विघटे भवभ्रम भीति ।
सत्यधर्म ते ज्ञान छे, नमो नमो ज्ञाननी रीति ॥१॥

ज्ञानावरणीय जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थायरे ।
तो हूए एहीज आतमा, ज्ञान अबोधता जायरे ॥
वीर० ॥

श्री ज्ञानपदना ५१ भेद गर्भित नमस्कार पदो.

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहस्वरूप श्रीमतिज्ञानाय नमः
२ रसनेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहस्व०श्रीमतिज्ञानाय नमः
३ घ्राणेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहस्व०श्रीमतिज्ञानाय नमः
४ श्रोत्रेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहस्व०श्रीमतिज्ञानाय नमः
५ स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रहस्व०श्रीमतिज्ञानाय नमः
६ रसनेन्द्रियार्थावग्रहस्वरूपश्रीमतिज्ञानाय नमः
७ घ्राणेन्द्रियार्थावग्रहस्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
८ चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह० ,, मतिज्ञानाय नमः
९ श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रहस्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
१० मनोऽर्थावग्रहस्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
११ स्पर्शनेन्द्रियेहास्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
१२ रसनेन्द्रियेहास्व० ,, मतिज्ञानाय नमः

१३ घ्राणेन्द्रियेहास्वरूप श्रीमतिज्ञानाय नमः
१४ चक्षुरिन्द्रियेहा स्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
१५ श्रोत्रेन्द्रियेहास्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
१६ मनईहास्व० श्री मतिज्ञानाय नमः
१७ स्पर्शनेन्द्रियापायस्व० श्रीमतिज्ञानाय नमः
१८ रसनेन्द्रियापायस्वरूप० ,, मतिज्ञानाय नमः
१९ घ्राणेन्द्रियापायस्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२० चक्षुरिन्द्रियापायस्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२१ श्रोत्रेन्द्रियापायस्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२२ मनोऽपायस्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२३ स्पर्शनेन्द्रियधारणास्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२४ रसनेन्द्रियधारणास्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२५ घ्राणेन्द्रियधारणास्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२६ चक्षुरिन्द्रियधारणास्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२७ श्रोत्रेन्द्रियधारणास्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२८ मनोधारणास्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
२९ अक्षरस्व० श्री श्रुतज्ञानाय नमः

३० अनक्षरस्वरूप श्री श्रुतज्ञानाय नमः
३१ संज्ञिश्रुतज्ञानाय नमः
३२ असंज्ञि श्रुतज्ञानाय नमः
३३ सम्यक्श्रुतज्ञानाय नमः
३४ मिथ्याश्रुतज्ञानाय नमः
३५ सादिश्रुतज्ञानाय नमः
३६ अनादिश्रुतज्ञानाय नमः
३७ सपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः
३८ अपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः
३९ गामिकश्रुतज्ञानाय नमः
४० अगामिकश्रुतज्ञानाय नमः
४१ अंगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः
४२ अनंगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः
४३ आनुगामिकाऽवधिज्ञानाय नमः
४४ अनानुगामिकाऽवधिज्ञानाय नमः
४५ वर्धमानावधिज्ञानाय नमः
४६ हीयमानावधिज्ञानाय नमः

४७ प्रतिपात्यवधिज्ञानाय नमः

४८ अप्रातिपात्यवधिज्ञानाय नमः

४९ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः

५० विपुलमातिमनःपर्यवज्ञानाय नमः

५१ लोकालोकप्रकाशनश्रीकेवलज्ञानाय नमः



ज्ञानपद्ना ५१ भेदोनी हृदयमां भावना राखवा नमस्कारपदोनो अर्थविचार

२८ मतिज्ञानना भेदो—

४ चक्षु अने मन ए बे वस्तुनी साथे संबंध पाम्या शिवाय ज्ञान करनार बाकीनी चार स्पर्शेनन्द्रिय, रसना (जीभ) घ्राण (नाक) श्रोत्र (कान) ए चार इन्द्रियोथी थता चार व्यंजनावग्रह (अव्यक्तज्ञान)

६ पांच इन्द्रिय अने मनथी थता छ अर्थावग्रह (कांइक छे तेवुं ज्ञान,)

६ पांच इन्द्रिय अने मनथी थती छ ईहा (घणुं करी आम होवुं जोइए,)

६ पांच इन्द्रिय अने मनथी थता छ अपाय [अमुक ज छे तेवो निश्चय]

६ पांच इन्द्रिय अने मनथी थती छ धारणा [घणा काळ सुधी ते ज्ञानने धारण करी राखवुं]

ए अठावीश मति ज्ञान.

---

१४ श्रुत ज्ञानना भेदो.—

१ संज्ञा (लीपी) व्यंजन (उच्चार) स्वरूप अक्षरथी थतुं अने लब्धि (उपयोग) अक्षर स्वरूप जे श्रुतज्ञान ते "अक्षरश्रुत"

२ खोंखारा, छींक, ऊधरस विगेरे अव्यक्त ध्वनिथी थतुं श्रुत ते अनक्षरश्रुत.

३ दीर्घकालिकी संज्ञावाळा मनसहित जीवने थतुं श्रुत ते संज्ञिश्रुत,

४ मनरहित असंज्ञिजीवोने थतुं श्रुत ते असंज्ञिश्रुत.

५ सम्यगदृष्टि जीवोनुं ज्ञान ते 'सम्यक्श्रुत'

६ मिथ्यात्विओनुं ज्ञान ते 'मिथ्याश्रुत'

७ भरत ऐरवतनी अपेक्षाये तीर्थप्रवृत्तिनी शरुआतथी प्रवर्त्युं ते 'सादिश्रुत'

८ महाविदेहनी अपेक्षाये अनादिकालथी चाल्युं आवतुं ते 'अनादिश्रुत'

९ भरत ऐरवतनी अपेक्षाये तीर्थव्यवच्छेद थता ते 'सपर्यवसितश्रुत'

१० महाविदेहनी अपेक्षाये तीर्थनो व्यवच्छेद न होवाथी ते 'अपर्यवसितश्रुत'

(आ सादि अनादि विगेरे चारे पदोनो द्रव्यादि अपेक्षाये पण विचार समजवो.)

११ सरखा पाठ आलवावाळुं सूत्र होय ते दृष्टिवाद विगेरे 'गमिकश्रुत'

१२ सरखा पाठ आलावा रहित सूत्र होय ते आचारांगादि 'अगमिक श्रुत'

१३ बार अंगस्वरूप सूत्र होय ते 'अंगप्रविष्टश्रुत'

१४ अंगथी बहारनुं आवश्यक उपांगादि स्वरूप ते 'अनंगप्रविष्ट'

६ अवधिज्ञान.—

१ चक्षुनी जेम अवधिज्ञानीनी साथे जनार ते आनुगामिक अवधि'

२ सांकळे बांधेल फाणसनी जेम साथे न आवनार अर्थात् जे क्षेत्रे उत्पन्न थयुं तेथी बीजा क्षेत्रमां न आवे ते 'अनानुगामिक अवधि'

३ क्रमे क्रमे वधतुं वधतुं केवलज्ञानदशाए आत्माने लइ जाय ते 'वर्धमान अवधि'

४ क्रमेक्रमे घटतुं घटतुं नाश पामी जाय ते 'हीयमान अवधि'

५ एकदम पडी जाय अगाशीथी भूसकानी जेम, ते 'प्रतिपाति अवधि'

६ आव्युं पाछुं जाय नहि ते 'अप्रतिपाति अवधि'

२ मनः पर्यवज्ञान.—

१ अढीद्वीपना संज्ञिजीवना मनोगत भावने सामान्यस्वरूपे जाणनारने 'ऋजुमति मनःपर्यव'

२· विशेषे करी स्वच्छ अने विस्तीण पर्यायो जणावनार ने ' विपुलमति मनःपर्यव '

१ केवलज्ञान—

१ लोकालोकना त्रिकालवर्ति रूपि अरूपि आदि समग्रद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावने प्रकाश करनार 'केवलज्ञान.'

५१ भेदोए विभूषित श्री ज्ञानपदने म्हारो नमस्कार थाओ, श्री ज्ञानपदाराधननो काउसग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र एगावन्नभेयविभूसियसिरिनाणपयाराहणत्थं काउसग्गं करेमि (एकपञ्चाशद्भेदविभूषितश्रीज्ञानपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे ५१ लोगस्सनो काउसग्ग करवो, जापपद ॐ ह्रीँ "नमो नाणस्स" जपवुं, आ दिवसे ज्ञानस्वरूपमां जेम विशेष लीनता थाय तेम ज्ञान स्वरूपनुं ध्यान स्मरण विशेष करवुं शेष तमाम विधि पूर्वनी माफक, मात्र ज्ञानपदनुं ध्यान शुक्लवर्णे करवानु होवाथी चोखाना द्रव्यनुं आंबिल करवुं.



श्री चारित्रपदाराधन अष्टमदिवसनो विधि. ॥

श्री चारित्रमाहात्म्य तथा तेना गुण विचार

प्रवाहथी चाल्या आवता आठे कर्मोना निबीड बन्धनथी आत्माने छूटो पाडी शुद्ध स्फटिकरत्न तुल्य निर्मल कषायरहित शुद्ध आत्मस्वरूपने पमाडनार, परमानन्दमय आत्मसाम्राज्यनुं परम साधन, इन्द्रादि देवो पण जे स्वरूप माटे मनुष्य भवनी जंखणा करे छे, जेना सुखने चक्रवर्ति पण पहोंचवा समर्थ नथी जेना प्रभावथी ज मनुष्यगतिनी दुर्लभता—उत्तमता वर्णवी छे, जेमां बार कषायोनो अभाव छे, आरंभ परिग्रहनो त्याग छे, अशुभ क्रियाओथी निवृत्ति अने शुभ क्रियाओमां प्रवृत्ति होय छे. आवता

कर्मोने अटकाववा (नवो कर्मबंध न थवा देवो) ते तेनुं वास्तविक फल छे, छेवटे सर्व संवरचारित्र (शैलेशीकरण) ना प्रतापे ज जीव मुक्तिपद पामे छे, आवा अनेक स्वरूपथी ध्यान करवा योग्य चारित्रपदना मूल गुणरूप तथा सदा आराध्य चरणसित्तरी भेदोए ध्यान कराय छे.

श्री चारित्रपदना ७० भेद ।

वय ५ समणधम्म १५ संजम ३२ वेयावच्चं ४२ च बंभ-
गुत्तीओ ५१ ॥
नाणाइतियं ५४ तव ६६ कोह-निग्गहाइ ७० चरण-
मेयं ॥ १ ॥

व्रत पांच ने दश श्रमणधर्म ज, संयम सत्तर जाणीये ।
दश भेद वेयावच्च नवविध, बंभ गुत्ती वखाणीये ॥२॥
ज्ञानादि त्रण तप बार भेदे, कषाय चार निरोधीये
आराधीने इम चरणसित्तरी, निजचरण संशोधीये ॥१॥

---:o:---

श्री चारित्रपद नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक खमासमणना दूहाओ.

रत्नत्रयी विणु साधना, निष्फल करी सदीव ।
भावरयणनुं निधान छे, नमो नमो संयम जीव ॥
॥ वीर० ॥ १ ॥

जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे ।
लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥
वीर० ॥ २ ॥

॥ चारित्रपदना ७० भेदगर्भित नमस्कार पदो ॥

१ सर्वतःप्राणातिपातविरमणव्रतस्वरूप श्रीचारित्राय नमः
२ सर्वतः मृषावादविरमणव्रतस्व० ,,चारित्राय नमः
३ सर्वतोऽदत्तादानविरमणव्रतस्व० ,,चारित्राय नमः
४ सर्वतो मैथुनविरमणव्रतस्व० ,,चारित्राय नमः
५ सर्वतः परिग्रहविरमणव्रतस्व० ,,चारित्राय नमः

६	सम्यक्क्षमाधर्मस्वरूप	श्रीचारित्राय नमः
७	,, मार्दवधर्मस्व०	,,चारित्राय नमः
८	,, आर्जवधर्मस्व०	,,चारित्राय नमः
९	,, मुक्तिधर्मस्व०	,,चारित्राय नमः
१०	,, तपोधर्मस्व०	,,चारित्राय नमः
११	,, संयमधर्मस्व०	,,चारित्राय नमः
१२	,, सत्यधर्मस्व०	,,चारित्राय नमः
१३	,, शौचधर्मस्व०	,,चारित्राय नमः
१४	,, आकिंचन्यधर्मस्व०	श्रीचारित्राय नमः
१५	,, ब्रह्मचर्यधर्मस्व०	,,चारित्राय नमः
१६	पृथ्वीकायजीवरक्षासंयमस्व०	श्रीचारित्राय नमः
१७	अप्कायजीवरक्षासंयमस्व०	,,चारित्राय नमः
१८	तेजस्कायजीवरक्षासंयमस्व०	,, ,, ,,
१९	वायुकायजीवरक्षासंयमस्व०	श्रीचारित्राय ,,
२०	वनस्पतिजीवरक्षासंयमस्व०	,, ,,
२१	द्वीन्द्रियजीवरक्षासंयमस्व०	,, ,,
२२	त्रीन्द्रियजीवरक्षासंयमस्व०	,, ,,

२३ चतुरिन्द्रियजीवरक्षासंयमस्वरूप ,, ,,
२४ पञ्चेन्द्रियजीवरक्षासंयमस्व० ,, ,,
२५ अजीवसंयमस्व० श्रीचारित्राय नमः
२६ प्रेक्षासंयमस्व० श्रीचारित्राय नमः
२७ उपेक्षासंयमस्व० ,,चारित्राय नमः
२८ प्रमार्जन संयमस्वरूप ,,चारित्राय नमः
२९ परिष्ठापन संयमस्व० ,,चारित्राय नमः
३० मनः संयमस्व० ,,चारित्राय नमः
३१ वचनसंयमस्व० ,,चारित्राय नमः
३२ कायसंयमस्व० ,,चारित्राय नमः
३३ आचार्यवैयावृत्त्यस्व० ,,चारित्राय नमः
३४ उपाध्यायवैयावृत्त्यस्व० श्रीचारित्राय नमः
३५ तपस्विवैयावृत्त्यस्व० ,,चारित्राय नमः
३६ लघुशिष्यवैयावृत्त्यस्व० श्रीचारित्राय नमः
३७ ग्लानसाधुवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नमः
३८ स्थविरवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नमः
३९ समनोज्ञसामाचारीकारकवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४० श्रमणसंघवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४१ चन्द्रादिकुलवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४२ कौटिकादिगणवैयावृत्त्यस्वरूप श्रीचारित्राय नमः

४३ स्त्रीपशुपंडकरहितवसतिवासशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्री
चारित्राय नमः

४४ स्त्रीसहसरागवार्तालापवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्री
चारित्राय नमः

४५ स्त्रीआसनवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्रीचारित्राय
नमः

४६ स्त्रीसरागांगोपांगनिरीक्षणवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूप
श्रीचारित्राय नमः

४७ कुडयान्तरितस्त्रीपुरुषक्रीडास्थानवर्जनशुद्धब्रह्मगु-
प्तिस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४८ पूर्वभुक्तस्त्रीसंगक्रीडाविलासस्मरणवर्जनशुद्धब्रह्म-
गुप्तिस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४९ सरसाहारवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्रीचारित्राय
नमः

५० अतिमात्राहारवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

५१ विभूषादिशरीरशोभावर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूप श्रीचारित्राय नमः

५२ श्रीसम्यग्ज्ञानस्वरूप ,, नमः

५३ श्रीसम्यग्दर्शनस्व० ,, नमः

५४ श्रीसम्यक्चारित्रस्व० ,, नमः

५५ श्रीअनशनतपःस्व० ,, नमः

५६ औनोदर्यतपःस्वरूप ,, नमः

५७ वृत्तिसंक्षेपतपःस्व० ,, नमः

५८ रसत्यागतपः ,, ,, नमः

५९ लोचादिकायक्लेशसहनतपःस्वरूप श्रीचारित्राय नमः

६० संलीनतातपःस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

६१ प्रायश्चित्तग्रहणरूपाभ्यन्तरतपःस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

६२ विनयकरणाभ्यन्तरतपःस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

६३ वैयावृत्त्यकरणरूपाभ्यन्तरतपःस्वरूपश्रीचारित्राय नमः
६४ स्वाध्यायकरणरूपाभ्यन्तरतपःस्व० „ नमः
६५ शुभध्यानकरणरूपाभ्यन्तरतपःस्व० „ नमः
६६ उत्सर्गकरणाभ्यन्तरतपः स्व० „ नमः
६७ क्रोधनिग्रहस्वरूप „ नमः
६८ माननिग्रहस्वरूप „ नमः
६९ मायानिग्रहस्वरूप „ नमः
७० लोभनिग्रहस्वरूप „ नमः

॥ चारित्रपदना ७० भेदोनी (गुणोनी) हृदयमां भावना रहेवा माटे नमस्कार पदोना अर्थ ॥

---

१ सर्वथा प्राणातिपात (जीवहिंसा) विरमण (त्याग) रूप महाव्रतस्वरूप चारित्र.

२ सर्वथा मृषावाद (जुठुं बोलवाना) विरमण (त्याग) रूप महाव्रतस्वरूप चारित्र.

३ सर्वथा अदत्तादान [नही दीधेल वस्तुग्रहण] विरमण (त्यागरूप) महाव्रतस्वरूप चारित्र,

४ सर्वथा मैथुन (कामविकार) विरमण (त्याग) रूप महाव्रतस्वरूप चारित्र.

५ सर्वथा परिग्रह [धन धान्यादि संबंध तथा मूर्छा] विरमण [त्यागरूप] महाव्रतस्वरूप चारित्र,

६ सम्यक्प्रकारे क्षमा (क्रोध न करवारूप) धर्म-स्वरूप चारित्र,

७ सम्यक्प्रकारे मृदुता [कोमलता माननां अभाव-रूप] धर्मस्वरूप चारित्र,

८ सम्यक्प्रकारे ऋजुता (सरलता मायाना अभाव-रूप) धर्मस्वरूप चारित्र.

९ सम्यक्प्रकारे मुक्ति (लोभना अभावरूप) धर्मस्व-रूप चारित्र,

१० सम्यक्प्रकारे बाह्य अभ्यन्तर बार भेदे तप धर्म-स्वरूप चारित्र,

११ सम्यक्प्रकारे सत्तरप्रकारना संयम धर्मस्वरूप चारित्र

१२ सम्यक्प्रकारे सत्य बोलवारूप धर्मस्वरूप चारित्र,

१३ सम्यक्प्रकारे शौच (संयमप्रत्ये निरतिचारपणे व-र्त्तवारूप) धर्मस्वरूप चरित्र

१४ सम्यक्प्रकारे आकिंचन्य [निर्ममत्वभाव]धर्मस्वरूप चारित्र,

१५ सम्यक्प्रकारे ब्रह्मचर्य धर्मस्वरूप चारित्र,

१६ सम्यक्प्रकारे पृथ्वीकायजीवोना रक्षणरूप संयम-स्वरूप चारित्र.

१७ सम्यक्प्रकारे अप्कायजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूप चारित्र.

१८ सम्यक्प्रकारे तेउकायजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूप चारित्र.

१९ सम्यक्प्रकारे वायुकायजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूप चारित्र.

२० सम्यक्प्रकारे वनस्पतिकायजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूप चारित्र.

२१ सम्यक्प्रकारे बेइन्द्रियजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूपचारित्र.

२२ सम्यक्प्रकारे तेइन्द्रियजीवोनां रक्षणरूप संयम स्वरूप चारित्र.

२३ सम्यक्प्रकारे चउरिन्द्रियजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूप चारित्र.

२४ सम्यक्प्रकारे पंचेन्द्रियजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूप चारित्र.

२५ सम्यक्प्रकारे अजीवपदार्थो [पुस्तकादि] यतना पूर्वक धारण करवारूप संयम स्वरूप चारित्र

२६ सम्यक्प्रकारे पडिलेहण करी सम्यग् बेसवा उठवा विगेरे क्रिया स्वरूप अथवा संयममां सीदता साधुओने संयममां जोडवारूप संयम स्वरूप चारित्र

२७ सम्यक्प्रकारे चक्षुए सम्यग् जोवारूप संयम स्वरूप चारित्र

२८ सम्यक्प्रकारे पापव्यापार करता गृहस्थादि प्रत्ये अथवा पासत्था विगेरे प्रत्ये उदासीनभावे सम्यग्वर्त्तवारूप संयमस्वरूप चारित्र

२९ सम्यक्प्रकारे जोया छतां पण रजोहरणादिके

पुंजवा विगेरे यतना क्रियामां वर्त्तवारूप संयम स्वरूप चारित्र,

३० सम्यक्प्रकारे परठववा विगेरेमां वर्त्तवारूप संयम स्वरूप चारित्र,

३१ सम्यक्प्रकारे अशुभ संकल्प वर्जवा, संयम स्वरूप चारित्र

३२ सम्यक्प्रकारे अशुभवचन वर्जवा शुभ वचन प्रवर्त्तावता रूप वचनव्यापार संयम स्वरूपचारित्र

३३ ,, प्रकारे आचार्यवैयावच्चस्वरूप चारित्र

३४ ,, प्रकारे उपाध्यायवैयावच्च स्वरूप चारित्र

३५ ,, प्रकारे तपस्विवैयावच्चस्वरूप चारित्र

३६ ,, लघुशिष्य [नवदीक्षित] वैयावच्चस्वरूप चारित्र

३७ ,, ग्लानसाधुवैयावच्चस्वरूप चारित्र

३८ ,, प्रकारे स्थविरमुनि वैयावच्चस्वरूप चारित्र

३९ ,, प्रकारे उत्तम सामाचारीवाळा मुनिवैयावच्चस्वरूपचारित्र

४० „ प्रकारे चतुर्विध संघवैयावच्च स्वरूप चारित्र
४१ सम्यक्प्रकारे चान्द्रादिकुल (अनेकगच्छोनो समूह ते कूल) वैयावच्चस्व० चारित्र
४२ „ कौटिकादिगण (अनेक कूलोनो समूह ते „ „ गण) वैयावच्चस्व०
४३ „ स्त्रीपशु नपुंसकरहित वसतिमां रहेवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति [वाड] स्व० चारित्र
४४ „ स्त्रीओनी साथे रागवाली कथा [आलाप संलाप] वर्जवाथी शुद्धब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्व० चारित्र
४५ „ स्त्रीओना आसन उपर नहि बेसवाथी [पुरुषना आसन उपर स्त्रीए, पुरूष उठी गया पछी पण त्रण पहोर सुधी बेसवुं नहि, अने स्त्रीना आसन उपर, स्त्री उठी गया पछी पण बे घडी सुधी बेसवुं नही] शुद्धब्रह्मचर्यनीगुप्ति स्व० चारित्र,
४६ „ रागसहित स्त्रीओना अंगोपांग नहि जोवा-

थी शुद्धब्रह्मचर्यनी गुप्तिस्वरूप चारित्र

४७ „ भींतने आंतरे रहेला स्त्री पुरूषोनी क्रीडाना शब्दो सांभळवा विगेरे त्याग करवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्व० चारित्र.

४८ „ पूर्वे भोगवेला स्त्रीसंबंध क्रीडा विगेरे नहि संभारवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्व०चारित्र

४९ सम्यक्प्रकारे सरस मिष्टान्न आहारनो त्याग करवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्वरूप चारित्र,

५० सम्यक्प्रकारे कंठपूर घणा प्रमाणथी आहारादि नहि खावाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्व० चारित्र,

५१ सम्यक्प्रकारे शणगार सजवो विगेरे शरीर शोभा त्याग करवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्तिस्व० चारित्र.

५२ सम्यक्प्रकारे सम्यग् ज्ञानपरिणति स्व० चारित्र.

५३ सम्यक्प्रकारे सम्यग्दर्शनपरिणति स्व० चारित्र.

५४ सम्यक्प्रकारे सम्यक् चारित्र परिणति स्व० चारित्र

५५ सम्यक्प्रकारे अनशन (चारे आहारना त्याग रूप) बाह्यतप स्व० चारित्र,

५६ सम्यक्प्रकारे उणोदरी (उणुं रहेवारूप) बाह्यतप स्वरूप चारित्र

५७ ,, द्रव्यादिवृत्तिना संकोचरूप बाह्यतप-स्वरूप चारित्र.

५८ ,, दूध दही घी विगेरे रसत्यागरूप बा-ह्यतपस्वरूप चारित्र.

५९ ,, लोच, आतापना विगेरे कायक्लेशरूप बाह्यतपस्वरूप चारित्र.

६० ,, इन्द्रिय कषाययोगने काबुमां राखवा-रूप बाह्यतपस्वरूप चारित्र.

६१ सम्यक्प्रकारे प्रायश्चित्त लेवा (रूप) अभ्यन्तर तप स्वरूप श्री चारित्र,

६२ ,, विनय करवा रूप अभ्यन्तरतपस्वरूप चारित्र.

६३ ,, प्रकारे वेयावच्च करवा रूप अभ्यन्तरतप स्वरूप चारित्र

६४ ,, सज्झाय करवा रूप अभ्यन्तर तप स्वरूप चारित्र

६५ ,, प्रकारे शुभध्यान आदरवा रूप अभ्यन्तर तप स्वरूप चारित्र

६६ ,, शरीर कषाय विगेरे त्यागकरवा रूप अभ्यन्तर तप स्वरूप चारित्र

६७ ,, क्रोधने काबुमा राखवा स्वरूप चारित्र

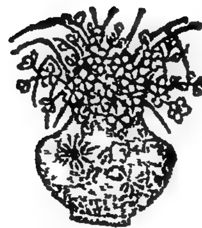
६८ ,, प्रकारे मानने काबुमां राखवा स्वरूप चारित्र

६९ ,, प्रकारे मायाने काबुमां राखवा स्वरूप चारित्र

७० ,, लोभने काबुमां राखवा स्वरूप चारित्र

आ सीत्तेर गुण करी विभूषित श्री चारित्रपदने मारो नमस्कार थाओ, श्री चारित्रपदाराधननो काउसग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र सत्तरीगुणविभूसियसिरिचारित्रपयाराहणत्थं काउस्सग्गं करेमि (सप्ततिगुणविभूषितश्रीचारित्रपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे बोलवुं, सीत्तेर लोगस्सनो काउसग्ग करवो, जाप पद "ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स" जपवुं आ दि-

वसे श्री चारित्रपद्मां जेम विशेष लीनता थाय तेम चारित्र गुणोनुं ध्यान, स्मरण विशेष करवुं, शेष तमाम विधि पूर्वनी माफक, मात्र चारित्रपद्नुं ध्यान उज्वल वर्णे करवानुं होवाथी चोखाना द्रव्यनुं आंबील करवुं.





श्री तपः पदाराधन नवम दिवसनो विधि.

श्री तपमाहात्म्य तथा तेना भेदगुणोनो विचार

समता सहित करवामां आवतुं तप यावत् निकाचित कर्मोने पण क्षय करवामा समर्थ छे, चारज्ञान युक्त श्री तीर्थंकर देवो के जेमना चरणनी उपासनामां इन्द्रो पण तल्लीन रहे छे. पोतानी तेज भवमां मुक्ति छे तेम जाणी रह्या छे छतां पण तेओ कर्मनिर्जराना साधनभूत तपनी आराधनामां उद्युक्त रहे छे, तपथी देवताओ पण वश थाय छे, तपथी अनेक व्याधिओ पण मटे छे, ग्रह पीडा विगेरे पण निवृत्ति पामे छे, उपसर्ग अने विघ्नोनो नाश थाय छे. सर्वमंगल भेदोमां महान् मंगल छे. इन्द्रियोनुं दमन थाय छे. अने इष्ट कार्यो सिद्ध थाय छे, आयंबिल तपना प्रभावे

ज द्वैपायन ऋषिथी थतो द्वारिकानो दाह अटक्यो हतो. नागकेतु महाराज विगेरे महापुरुषोना तपना प्रभावथीज देवकृत उपद्रवो पण नाश पाम्या हता. विगेरे अनेक गुणोथी तपनुं आराधन महान् लाभदायक छे. जोके आ तपना मुख्यताए वार भेदोथी अन्यत्र आराधन थाय छे तोपण अहीं तेना अवान्तरभेदो गणी ५० भेदोथी ध्यान नमस्कार विगेरे कराय छे.

श्री तपः पदना ५० भेदस्वरूप.

द्विविधं स्यादनशन, २-मौनोदर्यं तथा द्विधा ४ ।
चतुधा वृत्तिसंक्षेपः, ८ कायक्लेश (रसत्याग)
स्तथैकधा ९ ॥१॥
एकधा रससंत्यागः (कायसंक्लेशः) १० संलीनत्वं
तथा द्विधा १२ ।
एवं वाह्यतपोभेदा द्वादश श्रीजिनोदिताः ॥२॥
दशधा प्रायश्चित्तं १० स्यात्सप्तधा विनयस्तथा । १७
वैयावृत्यं दशविधं २७ स्वाध्यायः पंचधा ३२ मतः॥३॥

चतुर्विधं तथा ध्यान ३६-मुत्सर्गो द्विविध ३८ स्तथा।
अष्टात्रिंशदिमे भेदा, स्तपसोऽभ्यन्तरस्य वै ॥४॥
अन्यथाप्यथवा भेदा-स्तपसः परिकीर्तिताः ।
पञ्चाशत्संख्यया ध्येयाः, निर्जरार्थिमनीषिभिः ॥
अनशनना बे भेद छे, ऊणोदरी बे भेद ।
वृत्तिसंक्षेपना चार भेद, कायक्लेश [रसत्याग]छे एक॥
रसत्याग (कायक्लेश) छे एकविध, संलीनता दुगविध,
बाह्य तपना ए कह्या, बारस भेद प्रसिद्ध ॥२॥
प्रायश्चित्त दश भाखीया, सगविह विनय उदार
दशविध वेयावच्च छे, सज्झाय पंच प्रकार ॥३॥
ध्यान चतुर्विध जाणीये, उत्सर्गना दोय भेद ।
अडत्रीश अभ्यन्तर मळी, तप पचास सुभेद ॥४॥

श्री तपः पदना नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक
खमासमणना दुहा.

कर्म तपावे चीकणा, भावमगंल तप जाण ।
पचास लब्धि उपजे, जय जय तप गुण खाण ॥

इच्छारोधे संवरी, परिणति समता योगेरे ।
तप ते एहीज आतमा, वर्त्ते निजगुण भोगेरे॥वीर०॥

प्रदक्षिणा दइ स्वस्तिक करवा पूर्वक खमा० दइ श्री तपपदना ५० भेदगर्भित नमस्कार पदो.

---

१ श्री यावत्कथिकानशनस्वरूपतपसे नमः
२ ,, ईत्वरिकानशनस्वरूपतपसे नमः
३ ,, बाह्यौनोदर्यस्वरूपतपसे नमः
४ ,, आभ्यंतरौनोदर्यस्वरूपतपसे नमः
५ ,, द्रव्यतो वृत्तिसंक्षेपस्वरूपतपसे नमः
६ ,, क्षेत्रतो वृत्तिसंक्षेपस्वरूपतपसे नमः
७ ,, कालतो वृत्तिसंक्षेपस्वरूपतपसे नमः
८ ,, भावतो वृत्तिसंक्षेपस्वरूपतपसे नमः
९ ,, लोचादि कायक्लेश(रसत्याग)स्वरूपतपसे नमः
१० ,, रसत्यागस्वरूपतपसे नमः
११ ,, इंद्रियकषाययोगसंलीनतास्वरूपतपसे नमः

१२ ,, स्त्रीपशुपंडकादिवर्जितवसत्यवस्थानस्वरूपतपसे नमः

१३ आलोचनाप्रायश्चित्त स्वरूपश्रीतपसे नमः

१४ प्रतिक्रमणप्रायश्चित्त ,, श्रीतपसे नमः

१५ मिश्रप्रायश्चित्त ,, श्रीतपसे नमः

१६ विवेकप्रायश्चित्त ,, श्रीतपसे नमः

१७ उत्सर्गप्रायश्चित्त ,, श्रीतपसे नमः

१८ तपःप्रायश्चित्त ,, श्रीतपसे नमः

१९ छेदप्रायश्चित्त ,, श्रीतपसे नमः

२० मूलप्रायश्चित्त ,, श्रीतपसे नमः

२१ अनवस्थाप्यप्रायश्चित्त ,, श्रीतपसे नमः

२२ पारांचिकप्रायश्चित्त ,, श्रीतपसे नमः

२३ ज्ञानविनय स्वरूपश्रीतपसे नमः

२४ दर्शनविनय ,, श्रीतपसे नमः

२५ चारित्रविनय ,, ,, तपसे नमः

२६ शुभमनः प्रवृत्तिविनय ,, ,, तपसे नमः

२७ शुभवचनप्रवृत्तिविनय ,, ,, तपसे नमः

२८ शुभकायप्रवृत्तिविनय स्वरूपश्रीतपसे नमः
२९ औपचारिकविनय „ „ तपसे नमः
३० आचार्यवैयावृत्य „ „ तपसे नमः
३१ उपाध्यायवैयावृत्य „ „ तपसे नमः
३२ स्थविरसाधुवैयावृत्य „ „ तपसे नमः
३३ तपास्विसाधुवैयावृत्य „ „ तपसे नमः
३४ लघुशिष्यादिवैयावृत्य „ „ तपसे नमः
३५ ग्लानसाधुवैयावृत्य „ „ तपसे नमः
३६ समनोज्ञसामाचारीकारकवैयावृत्य „ „ तपसे नमः
३७ श्रमणसंघवैयावृत्य स्वरूपश्रीतपसे नमः
३८ चान्द्रादिकुलवैयावृत्य „ „ तपसे नमः
३९ कौटिकादिगणवैयावृत्य „ „ तपसे नमः
४० वाचनास्वाध्याय „ „ तपसे नमः
४१ पृच्छनास्वाध्याय „ „ तपसे नमः
४२ परावर्त्तनास्वाध्याय „ „ तपसे नमः
४३ अनुप्रेक्षास्वाध्याय „ „ तपसे नमः
४४ धर्मकथास्वाध्याय „ „ तपसे नमः

४५ आर्त्तध्याननिवृत्तिध्यानस्वरूपश्रीतपसे नमः
४६ रौद्रध्याननिवृत्तिध्यान ,, ,, तपसे नमः
४७ धर्मध्यानप्रवृत्तिध्यान ,, ,, तपसे नमः
४८ शुक्लध्यानप्रवृत्तिध्यान ,, ,, तपसे नमः
४९ बाह्योत्सर्ग ,, ,, तपसे नमः
५० आभ्यन्तरोत्सर्ग ,, ,, तपसे नमः

तपपदना पचास भेदोनी हृदयमां भावना राखवा नमस्कार पदोना अर्थ.

---

१ जावज्जीवनुं अनशन (चार आहारना त्याग) स्वरूप बाह्यतप.

२ अमुक मुदतनुं (नवकारशीथी मांडी उत्कृष्ट ऋषभदेवप्रभुना कालमां वर्षप्रमाणनुं, बावीश तीर्थंकर प्रभुना कालमां आठमहिना सुधीनुं, अने महावीर प्रभुना शासनमां उत्कृष्ट छ महिना सुधीनुं अनशन (चारे आहारना त्याग) स्वरूप बाह्यतप.

३ बाह्य ऊनोदरी (एक दाणाथी मांडी बनी शके त्यांसुधीनुं) बाह्यतप.

४ आभ्यन्तर ऊनोदरी (लोलुपता मटाडवा स्वरूप ऊणोदरी) बाह्यतप.

५ द्रव्यथी वृत्तिसंक्षेप (वस्त्र विगेरे निर्वाहना द्रव्योनो संकोच) रूप बाह्यतप.

६ क्षेत्रथी वृत्तिसंक्षेप (चेष्टा फरवा हरवाना क्षेत्रनो संकोच) रूप बाह्यतप.

७ कालथी वृत्तिसंक्षेप (अमुककालने माटेनो संकोच) रूप बाह्यतप.

८ भावथी वृत्तिसंक्षेप (महावीर प्रभुना अभिग्रहनी जेम भावथी संकोच) रूप बाह्यतप.

९ लोच विगेरे कायकष्ट रूप बाह्यतप.

१० रसत्याग (दुध दहीं, घी, गोळ विगेरे विकृतिनो त्याग करवो) रूप बाह्यतप.

११ पांचइन्द्रिय, चारकषाय, त्रणयोगनी संलीनता (इंद्रियकषाययोगनी अशुभप्रवृत्तिनो संकोच) रूप बाह्यतप.

१२ स्त्री पशु नपुंसकादिरहित वसतिमां रहेवा रूप संलीनता स्वरूप बाह्यतप.

१३ आलोयणप्रायश्चित्त (गुर्वादि समक्ष करेला पापनुं आलोववुं) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१४ प्रतिक्रमणप्रायश्चित्त (ईर्यावहि पडिक्कमवी मिच्छामि दुक्कडं देवाथी पापनुं प्रतिक्रमण) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१५ उभयप्रायश्चित्त (आलोयण तथा प्रतिक्रमण बे करवा.) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१६ विवेकप्रायश्चित (अकल्प्य अन्नपानादि परठववाते) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१७ कायोत्सर्ग प्रायश्चित्त (काउस्सगमां रही अमुक लोगस्स विगेरे गणवा) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१८ तप करवारूप प्रायश्चित्त (नीवी पुरिमढ आदि तप करवो) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१९ छेद करवारूप प्रायश्चित्त (अमुक दीक्षापर्याय घटाडवो) स्वरूप अभ्यन्तरतप,

२० मूलनामना प्रायश्चित्त (फरीथी व्रतारोपण करवा स्वरूप अभ्यन्तरतप,

२१ अनवस्थाप्यप्रायश्चित्त (अमुक तप विगेरे दंड कराव्या शिवाय पुनःव्रतारोपण)स्वरूपअभ्यन्तरतप,

२२ पारांचिक प्रायश्चित (महान् शासनप्रभावना कर्या शिवाय महाव्रत उच्चरावी गच्छमां लेवाय नहि) स्वरूप अभ्यन्तर तप.

२३ ज्ञानविनय (ज्ञाननुं बहुमान भक्ति कालविनयादि आचार साचववो) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

२४ दर्शनविनय (सम्यक्त्वना लक्षणो तथा आचारो साचववा) स्व० अभ्यन्तर तप,

२५ चारित्रविनय (चारित्रनी श्रद्धा आराधना आचारो साचववा) स्व० अभ्यन्तर तप.

२६ मनोविनय (रत्नत्रयवान् जीवो उपर बहुमानादि
११ शुभमन राखवुं,) स्व० अभ्यन्तर तप,

(इद्रिष्वाविनय (रत्नत्रयवान् जीवोनी वचनथी स्तुति बाह्यतप करवी) स्व० अभ्यन्तर तप,

२८ कायविनय (रत्नत्रयवान् जीवोनी प्रत्ये शुभकायिकभक्ति आदि करवा) स्व० अभ्यन्तर तप,

२९ उपचारविनय (रत्नत्रयवान् जीवोनी भक्ति बहुमानादि करवा) स्व० अभ्यन्तर तप,

३० आचार्यवैयावच्च (आचार्यभगवंतनी भक्ति बहुमान, गुणस्तुति, आशातनापरिहार, अवर्णवादगोपनरूप अभ्यन्तर तथा वस्त्र, अन्न, पान, औषधादि बाह्यभक्ति आदि करवा,) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

३१ उपाध्यायवैयावच्च (उपाध्याय भगवंतनी भक्ति बहुमान०) स्व० अभ्यन्तर तप.

३२ स्थविरसाधुवैयावच्च (२० वर्षनी दीक्षापर्यायवाळा व्रतस्थविर १, समवायांगादि श्रुतना जाणकार श्रुतस्थविर २, ६० वा ७० वर्षनी उमरवाळा वयस्थविर, ३, ते सर्वनी भक्ति बहुमान०) स्व० अभ्यन्तर तप.

३३ तपस्विवैयावच्च (उग्रतपस्यावाळा महापुरुषोनी

बाह्य भक्ति आदि करवां) स्व० अभ्यन्तरतप.

३४ लघुशिष्यादिवैयावच्च (नवदीक्षित साधु आचारमां स्थिर थाय ते माटे भक्ति बहुमान० स्व० अभ्यन्तर तप.

३५ ग्लानमुनिवैयावच्च (रोगादिथी शिथील शरीरवाळानी भक्ति बहुमान०) स्व० अभ्यन्तर तप.

३६ समनोज्ञसामाचारीवाळानुं वैयावच्च (उत्तम सामाचारी पाळनार महापुरुषोनी भक्ति बहुमान०) स्व० अभ्यन्तर तप,

३७ श्रमणसंघवैयावच्च (साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकारूप चतुर्विधसंघनी भक्ति बहुमान०) स्व० अभ्यन्तर तप,

३८ चान्द्रादिकुलनी वैयावच्च (एकाचार्य समुदाय कुल कहेवाय, तेनी भक्ति बहुमान०) स्व० अभ्यन्तर तप,

३९ कोटिकादिगणनी वैयावच्च (त्रण आचार्यना कुलनो समुदाय गण तेनी भक्ति बहुमान०) स्व० अभ्यन्तर तप,

४० वाचनास्वाध्याय (योग्य जीवने सूत्र अर्थनो पाठ भणाववो तथा पोते भणवो) स्व० अभ्यन्तर तप,

४१ पृच्छनास्वाध्याय (प्रश्नो पुछी संदेहादि टाळवा) स्व० अभ्यन्तर तप,

४२ परिवर्त्तनास्वाध्याय (प्रथमनुं भणेलुं संभारवुं) स्व० अभ्यन्तर तप,

४३ अनुप्रेक्षास्वाध्याय (भणेला सूत्रार्थनो विचार करवो) स्व० अभ्यन्तर तप,

४४ धर्मकथास्वाध्याय (धर्मदेशना उपदेशादि आपवा) स्व० अभ्यन्तर तप,

४५ आर्त्तध्याननिवृत्ति, (इष्ट वस्तुना वियोगथी थती चिन्ता, शोक, विलाप विगेरे थाय ते इष्टवियोगार्त्तध्यान १, अनिष्ट संयोगथी थता चिन्ता विगेरे अनिष्टसंयोगार्त्त २, रोगादि थवाथी थता चिन्ता विगेरे रोगचिन्तार्त्त ३, भविष्य सुखनी चिन्तादि अग्रशौच्यार्त्त ४ ए चारेनो त्याग) स्वरूप अभ्यन्तर तप.

४६ रौद्रध्याननिवृत्ति. (द्वेषथी प्राणीने बांधवा मारवा विगेरे चिन्ता ते हिंसानुबंधिरौद्रध्यान १,छल प्रपंच करवाना विचार असत्यने सत्य स्थापवानी चिन्ता ते मृषानुबन्धि २, क्रोधादि कषायथी परनुं द्रव्य हरवानी चिन्ता ते स्तेयानुबंधि ३, विषय साधन धनादि रक्षण करवानी चिन्ता ते संरक्षणानुबंधि ४, ए चारे रौद्रध्याननो त्याग करवा स्व० अभ्यन्तर तप,

४७ धर्मध्यानप्रवृत्ति. श्री (जिनेश्वरवचन सत्य छे ते विचारवुं ते आज्ञाविचय १, रागद्वेषादि दुःखरूप विचारवुं ते अपायविचय २, सुखदुःख पूर्वकृत कर्म नुं फल छे ते चिन्तववुं, ते विपाकविचय ३, लोकाकृति द्रव्यादिनुं चिन्तववुं ते संस्थानविचय४,आचारे धर्मध्यानमां प्रवृत्ति राखवी स्व० अभ्यन्तर तप.

४८ शुकलध्यानप्रवृत्ति. (पृथक्त्ववितर्कसविचार १, एकत्ववितर्कअविचार २, सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति ३, व्युपरतक्रिया अनिवृत्ति ४, ए चारे केवलज्ञान तथा

मुक्तिना साधनध्यानमां प्रवृत्ति राखवा स्व०अभ्यन्तर तप,

४९ बाह्य उत्सर्ग (द्रव्य शरीर वस्त्रादिना त्याग) स्वरूप अभ्यन्तर तप.

५० अभ्यन्तर उत्सर्ग (मिथ्यात्व, कषाय,विगेरे कर्मबन्ध हेतुओना त्याग) स्वरूप अभ्यन्तर तप.

आ प्रमाणे बाह्य तपना बार, तथा अभ्यन्तर तपना अडत्रीश कुल पचास भेद्‌थी विभूषित तपपद्‌ने म्हारो नमस्कार थाओ.

श्री तपः पदाराधननो काउस्सग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र पचासगुणविभूसियसिरितवपयाराहणत्थं काउस्सग्गं करेमि [पञ्चाशद्‌गुणविभूषित-श्रीतपःपदाराधनार्थं] आ प्रमाणे बोलवुं, पचास लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, जापपद " ॐ ह्रीं नमो तवस्स जपवुं" आ दिवसे श्री तपपद्‌मां जेम विशेष लीनता थाय तेम तपपद्‌ना गुणोनुं ध्यान स्मरण विशेष करवुं. शेष तमाम विधि पूर्वमाफक जाणवी, मात्र

तपपदनुं ध्यान उज्वल वर्णे करवानुं होवाथी चोखाना द्रव्यनुं आयंबिल करवुं.

आ अन्तिम [छेल्लो] दिवस होवाथी तमाम विधि अप्रमत्तपणे करवी, विशेष पूजा करवी, यथाशक्ति आयंबिलमां पण द्रव्यादि अभिग्रहो राखवा, आज विशेष महोत्सव सहित सत्तर भेदी पूजा भणाववी. विशेष आंगी पूजा, रात्रिजागरण, भावना, प्रभावना विगेरे करवी.

" छेल्ले आंबिल मोटो तप कीजे, सत्तरभेदी जिनपूजा
रचीजे, मानवभव लाहो लीजे "

पारणाना दिवसनो विधि.

दरेक विधिओमां, विद्यासाधनामां पूर्वसेवा उत्तरसेवाओ होय छे, तेम आ दिवसे परंपराथी श्री सिद्धचक्र महाराजनुं समुदित आराधन कराय छे.

पडिलेहण, देववंदन सुधीनो विधि संपूर्ण पूर्वेनी माफक करी.—

श्री सिद्धचक्र माहात्म्यगर्भित तेनो नमस्कार तथा तन्मयतासूचक खमासमणना दूहाओ.

दशमा पूर्वथी उद्धर्यो, सिद्धचक्र शुभयंत्र ।
एहनी तुलनामां नहि, मंत्र तंत्र कोइ यंत्र ॥ १ ॥
परमतत्त्व जिनधर्ममां, शासननुं सर्वस्व ।
मुक्तिपददायक भविक, नमो नमो चित्त एकत्व ॥२॥
योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणोरे ।
एह तणे अवलंबने, आत्मध्यान प्रमाणो ॥३॥ रे वीर०॥

आप्रमाणे दूहाओ बोली प्रदक्षिणा दइ स्वस्तिक करी द्रव्यफल नैवेद्यादि मूकी एक एक खमासमण देवुं.

॥ नमस्कार पद ॥

"श्रीविमलेश्वर चक्रेश्वरीपूजिताय जिनशासन-परमतत्त्वाय श्री सिद्धचक्राय नमो नमः," एज प्रमाणे नव खमासमण देवां, पद तेनुं तेज बोलवुं.

ईर्यावही करी काउसग्ग श्री विमलेश्वरचक्रेश्वरीपूजितश्रीसिद्धचक्राराधनार्थं काउसग्गं करेमि, इच्छं, श्री वि० करेमि काउ० अन्नत्थ० नवलोगस्स० प्रकट लोगस्स खमा० अविधि आशातना मिच्छामि दु०.

"ॐ ह्रीँ श्रीँ विमलेश्वरचक्रेश्वरीपूजिताय श्री सिद्धचक्राय नमो नमः" ए पदनी वीश नवकारवाली गणवी, गुरुवंदन करी ओछामां ओछुं बेसणानुं पच्चक्खाण करवुं, नवी ओळीनी आराधना प्राप्त थाय त्यां सुधीने माटे यथाशक्ति अभिग्रहादि लेवा, प्रभुदेवनी श्री सिद्धचक्रमहाराजनी विस्तारथी पूजा करी पछी पच्चक्खाण पारवुं.

अष्टान्हिकामहोत्सव पूर्ण थयेल होवाथी मुख्यविधिए " यात्रोत्सवो हि संपूर्णो भवति रथयात्रया " ए शास्त्रवचनथी रथयात्रामहोत्सव बनती शक्तिए अवश्य करवो जोइए. ते रथयात्रामहोत्सवमां श्री आर्यसुहस्ति भगवानना समये अवन्ती [उज्जयिनी] ना श्रावकोनी, श्रीहेमचंद्रसूरि महाराजना समये परमार्हत महाराज कुमारपालनी रथयात्रानो विधि अवश्य विचारवो, आ रथयात्रामहोत्सव पण श्रावकना वार्षिक कृत्यो पैकीनुं एक छे. तेमज आज महान् उत्सव दिवस होवाथी साधर्मिक वात्सल्य करवुं.



श्री सिद्धचक्रपदोनो क्रमिकविचार, तेनुं रहस्य, संख्यामहिमाविचार.

आ श्रीसिद्धचक्रना नवपदोमां पांच धर्मी (गुणी) छे अने चार धर्म (गुण) छे "गुणाणमासओ दव्वं" गुणोनो आश्रय द्रव्य छे एटले के निराधार गुणो होइ शकता नथी, जो के गुणोने लइनेज गुणीनी पूज्यता छे, छतां पण ते गुणोनो आविर्भाव, गुणोनी विशिष्टता गुणि आत्माज करी शके छे. तेमज पूर्वोक्त वचनथी जणाय छे के—निराधार गुणो न रही शकवा विगेरे अनेक कारणोथी पहेला पंचपरमेष्ठिरूप गुणीनुं ग्रहण कर्युं छे, आ ज पंचपरमेष्ठि (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु) ना नमस्कारमयज सकल श्रुतस्कन्धना नवनीततुल्य अभ्यन्तर वर्त्तनार पंचमंगल महाश्रुतस्कन्ध छे, श्रीभगवतीजीनुं आदिमंगल पण तेज छे, प्रणवाक्षर 'ॐ' पदे करी योगिओ-महात्माओ तेमनुंज ध्यान करे छे, ए पांचेना प्रथम

प्रथम अक्षरो लइ 'असिआउसा' ए पदे महापुरुषो तेमनोज जाप करे छे, इत्यादि अनेक स्वरूपमय आ पंचपरमेष्ठिमां जो के सिद्धभगवान् सकल कर्मथी मुक्त थयेला अने सर्वकृतार्थ छे, तथा वर्त्तमानमां अर्ह-त्स्वरूपने पण जणावनार श्री आचार्य भगवंत विगेरे महान् उपकारक होवा छतां पण सर्व प्रथम मुक्ति-मार्गने देखाडनार, सिद्ध आदिना स्वरूपने पण ओ-ळखावनार, चतुर्विधसंघ तथा प्रवचनस्वरूप तीर्थना प्रवर्त्तावनार निरपेक्षपणे धर्म बतावनार जेमणे उपदे-शेल अर्थ स्वरूप त्रिपदीने पामी श्रीगणधर भगवं-तोए गुंथेला सूत्र तथा तेना आलंबनथी महापुरुषोए रचेला ग्रन्थोनी अपेक्षा राखी श्री आचार्यादि बीजा-ओने उपदेश विगेरे आपे छे विगेरे अनेक कारणोथी प्रथम श्री अरिहंत पद ग्रहण कर्युं छे, पछी सर्वकृतार्थ होवाथी श्रीसिद्धभगवंतने बीजे स्थाने ग्रहण कर्या छे, श्री अरिहंत प्रभु आदिना अभावमां मुक्तिमार्ग आदिना देखाडनार श्री आचार्य भगवंतज छे, इत्यादि हेतुओथी शासनना स्तंभ आचार्य भगवंत त्रीजे स्थाने

ग्रहण कर्या छे, आचार्यपदना अधिकारी, शिष्योने सूत्रादि भणावी महान् उपकार करनार विगेरे अनेक हेतुओथी गच्छचिन्तक श्री उपाध्यायभगवंत चोथे स्थाने ग्रहण कर्या, मोक्षमार्गमां सहायदाता मोक्ष-मार्गना साधनार साधुभगवंतो पांचमे स्थानके लीधा, आ प्रमाणे पंचपरमेष्ठिरूप गुणीनो क्रमविचार बतावी हवे चार गुणो संबंधी विचारीये.

॥ गुणोनुं रहस्य अने क्रमविचार ॥

पवित्र आत्माना प्रकट थयेला अनन्त गुणो प्रशस्त होवा छतां आ चार गुणोनीज मोक्ष प्रत्ये का-रणता तथा आ चार मार्गना अवलम्बनथीज जीवोने सद्गति प्राप्त थाय छे, इत्यादि कारणोथी श्रीसिद्धचक्र यंत्रमा आ चारने ग्रहण कर्या छे. कह्युं छे के—

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ॥
एस मग्गुत्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसीहिं ॥ १ ॥

ज्ञान दर्शन, चारित्र अने तप ए चारज श्रेष्ठ-

दर्शि केवलिभगवंतोए आ (ज्ञानादि ४) मार्ग (मोक्षनो रस्तो) प्ररूप्यो छे ॥ १ ॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ॥
एय मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सुग्गइं ॥२॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप ए चार स्वरूप मुक्तिमार्गने अनुसरेला जीवो सद्गति (मोक्ष गति) ने पामे छे. (आ चार हेतुथी मुक्तिमार्ग प्रत्ये थती अनुकूलता).

नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे ॥
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई ॥ १ ॥

ज्ञानथी पदार्थोने जाणे छे, दर्शने करी पदार्थोनी श्रद्धा करे छे. चारित्रे करी आश्रवस्थानो [कर्मबन्धन-कारणो] ने रुंधे छे, तपे करी प्राचीन कर्ममलनी (निर्जरा थवाथी) सर्वथा शुद्ध थाय छे ॥ १ ॥

इत्यादि अनेक वचनोथी तथा युक्तिविचारोथी चारेमां मुक्तिसाधनता सिद्ध थाय छे. तेमां सम्यग्-दर्शन विना व्हाय तेटलुं (नवपूर्व सुधीनुं) ज्ञान पण अज्ञान रूप छे. अखंडधाराये पळातुं चारित्र पण अ-

भव्यादिनी जेम मुक्तिनुं कारण नथी तेम तप पण अज्ञान कष्टस्वरूप होवाथी सम्यग्दर्शन पद चारे पदोमां पहेलुं ग्रहण कर्युं छे. सम्यग्दर्शनथी शुद्ध थयेला ज्ञानथी हेयोपादेय पदार्थो जाण्यां शिवाय वैराग्यपरिणति थती नथी, अने ते विनानुं चारित्र 'मार्जारविरतिकल्प' छे. तप पण शुद्ध थतुं नथी तेथी ज्ञानपद बीजुं कह्युं छे. गढनाळाथी आवतो कचरो रोकाया शिवाय तळावनी अंदरनो कचरो साफ करी शकातो नथी तेम आश्रवस्थानो रूप कर्म आववाना साधनोथी आवतो कर्म कचरो रोकाया शिवाय आत्मशुद्धि (कर्म रहितपणुं) थइ शकती नथी,जेथी आवता कर्म कचराने रुंधवा समान चारित्र पद त्रीजुं ग्रहण कर्युं, त्यार बाद बंधायेला कर्मो यावत् निकाचित अवस्था सुधीना होय तेने पण क्षय करवानुं परम साधन, सर्व मंगलभेदोमां प्रथम मंगल स्वरूप अवधिज्ञानथी तेज भवमां मुक्ति पामवानुं जाणता पण श्रीमत्तीर्थंकरदेवोए आचरेलुं तपपद मुक्तिनुं महत् साधन होवाथी तप पद चोथुं ग्रहण कर्युं छे.

॥ संख्याविशिष्टता—महिमा ॥

पांच धर्मि (गुणि) पदो अने चार धर्म (गुण) पदो मळी नवना आंकमां ए विशिष्टता छे के-वधी आंक संख्याने गुणाकार करता ते आंकनो भंग थाय छे. पण नवना आंकने च्हाय तेटला गुणा करो तो पण नवनो अंक अभंगज रहे छे, नवने बमणा करवाथी १८ थाय, तेमां एक अने आठ बेउ मळी ९ थाय छे. त्रमणा करवाथी २७ थाय, तेमां पण बे अने सात ९. एज प्रमाणे आगळ आगळ जेटली संख्या गुणा करो तेमां नवनो आंक आवी उभोज रहे छे. श्री जिनेश्वर देवप्रतिपादित अबाधिततत्त्वो पण नव छे, शाश्वत निधिओ पण नव छे. इत्यादि अनेक विचारोथी नवपदमय श्रीसिद्धभगवंतनी विशिष्टता समजवा लायकछे.





॥ श्री सिद्धचक्रगुणोनुं स्तोत्र. ॥

१२ अर्हद्गुणाः—

अशोकाख्यं वृक्षं सुरविरचितं पुष्पनिकरं,
ध्वनिं दिव्यं श्रव्यं रुचिरचमरावासनवरम्।
वपुर्भासंभारं मधुररवं दुन्दुभिमथ,
प्रभोः प्रेक्ष्यच्छत्रत्रयमधिमनः कस्य न मुदः॥१॥
अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि-
दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च।
भामण्डलं दुन्दुभिरातपत्रं,
सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ २ ॥
अपायापगमो ज्ञानं, पूजा वचनमेव च।
श्रीमत्तीर्थकृतां नित्यं, सर्वेभ्योऽप्यातिशेरते ॥३॥

८ सिद्धगुणाः—

अनन्तं केवलज्ञानं, ज्ञानावरणसंक्षयात्।

अनन्तं दर्शनं चापि, दर्शनावरणक्षयात् ॥४॥
क्षायिके शुद्धसम्यक्त्व–चारित्रे मोहनिग्रहात् ।
अनन्ते सुखवीर्ये च, वेद्यविघ्नक्षयात् क्रमात् ॥५॥
आयुषः क्षीणभावत्वात्, सिद्धानामक्षया स्थितिः ।
नामगोत्रक्षयादेवाऽ–मूर्त्तानन्तावगाहना ॥६॥

३६ आचार्यगुणाः—

प्रतिरूपाद्याश्चतुर्दश, क्षान्त्यादिर्दशविधः श्रमणधर्मः ।
द्वादश भावना इति, सूरिगुणा भवन्ति षट्त्रिंशत्॥७

२५ उपाध्यायगुणाः—

अङ्गान्येकादश वै, पूर्वाणि चतुर्दशापि योऽधीते ।
अध्यापयति परेभ्यः, पञ्चविंशतिगुण उपाध्यायः ॥ ८॥

२७ साधुगुणाः—

व्रतषट्कं कायरक्षाः, पञ्चेन्द्रियलोभनिग्रहः क्षान्तिः ।
भावविशुद्धिः प्रतिले–खनादिकरणे विशुद्धिश्च ॥९॥
संयमयोगसुयोगोऽ, कुशलमनोवचःकायसंरोधाः ।
शीताद्याधिविषहनं, मरणाद्युपसर्गसहनं च ॥१०॥
सप्तविंशतिसुगुणै–रेभिरन्यैश्च यो विभूषितः साधुः ।

जिनशासनप्रवेशो, द्वारसमो रम्यगुणनिवहः ॥११॥

६७ सम्यग्दर्शनभेदाः—

श्रद्धा ४ लिङ्गं ३ विनयाः १०,
शुद्धि ३ दोषाः ५ प्रभावना ८ भणिताः ।
भूषण ५ लक्षण ५ यतना ६,
आकारा ६ भावना ६ ध्येयाः ॥ १२ ॥
स्थाना ६ न्येतैर्भेदै-रलङ्कृतं दर्शनमतिविशुद्धम् ।
ज्ञानक्रिययोर्मूलं, शिवसाधनमात्मसौख्यमिदम् ॥१३॥

५१ ज्ञानभेदाः—

अष्टाविंशतिभेदाढ्या, मतिः पूर्वमितं श्रुतम् ।
षोढा चाप्यवधिर्द्वेधा, मनःपर्यवमीरितम् ॥ १४ ॥
एकं केवलमाख्यात-मेकपञ्चाशदित्यमी ।
ज्ञानभेदा जिनैरुक्ता, भव्याम्भोजविकासकाः ॥१५॥

७० चारित्रभेदाः—

व्रत ५ धर्म १० संयमा १७ स्त्विह,
वैयावृत्यानि १० गुप्तयो नव ९ वै ।
ज्ञानादित्रिक ३ मिह तपः १२,
क्रोधादिनिरोधनं ४ च चारित्रम् ॥१६॥

५० तपोभेदाः—

द्विविधं स्यादनशन--मौनोदर्यं तथा द्विधा ।
चतुर्धा वृत्तिसंक्षेपः,कायक्लेश (रसत्याग) स्तथैकधा ॥१७
एकधा रससंत्यागः (कायसंक्लेशः), संलीनत्वं तथा द्विधा ।
एवं बाह्यतपोभेदाः, द्वादश श्रीजिनोदिताः ॥१८॥
दशधा प्रायश्चित्तं स्यात्, सप्तधा विनयस्तथा ।
वैयावृत्त्यं दशविधं, स्वाध्यायः पञ्चधा मतः ॥ १९ ॥
चतुर्विधं तथा ध्यान-मुत्सर्गो द्विविधस्तथा ।
अष्टात्रिंशदिमे भेदा-स्तपसोऽभ्यन्तरस्य वै ॥ २० ॥
पञ्चाशत्संख्यया ध्येयाः, निर्जरार्थिमनीषिभिः ।
अन्यथाऽप्यथवा भेदाः, पदानां परिकीर्त्तिताः ॥२१॥

॥ इति श्रीसिद्धचक्रगुणाः ॥

॥ श्रीसिद्धचक्र गुणविचार ॥

(१२ अरिहंत गुण)

प्रातिहारज आठ छे, सूल अतिशय चार ।
बार गुण अरिहंतदेव, नमो नमो बहुवार ॥ १ ॥

(८ सिद्धगुण)

एक एक कर्मना क्षय थकी, नीपन्यो गुण एकें एक ।
आठं गुणे इम ध्याइए, सिद्धप्रभु सुविवेक ॥ २ ॥

(३६ आचार्यगुण)

पडिरूवादिक चौद गुण, क्षान्त्यादिक दशधर्म ।
भावना बार छत्रीश ए, सूरिगुणनुं मर्म ॥ ३ ॥

(२५ उपाध्यायगुण)

अंग अग्यार भणे तथा, चउद पूर्व वली जेह ।
परने भणावे नेहथी, उपाध्यायगुण एह ॥ ४ ॥

(२७ साधुगुण)

व्रत छकायरक्षण तथा, इन्द्रिय लोभनिरोध ।
क्षमा भावशुद्धि वळी, पडिलेहणादि विशोध ॥ ५ ॥
संयमयोगे युक्तता, मनवचकाया शान्त ।
शीतादि परिषह तथा, मरणोपसर्ग सहंत ॥ ६ ॥
इम सगवीस गुणावलि, मौक्तिकमाल धरंत ।
मुक्तिमार्ग साधक मुनि, रमणीय गुण सोहंत ॥ ७ ॥

(६७ दर्शनभेद)

चउसद्दहण तिलिंग छे, दशविध विनय विचारोरे ।

त्रणशुद्धि पण दूषण, आठप्रभावक धारोरे ॥ ८ ॥
प्रभावक अड पंचभूषण, पंच लक्षण जाणीए,
षट् जयणा षट् आगार भावना, छव्विहा मन आणीये।
षट्ठाण समकिततणा, सडसठ भेद एह उदार ए,
एहनो तत्त्व विचार करतां, लहीजे भवपार ए ॥९॥

(५१ ज्ञानभेद)

मति अट्ठावीश भेद छे, श्रुतना चौद प्रकार ।
षड्विध ओही वर्णव्यो, मनःपर्यव दुगधार ॥ १० ॥
केवल एक वखाणीये, इम एकावन मान ।
ज्ञानभेद जिनवर कह्या, वंदुं धरी बहुमान ॥ ११ ॥

[७० चारित्रभेद]

व्रत पांचने दश श्रमणधर्म ज, संयम सत्तर जाणीये,
दशभेद वैयावच्च नवविध, ब्रह्मगुप्ति वखाणीये ।
ज्ञानादित्रण तप बार भेदे, कषाय चार निरोधीये,
आराधीने इम चरणसित्तरी, निजचरणने संशोधीये १२

[५० तपोभेद]

अनशनना बे भेद छे, ऊणोदरी बे भेद,

वृत्तिसंक्षेपना चार भेद, कायक्लेश (रसत्याग) छे एक १३
रसत्याग (कायक्लेश) छे एकविध, संलीनता दुगाविध ।
बाह्यतपना ए कह्या, बारभेद प्रसिद्ध ॥ १४ ॥
प्रायश्चित्त दश जाणीये, सगविह विनय उदार ।
दशविध वैयावच्च छे, सज्झाय पंचप्रकार ॥ १५ ॥
ध्यान चतुर्विध जाणीये, उत्सर्गना दोय भेद ।
अडत्रीश अभ्यन्तर मळी, तप पचाश सुभेद ॥ १६ ॥

॥ कोइक स्थळे १३००० जाप बतावे छे तेनो विचार ॥

१०८ पंचपरमेष्ठिना गुणो.

१२ श्री अरिहंतप्रभुना,
८ श्री सिद्धप्रभुना,
३६ श्री आचार्य भगवंतना,
२५ श्री उपाध्याय भगवंतना,
२७ श्री साधुभगवंतना,

५ दर्शनना भेदो.
५ ज्ञानना भेदो.

१० [1]श्रमणधर्मचारित्रना भेदो,

२ तपना भेदो.

कुल १३० भेद थया, ते प्रत्येकना सो सो जाप एटले (एक एक नवकारवाली) गणवाथी १३० ने सोए गुणतां १३००० संख्या थाय छे.

अर्थात्—

१२०० श्री अरिहंतपदनो जाप,

८०० श्री सिद्धपदनो जाप,

३६०० श्री आचार्यपदनो जाप,

२५०० श्री उपाध्यायपदनो जाप,

२७०० श्री साधुपदनो जाप,

५०० श्री दर्शनपदनो जाप,

५०० श्री ज्ञानपदनो जाप,

१००० श्री [2]चारित्रपदनो जाप,

---

१ बीजे स्थळे चारित्रना तथा तपना ६.—६—भेद बताव्या छे.

२ चारित्रना ६ भेदनी अपेक्षाये जाप संख्या ६०० तेज प्रमाणे तपना पण ६ भेदनी अपेक्षाये जाप संख्या ६०० जाणवी. बेउ मळी १२०० जाप थाय.

२०० श्री तपःपद्नो जाप,

१३००० कुल जाप

॥ श्री सिद्धचक्र महाराजना *२४६ गुण भेदविचार ॥
१०८ गुणि वा धर्मि आश्रयी गुणो २३८ गुण वा (धर्म) आश्रयो भेदो

॥ अरिहन्तना १२ गुण ॥

(८) प्रातिहार्य-

१ अशोकवृक्ष, २ देवकुसुमवृष्टि, ३ दिव्यध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामंडल, ७ देवदुन्दुभि, ८ छत्रत्रय.

(४ मूलातिशय)

१ अपायापगम, २ ज्ञान, ३ पूजा, ४वचनातिशय.

---

*कोइक स्थळे पंचपरमेष्ठिना १०८, दर्शन पदना ६७, ज्ञानपदना ५१, चारित्रपदना ५, तपपदना १२, सर्व मळी २४३ गुणभेदो पण देखाडया छे. तेमां चारित्रपदना सामायिक १, छेदोपस्थापनीय २, परिहारविशुद्धि ३, सूक्ष्मसंपराय ४, यथाख्यात ५. ए पांच भेद तथा तपपदनां ६ बाह्य अने ६ अभ्यन्तर मळी १२ भेद जाणवा.

२४ तीर्थंकरभेदे २४ खमा० काउ० विगेरे पण अन्यत्र आराधनामां आवे छे,

---

॥ सिद्धना ८ गुण, ॥

१ अनन्तज्ञान, २ अनन्तदर्शन, ३ अव्याबाध-सुख, ४ अनन्तसम्यक्त्वचारित्र, ५ अक्षयस्थिति, ६ अमूर्त्तअनन्तावगाहना, ७ अगुरुलघु, ८ अनन्तवीर्य.

सिद्धभगवंतना १५ भेद होवाथी १५ खमा० काउ० विगेरे पण अन्यत्र आराधवामां आवे छे,

१ जिनसिद्ध, २ अजिनसिद्ध, ३ तर्थिसि०, ४ अतीर्थसि०, ५ गृहिलिंग सि०, ६ अन्यलिं०, ७ स्वलिं०, ८ स्त्रीसिद्ध, ९ पुरुषसिद्ध, १० नपुंसकसि०, ११ प्रत्येक-बुद्धसिद्ध, १२ स्वयंबुद्ध०, १३ बुद्धबोधित०, १४ एकसिद्ध, १५ अनेक सिद्ध.

प्रकारान्तरे ३१ गुणोनी अपेक्षाए लीधा छे. ५ ज्ञानावरणीयाभाव, ९ दर्शनावरणीयाभाव, २ वेद-नीयाभाव, २ मोहनीयाभाव, ४ आयुष्कमाभाव,

२नामकर्माभाव,२ गोत्रकर्माभाव,५ अन्तरायकर्माभाव, तेमज वर्णाभावादिनी अपेक्षाये पण ३१ भेदो थाय छे.

॥ आचार्यना ३६ गुण ॥

१४ प्रतिरूपादि–

१ प्रतिरूप, २ तेजस्विता, ३ युगप्रधानागम, ४ मधुरवाक्य, ५ गांभीर्य, ६ धैर्य, ७ उपदेशतत्परता, ८ अपरिश्रावि, ९ सौम्यप्रकृति, १० संग्रहशीलता, ११ अभिग्रह, १२ अविकत्थकता, (अनात्मशंसिता), १३ अचपलता, १४ प्रशान्तहृदय.

१० क्षमादिधर्म–

१ क्षमा, २ मृदुता, ३ आर्जव, ४ मुक्ति, ५ तप, ६ संयम, ७ सत्य, ८ शौचा, ९ आकिंचन्य,१० ब्रह्मचर्य.

१२ भावना–

१ अनित्यत्व, २ अशरण, ३ संसार, ४ एकत्व, ५ अन्यत्व, ६ अशुचित्व, ७ आश्रव, ८ संवर, ९ निर्जरा,१० लोकस्वभाव, ११ बोधिदुर्लभता, १२ धर्म-कथकार्हद्दुर्लभता.

बीजी पण अनेक रीतोथी छत्रीशीओ थायछे जे आगळ देखाडवामां आवशे.

॥ उपाध्यायना २५ गुण. ॥

---

११ अंगपठनपाठनतत्परता,—

१ आचारांग, २ सूत्रकृतांग, ३ स्थानांग, ४ समवायांग, ५ भगवत्यंग, ६ ज्ञाताधर्मकथांग, ७ उपासकदशांग, ८ अंतकृद्दशांग, ९ अनुत्तरोपपातिकदशांग, १० प्रश्नव्याकरणांग, ११ विपाकांग.

१४ पूर्वपठनपाठनतत्परता—

१ उत्पाद, २ अग्रायणीय, ३ वीर्यप्रवाद, ४ अस्तिनास्ति प्र०, ५ ज्ञानप्र०, ६ सत्यप्र०, ७ आत्मप्र०, ८कर्मप्रवाद,९प्रत्याख्यानप्र०,१०विद्याप्र०,११कल्याणप्रवाद, १२ प्राणावाय,१३ क्रियाविशाल,१४ लोकबिन्दुसार,

बीजी पण अनेक रीतियोए पचीशीओ थाय छे जे आगळ बतावशामां आवशे,वळी मुख्यताए अन्यत्र

११ अंग १२ उपांग पठनपाठन तत्परता, १ चरणसित्तरी, १ करणसित्तरी ए प्रमाणे २५ गुणो पण लीधा छे.

॥ साधुना २७ गुण. ॥

छ व्रतो—

१ प्राणातिपातविरमण २ मृषावादविर० ३ अदत्तादानविर० ४ मैथुनविरम० ५ परिग्रहविरम० ६ रात्रिभोजनविर०

६ कायरक्षा—

१ पृथ्वीकायरक्षण, २ अपूकायरक्षण. ३ तैजसकायरक्षण, ४ वायुकायरक्षण, ५ वनस्पतिकायरक्षण, ६ त्रसकायरक्षा.

५ इंद्रियनिग्रह—

१ स्पर्शेन्द्रियनिग्रह, २ रसनेन्द्रियनिग्रह, ३ घ्राणेन्द्रिय निग्रह, ४ चक्षुरिन्द्रियनिग्रह, ५ श्रोत्रेन्द्रियनि०

१ लोभ निग्रह, १ क्षान्ति, १ भावविशुद्धि, १ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धि, १ संयमयोगयुक्तता, ३ अकुशलयोगनिरोध, [१ अकुशलमनोयोग, २ अकु-

शल वचन योग, ३ अकुशल काययोग] १ शीतादि परिसह सहनता, १ मारणान्तिकोपसर्गसहनता.

बीजी पण अनेक रीतिए २७ गुणोनी सत्तावीशीओ थाय छे, जे आगळ बतावाशे.

॥ सम्यग्दर्शनना ६७ भेदो. ॥

४ सद्दहणा—

१ परमार्थसंस्तव, २ परमार्थज्ञातृसेवना, ३ व्यापन्नदर्शनवर्जन, ४ कुदर्शनवर्जन.

३ लिङ्ग—

१ शुश्रुषा, २ धर्मराग, ३ वैयावृत्त्य.

१० विनय—

१ अर्हद्विनय, २ सिद्धवि०, ३ चैत्यवि०, ४ श्रुतविनय, ५ धर्मवि०, ६ साधुवि०, ७ आचार्यवि०, ८ उपाध्यायविनय, ९ प्रवचनसंघवि० १०, दर्शनविनय.

३ शुद्धि—

१ मनः शुद्धि, २ वचन शुद्धि, ३ कायशुद्धि.

५ दूषणत्याग—

१ शंका, २ आकांक्षा, ३ विचिकित्सा, ४ मिथ्यादृष्टिप्रशंसा, ५ मिथ्यादृष्टिसंसर्ग.

८ प्रभावक—

१ प्रावचनी, २ धर्मकथि, ३ वादि, ४ नैमित्तिक, ५ तपस्वी, ६ विद्याभृत्, ७ सिद्ध, ८ कवि,

५ भूषण—

१ जिनशासनक्रियाकुशलता, २ प्रभावना, ३ तीर्थसेवा, ४ स्थैर्य, ५ जिनशासनभक्ति.

५ लक्षण—

१ उपशम, २ संवेग, ३ निर्वेद, ४ अनुकंपा, ५ आस्तिक्य.

६ यतना (त्याग)—

१ परतीर्थिवंदन, २ परतीर्थिनमन, ३ परतीर्थिसहालाप, ४ परतीर्थिसहसंलाप, ५ परतीर्थिअन्नपानदान, ६ परतीर्थिवारंवारदान.

६ आगार—

१ राजाभियोग, २ गणाभियोग, ३ बलाभियोग,

४ देवाभियोग, ५ गुरुनिग्रह, ७ वृत्तिकान्तार,

६ भावना—

१ धर्मवृक्षमूल,२ धर्मपुरद्वार, ३ धर्मप्रासादपीठ, ४ धर्माधार, ५ धर्मभाजन, ६ धर्मनिधान.

६ स्थान—

१ अस्ति जीवः, २ नित्यानित्यो जीवः, ३ कर्मणः कर्ता,४ कर्मणोभोक्ता,५ जीवस्य मोक्षोऽस्ति, ७ मोक्षोपायोऽस्ति.

—०—

॥ ज्ञानना ५१ भेद,॥

——:०:——

२८ मतिज्ञान,—

४ व्यंजनावग्रह—

१ स्पर्शन, २ रसन, ३ घ्राण, ४ श्रोत्र,

६ अर्थावग्रह,

१ स्पर्शन, २ रसन, ३ घ्राण, ४ चक्षु, ५ श्रोत्र, ६ मनः

६ ईहा, ६ अपाय, ६ धारणा,

१४ श्रुतज्ञान—

१ अक्षरश्रुत, २ अनक्षरश्रु०, ३ संज्ञिश्रु०, ४ असंज्ञिश्रु०,५ सम्यक्‌श्रु०, ६ मिथ्याश्रु०, ७ सादिश्रु०, ८ अनादिश्रु०,९ सान्तश्रु, १० अनन्तश्रु०, ११ गमिक श्रुत,१२ अगमिकश्रुत, १३ अंगप्रविष्ट, १४ अनंगप्रविष्ट.

६ अवधिज्ञान

१ आनुगामिक, २ अनानुगामिक, ३ वर्धमान, ४ हीयमान, ५ प्रतिपाति, ६ अप्रतिपाति.

२ मनःपर्यवज्ञान

१ ऋजुमति, २ विपुलमति.

१ लोकालोकप्रकाशक केवलज्ञान.

॥ चारित्रना ७० भेदो. ॥

५ व्रतो.—

१ प्राणातिपातविरमण, २ मृषावादविर०, ३ अदत्ता० वि०, ४ मैथुन वि०, ५ परिग्रहविरमण,

१० श्रमणधर्म,

१ क्षमा, २ मार्दव, ३ आर्जव, ४ मुक्ति, ५ तप. ६ संयम, ७ सत्य, ८ शौच, ९ आकिंचन्य, १० ब्रह्मचर्य.

१७ संयम,—

१ पृथ्वीकायरक्षा, २ अप० र०, ३ तेज० रक्षा, ४ वायु० रक्षा, ५ वन०रक्षा, ६ द्वीन्द्रियर०, ७ त्रीन्द्रियरक्षा, ८ चतुरि० रक्षा, ए पंचे० रक्षा, १० अजीवसंयम ११ प्रेक्षासंयम, १२ उपेक्षासं०, १३ प्रमार्जनासं०, १४ परिष्ठापनसं०, १५ मनःसं०, १६ वचःसं०, १७ कायसंयम.

१० वैयावृत्य,—

१ आचार्यवैयावृत्य, २ उपाध्याय वै०, ४ तपस्वि वै० ४ लघुशिष्य वै०, ५ ग्लानसाधु वै०, ६ स्थविर वै०, ७ समनोज्ञसमाचारीकारक वै०, ८ श्रमणसंघ वै०, ९ चान्द्रादिकुलवै०, १० कोटिकादिगुण वैयावृत्य,

९ ब्रह्मगुप्ति,—

१ वसति, २ कथा, ३ निषद्या, (स्त्रीआसन), ४ इन्द्रिय०, ६ कुड्यन्तर०, पूर्वक्रीडित, ७ प्रणीताहार, ८ अतिमात्राहार, ९ शरीरविभूषा.

३ ज्ञानादि,—

१ ज्ञान, दर्शन, ३ चारित्र,

१२ तपोभेद,—

६ वाह्यतप,—

१ अनशन, २ ऊणोदरी, ३ वृत्तिसंक्षेप, ४ रसत्याग, ५ कायक्लेश, ६ संलीनता,

६ अभ्यन्तर तप,—

१ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावृत्य, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान, ६ उत्सर्ग,

४ कषायनिग्रह,

१ क्रोधनिग्रह, २ माननिग्रह, ३ मायानिग्रह, ४ लोभनिग्रह,

आ चरणसित्तरी कहेवाय छे तेवीज करणसित्तरी पण क्रिया अनुष्टान संबंधी छे,

---

॥ तपना ५० भेद, ॥

---

१२ वाह्यतप,

२ अनशन (१ यावत्काथिक, २ ईत्वरिक) २ ऊनोदर

(१ बाह्य, २ अभ्यन्तर) ४ वृत्तिसंक्षेप [१ द्रव्यथी २ क्षेत्रथी, ३ कालथी ४ भावथी,]

१ कायक्लेश, १ रसत्याग,

२ संलीनता १ (इन्द्रिय कषायादि सं०, २वसतिसं०)

३८ अभ्यन्तर तप—

१० प्रायश्चित्त (१ आलोचना, २ प्रतिक्रमण, ३ मिश्र, ४ विवेक, ५ उत्सर्ग, ६ तप, ७ छेद, ८ मूल, ९ अनवस्थाप्य, १० पारांचिक.)

७ विनय (१ ज्ञानविनय, २ दर्शन वि०, ३ चारित्रवि०, ४ शुभमनोवि०, ५ शुभवचनवि०, ६ शुभकायविनय, ७ औपचारिकवि०)

१० वैयावृत्य [१ आचार्यवै०, २ उपाध्याय०, ३ स्थविर०, ४ तपस्वि०, ५ लघुशिष्यादि०, ६ ग्लानसाधु०, ७ समनोज्ञसामाचारीकारक०, ८ संघ०, ए कुल०, १० गणवै०]

५ स्वाध्याय (१ वाचना, २ पृछना, ३ परिवर्तन,

४ अनुप्रेक्षा, ५ धर्मकथा.)

४ ध्यान (१ आर्त्त, २ रौद्र, ३ धर्म्य, ४ शुक्लध्यान)

२ उत्सर्ग (१ बाह्य अभ्यन्तर)

अन्यत्र तपथी प्रकट थती लब्धिभेदोए पण तपना ५० भेद वर्णव्या छे,

बीजी रीते पण तपना ५० भेद थाय छे.

२ बाह्यतप.—

(४) अनशन—

१ इत्वरिकानशन. २ इंगितमरणयावत्कथिकानशन. ३ पादपोपगमनयावत्कथिकानशन.

४ भक्तपरिज्ञायावत्कथिकानशन.

(१) ऊनोदरिका (१) वृत्तिसंक्षेप (१) रसत्याग

(१) कायक्लेश (१) संलीनता.

३१ अभ्यन्तरतप.—

(१०) प्रायश्चित.

१ आलोचना, २ प्रतिक्रमण, ३ आलोचनाप्रतिक्रमणोभय, ४ विवेक, ५ व्युत्सर्ग, ६ तप, ७ छेद

८ मूळ, ९ अनवस्थाप्य, १० पारांचित.

[७] विनय.

१ ज्ञानविनय, २ दर्शनवि०, ३ चारित्रवि०, ४ मनोवि०, ५ वचनावि०, ६ कायवि०, ७ औपचारिकवि०,

(१) वैयावृत्त्य.

(५) स्वाध्याय.

१ वाचना, २ पृच्छना, ३ परावर्तना, ४ अनुप्रेक्षा, ५ धर्मकथा.

(१६) ध्यान—

४ आर्तध्यान.

१ इष्टवियोगार्त०, २ अनिष्टसंयोगार्त०, ३ रोगचिन्तार्त०, ४ अग्रशोचार्त्त०.

४ रौद्रध्यान.

१ हिंसानुबंधिरौद्र, २ मृषानुबंधि ३ चौर्यानुबंधि, ४ परिग्रहानुबन्धिरौद्र.

४ धर्म्यध्यान.

१ आज्ञाविचयधर्म०, २ अपायवि०, ३ विपाकवि०, ४ संस्थानवि०,

४ शुक्लध्यान.

१ पृथक् वितर्कसविचार, २ एकत्ववितर्कअविचार, ३ सूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपाति, ४ समुच्छिन्नक्रियाऽनिवर्ति.

(२) उत्सर्ग.

१ बाह्य–उत्सर्ग २ अभ्यन्तर–उत्सर्ग.



॥ श्री सिद्धचक्काराधनमाहात्म्य ॥

श्री सिद्धचक्र महाराजना नवपदोनी समुदित आराधना करनार महाराज श्री श्रीपालकुमार आ भवमां अनेकभोग ऋद्धि वैभव पामी शासनप्रभावना करी माता तथा नव राणीओ सहित नवमे देवलोके उत्पन्न थया, यावत् नवमे भवे मुक्तिपद पामशे,

॥ नवपदोनुं पृथक् माहात्म्य ॥

गणधरभगवंत श्री गौतमस्वामिजी महाराज श्रेणिक महाराजाए पूछेला प्रश्नना जवाबमां नीचे प्रमाणे फरमावे छे.

॥ श्री अरिहंतपद माहात्म्य. ॥

तो भणइ गणी नरवर पत्तं अरिहंतपयप्पसाएणं ।
देवपालेण रज्जं, सक्कत्तं कत्तिएणावि ॥१॥

त्यारपछी गणधरभगवान् श्री गौतमस्वामीजि

कहे छे हे राजन् ? (श्रेणिक) श्री अरिहंत पद्ना आराधनना प्रसाद्थी देवपाल नामना शेठना नोकरे राज्य मेळव्युं, अने कार्तिकशेठे शक्रइन्द्रपणुं प्राप्त कर्युं.

॥ श्री सिद्धपद माहात्म्य. ॥

--:०:--

सिद्धपयं झायंता, के के सिवसंपयं न संपत्ता ।
सिरिपुंडरीयपंडव--पउममुणिंदाइणो लोए ॥२॥

श्री सिद्धभगवंतनुं ध्यान करता मुनिओमां अग्रेसर श्री पुंडरीक गणधर भगवान् पांचे पांडवो तथा पद्म मुनि विगेरे कोण कोण मुक्तिसंपत्ति पाम्या नथी? अर्थात् अनेक जीवो सिद्धिपद पाम्या छे. २

॥ श्री आचार्यपद माहात्म्य. ॥

नाहियवायसमज्जिय--पावभरो वि हु पएसिनरनाहो ।
जं पावइ सुररिद्धिं, आयरियप्पयप्पसाओ सो ॥३॥

(प्रथम) नास्तिक मतथी घणोज एकठो कर्यो

छे पाप समूह जेणे एवो छतां पण प्रदेशिराजा जे देव ऋद्धिने पामे छे ते केवल आचार्य भगवंतना चरणनोज प्रसाद जाणवो. ३

॥ श्री उपाध्यायपद माहात्म्य. ॥



लहुयं पि गुरूवइट्ठं, आराहंतेहिं वयरमज्झायं ।
पत्तो सुसाहुवाओ, सीसेहिं सीहगिरीगुरुणो ॥४॥

गुरु महाराजाए फरमावेल 'वयथी' न्हाना पण वज्रस्वामिजी उपाध्याय ' वाचनाचार्य ' ने आराधन करनार आचार्य श्री सिंहगिरिजी महाराजना शिष्योए उत्तम साधुवाद (आ उत्तम विनीत शिष्यो छे तेवी 'स्तुति') प्राप्त कर्यो. ४

॥ श्री साधुपद माहात्म्य ॥

साहुपयविराहणया, आराहणया य दुक्खसुक्खाइं ।
रुप्पिणी रोहिणीजीवेहिं, किं नहु पत्ताइं गुरूयाइं ॥५॥

श्री साधुपदनी विराधना तथा आराधनाथी

अनुक्रमे रूपिणी तथा रोहिणीना जीवोए भारे दुःख अने सुखो शुं प्राप्त कर्यां नथी ? अर्थात् रूपिणीना जीवे साधु पदनी विराधनाथी भारे दुःख मेळव्युं, अने रोहिणीना जीवे साधुपदनी आराधनाथी अतिशय सुख मेळव्युं छे. ५

॥ श्री दर्शनपद माहात्म्य ॥

दंसणपयं विसुद्धं, परिपालंतीइ निच्चलमणाए ।
नारीइ वि सुलसाए, जिणराओ कुणइ सुपसंसं ॥६॥

विशुद्ध श्रीसम्यग्दर्शन पदनी सर्व रीते आराधना करनार निश्चळ मनवाळी नागसारथीनी स्त्री सुलसा श्राविका अबळा जातिनी पण तीर्थंकर देव भगवान् श्रीमहावीर स्वामी सारी रीते प्रशंसा करे छे, (श्रावक अंबडपरिव्राजकद्वारा कुशल समाचार तथा धर्मलाभ कहेवराव्यो.) ६

॥ श्री ज्ञानपद माहात्म्य ॥

नाणपयस्स विराहण--फलंमि नाओ हवेइ मासतुसो ।
आराहणाफलंमी, आहरणं होइ सीलमई ॥७॥

श्री ज्ञानपद्नी विराधनाना फल संबंधमां दृष्टान्त तरीके श्रीमाषतुष मुनि छे अने आराधनाना फल संबंधमां उदाहरण तरीके श्री शीलमती छे, ७

---:o:---

॥ श्री चारित्रपद् माहात्म्य ॥

---o---

चारित्तपयं तहभा--वओ वि आराहियं सिवभवंमि ।
जेणं जंबुकुमारो, जाओ कयजणच्चमुक्कारो ॥८॥

श्री शिवकुमारना भवमां तेवा प्रकारे भावथी श्री चारित्रपद्नी आराधना करी के जेना प्रतापे कर्यो छे लोकोमां चमत्कार जेमणे एवा श्रीजंबूस्वामी चरमकेवलि उत्पन्न थया. ८

---:o:---

॥ श्री तपः पद् माहात्म्य ॥

वीरमईए तह कहवि, तवपयमाराहियं सुरतरुव्व ।
जह दमयंतीइ भवे, फलियं तं तारिसफलेहिं ॥९॥

कल्पवृक्ष समान श्रीतपःपद्नी राजपत्नी वीरमतीए तेवा कोइ पण 'उत्तम' स्वरूपे आराधना करीके जेम

नलराजानी पटराणी श्री दमयंतीना भवमां तेवा 'उत्कृष्ट' फलोए ते तपः फलीभूत थयुं ॥

॥ छेवटे श्री गौतमस्वामी भगवान् साक्षात् दृष्टान्त देखाडे छे ॥

किं बहुणा मगहेसर? एयाण पयाण भत्तिभावेणं।
तं आगमेसि होहिसि. तित्थयरो नत्थि संदेहो ॥१०॥

हेमगधदेशनायक श्रेणिक? घणुं शुं कहीये, आ पदो प्रत्येना भक्ति परिणामे करी भविष्यकालमां तुं तीर्थंकर [पद्मनाभ नामे आवती चोवीशीमां प्हेला] थइश, आ बाबतमां संदेह नथी. १०

उपदेशसार.

तम्हा एयाइं पयाइं, चेव, जिणसासणस्स सव्वस्सं।
नाऊणं भो भविया! आराहह सुद्धभावेणं ॥ ११ ॥

हे श्रेणिक? ते माटे आ [नव] पदोज श्री जि-

नशासननुं सर्वस्व छे (आखुं जिनशासन आ नवपदोमां समायेलूं छे) तेम जाणीने हे भव्यप्राणीओ ? शुद्धभावथी श्री सिद्धचक्र भगवान्नी आराधना करो ?? ११,

—————:*:—————

माहात्म्य (फल) निस्यन्द,

एयाइं च पयाइं, आराहंताण भव्वसत्ताणं।
हुंतु सया वि हु मंगल-कल्लाणसमिद्धिविद्धीओ ॥१२॥

निश्चयथी आ पदोनी आराधना करनार भव्य प्राणीओने मंगल [विपत्ति विघ्नोनी शान्ति], कल्याण (संपत्तिनी उत्कृष्टता) समृद्धि (सर्व प्रकारे वैभवनी पूर्णता) अने वृद्धि (च्हडती-अभ्युदय-आबादी) पण सदाने माटे थाओ १२.



॥ श्री सिद्धचक्र तप उद्यापन विधि ॥

भक्तिमान् भव्य श्रावके पोतानी शक्तिवैभवने अनुसारे उजमणुं करवाथी तपनी सफलता, लक्ष्मीनो सद्व्यय, शुभ ध्याननी वृद्धि, सुलभबोधि भव्यजीवोने सम्यक्त्वनी प्राप्ति, श्री तीर्थंकरदेवनी अपूर्व भक्ति, श्री जिनशासननी प्रभावना--शोभा--उन्नति अने तेनाथी सम्यक्त्वनी उत्तरोत्तर वृद्धि --दृढता, क्षायिक सम्यक्त्व, तीर्थंकर नाम कर्मबन्ध विगेरे अनेक महान् लाभो थाय छे, तप पूर्ण थये उजमणुं करवुं ते जिनेश्वर चैत्यनी उपर कलश च्हडाववा तुल्य छे,

॥ उजमणुं करतां राखवी जोइती सावधानता ॥

तपनुं उजमणुं करतां अपूर्व आत्मवीर्यनो उल्लास राखवो, वीर्यउल्लास विनानी दरेक क्रियाओ यथार्थ फलदायक थती नथी, वीर्यउल्लास साथे

करांती शुभ क्रियाओज मुक्तिनुं कारण थाय छे, जेम औषधि अनुपान साथे तथा पथ्यसेवनथी विशेष लाभ आपे छे तेम उजमणुं करवाथी तप पण विशेष फलदायक थाय छे,

असार अने चपल लक्ष्मी अनेक भवमां अरे एक भवमां पण अनेक वखत आवी अने गइ, मोहित प्राणिओने दुर्गतिओमां खेंची गइ अने खेंची जशे,

आ लक्ष्मीनो ल्हावो लेवानो तेनाथी सद्गति उपार्जवानो अपूर्व अवसर आव्यो मळ्यो जाणी पूर्ण उदारभावथी यथार्थ विधिसहित उजमणुं करवुं,

श्रीमद् उपाध्यायजी वर्णवे छे के–

"धन म्होटे छोटुं करे,धर्म उजमणुं तेह, मेरे लाल ॥
फल पूरुं पामे नहि,मम करजो तिहां संदेह, मेरेलाल ॥
मननो मोटो मोजमां ॥ १ ॥"

उजमणुं करतां विस्तीर्ण मंडपमां श्री सिद्धचक्रमंडल (यंत्रनी) त्रण पीठिका विगेरे करवा पूर्वक स्थापना करी महोत्सव करवो, श्रीसिद्धचक्र यंत्रनी गोठवण

वलयादिनी रचना विगेरे स्वरूप गीतार्थ गुरु महाराज पासे समजवुं,

॥ तपनां उद्यापन अंगे करवाना कर्तव्य ॥

जेटला तप दिवसो होय तेटली संख्या दरेकनी उत्कृष्टताथी लेवी, न बनी शके तो वर्तमान आचरणाए ओळीनी अगर पदोनी संख्या लेवाय छे,

नवीन चैत्यो बंधाववा, जीर्णोद्धार कराववा, जिन बिम्बो भराववा (परिकर समेत तथा परिकरविनाना श्री सिद्धचक्र भराववा, श्री सिद्धचक्र यंत्रो कराववा, श्री सिद्धचक्र यंत्रो चीतराववा, गणधर भगवंत आदिनी गुरु मूर्तिओ, पौषधालय, धर्मशाला, उपाश्रय बंधाववा.

प्रभुजीना तमाम आभूषणो--मुकुट, कुंडल, तिलक, हंस, बाजु, कल्ली, कडा आंगी, भामंडल, पाखरो, श्रीवत्स, बींबीओ, चांल्ला, विगेरे, त्रिगडा बाजोठो, सिंहासन, चंद्रुवा, पुंठीया, रुमाल, पाठा, तोरण, स्थापना-

चार्य, नवकारवाळीओ, अष्टमांगलिक, कटोरी, सोना रूपाना वरख अगरबत्ती, दशांगधूप, अगर, केशरना पडीका, बरासना पडीका, चंदनना पुंठीया, ओरशीया, धूपधाणा, कळश, थाळ, छाबडीओ, चंगेरीओ, रकाबी, वाटकीओ, आचमनी, वाटका, मोरपींछीओ, वाळाकुंचीओ, देगडा, टबुडीओ, प्याला, दंडासण, पुंजणी, सुपडी, फाणस, कोडीया, दीवीओ, हांडी, झम्मर, सरपोस, आरती, मंगळदीवा, घंट, घंटडीओ, त्रांबाकुंडी, हांडा, तांबडी, बाजोठ, पाटला, बाजोठीओ, नवग्रह--दिकपाल--अष्टमंगलना पाटला, चामर छत्रत्रय, अंगलुहणा, पाटलुहणा, कामलीओ, धोतीया, उत्तरासंग; ध्वजा, वाटवा, झोळीओ, दाबडीओ विगेरे, ठवणीओ, सांपडा, दाबडा, चाबखी, कवली, खडीया, कलम, पेनसीलो, चाकु, कातर, आनुपूर्वीनी चोपडीओ, मोरपींछीओ, कांबी, रुमाल, पाटी, पाठा दरेक आगमनी तथा ग्रन्थोनी नवनव प्रतो लखाववी जेटलुं मळी शके तेटलुं पुस्तक संग्रहवुं, ओधाना पाटा दशीओ, ओघारीया, नीशीथीआ, मुहपत्तीओ, ख-

भानी कामळी, कामळीओ, चोलपट्टा कपडांना ताका, संथारीया, दांडा ओघानी दांडीओ, पातरा, तरपणी, पाणी लाववाना लोट, झोळी, पल्लां, पुंजणीओ, दंरूा-सण ऊनना तथा पींछाना, सुपडी, पुंजणी, कंदोरा ओघाना दोरानी दोरीओ, तरपणीना दोरा, चरवळा, कटासणा, मुहपत्तीओ, संथारीया, दंडासण, कांब-लीओ, घडीओ विगेरे ज्ञानदर्शन चारित्रना उपकरणो एक्याशी एक्याशी अथवा नवनव संख्याए मूकवा,

(अरिहंतपद)	९ कर्केतनरत्न	३४ हीरा
सिद्ध ,,	८ माणेक	३१ परवाला
आचार्य ,,	५ पीलामणि	३६ गोमेदक
उपाध्याय ,,	२५ नीलमणि	
साधु ,,	२७ श्याममणि	५ राज्यपटमणि
दर्शनादिचार	२३९ मोटा उत्तम मोती	

आ उपरांत श्री सिद्ध चक्रयंत्र पूजनमां जोइता तमाम साधन विगेरे श्री गीतार्थ गुरुमहाराज पासेथी समजवा.

॥ श्री सिद्धचक्राराधक भव्यजीवनां कर्तव्यो !!!॥

१ श्री अरिहंतपदाराधन-प्रतिमाजी भरावना; जीर्णोद्धारो करावनां, अंजनशलाका, प्रतिष्ठाओ करावनी, आंगी, पूजा, महोत्सव करवा विगेरे श्री अरिहंत भक्ति.

२ श्री सिद्धपदाराधन--सिद्ध प्रतिमाओ भरावनी, तेमनी अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, आंगी, पूजा, महोत्सव करवा विगेरे श्री सिद्धभक्ति.

३ श्री आचार्यपदाराधन--श्री आचार्य भगवंतनी भक्ति विनय, वेयावच्च करवुं, द्वादशावर्त्त वन्दन करवुं, अशन पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्र वसति आदि पडिलाभवा, आचार्यपदप्रतिष्ठा करावनी. आचार्यना सामैया विगेरे सन्मान करवो. विगेरे.

४ श्री उपाध्यायपदाराधन--श्री उपाध्यायजी भगवंतनी भक्ति विनय वेयावच्च करवा भणवा भणाववाने तमाम अनुकूलता करी आपवी, उपाध्यायपद प्रतिष्ठा, सामैयु आदि सन्मान करवुं विगेरे.

५ श्रीसाधुपदाराधन--श्रीपंचमहाव्रतधारी मोक्षमार्ग सा-

धक साधु भगवंतोने वन्दन, नमन, आदर सन्मानादि करवा.वसति, अन्न, पान. औषध,भैषज्यादि आपवा. दीक्षा महोत्सवादि करवा; साधुनुं सामैयुं विगेरे करवा.

६ श्री दर्शनपदाराधन--श्री तीर्थ भक्ति करवी, श्री तीर्थरक्षणकार्यमां उत्साहपूर्वक बनती साहाय्य आपवी, यात्रा संघो काढवा, साधर्मिक वात्सल्यो करवा, रथयात्रादि महोत्सवो करवा,शासनोन्नतिना कार्यमां प्रयत्न करवो विगेरे.

७ श्री ज्ञानपदाराधन--सिद्धान्तो लखाववा, भणनारने सहाय आपवी, पुस्तक संरक्षणना साधनो योजवा, पुस्तक विगेरे ज्ञानसाधनोनी प्रभावना करवी, ज्ञानदान करवुं विगेरे.

८ श्री चारित्रपदाराधन--व्रत नियमादि पाळता विरति वंत जीवोनी भक्ति करवी, चारित्रना उपकरणो विगेरे साधनोथी साहाय्य करवी विगेरे.

९ श्री तपःपदाराधन--तपस्विओनी भक्ति वैयावच्चादि करवा तपस्विओने प्रभावनाओ करवी तप करतां उत्साह वधे तेवी अनुकूळता जोडी आपवी विगेरे.

॥ ओळीमां उपयोगी पच्चक्खाणो ॥

आयंबिलनुं पच्चक्खाण.

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पोरिसी साढपोरिसी सूरे उग्गए पुरिमड्ढ अवड्ढमुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तवि-वेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं एगासणं पच्चक्खाइ [1]तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया-

---

१ ठाम चौविहार करवो होय तो " एकलठाणं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं " ए प्रमाणे बोलवुं.

गारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवे-
ण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

आयंबिल करी मुखशुद्धि कर्या पछी उठता तिविहारनुं पच्चक्खाण.

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

मुट्ठिसहियंनु पच्चक्खाण.

[२]मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

---

१ साथे देसावगासिय पच्चक्खाण लेवुं होय तो " देसावगासियं उवभोगपरिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ " ए पच्चक्खाण पण साथें बोलवुं.

२ गंठसी, वेढसी आदि पच्चक्खाण करवुं होय तो ते पाठ बोलवो.

पाणहारनु पच्चक्खाण.

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागरेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

पारणाना दिवसनुं एकासणां बेसणानुं पच्चक्खाण.

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पोरिसि साढपोरिसी मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खियेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं [1]एगासणं बियासणं पच्चक्खाइ

---

१ जो बेसणुंज करवुं होय तो '.एगासणं' बोलवुं नहि अने एकासणुं करवुं होय तो 'बियासणं' बोलवुं नहि.

अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरु अब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणिया-गारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाण-स्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेणवा असित्थेण वा वोसिरइ,



॥ अथ श्री स्नात्र पूजानो विधि ॥

प्रथम त्रण गढने बदले त्रण बाजोठ मूकीने उपला बाजोठने मध्यभागे केशर (कुंकुम)नो साथीओ करवो, अने तेना आगळ केशर (कुंकुम)ना साथीआ चार करीने उपर अक्षत नांखवा तथा फळ मूकवां, वचला साथीआ उपर रूपानाणुं मूकवुं, अने चारे साथीआ उपर कलश स्थापवा. तेमां पंचामृत करी जल भरवुं. तथा वचला साथीआ उपर थाळ मूकी केशरनो साथीओ करी अक्षत नांखी फळ मूकी नवकार त्रण गणी प्रभुने पधरावबा. पछी बे सनाथीआओने ऊभा राखीने त्रण नवकार गणाववा. पछी प्रभुना जमणा पगना अंगुठे कळशमांथी जल रेडवुं, अने अंगलूहणां त्रण करवां पछी केशरथी पूजा करी हाथ धूपीने सनाथीआना जमणा हाथमां केशरनो चांल्लो करवो. पछी कुसुमांजलि (फूल) होय ते हाथमां आपवी, पछी नीचे प्रमाणे कहेवुं, दीपक एक-प्रभुनी जमणी बाजुए करवो

॥ पंडितश्रीवीरविजयजी कृत स्नात्रपूजा ॥

॥ काव्यं ॥

॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

सरसशान्तिसुधारससागरं,
शुचितरं गुणरत्नमहाकरम् ॥
भविकपंकजबोधदिवाकरं
प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

कुसुमाभरण उतारीने, पडिमा धरिय विवेक ॥
मज्जन पीठे थापीने, करीये जल अभिषेक ॥२॥

॥ गाथा ॥ आर्या गीति ॥

जिणजम्मसमय मेरु--सिहरंमि रयणकणयकलसेहिं ॥
देवासुरेहिं ण्हविउ, ते धन्ना जेहिं दिट्ठोसि ॥ ३ ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाळ ॥

निर्मलजल कलशे न्हवरावे, वस्त्र अमूलक अंग धरावे ॥ कुसुमांजलि म्हेलो आदि जिणंदा ॥ सिद्ध-स्वरूपी अंग पखाली, आतम निर्मल हुइ सुकुमाळी ॥ कु० ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥ आर्यागीति ॥

मचकुंदचंपमालइ–कमलाइं पुप्फपंचवण्णाइं ॥
जगनाहन्हवणसमये, देवा कुसुमांजली दिंति ॥५॥

॥ नमोऽर्हत्‌सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाळ ॥

रयण सिंहासन जिन थापीजे, कुसुमांजलि प्रभु चरणे दीजे ॥ कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा॥६॥

॥ दोहा ॥

जिण तिहुं कालय सिद्धनी, पडिमा गुण भंडार ॥
तसु चरणे कुसुमांजलि, भविक दुरित हरनार ॥७॥

॥ नमोऽर्हत्‌सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाळ ॥

कृष्णागरु वर धूप धरीजे, सुगंध कर कुसुमांजलि दीजे ॥ कुसुमांजलि म्हेलो नेमि जिणंदा ॥ ८ ॥

॥ गाथा ॥ आर्या गीति ॥

जसु परिमलबल दहदिसि, महुकरझंकारसद्दसंगीया ॥
जिणचलणोवरि मुक्का, सुरनरकुसुमांजलि सिद्धा ॥९॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाळ ॥

पास जिणेसर जग जयकारी,जल थल फुल उदक करधारी॥
कुसुमांजलि म्हेलो पार्श्वजिणंदा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

मूके कुसुमांजलि सुरा, वीरचरण सुकुमाल ॥
ते कुसुमांजलि भविकनां, पाप हरे त्रण काळ ॥ ११ ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाळ ॥

विविध कुसुम वर जाति गहेवी, जिनचरणे पण-मंत ठवेवी ॥ कुसुमांजलि म्हेलो वीर जिणंदा ॥१२॥

॥ वस्तु छंद ॥

न्हवणकाले न्हवणकाले, देवदाणवसमुच्चिय ॥ कुसुमांजलि तहिं संठविय, पसरंत दिसि परिमल सुगंधिय ॥ जिणपयकमले निवडेइं, विग्घहर जस नाम मंतो ॥ अनंत चउवीस जिन, वासव मलिय असेस॥ सा कुसुमांजलि सुहकरो, चउविह संघ विसेस ॥
कुसुमांजलि मेलो चउवीस जिणंदा ॥१३॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाळ ॥

अनंत चउवीसी जिनजी जुहारुं, वर्त्तमानचउवीसी संभारुं ॥ कुसुमांजलि मेलो चोवीशजिणंदा ॥ १४॥

॥ दोहा ॥

महाविदेहे संप्रति, विहरमान जिन वीश ॥
भक्तिभरे ते पूजिया, करो संघ सुजगीश ॥ १५ ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥कुसुमांजलि ॥ढाल॥

अपछरमंडलि गीत उच्चारा, श्री शुभवीरविजय जयकारा ॥ कुसुमांजलि मेलो सर्व जिणंदा ॥१६॥

॥ इति श्री कुसुमांजलयः ॥

पछी स्नात्रीया त्रण खमासमण देइ जगचिंतामणि चैत्यवंदन करी "नमुथ्थुणं" कही जयवीयराय पर्यंत कहे. पछी हाथकलश धूपी मुखकोश बांधी कलश लेइ उभो रहीने कलश कहे. ते ढाळ ॥

अथ कलश ॥ दोहा ॥

सयल जिणेसर पाय नमि, कल्याणकविधि तास ॥

वर्णवतां सुणतां थकां, संघनी पूगे आश ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ एक दिन अचिरा हुलरावती—ए देशी ॥

समकितगुणठाणे परिणम्या, वळी व्रतधर संयमसुख रम्या ॥ वीशस्थानकविधिये तप करी, इसी भावदया दिलमां धरी ॥१॥ जो होवे मुज शक्ति इसी, सवि जीव करुं शासन रसी ॥ शुचिरस ढलते [त) तिहां बांधतां, तीर्थंकर नाम निकाचतां ॥ २ ॥ सरागथी संयम आचरी, वचमां एक देवनो भव करी ॥ च्यवी पन्नरक्षेत्रे अवतरे, मध्यखंडे पण राजवी कुले ॥३॥ पटराणी कूखे गुणनीलो, जेम मानसरोवर हंसलो ॥ सुखशय्याये रजनी शेषे, उतरतां चउद सुपन देखे ॥४॥

॥ ढाळ स्वप्ननी ॥

पहेले गजवर १ दीठो, बीजे वृषभ २ पइट्ठो ॥ त्रीजे केशरी सिंह ३, चोथे लक्ष्मी ४ अबीह ॥१॥ पांचमे फूलनी माळा, ५ छट्ठे चंद्र ६ विशाळा ॥ रवि रातो ७ ध्वज मोहोटो ८, पूरण कळश ९ नहीं छोटो ॥२॥ दशमे पद्म सरोवर १०, अगियारमें

रत्नाकर ११ ॥ भवन विमान १२ रत्नगंजी, १३ अग्नि-शिखा धूमवर्जी १४ ॥३॥ स्वप्न लही जइ रायने भाषे, राजा अर्थ प्रकाशे ॥ पुत्र तीर्थंकर त्रिभुवन नमशे, सकल मनोरथ फळशे ॥४॥

॥ वस्तु छंद ॥

अवधि नाणे अवधि नाणे, उपना जिनराज ॥ जगत जस परमाणुआ, विस्तर्या विश्वजंतु सुखकार ॥ मिथ्यात्व तारा निर्वला, धर्मउदय परभात सुंदर ॥ माता पण आणंदियां, जागती धर्म विधान ॥ जाणंती जगतिलक समो, होशे पुत्र प्रधान ॥१॥

॥ दोहा ॥

शुभलग्ने जिन जनमिया, नारकीमां सुख ज्योत ॥
सुख पाम्या त्रिभुवन जना, हुओ जगत उद्योत ॥१॥

॥ढाळ॥ कडखानी देशी ॥

सांभळो कळश जन्म, महोत्सवनो इहां ॥ छप्पन कुमरी दिशि, विदिशि आवे तिहां ॥ माय सुत नामिय आणंद अधिको धरे ॥ अष्ट संवर्त्त, वायुथी कचरो हरे ॥१॥ वृष्टि गंधोदके, अष्ट कुमरी करे ॥ अष्ट कलशा

भरे, अष्ट दर्प्पण धरे ॥ अष्ट चामर धरे, अष्ट पंखा लही ॥ चार रक्षा करी, चार दीपक ग्रही ॥२॥ घर करी केळनां, माय सुत लावती ॥ करण शुचिकर्म, जळ, कलशे न्हवरावती ॥ कुसुम पूजी अलंकार पहेरावती ॥ राखडी बांधी जइ, शयन पधरावती ॥३॥ नमिय कहे माय तुज, बाल लीलावती ॥ मेरु रवि चंद्र लगे, जीवजो जगपति ॥ स्वामिगुण गावती; निज घर जावती ॥ तिण समे इंद्र, सिंहासन कंपती ॥४॥

॥ ढाल ॥ एकवीशानी देशी ॥

जिन जन्म्याजी जिण वेला जननी घरे ॥ तिण वेलाजी इंद्रसिंहासन थरहरे ॥ दाहिणोत्तरजी, जेता जिन जनमे यदा ॥ दिशिनायकजी, सोहम ईशान बेहु तदा ॥१॥

॥ त्रुटक ॥

तदा चिंते इंद्र मनमां, कोण अवसर ए बन्यो ॥ जिनजन्म अवधिनाणे जाणी, हर्ष आनंद ऊपन्यो ॥१॥ सुघोष आदे घंटनादे, घोषणा सुरमें करे ॥ सवि देवि देवा जन्ममहोत्सवे, आवजो सुरगिरिवरे ॥२॥

॥ढाळ॥ पूर्वली ॥

एम सांभलीजी, सुरवर कोडि आवी मले ॥ जन्ममहोत्सवजी, करवा मेरु उपर चले ॥ सोहमपतिजी, बहुपरिवारे आवीया ॥ मांय जिननेजी, वांदी प्रभुने वधावीया ॥३॥

॥ त्रुटक ॥

वधावी बोले हे रत्नकुक्षि--धारिणि ? तुज सुततणो ॥ हुं शक्र सोहम नाम करशुं, जन्म उत्सव अति घणो ॥ एम कही जिन प्रतिबिंब थापी, पंच रूपे प्रभु ग्रही ॥ देव देवी नाचे हर्ष साथे, सुरगिरि आव्या वही ॥४॥

॥ढाळ॥ पूर्वली ॥

मेरु ऊपरजी, पांडुकवनमें चिहुं दिशे ॥ शिला उपरजी सिंहासन मन उल्लसे ॥ तिहा बेसीजी, शक्रे जिन खोळे धर्या ॥ हार त्रेशठजी, बीजा तिहां आवी मळ्या ॥५॥

॥ त्रुटक ॥

मळ्या चोसठ सुरपति तिहां, करे कलश अड जातिना ॥ मागधादि जल तीर्थऔषधि, धूप वली बहु भातिना ॥ अच्युतपतिए हुकम कीनो, सांभलो देवा सवे ॥ खीरजलधि गंगानीर लावो, झटिति जनममहोत्सवे ॥ ६ ॥

॥ढाळ ॥ विवाहलानी ॥

सुर सांभलीने संचरीया, मागध वरदामे चलीया ॥ पद्मद्रह गंगा आवे, निर्मल जल कलश भरावे ॥ १ ॥ तीरथ फल औषधि लेता, वली खीरसमुद्रे जाता ॥ जल कलशा वहुल भरावे, फूल चंगेरी थाल लावे ॥२॥ सिंहासन चामर धारी, धूपधाणा रकेबी सारी ॥ सिद्धांत भाख्यां जेह, उपकरण मिलावे तेह ॥३॥ ते देवा सुरगिरि आवे, प्रभु देखी आनंद पावे ॥ कलशादिक सहु तिहां ठावे, भक्ते प्रभुना गुण गावे ॥४॥

॥ ढाळ ॥ राग धन्याश्री ॥

आतम भक्ति मळ्या केइ देवा, केता मित्तनु-जाइ ॥ नारी प्रेर्या वळी निज कुलवट; धर्मी धर्म स-खाइ ॥ जोइस व्यंतर भुवनपतिना, वैमानिक सुर आवे ॥ अच्युतपति हुकमे धरी कळशा, अरिहाने न्हवरावे ॥ आ० ॥१॥ अडजाति कळशा प्रत्येके, आठ आठ सहस प्रमाणो ॥ चउसट्ठ सहस हुआ अभिषेके, अढीसें गुणा करी जाणो ॥ साठ लाख उपर एक कोडि, कळशानो अधिकार ॥ बासठ इंद्रतणा तिहा बासठ,

लोकपालना चार ॥ आ० ॥ २ ॥ चंद्रनी पंक्ति छासठ छासठ, रवि श्रेणि नरलोको ॥ गुरुस्थानक सुर केरो एकज, सामानिकनो एको ॥ सोहमपति ईशानपतिनी इंद्राणीना सोल ॥ असुरनी दश इंद्राणी नागनी, बार करे कल्लोल ॥ आ० ॥ ३ ॥ ज्योतिष व्यंतर इंद्रनी चउ चउ, पर्षदा त्रणनो एको ॥ कटकपति अंगरक्षक केरो, एक एक सुविवेको ॥ परचूरण सुरनो एक छेल्लो, ए अढीसें अभिषेको ॥ ईशानइंद्र कहे मुझ आपो, प्रभुने क्षण अतिरेको ॥ आ० ॥ ४ ॥ तब तस खोळे ठवी अरिहाने, सोहमपति मनरंगे ॥ वृषभरूप करी शृंग जळे भरी, न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ पुष्पादिक पूजीने छांटे, करी केसर रंगरोले ॥ मंगळदीवो आरति करतां, सुरवर जय जय बोले ॥ आ० ॥ ५ ॥ भेरी भूंगळ ताल बजावत, वळिया जिन कर धारी ॥ जननीघर माताने सोंपी, एणिपरे वचन उच्चारी ॥ पुत्र तुमारो स्वामि हमारो, अम सेवक आधार ॥ पंच धाव्य रंभादिक थापी, प्रभु खेलावण

हार ॥ आ० ॥ ६ ॥ बत्रीश कोडि कनक मणि माणिक, वस्त्रनी वृष्टि करावे ॥ पूरण हर्ष करेवा कारण, द्वीप नंदीसर जावे ॥ करीय अट्ठाइ उत्सव देवा, निज निज कल्प सधावे ॥ दीक्षा केवलने अभिलाषे; नित नित जिन गुण गावे ॥ आ० ॥ ७ ॥ तपगच्छ ईसर सिंह सूरीसर, केरा शिष्य वडेरा ॥ सत्यविजय पन्यासतणे पद, कपूरविजय गंभीरा ॥ खिमाविजय तस सुजसविजयना, श्री शुभविजय सवाया ॥ पंडित वीरविजय शिष्ये जिन, जन्म महोत्सव गाया॥आ०॥८॥ उत्कृष्टा एकशोने सित्तेर, संप्रति विचरे वीश॥ अतीत अनागत काळे अनंता, तीर्थंकर जगदीश ॥ साधारण ए कळश जे गावे, श्री शुभवीर सवाइ ॥ मंगळलीला सुखभर पावे, घर घर हर्ष वधाइ ॥ आतम० ॥ ९ ॥

॥ इति पंडितश्रीविरविजयजी कृत स्नात्र पूजा समास ॥

अहीं कळशाभिषेक करीये. पछी दुध, दहि, घृत, जळ अने शर्करा ए पंचामृतनो पखाल करीने पछी पूजा करीये ने फूल चढावीये. पछी लूण उतारी आरती उतारवी. पछी प्रतिमाजीने आडो पडदो राखी स्नात्रीआओए पोताना नव अंगे कंकु (केशर)ना चांल्ला करवा. पछी पडदो काढी नांखी मंगळदीवो उतारवो.

॥ अथ लूण उतारणं ॥

लूण उतारो जिनवर अंगे, निर्मळ जळधारा मन रंगे ॥ लूण० ॥ १ ॥ जिम जिम तडतड लूण ज फूटे, तिम तिम अशुभ कर्मबंध त्रूटे ॥ लूण० ॥ २ ॥ नयण सलूणां श्री जिनजीनां, अनुपम रूप दयारस भीनां ॥ लूण० ॥३॥ रूप सलूणुं जिनजीनुं दीसे, लाज्युं लूण ते जळमां पेसे ॥ लूण० ॥ ४ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ जलधारा, जलण खेपवीये लूण उदार ॥ लूण० ॥५॥ जे जिन उपर दुमणो प्राणी, ते एम थाजो लूण ज्युं पाणी ॥ लूण० ॥ ६ ॥ अगर कृष्णागरु कुंदरु सुगंधे, धूप करीजे विविध प्रबंधे ॥ लूण० ॥ ७ ॥ इति ॥

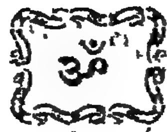
॥ अथ आरति ॥

विविध रत्नमणि जडित रचावो, थाल विशाल अनोपम लावो ॥ आरति ऊतारो प्रभुजीनी आगे, भावना भावी शिवसुख मागे ॥ आ० ॥ १ ॥ सात चौद ने एकवीश भेवा, त्रण त्रणवार प्रदक्षिणा देवा आ० ॥ २ ॥ जिमजिम जलधारा देइ जंपे, तिम तिम

दोहग थरहर कंपे ॥ आं० ॥ ३ ॥ बहु भव संचित पाप पणासे, द्रव्यपूजाथी भाव उल्लासे ॥ आ० ॥ ४ ॥ चौद भुवनमां जिनजीने तोले, कोइ नहीं आरति इम बोले ॥ आरति० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मंगळदीवो ॥

दीवो रे दीवो मंगळिक दीवो, भुवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी० ॥ १ ॥ चंद्र सूरज प्रभु तुम मुख केरा, लूंछण करता दे नित्य फेरा ॥ दी० ॥ २ ॥ जिन तुज आगल सुरनी अमरी, मंगलदीप करी दिये भमरी ॥ दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे, तिम तिम भवनां दुरित दझावे ॥ दी० ॥ ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमांजलि चंदन, धूप दीप फल नैवेद्य वंदन ॥ दी० ॥ ५ ॥ एणीपरे अष्टप्रकारी कीजे, पूजा स्नात्र महोत्सव पभाणीजे ॥ दीवो रे० ॥ ६ ॥



॥ अथ श्री नवपद पूजा विधि ॥

आ पूजामां जे जे चीजो अवश्य जोइये, तेमांनी केटलीएक चीजोनां नाम लखीए छीए:—

दुध, दधि, घृत, शर्करा, शुद्धजळ, ए पंचामृत तथा केशर, सुगंधी, चंदन, कर्पूर, कस्तुरी, अमर, रोली, मौली, छुटां फुल, फूलोनी माळा, फुलोना चंद्रुवा, धूप, तंदुल प्रमुख नव जातिनां धान्य, नव प्रकारनां नैवेद्य, नव प्रकारनां फळ, नव प्रकारनी पक्व वस्तु, मिश्री, पतासां, ओला प्रमुख, तथा अंगलूहणांने वास्ते सफेद वस्त्र, अने पहेराववाने वास्ते उत्तम रेशमी वस्त्र, वासक्षेप, गुलाबजळ, अत्तर, इत्यादिक बीजा पण नव नव नालीना कळश, नव रकेबी, परात (त्रास), तसला, आरती, मंगलदीपक, भगवाननी आंगी, समवसरण, इत्यादिक सर्व वस्तु प्रथमथी ठीक करीने राखवी. ए थकी पूजामां विघ्न न होय. ए संक्षेप विधि कह्यो. विशेष विधि गुरुथकी जाणवो.

॥ कलश विधि ॥

चैत्र तथा आश्विन मासमां ए पूजाओ भणावे, तेवारे नव स्नात्रिया करिये, महोटा कळश प्रमुखमां पंचामृत भरिये, स्थापनामां श्रीफळ तथा रोकड नाणुं धरिये, केशरथी तिलक करे,

कंकणदोरो हाथे बांधे, डावा हाथमां स्वस्तिक करीने विधिसंयुक्त स्नात्र भणावे.

प्रथम श्री अरिहंतपद श्वेतवर्णे छे माटे तांदुल, (चोखा), धूप, दीप, नैवेद्य प्रमुख अष्ट द्रव्य, वासक्षेप, नागरवेल प्रमुखनां पान, रकेबीमां धरीने ते रकेबी हाथमां राखे. नव कळशने मौलीसूत्र बांधी, कुंकुमना स्वास्तिक करी, पंचामृतथी भरीने ते कळशो हाथमां लेइ, प्रथम श्री अरिहंतपदनी पूजा भणे ते संपूर्ण भणी रह्या पछी महोटी परातमां (थालमां) प्रतिमाजीने पधरावे. पछी "ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं " ए प्रमाणे कहेतो थको, श्री अरिहंतपदनी पूजा करे. अष्टद्रव्य अनुक्रमे चढावे. इति प्रथमपद पूजा विधि.

२ बीजुं सिद्धपद रक्तवर्णे छे, माटे घउ रकेबीमां धरी श्रीफळ तथा अष्ट द्रव्य लइने नव कळश पंचामृतथी भरीने बीजी पूजा भणे ते संपूर्ण थवाथी "ॐ ह्रीँ नमो सिद्धस्स" एम कही कळश ढोळे, अष्टद्रव्य चढावे. इति द्वितीयपदपूजा विधि.

३ त्रीजुं आचार्यपद पीळे वर्णे छे, माटे चणानी दाळ, अष्ट द्रव्य श्रीफळ प्रमुख लइ, नव कळश पंचामृतथी भरीने त्रीजी पूजानो पाठ भणे. ते संपूर्ण थयाथी "ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं" एम कही कळश ढोळे, अष्ट द्रव्य चढावे. इति तृतीयपदपूजा विधि.

४ चोथुं उपाध्यायपद नील वर्णे छे, माटे मग प्रमुख तथा अष्ट द्रव्य लइने पूर्वोक्त विधिये पूजा भणी संपूर्ण थवाथी

"ओँ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं" एम कही कळश ढोळे, अष्ट द्रव्य चढावे इति चतुर्थपदपूजा विधि.

५ पांचमुं श्री साधुपद श्यामवर्णे छे, माटे अडद प्रमुख लेइ बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करी पूजा भणे ते संपूर्ण थयाथी "ओँ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूणं" कहे इति पंचमपद पूजा विधि.

६ तेमज छठुं दर्शनपद श्वेतवर्णे छे, माटे तंदुल प्रमुख लेइ "ओँ ह्रीँ नमो दंसणस्स" कहेवुं, बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो. इति षष्ठपदपूजा विधि.

७ सातमुं ज्ञानपद श्वेतवर्णे छे, माटे चावल प्रमुख लेइ ओ ह्रीँ नमो नाणस्स" कहेवुं. बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो. इति सप्तमपदपूजा विधि,

८ आठमुं चारित्रपद पण श्वेतवर्णे छे, माटे चोखा प्रमुख "ओँ ह्रीँ नमो चारित्तस्स" कहेवुं. बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो. इति अष्टमपदपूजा विधि.

९ नवमुं तपपद श्वेतवर्णे छे, माटे चोखा प्रमुख लई पूर्वोक्त विधि करीने "ओ ह्रीं नमो तवस्स" कही कळश ढाळे अष्ट-द्रव्य चढावे. पछी अष्टप्रकारी पूजा करे, आरति करे, इतिश्री नवमपदपूजा विधि.

॥ इति नवपदपूजा विधि समाप्त ॥

श्रीतार्किकचक्रचक्रवर्ति-न्यायविशारद-न्यायाचार्य
महामहोपाध्याय—

॥ श्रीयशोविजयजीगणिजीविरचित्त श्रीनवपदजीनी पूजा ॥

॥ प्रथम श्री अरिहंतपदपूजा प्रारंभः ॥

काव्यं—उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं,
सप्पाडिहेरासणसंठियाणं ॥
सद्देसणाणंदियसज्जणाणं,
नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥१॥

श्रीज्ञानविमलसूरिकृत स्तवना ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदान-प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कर्या कर्म दुर्मर्म

बीजी मतनो वधारो—

१. परम मंत्र प्रणमी करी तास धरी उर ध्यान ।
अरिहंत पद पूजा करो निज निज शक्ति प्रमाण ॥
(बाकी सरखुं)

चकचूर जेणे, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाळे, सदा वासियो आतमा तेणे काळे ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महा-पाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कर्यां घातियां कर्म चारे अलग्गां, भवोपग्रही चार जे छे विलग्गा ॥ जगत् पंच कल्याणके सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामे ॥५॥

श्रीदेवचन्द्रजीकृत स्तवना ॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्म धुरंधर धीरोजी ॥ देशना अमृत वरसता, निजवीरज वडवीरोजी ॥ १ ॥ (उलालो) वर अखय, निर्मल ज्ञानभासन, सर्वभाव प्रकाशता ॥ निज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावे, चरणथिर-ता वासता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय, प्राति-हारज शोभता ॥ जगजंतु करुणावंत भगवंत, भविक-जनने क्षोभता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाळ ॥ श्रीपाळना रासनी ॥

त्रीजे भव वरस्थानक तप करी, जेणे बांध्युं जिन नाम ॥ चोसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्रपद वंदो, जेम चिरकाळे नंदो रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पण अजवाळुं ॥ सकळ अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमी अघ टाळुं रे ॥ भविका ॥ सि० ॥२॥ जे तिहुं नाण समग्ग उप्पन्ना, भोगकरमक्षीण जाणी ॥ लइ दीक्षा शिक्षा दिये जनने, ते नमिये जिननाणीरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३ ॥ महागोप महामाहण कहिये, नियामक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमिये उत्साहरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जस छाजे, पांत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमिये प्राणी रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ॥ श्रीपाळना रासनी ॥

अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे ।

भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थाय रे ॥ १ ॥
वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभळजो चित्त लाइ रे ॥
आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मळे सवि आइ रे ॥वीर०॥२॥

विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जन्तुमहोदयकारणम् ॥ जिनवरं बहुमानजलौघतः शुचिमनाः स्नपयामि जिनेश्वरम् ॥१॥

स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे सकलदेवे विमलकलशनीरे । आपणा कर्ममल दूर कीधां, तिणे ते विबुध ग्रन्थप्रसिद्धा ॥ १ ॥ हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो (अम तणा नाथ जीवानुजीवो) ॥२॥ ओँ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमात्मने परमेश्वराय, जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते सिद्धचक्राय श्रीअर्हत्पदाय जलं चन्दनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा॥ ओँ ह्रीँ नमो अरिहंताणं ।

कही अनुक्रमे श्री अरिहंत पदनी अष्ट प्रकारी

पूजा करे (आ प्रमाणे दरेक पूजा दीठ जाणवुं, मात्र पदनुं नाम फेरववुं).

॥ इति प्रथम श्रीअरिहंतपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ द्वितीय श्री सिद्धपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्यं ॥

सिद्धाणमाणंदरमालयाणं ॥
नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं ॥

करी आठकर्म क्षये पार पाम्या, जराजन्ममरणादि भय जेणे वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा थया

---

१ वीजी प्रतनो वधारो—

१ सिद्धा० समग्गकम्मक्खयकारगाणं, जम्मं जरादुक्खनिवारगाणं।

२ वीजी पूजा सिद्धनी कीजे दील खुशीयाल
अशुभ कर्म दूरे टळे, फले मनोरथमाळ ॥ १ ॥
(वाकी सरखुं)

१ सकल कर्मना क्लेशथी, मूकाणा महाभाग ।
चिदानन्दमय शाश्वता, लागे कोइ न डाग ॥ १ ॥
लोक अग्रक्षेत्रे रह्या, लही अनन्ती ऋद्धि ।
भस्म कीया वाळी कर्म, परम आतमा सिद्ध ॥ २ ॥

पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥६॥ त्रिभागोनदेहावगाहा-त्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जातवर्णादि लेशा ॥ सदानंद

करवुं स्मरण ध्यान तसु, प्रतिमा वन्दन तास ।
नाम जाप पूजन न्हवण करीये धरी उल्लास ॥३॥
अवर्णवाद आशातना, वरजी नर सुविवेक ।
सदा भक्ति करवी भली, धरी मनमांही टेक ॥ ४ ॥
अरिहंत पण जेहने नमे, आठ कर्म कृतनाश ।
पनर भेद छे सिद्धना, कुण समरे नहि तास ॥ ५ ॥
मुकाये भवसहस (भ्रमण) थी, सिद्ध भणी नमस्कार ।
भावे जेह करे भविक, बोधि लाभ विस्तार ॥ ६ ॥
सुरतरु असुरादिक तणा, सुख सघळा ए मेलां ।
तेह थकी शिव सुख तणी, अनन्ती गुणी छे केली ॥७॥
जिणे अमृत रस चाखीयो, बीजे रस न सुहाय ।
तिम शिवसुख जाण्यो जिणे, बीजां ना वेदाय ॥ ८ ॥
जीहां एक सिद्धातमा तिहां अनंता होय ।
पण अमूर्त्तपणा थकी, बाधा न लहे कोय ॥ ९ ॥
सिद्ध तणी अवगाहना, त्रिणसया तेतीस ।
धनुष त्रिभागे अधिक, कही उत्कृष्टी इश ॥१०॥
उणा हाथ त्रिभागथी, च्यार हाथ गणी लेय ।
सिद्ध तणी अवगाहना, मध्यम भाखी एह ॥११॥

सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादिस्वरूपा ॥७॥

॥ढाळ॥ उलालानी देशी ॥

सकल करममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपोजी ॥ अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपत्तिभूपोजी ॥३॥ [उलालो] जेह भूप आतम सहजसंपत्ति, शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परिणाति, सिद्धसाधन परभणी ॥ मुनिराज मानसहंस समवड, नमो सिद्ध महागुणी ॥४॥

॥ पूजा ढाळ ॥

समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विशेष ॥ अवगाहन लही जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते

जघन्य सिद्ध अवगाहना, अष्टांगुल एक हाथ ।
कूर्मा पुत्रादिक तणा, इम करी श्री जगनाथ ॥१२॥
सिद्ध ध्यानथी जीवना, जाये दुष्कृत कोटि
जीम अमृतना विन्दुथी, जाय तीव्र विषचोटि ॥१३॥
प्रतिबिंबित निज आत्मस्युं, सिद्ध निहाळे जेह ।
त्रिजग पूज्यपद संपदा, ततखिण पामे तेह ॥

अशेष रे ॥ भविका ॥ सि० ॥६॥ पूर्व प्रयोगने गति परिणामे, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊर्ध्वगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥भविका॥ सि० ॥७॥ निर्मल सिद्धाशिलानी उपरे, जोयण एक लोगंत ॥ सादि अनंत तिहां स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ८ ॥ जाणे पण न शके कही परगुण, प्राकृत तेम गुण जास ॥ उपमा विण नाणी भवमांहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥ भविका । सि० ॥ ९ ॥ ज्योतिशुं ज्योति मळी जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥भविका॥ सिद्धचक्र० ॥१०॥

॥ ढाळ ॥

रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होये सिद्ध गुणखाणी रे॥वीर०॥३॥

जिनेश्वर० काव्यं ॥ विमल० ॥ ओँ ह्रीँ० ॥

॥ इति द्वितीय सिद्धपदपूजा समाप्त ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय श्री आचार्यपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्यं ॥

॥ [1][2]सूरीण दुरीकयकुग्गहाणं ॥
नमो नमो सूरसमप्पहाणं ॥२॥

नमुं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंद्रागमे प्रौढ-साम्राज्यभाजा ॥ षट्वर्ग वर्गित गुणे शोभमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥ ८॥ भविप्राणीने देशना देश काळे, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंति कल्पा, जगे ते चिरं जीवजो शुद्ध जल्पा ॥ ९ ॥

---

२ बीजी प्रतनो वधारो.

१ सूरी० सद्देसणादिसुसमायराणं, अखंडछत्तीसगुणायराणं १

२ हवे आचारजपद तणी, पूजा करो सविशेष ।
मोह तिमिर दूरे हरे, सूझे भाव अशेष ॥२॥

(बाकी सरखुं)

निरवद्य विद्याए पवित्र, मंत्र सिद्धनो बीज ।
गुरुनी भक्ति विवेकीये, करवी नाति एहीज ॥१॥
जिनवरनी भक्ते करी, पूर्व खपावे कर्म ।
नमस्करे आचार्यजी, सिद्ध मंत्रादिक धर्म ॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

आचारज मुनिपति गणि, गुणछत्रीशी धामोजी । चिदानंद रस स्वादता, परभावे निःकामोजी ॥ ५ ॥ [उलालो] निःकाम निर्मळ शुद्धचिद्घन, साध्यनिज निरधारथी ॥ निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधना व्यापारथी ॥ भविजीव बोधक तत्त्वशोधक, सयलगुण संपत्तिधरा ॥ संवरसमाधि गतउपाधि, दुविध तपगुण आगरा ॥ ६ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

पंच आचार जे शुद्धा पाळे, मारग भाखे साचो ॥ ते आचारज नमिये नेहशुं, प्रेम करीने जाचोरे ॥भविका ॥ सि० ॥ ११ ॥ वर छत्रीश गुणे करी सोहे, युगप्रधान जन मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित्य अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहीं विकथा न कषाय ॥ जहने ते आचारज नमिये, अकलुष अमल अमायरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वळी जनने ॥ पट्टधारी गच्छ थंभ आचारज,

ते मान्या मुनिमनने रे ॥ भविका
अत्थमिये जिन सूरज केवल, चंदे
वन पदारथ प्रकटन पटु ते, आच
भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १५ ॥

॥ ढाळ ॥

ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानीरे ॥ पंच
प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥वीर०॥४॥

॥ इति तृतीय आचार्य पद पूजा समाप्त ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ श्रीउपाध्यायपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥

॥ सुतत्थवित्थारणतप्पराणं ॥
नमो नमो वायगकुंजराणं ॥

वीजी भतनो वधारो—

१ सुत्त० गणस्स संधारणसायराणं, सव्वप्पणावज्जियमच्छराणं ॥१॥
गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ।
उपाध्याय पद अरचीये, अनुभव रसना पात्र ॥
(वाकी सरखुं)

.हां सूरि पण सूरिगणने सहाया, नमुं वाचका त्यक्त मदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदाने, जिके सावधाना निरुद्धाभिमाने ॥१०॥ धरे पंचने वर्ग वर्गित गुणौघा, प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्यसिंघा ॥ गणी

विधिशुं वात्सल्य कीजीए, तिहां श्रुतना वे भेद ।
वद्धावद्ध वखाणीया, चित्त धरो तजी खेद ॥१॥
श्रुत दुवालस अंग जे, वद्ध कहीजे तेह
महानिशीथ निशीथ वळी, भेद अवद्ध लहेह ॥२॥
ते श्रुत गुरु पांसे भला, विधुश्युं योग वहेह ।
उद्देश समुदेशानुज्ञा, पूर्वक विनय करेह ॥ ३ ॥
कालिक उत्कालिक वळी, वहु सूत्रार्थक भेद ।
अंग अनंग प्रविष्ट मुख, कह्या अनेक सुभेद ॥४॥
ते सूत्रार्थ अधीत जे, वहुश्रुत ते सुविवेक ।
द्वादशांग दश पूर्वधर, आदिक भेद अनेक ॥५॥
तेहनी भक्ति करो भली, वस्त्र पात्र अन्नपान,
यथा उचित दाने करी पोषे देइ मान ॥ ६ ॥
नमो उवज्झायाणं तथा, नमो चउद्दसपुवीणं ।
ए पदनो गुणणो करे, दोय सहस प्रवीण॥७॥
विधि वन्दन विश्रामणा आपे वहु सन्मान ।
नाम कर्मोदय तीर्थंकर, थाये उदय प्रधान ॥

गुणी गच्छसंधारणे स्थंभभूता, उपाध्याय ते वंदिये चित्प्रभुता ॥११॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

खंतिजुआ मुत्तिजुआ, अज्जव मद्दव जुत्ताजी ॥ सच्चं सोय अकिंचणा, तव संजम गुणरत्ताजी ॥ ७ ॥ (उलालो) जे रम्या ब्रह्मसुगुत्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा ॥ स्याद्वादवादे तत्त्ववादक, आत्मपरविभजनकरा ॥ भवभीरु साधन धीरशासन, वहन धोरी मुनिवरा ॥ सिद्धांत वायण दान समरथ, नमो पाठक पदधरा ॥ ८ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

द्वादश अंग सज्झाय करे जे, पारग धारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लासरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ १६ ॥ अर्थ सूत्रने दान विभागे, आचारज उवज्झाय ॥ भव त्रीजे जे लहे शिवसंपद, नमिये ते सुपसाय रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ १७ ॥ मूरख शिष्य निपाई जे प्रभु, पाहाणने पल्लव आणे ॥ ते उवज्झाय सकल जन पूजित, सूत्र अर्थ सवि जाणे रे

भविका ॥ सि० ॥ १८ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिं-
तक, आचारज पद योग ॥ जे उवज्झाय सदा ते न-
मतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भविका ॥ सि० ॥१९॥
बावना चंदन रस सम वयणे, अहिततापा सवि टाळे
ते उवज्झाय नमीजे जे वळी, जिनशासन अजुवाळे
रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र पद वंदो ॥२०॥

॥ ढाळ ॥

तपसज्झाये रत्त सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे
उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥५॥ वीर०॥

॥ इति चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम श्री साधुपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्यं ॥

साहूण संसाहिअ संजमाणं ॥
नमो नमो सुद्धदयादमाणं ॥३॥

अन्य मतनो वधारो—
१ साहूण० तिगुत्तिगुत्ताण समाहियाणं, मुणीणमाणंदपयट्ठियाणं ।१।

करे सेवना सूरिवायग गणिनी, करुं वर्णना ते-
हनी शी मुणिनी ॥ समेता सदा पंचसमिति त्रिगुप्ता,

२ मोक्षमारग साधन भणी, सावधान थया जेह.
ते मुनिवर पद वंदता, निर्मल थाये देह ॥ १ ॥

(बाकी सरखुं)

शान्तदान्त अन्तर्वहि, निर्विकार परिणाम.
क्रियावंत संयम गुणे, चरण करण अभिराम ॥ १ ॥
दयावंत षट् कायना, मैत्री पवित्रित काय;
अप्रतिबंध वायु परे, करे विहार अमाय ॥ २ ॥
ध्यान करे त्रिकरणपणे, ते देखी मुनिराय;
परम प्रमोदे प्रणमीये, पूज्य तणा त्यां पाय ॥ ३ ॥
जननी पुत्र शुभ करे, तिम ए पवयण माय,
चारित्र गुणगणवर्धिनी, निर्मल शिव सुखदाय ॥ ४
भाव अयोगी करण रुचि, मुनिवर गुप्ति वरंत;
जो गुप्ते न रही शके, तो समिति विचरंत ॥ ५ ॥
गुप्ति एक संवरमयी, औत्सर्गिक परिणाम;
संवर निर्जर समितिथी, अपवादे गुणधाम ॥ ६ ॥
द्रव्ये द्रव्य चरणता, भावे भावचारित्र;
भावदृष्टि द्रव्यक्रिया, करता शिवसंपत्त ॥ ७ ॥
आत्मगुण रागभावथी, जे साधक परिणाम;
समिति गुप्ति ते जिन कहे, आत्मसिद्धि शिवठाम ॥ ८

त्रिगुप्ते नहीं कामभोगेषु लिप्ता ॥ १२॥ वळी बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाळी, होये मुक्तिने योग्य चारित्र पाळी॥ शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाळी, नमुं साधुने तेह निज पाप टाळी ॥१३॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

सकल विषय विष वारीने, निःकामी निःसंगीजी ॥ भवदवताप शमावता, आतमसाधन रंगीजी ॥९॥ [उलालो] जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा ॥ काउस्सग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपे कर्म जीपे, नैव छीपे परभणी ॥ मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन, बंधु प्रणमुं हित भणी ॥१०॥

निश्चय चरण रुचि थइ, समिति गुप्तिधर साधु;
परम अहिंसक भावथी, आराधे निरुपाधि ॥ ९ ॥
परम महोदय साधवा, जेह थया उजमाळ ॥
श्रमण भिक्षु माहणय, गाउ तरु गुणमाळ ॥ १० ॥
जे चारित्रे निर्मला, ते पंचानन सिंह;
विषय कषाय ते गंजीया, ते वंदु निशदीन ॥ ११ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

जेम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तस न उपावे। लेइ रस आतम संतोषे, तेम मुनि गोचरी जावे रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २१ ॥ पंच इंद्रियने जे नित्य जीपे षट्कायक प्रतिपाल ॥ संयम सत्तर प्रकारे आराधे, वंदु तेह दयाल रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जन्म पवित्र रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाळे, बारसविह तप शूरा ॥ एहवा मुनि नमीये जो प्रगटे, पूरवपुण्य अंकूरा रे ॥ भविका ॥ सि० ॥२४॥ सोना-तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संज-मखप करता मुनि नमिये, देश काल अनुमाने रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाळ ॥

अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचेरे ॥
साधु सुधा ते आतमा, शुं मूंडे शुं लोचे रे ॥६॥ वीर०॥

॥ इति पंचम साधुपदपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ श्री सम्यग्दर्शनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥

जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस ॥
नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥

विपर्यास हठवासनारूप मिथ्या, टळे जे अनादि अच्छे जेम पथ्या ॥ जिनोक्ते होये सहजथी

---

१ वीजी प्रतनो वधारो—

१ जिणुत्त० "मिच्छत्तनासाइसमुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्मसहादुमस्स ॥ १ ॥

२ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्त्वतणी परतीत ।
ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरीये शुभ रीत ॥ २ ॥
(बाकी सरखुं)

जेहना जेहवा गुण हुवे, जाणे तास स्वरूप,
देव धर्मगुरुने विषे, सम्यक् श्रद्धारूप ॥ १ ॥
अरिहंत देव सुसाधुगुरु, केवलिभाषित धर्म,
तीन तत्त्व ए सद्दहे, ते सम्यक्त्व अकर्म ॥ २ ॥
ते सम्यक्त्व अनेकधा, होय परिणाम वशेण,
इगदुतिविहा चउविहा, पंचविह दशविधश्रेणि ॥ ३ ॥

श्रद्धानं, कहिये दर्शनं तेह परमं निधानं ॥१४॥ विना जेहथी ज्ञान अज्ञान रूपं, चरित्रं विचित्रं भवारण्यकूपं ॥ प्रकृति सातने उपशमे क्षय ते होवे, तिहां आपरूपे सदा आप जावे ॥१५॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

सम्यग्दर्शन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत स्वरूपोजी॥ जसु निरधार स्वभाव छे, चेतनगुण जे अरूपोजी॥११॥ (उलालो) जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल परईहा टळे॥ निजशुद्धसत्ता प्रगट अनुभव, करणरुचिता उच्छले ॥ वहु मान परिणति वस्तुतत्त्वे, अहव तसु कारणपणे ॥ निज साध्यदृष्टे सर्वकरणी, तत्त्वता संपत्ति गणे ॥ १२ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

शुद्धदेव गुरुधर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम ॥

धर्मतत्त्व रुचि एक विधि, दुविह निसर्ग उपदेश,
क्षायिक क्षायोपशमिक वळी, औपशमिक तृतीय विशेष॥ ४ ॥
कीजे सास्वादन सहित, थाये चार ते वार;
वेदक समकित युक्तस्युं, थाय पंच प्रकार ॥ ५ ॥

जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २६ ॥ मलउपशम क्षय उपशमक्षयथी, जे होय त्रिविध अभंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजे जिनधर्मे दृढरंग रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २७ ॥ पंच वार उपशमिय लहीजे, क्षयउपशमिय असंख ॥ एकवार क्षायिक ते समकित, दर्शन नमिये असंख रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २८ ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्र तरु नवि फळियो ॥ सुख निर्वाण न जे विण लहीये, समकितदर्शन बलियो रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २९ ॥ सडसठ्ठ बोले जे अलंकरियुं, ज्ञानचारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शन ते नित्य प्रणमुं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३० ॥

॥ ढाळ ॥

शम संवेगादिक गुणा, क्षयउपशम जे आवे रे॥ दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम धरावे रे ॥ ७ ॥ वीर० ॥

॥ इति षष्ठ सम्यग्दर्शनपदपूजा समाप्त ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम श्री सम्यग्ज्ञानपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्यं ॥

अन्नाणसंमोहतमोहरस्स ॥
नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥

होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावर्ण नासे विचित्रावबोधे ॥ तेणे जाणिये वस्तु षड् द्रव्यभावा, न हुये वितत्था निजेच्छा स्वभावा ॥ १६ ॥ होय पंच मत्यादि सुज्ञानभेदे, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वळी ज्ञेय हेय उपादेय रूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपे ॥ १७ ॥

---

२ वीजी प्रतनो वधारो—
१ अन्नाण० पंचप्पयारस्सुवगारस्स, सत्ताण सव्वत्थपगासगस्स ॥
२ सप्तम पदश्रीज्ञान छे, सिद्धचक्र तपमांय
आराधी जे शुभ मने, दिन दिन अधिक उच्छाह ॥ २ ॥
(वाकी सरखु)

सदनुष्ठान संपूर्ण फल, तास प्रदायक एह
तेह निरन्तर भावशु, ज्ञान उपयोग करेह ॥ १ ॥
वर्ष कोडि वहु नारकी, कर्म खपावे जेह;
ज्ञानी श्वासोश्वासमां, तिन गुप्ति शुं तेह ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ उल्लालानी देशी ॥

भव्य नमो गुणज्ञानने, स्वपरप्रकाशक भावेजी

छट्ठ अट्ठम दश दोयलसे, करे अज्ञानी शोधि;
वहु गुणे जोय एहथी, ज्ञाने युक्त विशोधि ॥ ३ ॥
अंतर तत्त्व विचारणा, सम्यग् ज्ञान संयोग;
दुर्जय कर्म तणो सही, तत्क्षण होय वियोग ॥ ४ ॥
जिनवर उक्तक्रिया विषे, ज्ञान तणो उपयोग;
महानिर्जरा कारणे, कहे विशुद्ध वियोग ॥ ५ ॥
अंग अनंग भेदे करी, श्रुतना दोय प्रकार;
अंग आचारांगादि तिहां, अनंग वळी अवधार ॥ ६ ॥
आवश्यक उत्तराध्ययन, कल्पाध्ययनादीनुं;
उपांग कहे सहु ग्रहे, सूत्रार्थ तल्लीन ॥ ७ ॥
ज्ञान अपूर्व ग्रह्या थकां, कर्मनिजरा होय;
तत्त्वातत्त्व प्रवोधथी, समकित निर्मल जोय ॥ ८ ॥
ज्ञानवंध कारण विना, ज्ञान महातमसूर;
भव समुद्र तारण भणी, ज्ञाननाव भरपूर ॥ ९ ॥
सूक्ष्म वादर लोकमां, जाणे सघळा भाव,
ज्ञान शिखवो ते भणी, जे होवे चतुरा जीव ॥ १० ॥
ज्ञान परम गुण जीवनो, ज्ञान भवण प्रद्योत;
मिथ्यामति तम भेदवा, ज्ञान महा उद्योत ॥ ११ ॥

पर्यय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥ १३ ॥

उलालो ॥ जे मुख्यपरिणति सकलज्ञायक, बोध भावविलच्छना ॥ मति आदि पंच प्रकार निर्मळ, सिद्ध साधन लच्छना ॥ स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी, प्रथम भेदाभेदता ॥ सविकल्प ने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥ १४ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

भक्ष्याभक्ष्य न जे विण लहिये,पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विण लहिये, ज्ञान तें सकल आधार रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञान ने पछी अहिंसा,श्री सिद्धांते भाख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये शिवसुख चाख्युं रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३२ ॥ सकल क्रियानुं मूळ जे श्रद्धा; तेहनुं मूळ जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित नित वंदीजे, ते विण कहो केम रहिये रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३३ ॥ पंच ज्ञानमांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ दीपक परे त्रिभुवन उपकारी, वळी जेम रवि शशि मेह रे ॥

भविका ॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिष्, वैमानिक ने सिद्ध ॥ लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, तेह ज्ञान मुज शुद्ध रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३५ ॥

॥ ढाळ ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षयउपशम तस थाय रे ॥ तो हुए एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे ॥८॥ वीर० ॥

॥ इति सप्तम सम्यग्ज्ञानपदपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम श्री चारित्रपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्यं ॥

आराहिअखंडिअसक्किअस्स ॥
नमो नमो संजमवीरिअस्स ॥

बीजी प्रतनो वधारो—

१ आरा० सब्भावणासंगविवड्ढियस्स निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ।

(बाकी सरखुं)

वळी ज्ञानफल चरण धरीये सुरंगे, निराशंसता द्वाररोध प्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारणे यानतुल्यं, धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ १८ ॥ होये जास महिमाथकी रंक राजा, वळी द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वळी पापरूपोऽपि निःपाप थाय, थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ १९ ॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

चारित्रगुण वळी वळी नमो, तत्त्वरमण जसु मूळोजी

---

२ अष्टमपद चारित्रने पूजो धरी उमेद ।
पूजत अनुभव रस मिले, पातक होय उच्छेद ।
एहवा विण बहुपापने, उद्धरवा देहत्थ ।
प्रव्रज्या जिनराजनी, छे एक शुद्धि अवत्थ ॥ १ ॥
ते दुःखवल्ली वनदहन, ते शिवतरु सुखकंद;
ते कुलघर गुणगणतणुं, ते टाळे भवफंद ॥ २ ॥
ते आकर्षण सिद्धिनुं, भवनिष्कर्षण तेह;
ते कषायगिरि भेदपवि, तो कषाय उच्छेद ॥ ३ ॥
दशविध मुनिवर धर्म जे, ते कहीये चारित्र,
द्रव्य भावथी आचर्या, तेहना जन्म पवित्र ॥ ४ ॥

॥ पररमणीयपणुं टळे, सकलसिद्ध अनुकूलोजी ॥१५॥ (उलालो) प्रतिकूळ आश्रव त्याग संयम, तत्त्वस्थिरता दमसमथी ॥ शुचि परम खांति मुत्ति दश पद, पंच संवर उपचयी ॥ सामायिकादिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय अकलुष अमल उज्ज्वल, कामकश्मल चूर्णता ॥ २ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

देश विरतिने सर्वविरति जे, गृहि यतिने अभिराम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतु, कीजे तास प्रणामरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३६ ॥ तृणपरे जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्ती पण वरियो ॥ ते चारित्र अक्षयसुख कारण, ते में मनमांहे धरियो रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३७ ॥ हुआ रांक पण जे आदरी, पूजित इंद नरिंदे ॥ अशरण शरण चरण ते वंदू, पूर्युं ज्ञान आनंदे रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३८ ॥ बार मास पर्याये जेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये ॥ शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते उपरे, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भविका ॥

सि० ॥ ३९ ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुत्ते भाख्युं, ते वंदु गुणगेह रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ४० ॥

॥ ढाळ ॥

जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ १ ॥ वीर जिनेश्वर० ॥

॥ इति अष्टम चारित्रपदपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम श्री तपःपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥

कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स[1] ॥
नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥५॥

बीजी मतनो वधारो—

1 कम्म० अणेगलद्धीणनिबंधणस्स दुस्सज्झअत्थाण य साहणस्स ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

इयनवपयसिद्धं, लद्धिविज्जासमिद्धं ॥
पयडियसरवग्गं, ह्रींतिरेहासमग्गं ॥
दिसिवइसुरसारं, खोणिपीढावयारं ॥
तिजयविजयचक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥९॥

त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाळे, निकाचितपणे बांधियां तेह बाळे ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर दुभेदे, क्षमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥२०॥ होये जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेते, होय सिद्धि सीमंतिनी जिम संकेते ॥२१॥ इम नवपद ध्यानने जेह ध्यावे,

२ कर्मकाष्ठ प्रतिजालवा परतक्ष अग्नि समान ।
ते तप पद पूजो सदा, निर्मल धरीये ध्यान ॥

(बाकी सरखुं)

निर्लोभी इच्छातणो; रोध होय अविकार;
कर्मतपावन तप कह्यो; तेहना बार प्रकार ॥ १ ॥

जेह कषायने शोषवे; प्रतिसमय टाळे पाप;
ते तप करीये निर्मळो बीजो नहु संताप ॥ २ ॥

सदानंद चिद्रूपता तेह पावे ॥ वळी ज्ञानविमलादि गुणरत्नधामा, नमुं ते सदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥२२॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

इम नवपद ध्यावे, परम आनंद पावे ॥ नवमे भव शिव जावे, देव नरभव पावे ॥ ज्ञानविमल गुण गावे, सिद्धचक्र प्रभावे ॥ सवि दुरित शमावे, विश्व जयकार पावे ॥२३॥

॥ इति श्रीज्ञानविमलसूरिकृत श्रीसिद्धचक्रस्तवना समाप्ता ॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदेजी ॥ आतम सत्ता एकता, परपरिणति उच्छेदेजी ॥ १७ ॥ (उलालो) उच्छेद कर्म अनादि संतति, जेह सिद्ध-पणुं वरे ॥ योग संगे आहार टाळी, भाव अक्रियता करे ॥ अंतर मुहुरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी ॥ निज आत्मसत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥१८॥

॥ ढाळ ॥

इम नवपद गुण मंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणे जी

सात नये जे आदरे, सम्यग्ज्ञान ते जाणेजी ॥१९॥
[उलालो] निर्द्धारसेती गुणी गुणनो, करे जे बहुमान ए॥ तसु करण ईहा तत्त्व रमणे, थाय निर्मळ ध्यान ए॥ एम शुद्धसत्ता भळ्यो चेतन, सकल सिद्धि अनुसरे॥ अक्षय अनंत महंत चिद्घन, परम आनंदता वरे॥२०॥

॥ अथ कळश ॥

इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्धचक्र पदावलि॥ सवि लब्धि विद्या सिद्धिमंदर भविक पूजो मनरुली॥ उवझायवर श्री राजसागर, ज्ञानधर्म सुराजता॥ गुरु दीपचंद सुचरण सेवक, देवचंद सुशोभता॥ २१ ॥

॥ इतिश्री देवचन्द्रजीकृत स्तवना समाप्ता ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

जाणता तिहुं ज्ञाने संयुत, ते भव मुक्ति जिणंद ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरु कंद रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण क्षय जाये क्षमा सहित जे करतां॥ ते तप नमिये जेह दीपावे,

जिनशासन उजमंतां रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ४२ ॥ आमोसही पमुहा बहु लब्धि, होवे जास प्रभावे ॥ अष्ट महासिद्धि नवनिधि प्रगटे, नमिये ते तप भावे रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ४३ ॥ फळ शिव सुख महोटुं सुर नरवर, संपत्ति जेहनुं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखुं वंदूं, शम मकरंद अमूल रे ॥ भविका ॥ सि० ॥४४॥ सर्व मंगलमां पहेलुं मंगळ, वरणवीये जे ग्रंथे ॥ ते तपपद त्रिहुं काळ नमीजे, वर सहाय शिवपंथे रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ४५ ॥ एम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुओ तन्मय श्रीपाळ॥ सुजसविलासे चोथे खंडे, एह अग्यारमी ढाळ रे भविका ॥ सिद्धचक्र ॥ ४६ ॥

॥ ढाळ ॥

इच्छारोधे संवरी, परिणति समता योगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वर्ते निजगुण भोगे रे ॥ १० ॥ वीर० ॥ आगम नोआगमतणो, भाव ते जाणो साचो रे ॥ आतम भावे थिर होजो. परभावे मत राचो रे ॥ ॥११॥ वीर० ॥ अष्टक सकल समृद्धिनी, घटमांहे ऋद्धि

दाखी रे ॥ तेम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे ॥ १२ ॥ वीर० ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणो रे ॥ एहतणे अवलंबने, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ १३ ॥ वीर० ॥ ढाळ बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे ॥ वाणी वाचकजसतणी, कोइ नये न अधूरी रे ॥ १४ ॥ वीर० ॥

॥ इति नवम तपःपदपूजा समाप्ता ॥९॥

॥ अथ काव्यं ॥

विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणम् ॥ जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥

स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकलदेवे विमल कळश नीरे ॥ आपणां कर्ममल दूर कीधां, तेणे ते विबुध ग्रंथे प्रसिद्धा ॥ २ ॥ हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशिष पावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि जंबुदीवो, अमतणा नाथ देवाधिदेवो ॥ ३ ॥ (अमतणानाथ जीवानुजीवो ॥३॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम-

पुरुषाय परमात्मने परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते सिद्धचक्राय श्री तपःपदाय जलं चन्दनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा.

ॐ ह्रीँ नमो तवस्स कही तपःपदनी पूजा करवी.

॥ इतिश्रीमहामहोपाध्यायन्यायविशारदन्यायाचार्य श्रीयशोविजयजीगणिकृतश्रीसिद्धचक्रपूजा समाप्ता॥

॥ इति श्रीमद्यशोविजयजिदुपाध्यायकृत ॥
॥ नवपद पूजा समाप्ता ॥



श्री सिद्धचक्रजीनी आरती.

---*---

सिद्धचक्र पद सेवतां, ए सहजानंद स्वरूप
अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चैतन्यभूप
भविजन मंगळ आरती करीए,
जन्म जन्मकी आरति हरीये
आरती प्रथम जिनेश्वरजीकी,
दारुण विघ्न निवारणनीकी
दुजे पद श्री सिद्ध मुणिंदा,आरती करतमिटतभवफंदा
त्रीजेपद श्री स्वरिमहंता, मारग शुद्ध प्रकाश करंता
चौथे पदपाठक गुणवंता, आरती करत हरत भवचींता
पांचमी आरती साधु केरी,
कुगति निवारण शुभगति सेरी
शिवसुखकारण श्रीजिनवाणी,
छट्ठी आरती तास वखाणी,
सातमी आरती आनंदकारी,
समकित व्रत गृह प्रतिमा धारी

यहविधि मंगळ आरती गावे,
शुद्ध क्षमा कल्याण ते पावे

श्री सिद्धचक्र भगवान्नी आरति

श्री नवपद प्राणी नित्य ध्यावो, पंचमगति सासय
सुखपावो ॥ श्री० ए आंकणी ॥

धुरथी अरिहंत पद ध्याइजे स्थिरताए
श्रीसिद्ध थुणीजे ॥ श्री नवपद० १

आचारज त्रीजे आराधो
शुद्ध मने निजकारज साधो श्री नवपद० २

उपाध्याय पंचम अणगारा
प्रणमंता पामे भवपारा श्री नवपद० ३

दंसण नाण चरण भला दीपे
तप तपतां कर्म अरिने जीपे श्री नवपद० ४

ए नवपद प्राणी नित्य थुणतां
गिरुवा नरभव सफल गणंता श्री नवपद ५.

श्री सिद्धचक्रनी कीजे सेवा
मन वांछित लहीये नित्य मेवा श्री नवपद ६
अजर अमर सुखदायक साचो
रूडा मनथी नित्य नित्य राचो श्री नवपद ७

नवपदजीनी लावणी. ॥

—*—

जगतमें नवपद जयकारी, पूजंता रोग टले भारी ।
प्रथम पद तीर्थपति राजे, दोष अष्टादश कुं त्यागे ॥
आठ प्रतिहारज छाजे, जगत प्रभु गुण बारे राजे ।
अष्टकरम दल जीतके, सकल सिद्ध थया सिद्ध अनंत ।
भजो पद बीजे, एक समय शिव जाय ।
प्रकट भयो निजस्वरूप भारी ॥ १ ॥ जगतमां ॥
सूरिपदमां गौतम केशी, उपमाचंद्र सूरज जेसी ।
जगायों राजा परदेसी, एक भवमाहे शिवलेशी ।
चोथेपदे पाठक नमुं, श्रुतधारी उवज्झाय,
सव्वसाहु पंचम पदमांही, धन्य धन्नो मुनिराय,
वखाण्यो वीर प्रभु भारी ॥ २ ॥ जगतमां ॥

द्रव्यषट्को श्रद्धा आवे, शम संवेगादिक पावे ।
विनाए ज्ञान नहि किरिया, जैनदर्शनसे सब तरीया ॥
ज्ञान पदारथ पद सातमे, पदमें आतमराय ।
रमतां राम अध्यातममांहे, निजपद साधे काम,
देखंता वस्तु जगत सारी ॥ ३ ॥ जगतमां
जोगकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर छोडी सब राणी,
यति दशधर्मे करी सोहे, मुनिश्रावक सब मन मोहे ॥
कर्म निकाचित कापवा, तप कुठार करधार.
नवमु पद जो धरे क्षमासुं, कर्म मूल कट जाय
भजो नवपद जय सुखकारी ॥ ४ ॥ जगतमां ॥
श्रीसिद्धचक्र भजो भाइ, आचाम्ल तपनो विधि थाइ
पाप त्रिहुं जोगे परिहरज्यो, भाव श्रीपालपरे धरज्यो ।
संवत ओगणीश सत्तरा, समे जे पोशीणा श्रीपास
चैत्र धवल पूनमने दिवस, सकल फली मुज आश
बाल कहे नवपद छबी थारी, जगतमें नवपद जयकारी ५

इति लावणी संपूर्ण ॥

॥ अथ चैत्यवंदनो ॥

नवपदनुं चैत्यवंदन.

जैनेन्द्रमिन्द्रमहितं गतसर्वदोषं,
ज्ञानाद्यनंतगुणरत्नविशालकोशम् ।
कर्मक्षयं शिवमयं परिनिष्ठितार्थं,
सिद्धं च बुद्धमविरुद्धमहं च वंदे. ॥ १ ॥
गच्छाधिपं गुणगणं गणिनं सुसौख्यं,
वंदामि वाचकवरं श्रुतदानदक्षम् ।
क्षान्त्यादिधर्मकलितं मुनिमालिकां च,
निर्वाणसाधनपरं नरलोकमध्ये ॥ २ ॥
सद्दर्शनं शिवमयं च जिनोक्ततत्त्वं,
तत्त्वप्रकाशकुशलं सुखदं सुबोधम् ।
छिन्नाश्रवं समितिगुप्तिमयं चारित्रं,
कर्माष्टकाष्ठदहनं सुतपः श्रयामि ॥ ३ ॥
पापौघनाशनकरं वरमंगलं च
त्रैलोक्यसारमुपकारपरं गुरुं च ।
भावातिशुद्धिवरकारणमुत्तमानां,
श्रीमोक्षसौख्यकरणं हरणं भवानाम्. ॥ ४ ॥
भव्याब्जबोधनरविं भवसिंधुनावं,
चिंतामणेः सुरतरोरधिकं सुभावम् ।
तत्त्वत्रिपादनवकं नवकाररूप,
श्रीसिद्धचक्रसुखदं प्रणमामि नित्यम् ॥ ५ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय जय श्री अरिहंत भानु, भवि कमलविकाशी ॥ लोकालोक अरूपी रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥१॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशि ॥ शुक्ल चमर शुचि पाद्से, भयो वर अविनाशी ॥२॥ अंतरंग रिपुगण हणाए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद्पंकजमें रही, हीर धरम नित संत ॥३॥ इति अरिहंतपद्चैत्यवंदनम्

॥ अथ श्री सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्री शैलेशी पूर्वप्रांत, तनु हीन त्रिभागी ॥ पुव्वपओगपसंगसे, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत गये निगण निरागी ॥ चेतन भूपे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥२॥ केवल दंसण नाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीर धर्म, वंदे धरी शुभ भाव ॥३॥ इति सिद्धपद्चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ तृतीय श्रीआचार्यपद चैत्यवंदन ॥

॥ जिनपद्कुल मुखरस अनिल, मितरस गुण धारी ॥ प्रबल सबल घन मोहकी, जिणते चमुहारी ॥ १ ॥ क्ष-

ज्वादिक जिनराज गीत, नयतन विस्तारी ॥ भव कूपे पापे पडत, जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं बंदे हीर धर्म, अठ्ठोत्तरसो वार ॥ ॥ इति आचार्यपदचैत्यवंदनम् ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ श्रीउपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवज्झाय राय, शठता घन भंजन ॥ जिनवर दिसत दुवालसंग, कर कृत जनरंजन ॥ १ ॥ गुणवण भंजण मण गयंद, सुय शाणि किय गंजण ॥ कुणालंध लोय लोयणे, जत्थ य सुय मंजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए, आगमसे पद तुर्य ॥ तिनपे अहनिश हीर धर्म, बंदे पाठकवर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्यायपदचैत्यवंदनम् ॥४॥

॥ अथ पंचम श्रीसाधुपद चैत्यवंदन ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि चक्रसे, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्तते, भये अंतरजामी ॥ मानस इंदिय दमनभूत, शम दम अभिरामी ॥ २ ॥ चारु तिघन गुण गण भर्यो ए, पंचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपंकज नमत है, हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपदचैत्यवंदनम् ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ श्रीदर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ छुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परमित संसार ॥ गंठि-भेद तव करी लहे, सव गुणनो आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशी असंख, उपशम पण वार ॥विना जेण चारित्र नाण, नहीं हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लच्छन अभिराम ॥ दरशनकुं गणि हीर धर्म, अहनिश करत प्रणाम ॥३॥ इति दर्शनपदचैत्यवंदनम् ॥६॥

॥ अथ सप्तम श्रीज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदिम नाण ॥ भाव मिलापसे जिन जनित, सुय वीश प्रमाण ॥ १ ॥ भवगुण पज्जव ओहि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक सरूप जाण, इक केवल भाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नाशथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हीर धर्म, नित चाहत अवकाश ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपदचैत्यवंदनम् ॥७॥

॥ अथ अष्टम श्री चारित्र पद चैत्यवंदन ॥

॥ जस्स पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेंद ॥ नमन करे शुभ भाव लाय, फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपे

धरी अरिहंत राय, करी कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दे सुख अमंद ॥ २ ॥ इषु कृतिं मान कषायथी ए, रहित लेश शुचिवंत ॥ जीव चरित्तकुं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥३॥ इति चारित्रपदचैत्यवंदनम् ॥४॥

॥ अथ नवम श्री तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण ॥ बिहि अंतरपि बाह्य मध्य, द्वादश परिमाण ॥१॥ वसु कर भित आमोसही, आदिक लब्धि निदान ॥ भेदे समता युत खिणे, इगधन कर्म विमान ॥२॥ नवमो श्री तपपद भलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसें नित हीर धर्म, दूर भवतु भवकूप ॥३॥ इति तपपदचैत्यवंदनम् ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रचैत्यवन्दनम् ॥

॥ श्री अर्हत्पदकाव्यम् ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

जियंतरंगारिजणे सुनाणे, सप्पाडिहेराइसयप्पहाणे ॥
संदेहसंदोहरयं हरंते, झाएह निच्चंपि जिणेऽरिहंते ॥१॥

॥ श्री सिद्धपदकाव्यम् ॥

दुट्ठट्ठकम्मावरणप्पमुक्के. अनंतनाणाइसिरीचउक्के ॥
समग्गलोगग्गपयप्प(त्थ)सिद्धे, झाएह निच्चंपि
मणंमि सिद्धे ॥२॥

॥ श्रीउपाध्यायपदकाव्यम् ॥

न तं सुहं देइ पिया न माया, जं दंति जीवाणिह
सूरिपाया ॥ तम्हा हु ते चेव सया महेह, जं मुक्ख-
सुक्खाइं लहुं लहेह ॥ ३ ॥

॥ श्रीआचार्यपदकाव्यम् ॥

सुत्तत्थसंवेगमयस्सुएणं, संनीरखीरामयविस्सुएणं ॥
पीणंति जे ते उवज्झायराए, झाएह निच्चंपि
कयप्पसाए ॥ ४ ॥

॥ श्रीसाधुपदकाव्यम् ॥

खंते अ दंते अ सुगुत्तिगुत्ते, मुत्ते पसंते गुणजोगजुत्ते ।
गयप्पमाए हयमोहमाए, झाएह निच्चं मुणिरायपाए॥५॥

॥ श्रीसम्यग्दर्शनपदकाव्यम् ॥

जं दव्वछक्काइसुसद्दहाणं, तं दंसणं सव्वगुणप्पहाणं ।
कुग्गाहवाही उ वयंति जेणं,जहा विसुद्धेण रसायणेणं ॥६॥

॥ श्रीसम्यग्ज्ञानपदकाव्यम् ॥

नाणं पहाणं नयचक्कसिद्धं, तत्तावबोहिक्कमयप्पसिद्धं ।
धरेह चित्तावसहे फुरंतं, माणिक्कदीवुव्व तमो हरंतं॥७॥

॥ श्रीचारित्रपदकाव्यम् ॥

सुसंवरं मोहनिरोधसारं, पंचप्पयारं विगयाइयारं ॥
मूलोत्तराणेगगुणं पवित्तं,पालेह निच्चंपिहु सच्चरित्तं ॥८॥

॥ श्री तपःपद काव्यम् ॥

बज्झं तहब्भिंतरभेअमेअं, कयाइदुब्भेअकुकम्मभेअं ।
दुक्खक्खयत्थे कयपावनासं,तवं तवेहागमिअं निरासं॥९॥

॥ इति नवपदकाव्यानि संपूर्णानि ॥

नवपदनुं चैत्यवंदन.

सकल मंगळ परम कमळा, केलि मंजुल मंदिरं;
भवकोटिसंचित पापनाशन, नमो नवपद जयकरं १
अरिहंत सिद्ध सूरीश वाचक, साधुदर्शन सुखकरं;
वर ज्ञानपद चारित्र तप ए, नमो नवपद जयकरं. २
श्रीपाळ राजा शरीर साजा, सेवतां नवपद वरं;
जगमांहि गाजा कीर्ति भाजा, नमो नवपद जयकरं. ३
श्री सिद्धचक्र पसाय संकट, आपदा नासे सवे;
वळी विस्तरे सुख मनोवांछित, नमो नवपद जयकरं. ४
आंबिल नव दिन देववंदन, त्रण टंक निरंतरं;
बेवार पडिकमणां पलेवण, नमो नवपद जयकरं. ५
त्रण काळ भावे पूजीए, भवतारकं तीर्थंकरं;
तिम गुणणुं दोय हजार गणीए, नमो नवपद जयकरं. ६
विधि सहित मन वचन काया, वश करी आराधीए;
तप वर्ष साडाचार नवपद, शुद्ध साधन साधीए. ७
गद कष्ट चूरे शर्म पूरे, यक्ष विमलेश्वरवरं;
श्री सिद्धचक्र प्रताप जाणी, विजय विलसे सुखभरं. ८

नवपदनुं चैत्यवंदन.

श्री सिद्धचक्र आराधीए, आसो चैतर मास;
नवदिन नव आंबिल करो, कीजे ओळी खास. १
केसर चंदन घसी घणां, कस्तुरी बरास;
जुगते जिनवर पूजिया मयणा ने श्रीपाळ. २
पूजा अष्ट प्रकारनी, देववंदन त्रण काळ;
मंत्र जपो त्रण काळ ने, गुणणुं तेर हजार. ३
कष्ट टळ्युं उंबर तणुं, जपतां नवपद ध्यान;
श्री श्रीपाळ नरिंद थया, वाध्यो बमणो वान. ४
सातसो कोढी सुख लह्यो, पाम्या निज आवास;
पुण्ये मुक्तिवधु वर्या, पाम्या लीलविलास. ५

नवपदनुं चैत्यवन्दन.

बार गुण अरिहंतना, तेम सिद्धना आठ;
छत्रीश गुण आचार्यना, ज्ञानतणा भंडार. १
पचीश गुण उपाध्यायना, साधु सत्तावीश;
श्यामवर्ण तनु शोभता, जिनशासनना ईश. २

---

१ पांच परमेष्टिना १०८ अने ज्ञानना (५), दर्शनना (५), चारित्रना (१०) ने तपना (२) एम कुल १३० भेदनी एकेक नवकारवाळी गणतां (तेना १०० गणाता होवाथी) १३००० गुणणुं थाय छे.

ज्ञान नमुं एकावने, दर्शनना सडसठ;
सीत्तेर गुण चारित्रना, तपना बार ते जिट्ठ. ३
एम नवपद युक्ते करी, त्रण शत अष्ट (३०८) गुण थाय;
पूजे जे भवी भावशु, तेहना पातक जाय. ४
पूज्या मयणासुंदरी, तेम नरपति श्रीपाळ;
पुण्ये मुक्तिसुख लह्या, वरत्या मंगळमाळ. ५

नवपदनु चैत्यवन्दन (५ मुं.)

श्री सिद्धचक्र महा मंत्रराज, पूजा परसिद्ध;
जास नमनथी संपजे, संपूरण रिद्ध. १
अरिहंतादिक नवपद, नित्य नवनिधिदाता;
ए संसार असार सार, होये पार विख्याता. २
अमराचल पद संपजे, पूरे मनना कोड;
मोहन कहे विधियुत करो, जिम होय भवनो छोड. ३

॥ नवपद चैत्यवंदन ॥

॥ जो धुरि सिरिअरिहंतमूलदढपीढपइट्ठिओ, सिद्ध सूरि उवज्झाय साहु चिहुं साहगरिट्ठिओ ॥ दंसणनाण चरित्ततवहि पडिसाह सुन्दरु, तत्तक्खरसरवग्गलद्धि-गुरुपयदल दुंबरु ॥ दिसिवालजक्खजक्खिणीपमुह सुर-

कुसुमेहिं अलंकियओ, सो सिद्धचक्क गुरुकप्पतरु अम्ह मन-वंछिय फल दिओ ॥१॥

॥ पुनः नव पद चैत्यवंदन ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति, अतिसुन्दर रूप ॥ सेवो सिद्ध अनन्त शांत, आतमगुण भूप ॥१॥ आचारज उवझाय साधु, समतारस धाम ॥ जिनभाषितसिद्धांत-शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोधिबीजगुणसंपदाए, नाणचरणतव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानन्दपद, ए नव पद अविरुद्ध ॥३॥ इह परभव आनन्दकंद, जग मांहि प्रसिद्धा ॥ चिंतामणि सम जास जाग, बहुपुण्ये लद्धा ॥४॥ तिहुअणसार अपार एह, महिमा मन धारो ॥ परिहर पर-जंजालजाल, नित एह संभारो ॥५॥ सिद्धचक्रपद सेवतां, सहजानन्द स्वरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चेतन भूप ॥६॥ इति श्रीसिद्धचक्रचैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ चैत्यवंदनम् ॥

॥ श्री सिरि सिद्धचक्क नवपय महल्ल पढमिल्ल पय मय जिणंद असुरिंद चिय पयपंकय नाह तुझ नमो ॥१॥ सिरि रिसहेसर सासिय फल दाण कप्पतरु कप्प कंदप्पगं-

जण भवभंजण देव तुझ नमो ॥२॥ सिरि नाभि नाम कुलगर कुलकमलुल्लास परमहंस समअसम तमतम तमो भरहरणिक्कपईव तुझ नमो ॥ ३ ॥ सिरि मरुदेवासामिणि उदरदरी दरियकेसारिकिसोर घोरभुयदंड खंडियपयंड मोहस्स तुझ नमो ॥४॥ इख्खागुवंसभूसण गयदुसण दुरियमयगलमइंद चंदसम वयणवियासिय नीलुप्पल नयण तुझ नमो ॥ ५ ॥ कल्लाणकारणुं सम तत्तकणयकलससरिस संठाण कंठठिय कलकुंतल नीलुप्पलकालेय तुझ नमो ॥ ६ ॥ आईसर जोईसर लयगयमणलख्ख लविख्खय सरुव भवकूव पडिय जंतुतारण जिणनाह तुझ नमो ॥७॥ सिरि सिद्धसेलमंडण दुहखंडण खयरराय नयपाय॰ सयलमह सिद्धिदाय जिणनायग होउ तुझ नमो ॥८॥ तुझ नमो तुझ नमो तुझ नमो देव तुझ चेव नमो ॥ पणयसुररयणसेहर रुइरंजिय पाय तुझ नमो ॥९॥इति॥

॥ नवपद चैत्यवंदनम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं, सप्पाडिहेरासणसंठियाणं ॥ सदेसणाणंदियसज्जणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥१॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं, नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं सूरीण दूरीकयकुग्गहाणं, नमो नमो सूरसमप्पहाणं ॥२॥ सुत्तत्थवित्थारणतप्पराणं, नमो नमो वायगकुंजराणं ॥

साहूण संसाहिअसंजमाणं, नमो नमो सुद्धदयादमाणं ॥३॥ जिगुत्ततत्ते रुइलख्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥ अन्नाणसंमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥४॥ आराहियाखंडीयसक्किअस्स, नमो नमो संजयवीरिअस्स ॥ कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥५॥ इयनवपयसिद्धं लद्धिविज्जासमिद्धं ॥ पयडियसुरवग्गं, होंतिरेहासमग्गं ॥ दिसवइसुरसारं, खोणिपीढावयारं ॥ तिजयविजयचक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥६॥इति॥

नवपदनुं चैत्यवंदन.

पहेले दिन अरिहंतनुं, नित्य कीजे ध्यान;
बीजे पद वळी सिद्धनुं, कीजे गुणगान. १
आचारज त्रीजे पदे, जपतां जयजयकार;
चोथे पदे उपाध्यायना, गुण गाओ उदार. २
सकल साधु वंदो सही, अढीद्वीपमां जेह;
पंचम पद आदर करी, जपजो धरी ससनेह. ३
छठ्ठे पदे दर्शन नमो, दरिसण अजुआलो;
नमो नाण पद सातमे जिम पाप पखालो. ४
आठमे पद आदर करी चारित्र सुचंग;
पद नवमे बहु तपतणो, फळ लीजे अभंग. ५

एणीपरे नव पद भावशुंए, जपतां नव नव कोड;
पंडित शांतिविजय तणो, शिष्य कहे करजोड. ६.

नवपदनुं चैत्यवंदन.

सुललित नवपद ध्यानथी परमानंद लहीए;
ध्यान अग्निथी कर्मना, इंधन पुण दहीए. १
इति भीति ने रोग शोक, सवि दूर पणासे;
भोग संजोग सुबुद्धिता, प्राप्त सुविलासे. २
सिद्धचक्र तप कीजतां ए, उत्तम प्रभुता संग;
मोहन नाण प्रसिद्धता, गंगारंग तरंग. ३

श्री सिद्धभगवाननुं चैत्यवंदन.

सिद्ध सकळ समरुं सदा, अविचळ अविनाशी;
थाशे ने वळी थाय छे, थया अडकर्म विनाशी. १
लोकालोक प्रकाश भास, कहेवा कोण शूरो;
सिद्ध बुद्ध पारंगत, गुणथी नहीं अधूरो. २
अनंत सिद्ध एणीपरे नमुं ए, वळी अनंत अरिहंत;
ज्ञानविमळ गुण संपदा, पाम्या ते भगवंत. ३

॥ सिद्धचक्रजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधतां, सुख संपत्ति लहीए ॥ सुरतरु सुररमणी थकी, अधिकज महिमा कहीए ॥ १ ॥ अष्ट कर्म हाणी करी, शिवमंदिर रहीए ॥ विधिशुं नव पद्ध्यानथी, पातिक सवि दमीए ॥ २ ॥ सिद्धचक्र जे सेवशे, एकमना नर नार ॥ मनवांछित फल पामशे, ते सवि त्रिभुवन मोजार ॥ ३ ॥ अंग देश चंपापुरी, तस केरो भूपाल ॥ मयणा साथे तप तपे, ते कुंवर श्रीपाल ॥ ४ सिद्धचक्रजीना नमन थकी, जस नाठा रोग ॥ तत्क्षण त्यांथी ते लहे, शिवसुख संजोग ॥ ५ ॥ सातसें कोढी होता, हुवा निरोगी जेह ॥ सोवन वाने झलहले, जेहनी निरुपम देह ॥ ६ ॥ तेणे कारण तमे भविजनो, प्रह उठी भक्ते ॥ आसो मास चैत्र थकी, आराधो जुगते ॥ ७ ॥ सिद्धचक्र त्रण कालना, वंदो वली देव ॥ पडिक्कमणुं करी उभय काल जिनवर मुनि सेव ॥ ८ ॥ नवपद ध्यान हृदे धरो, प्रतिपालो भवि शील ॥ नव पद आंबिल तप तपो, जेम होय लीलम लील ॥ ९ ॥ पहेलो पद अरिहंतनो, नित्य कीजे ध्यान ॥ बीजो पद वली सिद्धनो, करीए गुणग्राम ॥ १० ॥ आचारज त्रीजे पदे, जपतां जयजयकार ॥ चोथो पद उवज्झायनो, गुण गाउं उदार ॥ ११ ॥ सरव साधु वंदुं सही, अढीद्वीपमां जेह ॥ पंचम पदमां ते सही, धरजो धरी स-

नेह ॥ १२ ॥ छट्ठे पद दरसण नमु, दरशन अजवालुं ॥ ज्ञान पद नमुं सातमे, तेम पाप पखालुं ॥ १३ ॥ आठमें पद रूडे जपुं, चारित्र सुसंग ॥ नवमे पद बहु तप तपो जिम फल लहो अभंग ॥ १४ ॥ एही नवपद ध्यानथी, जपतां नाठे कोड ॥ पंडित धीरविमलतणो, नय वंदे कर जोड ॥ १५ ॥ इति ॥ नमूल,

र वांछित

॥ जिन पूज्यानुं चैत्यवंदन. करजोड॥६॥

॥ प्रणमी श्री गुरुराज आज, जिनमं

भणी करशुं सफल, जिनवचन भलेरो गानिरूपकं ॥ ध्यान करे, चोथ तणुं फल पावे ॥ जिन जुह १ ॥ गगन मंडल पोते आवे ॥ जइशुं जिनवर भणी ए न ज्योति अनंत राजे द्वादश तणुं पुन्य, भक्ति मालंता ॥ त वेदन, दलित मोह ए, पंदरे उपवास ॥ दीठो स्वामी ॥ नमो० ॥ ३ ॥ विकट मास ॥ जिनवर पासे आवतां सर्जनं ॥ राग द्वेष वि- आव्या जिनवर बारणे, वर्षी त वमल केवल ज्ञान लोचन, उपवास पुन्य, प्रदक्षिणा देतां ॥ मिति गम्यरूपं ॥ नमो० ॥ जे नजरे जोतां ॥ फल घणो करी पल्यंकासनं ॥ योगि- ठवतां ॥ पार न आवे गीत ना ॥ जगत जनके दास दासी, शिर पूजी पूजा करो ए, सूर धृ मिति गम्यरूपं ॥ नमो० ॥ तें अक्षय, सुख दीप तनुरूप ॥ नकी, सोय योगी अयोगि-

स्थुणतां इंद्र जगीश ॥ नाटक भावना भावतां, पामे पदवी जगीश ॥ जिनवरभक्ति वली ए, प्रेमे प्रकाशी ॥ सुणी श्रीगुरु वयण सार, पूर्व ऋषि भाखी ॥ अष्ट कर्मने टालवा, जिनमंदिर जइशुं ॥ भेटी चरण भगवंतना, हवे निर्मल थइशुं ॥ कीर्त्तिविजय उवज्झायनो, विनय कहे कर जोड ॥ सफल होजो मुज विनति, जिन सेवानुं कोड ॥ इतिं ॥

॥ चैत्यवंदन ॥

पहेले दिन अरिहंतनुं, नित्य कीजे ध्यान । बीजे दिन वली सिद्धनुं, कीजे गुणगान ॥१॥ आचारज त्रीजे पदे, जपतां जयजयकार । चोथे पदे उवज्झायना, गुण गावो उदार ॥२॥ सकल साधु वंदो सही, अढी द्वीपमां जेह । पंचम पद आदर करी, जपजो धरी सनेह ॥ ३ ॥ छट्ठे पदे दर्शन नमो, दरिसण अजुआळो । नमो नाणपद सातमे, जिम पाप पखालो ॥४॥ आठमे पद आदर करी, चारित्र सुचंग । नवमे पद बहु तप तणो, फल लीजे अभंग ॥५॥ एणी परे नवपद भावसुं ए, जपतां नव नव कोड । पंडित 'शांतिविजय' तणो, शिष्य कहे कर जोड ॥६॥

॥ चैत्यवंदन ॥

पहिले पद अरिहंतना ॥ १ण गाउं नित्ये । बीजे सिद्ध तणा घणा, समरो एक चित्ते ॥१ ॥ आचारज त्रीजे पदे,

प्रणमो विह्नु करे जोडी । नमिए श्रीउवज्झायने, चोथे पद मोडी ॥२॥ पंचम पद सर्व साधुनुं, नमतां न आणो लाज । ए परमेष्ठी पंचने, ध्याने अविचल राज ॥३॥ दंसण शंकादिक रहित, पद छठ्ठे धारो । सर्व नाण पद सातमे, क्षण एक न विसारो ॥ ४ ॥ चारित्र चोखुं चित्तथी, पद अष्टम जपिए । सकल भेद बिच दानमूल, तप नवमे तापिए ॥५॥ ए सिद्धचक्र आराधतां, पूरे वांछित कोड, सुमतिविजय कविराजनो, 'राम' कहे करजोड॥६॥

सिद्ध भगवाननुं चैत्यवंदन.

जगत भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राणनिरूपकं ॥ ध्यान रूप अनुपमोपम, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥ गगन मंडल मुक्ति पद्मं, सर्व ऊर्ध्व निवासनं ॥ ज्ञान ज्योति अनंत राजे ॥ नमो० ॥ २ ॥ अज्ञान निद्रा विगत वेदन, दलित मोह निरायुषं ॥ नामगोत्र निरंतराय, ॥ नमो० ॥ ३ ॥ विकट क्रोधा मान योधा, माया लोभविसर्जनं ॥ राग द्वेष विमर्दित अंकुरे, ॥ नमो० ॥ ४ ॥ विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान शुक्ल समीरितं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं ॥ नमो० ॥ ॥ ५ ॥ योगमुद्रा सम समुद्रा, करी पल्यंकासनं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं, ॥ नमो० ॥६॥ जगत जनके दास दासी, तास आश निरासनं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं ॥ नमो० ॥ ॥ ७ ॥ समय समकित दृष्टिं जनकी, सोय योगी अयोगि-

कं ॥ देखि तामें लीन होवे, ॥ नमो० ॥ ८ ॥ तीर्थसिद्ध अतीर्थसिद्धा, भेद पंच दशादिकं ॥ सर्व कर्म विमुक्ति चेतन, ॥ नमो० ॥ ९ ॥ चंद्र सूर्य दीप मणिकी, ज्योति तेने ओलंगिकं ॥ तज्यो तिथि कोई अपर ज्योति, ॥ नमो० ॥ १० ॥ एक मांहे अनेक राजे, नेक मांहि एककं ॥ एक नेकी नाहि संख्या, ॥ नमो० ॥ ११ ॥ अजर अमर अलख अनंतं, निराकार निरंजनं ॥ ब्रह्म ज्ञान अनंत दर्शन, ॥ नमो० ॥ १२ ॥ अचल सुखकी लहेरमां, प्रभु लीन रहे निरंतरं ॥ धर्म ध्यानथी सिद्ध दर्शन, ॥ नमो० ॥ ॥ १३ ॥ ध्याने धूप अने पुष्प, पंच इंद्र हुताशनं ॥ क्षमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं ॥ १४ ॥ नमो सिद्ध निरंजनं ॥ इति ॥

॥ चैत्यवंदन ॥

सिद्धचक्र महामंत्र राज, पूजाफल प्रसिद्धि । जास न्हवणथी संपजे, संपूर्ण ऋद्धि ॥ अरिहंतादि नवपदो, नित्य नवनिधि दाता ॥ ए संसार असार पंथ, होये पार विख्याता ॥ अबलाचक्रपद संपजे ए, प्होचे मनना कोड । मोहन कहे नवपद भणी, वंदु बेकर जोड ॥२॥

॥ चैत्यवंदन ॥

आसो चैत्र उद्योतपक्ष, नव दिवस निरंतर । आंबिल तप बेउ टंकना, प्रतिक्रमण सुहंकर ॥ त्रण काल अतिभा-

वस्तु, चैत्यवंदन कीजे । चैत्यप्रवाडी वीतराग, पूजा फल लीजे ॥ स्वामिवत्सल कीजीये ये, नवओली वृत्तांत । ऊजमणुं सिद्धचक्रनुं, मोहन महिमावंत ॥३॥इति॥

अथ स्तवनो.

॥ श्री अरिहंतपद स्तवनम् ॥

॥ त्रीजे भव विधिसहितथी, वीश स्थानक तप करीने रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयुं, समकित शुद्ध मन धरीने रे ॥ ॥१॥ अरिहंतपद नित वंदीए, करम कठिन जिम छंडीए रे ॥ ए आंकणी ॥ जनम कल्याणकने दिने, नारकी सुखीया थावे रे॥ मति श्रुत अवधि विराजता, जसु ओपम कोइ नावे रे ॥अ०॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुभ मने, मनःपर्यव आदरीयुं रे ॥ तप करी कर्म खपाइने, ततखिण केवल वरीयुं रे ॥अ०॥ ३ ॥ चउतीश अतिशय शोभता, वाणी गुण पंतीशो रे ॥ अठदश दोष रहित थइ, पूरे संघ जगीशो रे अ०॥४॥ तन मन वचण लगाइने, अरिहंतपद आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही, अरिहंतपदवी साधे रे ॥ अरिहंतपद नित वंदीए ॥५॥इति॥

॥ श्री सिद्धपद स्तवनम् ॥

॥ सकल करमनो क्षय करी, सिद्ध अवस्था पाइ रे ॥

गुण इगतीस विराजता, ओपम जस नहीं कांइ रे ॥ मन शुद्ध सिद्धपद वंदीए ॥१॥ ए आंकणी ॥ जनम मरण दुःख निर्गम्यां, शुद्धातम चिदूरूपी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता, अव्याबाध अरूपी रे ॥ मन० ॥२॥ जास ध्यान जोगीसरु, करे अजपा जापे रे ॥ भव भव संच्यां जीवडे, कठिण करम ते कापे रे ॥मन०॥३॥ ध्यान धरंतां सिद्धनुं, पूजतां मनरागे रे ॥ अविचल पदवी पाइए, कह्युं जिनवर वड भागे रे ॥ मन० ॥४॥इति॥

॥ श्री आचार्यपद स्तवनम् ॥

॥गुण छत्तीशे दीपता, पाले पंच आचारो रे ॥ जिनमारग साचो कहे, युगप्रधान जयकारो रे ॥ आचारजपद वंदीए ॥१॥ ए आंकणी ॥ सारण वारण चोयणा, पडिचोयण चौ शिक्षा रे ॥ भव्यजीव समझायवा, देवाने ते दक्षा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ जिनवर सूरज आथम्या, परतिख दीपक जेहा रे ॥ सकल भाव परगट करे, ज्ञानमयी जसु देहा रे ॥ ३ ॥ विधिशुं पूजा साचवे, ध्यावे निज हित जाणी रे पावे लघुतर कालमां, आचारजपद प्राणी रे ॥४॥इति॥

॥ श्री उपाध्यायपद स्तवनम् ॥

द्वादशांगी वाणी वदे, सूत्र अर्थ विस्तारे रे ॥ पंच वरग गुण जेहना, सुमति गुप्ति नित धारे रे ॥ १ ॥ श्री उवझाया वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ दायक आगम वाचना,

भेद भाव श्रुत सारी रे ॥ मूरखकुं पंडित करे, जगतजन्तु हितकारी रे ॥२॥ श्री० ॥ शीतल चंद किरण समी, वाणी जेहनी कहीए रे ॥ ते उवझाया पूजतां, अविचल सुखडां लहीए रे ॥३॥

॥ श्री साधुपद स्तवनम् ॥

॥ सकल विषय विष वारीने, आतमध्याने राता रे ॥ उपशम रसमां झीलतां, निज गुण ज्ञाने माता रे ॥ १ ॥ हित धरी मुनिपद वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ रत्नत्रयी आराधतां, षट्काया प्रतिपाले रे ॥ पंचिंद्री जीपे सदा, जिनमारग अजुवाले रे ॥ हित० ॥ २ ॥ गुण सत्तावीश अलंकर्या, पंच महाव्रत धारी रे ॥ द्वादशविध तप आदरे, चिदानंद सुखकारी रे ॥ हित० ॥ ३ ॥ नवविध ब्रह्मचारिज धरे, करम महा भट जीत्या रे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा, ते नर जगत विदिता रे ॥ हित० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री दर्शनपद स्तवनम् ॥

॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी, सद्दहणा चित्त धरीए रे ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी, क्षायिक समकित वरीए रे ॥१॥ दरसणपद नित वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ इण विण ज्ञान निःफल कह्युं, चारित्र निःफल जाये रे ॥ शिवसुख ए विण ना मीले, बहु संसारी थाय रे ॥ द० ॥ २ ॥ सडसठी भेदे शोभतुं, अजरामर फल दाता रे ॥ जे नर पूजे भावशुं, ते पामे सुख शाता रे ॥ दरशणपद० ॥ इति ॥

॥ श्री ज्ञानपद स्तवनम् ॥

भक्ष्य अभक्ष विचारणा, पेय अपेय निर्धारो रे ॥ कृत्य अकृत्यने जाणीए, ज्ञान महा जयकारोरे ॥ १ ॥ ज्ञान निरंतर वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान विना जयणा नहीं, जयणा विण नहीं धर्मों रे ॥ धर्म विना शिवसुख नहीं, ते विण न मिटे भर्मो रे ॥ज्ञान०॥२॥ पांच प्रकार छे जेहना, भेद इकावन तासो रे ॥ जाणीने पूजे सदा, ते लहे केवल खासो रे ज्ञान० ॥३॥ इति ॥

श्री चारित्रपद स्तवनम् ॥

सर्व विरति देशविरतिथी, अणगार सागारी रे ॥ जयवंतो थावो सदा, ते चारित्र गुणधारी रे ॥ १ ॥ चारित्रपद नित वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ षट् खंड सुख तजी आदरे,संयम शिवसुखदायी रे ॥ सत्तर भेदे जिन कह्यो, ते आदरीए भाइ रे ॥ चा० ॥ २ ॥ तत्त्वरमण तसु मूल छे, सकल आश्रवनो त्यागी रे ॥ विधि सेती पूजन करे, भाव धरी वड भागी रे ॥ चा० ॥३॥ इति ॥

॥ श्री तपपद स्तवनम् ॥

निज इच्छा अवरोधीए, तेहीज तप जिन भाख्युं रे ॥ बाह्य अभ्यंतर भेदथी, द्वादश भेदे दाख्युं रे ॥१॥ अनुपम तपपद वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ तद्भव मोक्षगामीपणुं, जाणे पण जिनराया रे ॥ तप कीधा अति आकरां, कुत्सित करम खपायां रे ॥ अ० ॥ २ ॥ करम निकाचित क्षय हुवे, ते तपने परभावे रे ॥ लब्धि अठ्यावीश उपजे, अष्ट महासिद्धि पावे रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ एहवुं तपपद ध्यावतां, पूजंतां चित्त चाहे रे ॥ अक्षय गति निर्मल लहे, सहु योगींद सराहे रे ॥ अ० ४ इति॥

सिद्धचक्रनुं स्तवन.

नवपद धरजो ध्यान, भविजन नवपद धरजो ध्यान; ए नवपदनुं ध्यान करंतां, पामे जीव विश्राम, भवि जन० ॥ ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकळ गुणखाण, भवी० ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो करी बहु मान, भवी० ॥ ३ ॥ आशो चैत्रनी शुदि सातमथी, पूनम लगी प्रमाण, भवी० ॥ ४ ॥ एम एकाशी आंबिल कीजे, वरस साडा चारनुं मान, भवी० ॥ ५ ॥ पडिक्कमणां दोय टंकनां कीजे, पडिलेहण बे वार. भवी०

॥६॥ देववंदन त्रण टंकनां कीजे, देव पूजो त्रिकाळ. भवी० ॥ ७ ॥ बार आठ छत्रीश पचवीशनो, सत्तावीश सडसठ सार, भवी० ॥ ८ ॥ एकावन सीत्तेर पचासनो काउस्सग्ग करो सावधान. भवी० ॥९॥ एक एक पदनुं गुणणुं, गणीए दोय हजार, भवी० ॥ १०॥ एणे विधि जे ए तप आराधे, ते पामे भव पार, भवी० ॥ ११ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, मोहन गुण मणिमाळ, भवी० ॥ १२ ॥ तास शिष्य मुनि हेम कहे छे, जन्म मरण दुःख टाळ. भवी० ॥ १३ ॥

सिद्धचक्रनुं स्तवन.

सिद्धचक्रने भजीए रे, के भवियण भाव धरी,
मद मानने तजीए रे, के कुमति दूर करी;
पहेले पदे राजे रे, के अरिहंत श्वेततनु,
बीजे पदे छाजे रे, के सिद्ध प्रगट भणुं. १
त्रीजे पदे पीळा रे, के आचार्य कहीए;
चोथे पदे पाठक रे, के नील वर्ण लहीए. सिद्ध०
पांचमे पदे साधु रे, के तप संयम शूरा;
श्याम वर्णे सोहे रे, के दर्शन गुण पूरा. सिद्ध० ३
दर्शनज्ञान चारित्र रे, के तप संयम शुद्ध वरो;
भवियण चित्त आणी रे, के हृदयमां ध्यान धरो. सिद्ध० ४
सिद्धचक्रने ध्याने रे, के संकट वर्ण टळे;
कहे गौतम वाणी रे, के अमृत पद पावे. सिद्ध० ५

सिद्धचक्रनुं स्तवन.

सिद्धचक्र सेवो रे प्राणी, भवोदधिमांहे तारक जाणी; विधिपूर्वक आराधीजे, जिम भवसंचित पातक छीजे. सिद्ध० ॥ १ ॥ प्रथम पदे अरिहंत, बीजे पदे वळी सिद्ध भगवंत; त्रीजे पदे आचार्य जाणुं, चोथे पद उपाध्याय वखाणुं ॥ सिद्ध० ॥२॥ पांचमे पदे सकल मुनींद्र, छट्ठे दर्शन शिवसुख कंद; सातमे पदे ज्ञान विबुध, आठमे चारित्र धार विशुद्ध ॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥ नवमे पद तप सार, एक एक पद जपो दोय हजार; नव आंबिल ओळी कीजे, त्रण काळ जिनने पूजीजे ॥ सिद्ध० ॥४॥ देववंदन त्रण वार, पडिकमणुं पडिलेहणं धार; रत्न कहे एम आराधो श्रीपाळ मयणा जिम सुख साधो. सिद्ध० ॥ ५ ॥

सिद्धचक्रनुं स्तवन.

(सांभळ रे तुं सजनी मोरी, रजनी क्यां रमी आवीजी रे ए देशी)

सिद्धचक्र वर सेवा कीजे, नर भव लाहो लीजे जी रे; विधि पूर्वक आराधन करतां, भव भव पातक छीजे. ॥१॥ भविजन भजीये जी रे, अवर अनादिनी चाल, नित्य नित्य तजीए जी रे. ॥ए टेक०॥ देवनो देव दयाकर ठाकर, चाकर सुर नर इंदा जी रे; त्रिगडे त्रिभुवन नायक बेठा,

प्रणमो श्री जिन चंदा. भवि० ॥ २ ॥ अज अविनाशी अकळ अजरामर, केवल दंसण नाणीजी रे; अव्यावाध अनंतु वीरज, सिद्ध प्रणमो भवी प्राणी. भवि० ॥ ३ ॥ विद्या सौभाग्य लक्ष्मी पीठ, मंत्र योगराज पीठजी रे; सुमेरु पीठ पंच प्रस्थाने, नमुं आचारज ईट. भवि० ॥ ॥ ४ ॥ अंग उपांग नंदी अनुयोगा, छ छेद ने मूळ चारजी रे, दस पयन्ना एम पणयालीस, पाठक तेहना धार. भवि० ॥ ५ ॥ वेद त्रण ने हास्यादिक षट, मिथ्यात्व चार कषायजी रे; चौद अभ्यंतर नवविध बाह्यनी, ग्रंथि तजे मुनिराय. भवि० ॥ ६ ॥ उपशम क्षय उपशम ने क्षायक, दर्शन त्रण प्रकारजी रे; श्रद्धा परिणति आत्मा केरी, नमीए वारंवार. भवि० ॥७॥ अट्ठावीश चौद ने षट दुग इम, मत्यादिकना जाणोजी रे; एम एकावन भेदे प्रणमो, सातमे पद वर नाण. भवि० ॥ ८ ॥ निवृत्ति ने प्रवृत्ति भेदे, चारित्र छे व्यवहारजी रे;निज गुण स्थिरता चरण ते प्रणमो, निश्चय शुद्ध प्रकार. भवि० ॥ ९ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप ते संवर, समता निर्जरा हेतु जी रे;ते तप नमीए भाव धरीने, भवसायरमां सेतु. भवि० ॥ १० ॥ ए नवपदमां पण (५) छे धर्मी, धर्म ते वरते चारजी रे; देव गुरु ने धर्म ते एहमां, दोय त्रण चार प्रकार. भवि० ॥ ११ ॥ मार्गदेशक अविनाशीपणुं, आचार विनय संकेते जी रे; सहायपणुं धरतां साधु जी, प्रणमो एह ज हेते. भवि० ॥ १२ ॥ विमळेश्वर

सांनिध्य करे तेहनी, उत्तम जे आराधेजी रे; पद्मविजय कहे ते भवी प्राणी, निज आतमहित साधे. भवि० ॥१३॥

श्री सिद्धनुं स्तवन.

सिद्ध जगत शिर शोभता, रमता आतमराम; लक्ष्मी लीलानी लहेरमां, सुखीआ छे शिव ठाम. सि० ॥ १ ॥ महानंद अमृत पद नमो, सिद्धि केवळ नाम; अपुनर्भव ब्रह्मपद वळी, अक्षय सुख विशराम. सि० ॥ २ ॥ संश्रय निश्रय अक्षरा, दुःख समस्तनी हाण; निवृत्ति अपवर्गता, मोक्ष मुक्ति निर्वाण. सि० ॥३॥ अचळ महोदय पद लह्युं, जोतां जगतना ठाठ; निज निज रूपे रे जुजुआ, वीत्या कर्म ते आठ. सि० ॥ ४ ॥ अगुरुलघु अवगाहना, नामे विकसे वदन; श्री शुभ वीरने वंदता रहीए सुखमां मगन. सि० ॥ ५ ॥

श्री सिद्धचक्रनुं स्तवन.

(राग-नींदरडी वेरण हुइ रही—ए देशी)

श्री सिद्धचक्र आराधीए, जिम पामो हो भवि कोडि कल्याण के;श्री० श्रीपाळतणी परे, सुख पामो हो लही निर्मळ नाण के. श्री सि० ॥ १ ॥ नवपद ध्यान धरो सदा, चोखे चित्ते हो आणी बहु भाव के; विधि आराधन साचवो, जिम जगमां हो होय जसनो जमाव के. श्री सि० ॥ २ ॥ केशर चंदन कुसुमशुं, पूजीजे हो उखेवी धूप के; कुंदरू

अगर ने अरगजा; तपदिन तां हो कीजे घृतदीप के. श्री सि० ॥ ३ ॥ आशो चैत्र शुक्ल पक्षे, नव दिवसे हो तप कीजे एह के; सहज सोभागी सुसंपदा, सोवनसम हो झबके तस देह के. श्री सि० ॥ ४॥ जावजीव शक्ते करो, जिम पामो हो नित्य नवला भोग के; चार वरस साडा तथा, जिनशासन हो ए मोटो योग के. श्री सि० ॥ ५ ॥ विमळदेव सांनिध्य करे, चक्रेश्वरी हो करे तास सहाय के श्री जिनशासन सोहीए, एह करतां हो अविचळ सुख थाय के. श्री सि० ॥ ६ ॥ मंत्र तंत्र मणि औषधि, वश करवा हो शिवरमणी काज के; त्रिभुवन तिलक समोवडो, होय ते नर हो कहे नय कविराज के, श्री सि० ॥७॥

श्री नवपदनुं स्तवन.

नरनारीरे भमतां भव भंरदरीए, नवपदनुं ध्यान सदा धरीए, सुखकारीरे, तो शिवसुंदरी वरीए, नवपदनुं ध्यान सदा धरीए. ॥ १ ॥ पहेले पद श्री अरिहंत रे, करी अष्ट रिपुनो अंत रे, थया शिवरमणीना कंत रे, पद बीजे रे सिद्ध भजी दुःख हरीए रे; नवपदनुं ध्यान सदा धरीए; सुखकारी रे० ॥ २ ॥ आचार्य नमुं पद त्रीजे रे; चोथे पद पाठक लीजे रे; प्रीतेथी पाय प्रणमीजे रे; पद पांचमे रे मुनि महाराज उच्चरीए रे, नव० ॥ ३ ॥ छट्ठे पद दर्शन जाणुं रे, ज्ञान गुण मुख्य वखाणुं रे, आ जगमां जे खरुं

नव० ॥ ४ ॥ नाणुं रे, बहु खरचो रे तोए न खुट जरीए रे, चारित्र पद नमुं आठे रे, नवमे तप करो बहु ठाठे रे, दुःख दारिद्रय जेहथी नाठेरे, जिनवरनी रे प्यारथी पूजा करीए रे, नव० ॥ ५ ॥ नव दिन शियळ व्रत पाळो रे, पडिक्कमण करी दुःख टाळो रे, जेम चंपापति श्रीपाळो रे, मनमांही रे शंका न राखो जरीए, नव० ॥ ६ ॥ ओगणीश अट्ठावन वर्षे रे; पोष मास पुनम तिथि फरसे रे, भावे गावे ते भव नावि फरसे रे, निर्भयथी रे धर्म कहे भव तरीए रे, नव० नव० ॥ ७ ॥

श्री सिद्धचक्रनुं स्तवन.

(जगजीवन जग वाल हो. ए राग.)

श्री सिद्धचक्र आराधीए, शिवसुख फळ सहकार लाल रे; ज्ञानादिक त्रण रत्ननुं, तेज चढावणहार लाल रे. श्री सि० ॥ १ ॥ गौतमे पूछंता कह्यो, वीर जिणंद विचार लाल रे; नवपद मंत्र आराधतां, फळ लहे भविक अपार लाल रे. श्री सि० ॥ २ ॥ धर्म रथना चार चक्र छे, उपशम ने सुविवेक लाल रे; संवर त्रीजुं जाणीए, चोथुं सिद्धचक्र छेक लाल रे, श्री सि० ॥ ३ ॥ चक्री चक्र ने रथ बळे, साधे सयल छ खंड लाल रे; तिम सिद्धचक्रप्रभावथी, तेज प्रताप अखंड लाल रे, श्री सि० ॥ ४ ॥ मयणा ने श्रीपाळजी,

चोथे चंदोजी, म० साधु पांचमे देखी आणंदोजी म० ॥४॥ छट्टे दरिसण जाणोजी, म०, श्री ज्ञानने सातमे वखाणोजी म० चारित्र पद आठमे सोहेजी, म० वळी नवमे तप मन मोहेजी, म० ॥ ५ ॥ रस त्यागे आंबिल कीजेजी, म० तो मुक्तितणां फळ लीजे जी, म० संवत्सर युग (४) षट (६) मासे जी, म० ते तप कीजे उल्लासे जी, म० ॥ ६ ॥ ए तो मयणा ने श्रीपाळजी, म० तप कीधो थइ उजमाळ जी, म० तेनो कोढ शरीरनो टाळ्यो जी, म० जगमां जशवाद प्रगटायोजी, म० ॥ ७ ॥ पंचम काळे तुमे जाणोजी, म० प्रगट परचो परमाणोजी, म० अेनुं गुणणुं बे हजार जी, म० तमे धरो हृदय मोझार जी, म० ॥८॥ नर नारी ए पदने ध्यावे जी, म० ते तो संपद सघळी पावे जी, म० मुनि रत्नसुंदर सुपसायजी, म० सेवक मोहन गुण गायजी, मनोहर मनगमतां ॥ ९ ॥

श्री नवपदजीनुं स्तवन.

गोयम नाणी होके, कहे सुणो प्राणी मारा लाल,
जिनवर वाणी होके, हइडे आणी मारा लाल;
आसो मासे होके, गुरुनी पासे मारा लाल,
नवपद ध्यासे होके, अंग उल्लासे मारा लाल.
आंबिल कीजे होके, जिन पूजीजे मा०,
जाप जपीजे होके. देव वांदीजे मा०;
भावना भावो होके, सिद्धचक्र ध्यावो मा०,

जिन गुण गावो होके, शिवसुख पावो मा०. २
श्री श्रीपाळ होके, मयणा बाळे मा०,
ध्यान रसाळे होके, रोगज टाळे मा०;
सिद्धचक्र ध्यायो होके, रोग गमायो मा०,
मंत्र आराध्यो होके, नवपद पायो मा०. ३
भामिनी भोळी होके, पहेरी पटोळी मा०,
सहियर टोळी होके, कुंकुम घोळी मा०;
थाळ कचोळी होके, जिनघर खोली मा०,
पूजी प्रणमी होके, कीजे ओळी मा०. ४
चैत्रे आसो होके. मनने उल्लासे मा०,
नवपद ध्याशो होके, शिवसुख पाशो मा०;
उत्तमसागर होके, पंडित राया मा०,
सेवक कांते होके; बहु सुख पाया मा०. ५

श्री नवपदजीनुं स्तवन.

नवपद महिमा सार, सांभळजो नर नार, आछे लाल, हेज धरी आराधीएजी; तो पामो भव पार, पुत्र कलत्र परिवार, आछे०, नव दिन मंत्र आराधीएजी. ॥ १ ॥ ए आंकणी. आसो मास सुविचार, नव आंबिल निरधार, आछे०, विधिशुं जिनवर पूजीएजी; अरिहंत सिद्ध पद सार, गयणुं तेर हजार, आछे०, नव पद महिमा कीजीएजी. ॥ २ ॥ मयणा सुंदरी श्रीपाळ, आराध्यो तत्काळ, आछे० फळदायक तेहने थयोजी, कंचन वरणी

काय. देहडी तेहनी थाय, आछे०, श्री सिद्धचक्र महिमा कह्यो जी. ॥ ३ ॥ सांभळी सहु नर नार, आराध्यो नवकार, आछे०, हेज धरी हैडे घणुंजी; चैत्र मास वळी एह, नवपद शुं धरो नेह, आछे०, पूज्यो दे शिवसुख घणुं जी. ॥ ४ ॥ एणी परे गौतम स्वाम, नव निधि जेहने नाम, आछे०, नवपद महिमा वखाणीएजी; उत्तमसागर शिष्य, प्रणमे ते निशदीश, आछे०, नवपद महिमा जाणीए जी. ॥ ५ ॥

श्री नवपदजीनुं स्तवन.

(कीसके चेले कीसके पुत. ए देशी.)

सेवोरे भवि भावे नवकार, जंपे श्री गौतम गणधार, भवि सांभळो, हांरे संपद थाय भ०हांरे संकट जाय भ०, आसो ने चैत्रे हरख अपार, गणणुं कीजे तेर हजार. भ० ॥ १ ॥ चार वर्ष ने वळी षट् मास, ध्यान धरो भवी धरी विश्वास, भ०; ध्यायो रे मयणासुंदरी श्रीपाळ, तेहनो रोग गयो तत्काळ. भ० ॥ २ ॥ अष्ट कमल दल पूजा रसाल, करी न्हवण छांट्युं तत्काल, भ०; सातसो महीपति तेहने रे ध्यान, देहडी पाम्या कंचनवान. भ० ॥ ३ ॥ महिमा कहेतां नावे पार, समरो तिण कारण नवकार, भ०; इह भव परभव दीए सुखवास, पामे लच्छी लीलविलास.

भ० ॥ ४ ॥ जाणी प्राणी लाभ अनंत, सेवो सुखदायक ए मंत्र, भ०; उत्तमसागर पंडित शिष्य, सेवे कांतिसागर निशदीश. भ० ॥ ५ ॥

श्री सिद्धचक्रजी स्तवन.

(कृपानिधि वींनती अवधारी, ए चाल.)

सिद्धचक्र वंदो जयकारी । हुंतो वारी जाउं वार हझारि, सिद्ध०। अरिहंत १ सिद्ध २ गुणधारी। आचारज उपगारी। उवजाय ४ सकल अणगारी ५ । सि० ॥१॥ वरदरशण ६ नाण ७ जीतारी । सुखकरण चरण८हितकारी। शमरस युत तप ९ चित्तधारी सि०॥ २ ॥ ए नवपद दुरित विदारी । वळि सहु जगजन मनहारी। तुमे सेवो नित निरधारी सि० ॥ ३ ॥ नवपद सहु सुर नर राया। वंदे नित चित गुणलाया। एतो अशरणशरण कहाया, सि० ॥ ४ ॥ नवपद भवजलधि जिहाझा । ए सकल भुवनमहाराजा । नितचित धरिये हितकाजा, सि० ॥५॥ अगणित जग जीउ उदारा ।नवपद समरण उर धारा। भये मुगति रमाभरतारा । सि० ॥ ६ ॥ नवपद सेवी सुखकंदा । भया ते सिरिपाल नरिंदा,नित लहीया

परम आणंदा ॥७॥ सि० ॥ नवपदके महिमा उदारा। कोइ पाम न शके पारा। कितने कहुं गुण विसतारा ॥८॥ पार्श्व प्रभु अंतरजामी। तसु चरण अनुग्रह पामी ॥ शिवचंद्र नमे शिरनामी, सि० ॥ ९ ॥

श्रीसिद्धचक्रजी स्तवन

(मातारे यशोदाजी म्हने चांदलीयो आपो.) ए देशी।

पूजोरे सिद्धचक्रने भावे वाञ्छित आपे, नरभव पामी लाहो लीजे भवदुःख कापे॥१॥ ए आंकणी। पहीले पदे अरिहंत जपीजे, वीजे वली श्रीसिद्ध, त्रीजे आचारज तीम समरो, आप गुणे वृद्ध ॥ १ ॥ पूजोरे ॥ १ ॥ चोथे पदे उवज्झाय जपीजे पांचमे साधु, छट्ठे दर्शन सातमे नाण भक्ते आराधु ॥ २ ॥ पू० ॥ आठमे पद चारित्र नमीजे, नवमे तप तीम, ए नवपद भावे आराध्या श्रीपाले जीम ॥ ३ ॥ पूजोरे ॥ मन वच तनु त्रिहुं शुद्धि कीजे पडिक्कमणां दोय, देवत्रिकाले वंदो तीम वली, पूजा त्रिण होय ॥ ४ ॥ पूजोरे ॥ गुणणुं तेर सहस उत्कृष्ट अथवा दोय सहस, भूमि सं-

थारो शीलने पालो, जिनशासननुं रहस्य ॥ ५ ॥ पूजोरे इम ओली नवकीजे, विधिश्युं चढते उच्छाह्य, द्रव्य भाव बेहुस्युं साढा चार वरस मांह्य ॥ ६ ॥ पूजोरे ॥ तप पूरे ऊजमणुं कीजे, तुरत यथाशक्ति दर्शन जैन, जिम षटमां दीपे देखालीबिगते ॥ ७ ॥ पूजोरे० लघुकर्मीने क्रिया फल दिये सफलो उवएस, सेर होय तिहां कूवो खणीये ते विण संक्लेश ॥ ८ ॥ पूजोरे ॥ सफल हूवो श्रीपालने, सवि जस द्रव्य भाव शुध्ध, इम जो विधिस्युं आराधे, फल पामे बुद्ध ॥ ९ ॥ पूजोरे ॥ एहथी राजऋद्धि बहु रमणी, सवि गुणनी वृद्धि, न्याय सागर कहे एहने, सेवो जो व्हाली सिद्धि ॥ १० ॥ पूजोरे ॥ इति श्रीसिद्धचक्र स्तवन संपूर्णम् ॥

श्री सिद्धचक्र स्तवन ॥

श्री सिद्धचक्र सेवा करो, जस गाजे छे
सिध्ध साधन पुष्ट उपाय, त्रिभुवन राजे छे
कारण शिव साधन तणां, जस गाजे छे
संख्यातीत कहेवाय ,, ॥ १ ॥

कारण सर्व शिरोमणि जस गाजे छे
जींहां लहीये तत्त्वविचार त्रिभुवन राजे छे
धर्मी पांच सोहामणां ,,
तिहां लहीये तत्त्वविचार ,, २
वर्जित दोष अढारथी ,,
अड प्रातिहार्य धार ,,
चोत्रीस अतिशय राजतो ,, ,,
गुण पांत्रीश वाणी उदार ,, ३
गुण ठाणे तेरमे तथा ,,
चौदमे वरते जिनराज ,,
देवतत्त्व अरिहंतजी ,,
प्रणमो भवि आतमकाज ,, ४
आठ कर्मक्षयथी थया ,,
गुण अड एकत्रीश विशाल ,,
अव्याबाध सुखी घणा ,,
जस सादि अनंतह काल ,, ५
जाणे लोकालोकने ,,
पण नवि हरखे नवि शोच ,,

ते पण देव अनंत छे जस गाजे छे
एक ठामे नवि संकोच त्रिभुवन राजे छे ६
छत्रीस छत्रीशी गुणे ”
गुरु तत्त्वमां मुख्य कहाय ”
तीर्थंकर सम तेह छे ”
गौतम प्रमुख सूरि राय ” ७
सूरि सम पाठक वळी ”
पण वीस गुणवंत महंत ”
सयल जीव उपगारीया ”
प्रणमो गुरुपद विरतंत ” ८
शिवमारग साधक मुनि ”
करे अरस विरस आहार ”
ते पण गुरु तत्त्वे नमो ”
गुण सत्तावीश आधार ” ए
समकीत सडसठ भेदथी ”
आराधो थइ उजमाल ”
भेद एकावन नाणना ”
समझो गुरुनिकट रसाल ” १०

सित्तेर भेद चरण तणा जस गाजे छे
तिम तपना भेद पचास त्रिभुवन राजे छे
धर्मतत्त्व ए चारमां ,,
वंदो आणी उल्लास ,, ११
इण परे वहुविध अवतरे ,,
साधन नवपदमां सार ,,
गुण कुण कही शके एहना ,,
जो होय मुख जीभ हजार ,, १२
विधिपूर्वक आराधतां ,,
लहे जिम शिव श्रीपाळ ,,
जिन उत्तम गुण गावतां ,,
इम पद्मने मंगल माळ ,, १३

स्तवन वीजुं. मुजरो ल्योने जालीम जाटनी ए देशी.

तत्त्व ते त्रण्य छे जेहमां, देव गुरुनेरे धर्म, श्रीसिद्ध चक्रने जाउं भामणे,अे आंकणी ॥धर्मी धर्म वली एहमां जे जिनशासनमर्म ॥१॥ चोत्रीश अतिशय राजतो, वाणी गुणरे पांत्रीश। अरिहादेव पहेले पदे,विवरे छे जेह वीस॥

॥ श्रीरूपातीत परमातमा, गुण वरीया एकत्रीश, वेदी ज लोकालोकना, प्रणमो तास गुणीश॥३॥ श्री०गुणछत्रीश सूरि नमो, छत्रीस छत्रीशी जास। पाठक गुणपचवीसथी, भणीये सूत्र जई पास ॥४॥श्री०गुण सत्तावीश धारजे, मुनिवर नमिये उल्लास, सम्यग्‌दर्शन पद छठे, भलुं सातमे नाणविलास ॥५॥श्री०चारित्र आठमे जाणीये नवमे तवगुण खाण, आराधो भवि एहने, जीम लहो क्रोड कल्याण ॥६॥श्री०शिवलहीये एह साधता, जीम जग कुंवर श्रीपाल, उत्तमविजय कृपाथकी, पद्मने मंगल माल ॥७॥ इति स्तवनम् ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ॥

॥ सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नव पद अभिरामी रे लोय ॥ अहो नव० ॥ करुणासागर गुणनिधि, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो० जग० ॥ १ ॥ त्रिभुवन जन पूजित सदा, लोकालोकप्रकाशी रे लोय ॥ अहो लोका० ॥ एहवा श्री अरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी,

थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो न० ॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे अगम अरूपी रे लोय । अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे शोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय ॥ अहो सुं० ॥ आचारज तीजे पदे, वंदु अविकारी रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दुविध आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग समाधि रे लोय ॥ अहो सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालणपरा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अहो पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमे, प्रणमुं वडभागी रे लोय ॥ अहो प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणने ओलखे, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय ॥ अहो श्रुत० ॥ छट्ठे गुण दरसण नमो, आतम शुभ भावे रे लोय ॥ अहो आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ८ ॥ आठमे चारित्रपद नमो, परभाव निवारी रे लोय ॥ अहो प० ॥ खंत्यादिक दश धर्मनो, जेह छे अधिकारी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ९ ॥ नवमे वली तपपद नमो, बाह्याभ्यंतर

भेदे रे लोय ॥ अहो बा० ॥ बांध्यां काल अनंतनां, जे कर्म उछेदे रे लोय ॥ अहो जे० ॥ १० ॥ ए नव पद बहु मानथी, ध्यावे शुभ भावे रे लोय ॥ अहो ध्या० ॥ नृप श्रीपाल तणी परे, मनवंछित पावे रे लोय ॥ अहो म० ॥ ११ ॥ आसो चैत्रक मासमां, नव आंबिल करीए रे लोय ॥ अहो न०॥ नंव ओली विधि युत करी, शिवकमला वरीए रे लोय ॥ अहो शि० ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अहो व० ॥ श्री जिनलाभ कहें सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अहो अ० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पद स्तवन ॥

॥ राग मारु ॥ तीरथनायक जिनवरुजी, अतिशय जास अनुप ॥ सिद्ध अनन्त महागुणीजी, परमानंद सरूप ॥ भविक मन धारजो रे ॥ १ ॥ धारजो नवपद्ध्यान ॥ भ० ॥ श्री आचारज गणधरु रे, गुण छत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरुजी, श्रुतदायक सुविलास ॥ भ० ॥२॥ सुमति गुपतिधर शोभ-

ताजी, साधु समतावंत ॥ सम्यग्‌दर्शन सुंदरुजी, ज्ञानप्रकाश अतन्त ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छे रे तप उत्तम विधि होय ॥ ए नवपद्‌ना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥भ० ॥४॥ अमृतसम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ आविचल अनुभव कारणेजी, नित प्रति नमत कल्याण ॥ भ० ॥५॥ इति नवपदस्तवनम् ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

॥ राग प्रभाती ॥ नवपद ध्यान धरो रे ॥ भविका न० ॥ मन वच काया कर एकंते, विकथा दुर हरो रे ॥ भ० न० ॥ १ ॥ मंत्र जन्री अरु तंत्र घणेरा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपने, पुण्य भंडार भरो रे ॥ भ० न० ॥ २ ॥ अड सिद्ध नवनिध मंगलमाला, संपत्ति सहज वरो रे ॥ लालचंद याकी वलिहारी, शिवतरु बीज खरो रे ॥ भ० न० ॥३॥ इति श्रीसिद्धचक्रस्तवनम् ॥

॥ अथ पंचम स्तवनम् ॥

॥ भवियां श्री सिद्धचक्र आराधो, तुमे मुक्तिमारगने साधो, इह नरभव दुर्लभ लाधो हो लाल ॥ नव पद जाप जपीजे ॥ १ ॥ त्रण टंक देव वांदीजे, त्रिहुं काले जिन पूजीजे, आंबिल तप नव दिन कीजे हो लाल ॥ न० ॥ २ ॥ सुदि आसो चैत्रज मासे, तप सातमथी अभ्यासे; पद सेव्यां पातक नासे हो लाल ॥ न० ॥ ३ ॥ मयणा ने नृप श्रीपाले, आराध्यो मंत्र उजमाले, एह दुःख दोहगने टाले हो लाल ॥ न० ॥ ४ ॥ एहनी जे सेवा सारे, तस मयगल गाजे बारे, ईति भीति अनीति निवारे हो लाल ॥ न० ॥ ५ ॥ मिथ्यात्व विकार अनिष्ट, क्षय जाये दोषी दुष्ट, इण सेव्या समकित पुष्ट हो लाल ॥ न० ॥ ६ ॥ जशवंत जिनेंद्र सुसाखे, भाव सिद्धचक्रना गुण भाखे, ते ज्ञानविनोद रस चाखे हो लाल ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तम स्तवनम् ॥

॥ चिंतामणि स्वामी सच्चा साहेब मेरा ए ॥ देशी ॥

आराहो प्राणी साची नवपद सेवा ॥ ए आंक-

गी ॥ नवनिधि आपे नव पद सेवे, इम भाखे श्री जिनदेवा ॥ आ० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र धरो नित्य दिल में, जैसे गजमन रेवा ॥ आ० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक एक पद जपतां, हारे लहीए सुख सदैवा ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुदित जपतां किम करी न करे, सुरसुख-द्रुमफल लेवा ॥ आ० ॥ ४ ॥ जिनेंद्र कहे इम ज्ञानवि-नोदे, हर्षित थो नित सेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टम स्तवनम् ॥

॥ राग सारंग ॥

॥ गौतम पूछत श्री जिन भाखत, वचन सुधा-रस पानकी ॥ बलिहारी नवपद ध्यानकी ॥ १ ॥ नव पद सेवे नवमे स्वर्गे, पावत ऋद्धि विमानकी ॥ ब० ॥ २ ॥ याकी महिमा वल्लभ हमकुं, जेसे जसोदा कानकी ॥ ब० ॥ ३ ॥ पावे रूप सरूप मदनसो, देही कंचन वानकी ॥ ब० ॥ ४ ॥ याकी ध्यान हृदय जब आवत, उपजत लहेरी ज्ञानकी ॥ ब० ॥ ५ ॥ समकित ज्योति होवे दिल भींतर, जैसे लोकनमें भानकी ॥ ब० ॥ ६ ॥

जिनेंद्र ज्ञानविनोद प्रसंगे, भक्ति करो भगवानकी ॥
॥ बलिहारी नवपद ध्यानकी ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ नवम स्तवनम् ॥

॥ पूज्य पधारो मरु देशे ए देशी ॥

नवपद महिमा सांभलो, वीर भाखे हो सुणो पर्षदा बार के ॥ ए सरिखो जग को कहीं, आराध्यो हो शिवपद दातार के ॥ न० ॥ १ ॥ नव ओली आंबिल तणी, भवि करीए हो मनने उल्लास के ॥ भूमिशयन ब्रह्मव्रत धरो, नित सुणीए हो श्रीपालनो रास के ॥ न० ॥ २ ॥ नव विधिपूर्वक तप करी, उजमणुं हो कीजे विस्तार के ॥ साहामी सामिणी पोषीए, जेम लहीए हो भवनो निस्तार के ॥ न० ॥ ३ ॥ नरसुख सुर सुख पामीए, वली पामे हो भवभव जिनधर्म के ॥ अनुक्रमे शिवपद पण लहे, जिहां मोटां हो अक्षय सुख शर्म के ॥ न० ॥ ४ ॥ सांभली भवियण दिल धरो, सुखदायी हो नवपद अधिकार के ॥ वचनविनोद जिनेंद्रनो, मुज होजो हो भवभव आधार के ॥ नवपद महिमा साभलो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ आठ लालनी देशी ॥

समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरु पाय ॥ आछे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्ध-चक्र आधार, भवि ऊतरे भवपार ॥ आ० ॥ ते भणी नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह, जसगुण अनंत अछेह ॥ आ० ॥ समर्या संकट उपशमे जी ॥ लहीए वंछित भोग, पामी सवि संजोग ॥ आ० ॥ सुर नर आवी बहु नमे जी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोग रहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणासुंदरी श्रीपालने जी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा दूरे जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगलमालने जी ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीओ होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी जी ॥ नव आंबिल तप सार, पडिक्कमणुं दोय वार ॥ आ० देववंदन त्रण टंकनां जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रण वार, गणणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल जले जी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सानिध्य करे तेनी

शक्र ॥ आ० जिनवर जन आगे भणे जी ॥ ५ ॥ ए सेवो निशिदिश, कहीए वीशबावीश ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणि रत्न, एहनां कीजे जत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नहीं एह ऊपरे जी ॥ ६ ॥ श्री विमलेसर जक्ष, होजो मुज परतक्ष ॥ आ० ॥ हुं किंकर छुं ताहरो जी ॥ पाम्यो तुंहीज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥ विनति करुं छुं एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमने शुं कहीए वली वली जी ॥ श्री लब्धिविजय गुरुराय, शिष्य केसर गुण गाय ॥आ०॥ अमर नमे तुज लली लली जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

अवसर पामीने रे, कीजे नव आंबिलनी ओली ॥ ओली करतां आपद् जाये, ऋद्धि सिद्धि लहीए बहुली ॥ आ० ॥ १ ॥ आसो ने चैत्रे आदरशुं, सातमथी संभाली रे ॥ आलस महेली आंबिल करशे, तस घर नित्य दिवाली ॥ आ० ॥ २ ॥ पूनमने दिन पूरी थाते,

प्रेमेशुं पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप जपे जपमाली ॥ आ० ॥ ३ ॥ देहरे जइने देव जुहारो, आदीश्वर अरिहंत रे ॥ चोवीशे चाहीने पूजो, भावेशुं भगवंत ॥ आ० ॥ ४ ॥ बे टंके पडिक्कमणुं बोल्युं, देववंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी परे समजी, चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकित पामी अंतरजामी आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वादपंथे संचरतां, आवे भवनो अंत ॥ अ० ॥ ६ ॥ सत्तर चोराणुं सुदि चैत्रीए, बारशे बनावी रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख संपत्ति, चालीने घेर आवी ॥ आ० ॥ ७ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी चाले रे ॥ भवनी भावठ ते भांजीने, मुक्तिपुरीमां महाले ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ जीहो कुंवर बेठा गोखड ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमुं दिन प्रत्ये जिनपति ॥ लाला ॥ शिव सुखकारी अशेष ॥ ॥ जीहो आसोइ चैत्री तणी ॥ लाला ॥ अट्ठाइ विशेष भविकजन ॥ जिनवर

जग जयकार ॥ १ ॥ जीहो जिहां नवपद आधार ॥ भ० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधवा ॥ लाला ॥ नंदीश्वर सुर जाय ॥ जीहो जीवाभिगम्म मांहे कहुं ॥ ला० ॥ करे अड दिन महिमाय ॥ भ० ॥ २ ॥ जीहो नवपद केरा यंत्रनी ॥ ला० ॥ पूजा कीजे रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ला०॥ नासे पापनो व्याप ॥ भ० ॥ ३ ॥ जीहो अरिहंत सिद्ध आचारज ॥ला० ॥ उवझाय साधु ए पंच ॥ जीहो दंसण नाण चारित्त तवो ॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपंच ॥ ॥ भ० ॥ ४ ॥ जीहो नवपद आराधतां ॥ ला० ॥ चंपापति विख्यात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखीओ थयो ॥ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालव धुर उज्जेणीए रे लो. राज्य करे प्रजापाल रे ॥ सुगुणी नर ॥ सुरसुंदरी मयणासुंदरी रे लो० बे पुत्री तस बाल रे ॥सु०॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए रे

लो०॥१॥ जेम होय सुखनी माल रे ॥ सु०॥श्री०॥ ए आंकणी॥ पहेली मिथ्याश्रुत भणी रे लो, बीजी जिन-सिद्धांत रे ॥ सु० ॥ बुद्धिपरीक्षा अवसरे रे लो० पूछो समस्या तुरंत रे ॥ सु० ॥श्री० ॥ २ ॥ तूठो नृप वर आपवा रे लो, पहेली करे ते प्रमाण रे ॥ सु० ॥बीजी कर्म प्रमाणथी रे लो० कोप्यो ते तव नृपभाण रे ॥सु० ॥ श्री० ॥३॥ कुष्ठी वर परणावीयो रे लो० मयणा वरे धरी नेह रे ॥ सु० ॥ रामा हजीय विचारीए रे लो० सुंदरी विणसे तुज देह रे ॥सु० ॥श्री०॥४॥ सिद्धचक्र प्रभावथी रे लो० निरोगी थयो जेह रे ॥ सु० ॥पुण्य-पसाये कमला लही रे लो० वाध्यो घणो ससनेह रे ॥सु०॥ श्री० ॥५॥ माउले वात ते जब लही रे लो० वांदवा आव्यो गुरु पास रे ॥ सु० ॥ निज घर तेडी आवीयो रे लो०आपे निज आवास रे ॥सु०॥ श्री०॥६॥ श्रीपाल कहे कामिनी सुणो रे लो० हुं जाउं परदेश रे ॥सु०॥ माल मता बहु लावशुं रे लो० पूरशुं तुम तणी खांत रे ॥सु०॥ श्री० ॥ ७ ॥ अवधि करी एक वर-

धनी रे लो० चाल्यो नृप परदेश रे ॥सु०॥ शेठ धवल साथे चल्यो रे लो० जलपंथे सुविशेष रे ॥सु०॥श्री०॥८॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ परणी बब्बरपति सुता रे; धवल मूकाव्यो ज्यांह॥ जिनवर बार उघाडते रे; कनकेतु बीजी त्यांह ॥ १ ॥ चतुर नर; श्रीश्रीपालचरित्र ॥ ए आंकणी ॥ परणी वस्तुपालनी रे; समुद्रतटे आवंत ॥ मकरकेतु नृपनी सुता रे; वीणावादे रीझंत ॥ च० ॥२॥ पांचमी त्रैलोक्यसुंदरी रे; परणी कुब्जारूप॥ छट्ठी समस्या पूरती रे, पंच सखीशुं अनुप ॥ च० ॥३॥ राधा वेधी सातमी रे; आठमी विष उतार ॥ परणी आव्यो निज घरे रे; साथे बहु परिवार ॥ च० ॥४॥ प्रजापाले सांभली रे; परदल केरी वात ॥ खंधे कुहाडो लेइ करी रे; मयणा हुइ विख्यात ॥ च० ॥ चंपा राज्य लेइ करी रे; भोगवी कामित भोग ॥ धर्म आराधी अवतर्यो रे; थहोतो नवमे सुरलोक । चतुर नर ॥६॥ श्रीश्रीपा०॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ ए महिमा सिद्धचक्रनो, सुणी आराधे सुविवेक ॥ मोरे लाल ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अडदल कमलनी थापना, मध्ये अरिहंत उदार ॥ मो० ॥ चिहुं दिशे सिद्धादिक चउ, चक्र दिशे तुं गुणधार ॥ मो० ॥ श्री० ॥ २ ॥ बे पडिक्कमणां जंत्रनी, पूजा देववंदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे दिन साविशेषथी, पंचामृत कीजे पखाल ॥ मो० ॥ श्री० ॥३॥ भूमिशयन ब्रह्मविध धारणा, रुंधी राखो त्रण जोग ॥ मो० ॥ गुरु वैय्यावच्च कीजीए, धरो सद्दहणा भोग ॥ मो० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ गुरु पडिलाभी पारीए, साहम्मि वच्छल पण होय ॥ मो० ॥ उजमणां पण नव नवां, फल धान्य रयणादिक ढोय ॥ मो० ॥ श्री ॥५॥ इह भव सवि सुखसंपदा, परभवे सवि सुख थाय ॥ मो०॥ पंडित शान्तिविजय तणो, कहे मानविजय उवझाय ॥ मोरे लाल ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ नवपदजीनुं स्तवन ॥

॥ नव पद ध्यान सदा जयकारी ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नव पद० ॥ १ ॥ दरशन ज्ञान चारित्र हे उत्तम, तप दोय भेदे हृदय विचारी ॥ नव० ॥ २ ॥ मंत्र जडी ओर तंत्र घणेरा,उन सबकुं हम दूर विसारी ॥ नव० ॥३॥ बहोत जीव भवजलसे तारे, गुण गावत हे बहु नर नारी ॥ नव० ॥ ४ ॥ श्री जिनभक्त मोहन मुनि वंदन, दिन दिन चडते हरख अपारी ॥नव० ॥५॥

॥ श्री नवपदजीनुं स्तवन ॥

॥ नव पद धरजो ध्यान, भवि तुमे नव पद धरजो ध्यान ॥ ए नवपदनुं ध्यान करंतां, पामे जीव विसराम ॥ भवि० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु सकल गुणवान ॥ भवि० ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो करी बहुमान ॥ भवि० ॥ ३ ॥ आसो चैत्रनी सुद सातमथी, पूनम लगे परमान ॥ भवि० ॥ ४ ॥ एम एकाशी आंबिल कीजे,

वरष साडाचारनुं मान ॥ भवि० ॥ ५ ॥ पडिक्कमणां दोय टंकनां कीजे, पडिलेहण बे वार ॥ भवि० ॥ ६ ॥

श्री अरिहंत पद स्तवन

अरिहंत पद आराधीये, आणी उलट भाव, भविक जीव, अघहर मदमोचन धणी, ज्यों कंचन शुद्ध ताव। भविक जीव ॥ अरि० ॥ १ ॥ त्रीजेरे भवे वर ध्यानथी, समकीत बीज अंकूररे, भविक जीव, अरिहंत पदशुद्ध अनुग्रहे, सबल करम चकचूररे ॥ भविक जीव ॥ अरि० ॥ २ ॥ अलख निरंजन आतमा, घटघट भाव प्रकाशरे, भविकजीव, भरमतिमिर घन संहरे; ज्यों रविकिरण उजासरे। भविक जीव ॥ अरि० ॥ ३ ॥ मोर पयोधर ऋतुसमे, हरखे चित्त उदाररे, भविक जीव। जिनवाणी हियडे धरी; उपजे अनुभव साररे, भविकजीव ॥ अरि० ॥ ४ ॥ जलनिधि जल कोण भर शके, कोण तोले नगराजरे, भविक जीव। कहे जिनपद्म मुनीश्वरु, त्रिभुवन जग शिरताजरे, भविक जीव ॥ अरि० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्री सिद्धपद स्तवन

भविजन वंदोजी, सिद्ध शुद्ध आतमारे आणी समता अंग। सिद्ध समरंतारे सुगतिपणो वरेरे, लोहा पारससंग ॥ भवि० ॥ १ ॥ पंचदश भेदे सिद्धपणुं वरीरे, मेटी सकल

उपाधि । निजगुण ध्याने उज्वल आतमारे अध्यातम पद साध ॥ भवि० ॥ २ ॥ सबल करमरे संगे विलुधीयोरे, चेतन चिहुंगति संग । सघन करममल मेटी ज्ञानथीरे,पामी मुक्ति उत्तंग ॥ भवि० ॥ ३ ॥ इम शुद्ध भावेरे भवि तुमे वांदजोरे; सिद्ध सकल शुचिज्ञान। ए पद ध्यातां चेत जिन हुएरे, इयल ज्युं भमरी ध्यान ॥ भवि० ॥ ४॥ शुचि संवेगीरे समता आगरूरे, परमातम सुखकंद । अद्भूत ज्योतीरूप मांहे सदारे पभणे पद्म सुरींद भवि० ॥ ५ ॥ इति

श्री आचार्य पद स्तवन

सूरि सकल भवि वांदीये, पद त्रीजे हो मद मच्छर टालके । प्रकटे आत्मप्रबोधता, तस विकसे हो जगजीवन धारके ॥ सूरि० ॥ १ ॥ पंच आचारपणुं ग्रही, व्रतपाले हो शुचि तीक्ष्ण धाररे। कुमति कंदर्प कुकर्मने,जिम ज्वाले हो वन पवन तुषारके ॥ सूरि० ॥ २ ॥ अप्रमत्त भावे देशना टाली विषता हो वली विषय कषायके ।भव्य सुणी मोही रह्या, जीम मधुकर हो नित्य कमल लोभायके ॥ सूरि० ॥ ३ ॥ सारण वारण चोयणा, पडिचोयणा हो इम चार विचारके । युग प्रधानपणुं वरी, भयटाले हो आणी उपकारके ॥ सूरि० ॥४॥ गुण छत्रीश शुं शोभता, पटधारी हो जगदीपक आपके । कहे जिनपद्म मुनीश्वरू, तस स्मरणे हो मीटे तनु तापके ॥ सूरि ॥ ५ ॥ इति

श्री उपाध्याय पद स्तवन

चोथे पद उवज्झाय जपीजे,नित्य समकित दृढ चित्त कीजेरे।समता रस आणी ॥जडपणु तज चेतन शुद्धधारे, भविक आत्मकाज सुधारेरे । समता रस आणी ॥ १ ॥ अंग उपांग बहु सूत्र जाणे, निज आतम तत्त्व पिछाणे रे। समता रस आणी ॥ शुद्ध पचीस गुणे विकसंता, शुचि निरुपम धर्म दीपंतारे ॥ समता रस आणी ॥ २ ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति बीराजे, वाणी मेघतणी परे गाजेरे । समता रस आणी ॥ उलट आणी भविजन धारो,निजकर्म उपाधि विदारोरे, समता रस आणी ॥ ३ ॥ अनुभव धर तीक्ष्ण व्रतपाले,नित्य जिनशासन अजवालेरे। समता रस आणी॥ सिद्धामान महातम मोडी, वंदे पद्मसूरि कर-जोडी रे, समता रस आणी ॥ ४ ॥

श्री साधुपद स्तवनः

मुनि पंचम पद वांदिये । समता रसना धोरीरे ।
शान्त सुधारस वयणसुं, आशापूरो मोरीरे ॥मुनि०॥१॥
चारित्र रत्न चूडामणि, समिति पंच प्रकारोरे ।
दशविध धर्म मुनितणो, पाले शुद्ध आचारोरे ॥मुनि०॥२॥
अढार सहस शीलांगना, गुणधारे निजअंगेरे ।
षट्कायक प्रतिपालना, विचरे वसुधा उछरंगेरे ॥मुनि०॥३॥
फुलेजी तरु ऋतुराजरे । बेठे भमर अपारोरे ।

तसु पीडा व्यापे नहि; इणविध ल्ये मुनि आहारोरे

॥ मुनि० ॥ ४ ॥

गुणनिधि करुणा आगरु; समता रसना दरीयारे।
वंदे पद्म मुनिश्वरु इणविध; भवोदधि तरीयारे॥ मुनि० ॥

॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री दर्शनपद स्तवन. ॥

सम्यक्त्व नामे हो दर्शनपद नमुंरे; आणी सुमति उदार। सडसठ बोले हो जिनवर वर्णव्युं रे। सूत्रसिद्धांत मझार ॥ सम्य० ॥१॥ पंच प्रकार हो उपशम आदिथीरे; ज्ञानादिक गुण जोय। उज्वल ध्याने हो दर्शन सेवियेरे, रागादिकमल खोय ॥ सम्य० ॥ २ ॥ दर्शन सम्यग् हो शुध्ध प्रकटया विनारे; चारित्र ज्ञाननो भंग। जलधर धारा हो जगव्यापे नहिरे;तो विणसे लोक उमंग ॥ सम्य० ॥ ३ ॥ तत्त्व त्रिभेदे हो जिनवर निज कह्यारे। तपजप ध्यान आचार। ए सहु फले हो सम्यग्दर्शने रे। विकसे ज्युं वन जलधार ॥ सम्य० ॥ ४ ॥ सुमति संवेगी हो शुध्ध स्वरूपनारे। दर्शनज्ञान दिणंद। भविजन धारो हो दर्शन नेहस्युरे; पभणे पद्मसूरींद ॥ सम्य० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

श्री ज्ञानपद स्तवन

ज्ञानपद हितधार, भवि ए तो ज्ञानपद हितधार, भरम तिमिर विदार ॥ भवि० ॥ सर्व रात्रिमां इन्दुभंजन दिवस रवि निरधार । जगतजन्तु मोहमदधर तास भंजनकार ॥ भवि० ॥ १ ॥ विकट वनमें प्रभा सुरतरु, विनय शुचि गुणसार, वसुधा मांहे शोभत मेरु; शिवपंथ ज्ञान उदार ॥ भवि० ॥२॥ परम पंच प्रकार अनुपम; मति श्रुत अवधि विचार, जननी उदरे धर्या छे जिनवर; संयमे चोथो सार ॥ भवि० ॥ ३ ॥ सघनघाती कर्मवनदल पचन तास तुषार; जगत जिनवर नामधर शुचि; उद्धर्यो आगम अपार भ० ॥ ४ ॥ सुमतिधर भवि ज्ञानतज मद; मेटी विषय विकार । पद्मसूरि भणे निजहेते;ज्ञानथी होय निस्तार । भवि० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्री चारित्रपद स्तवन

वंदो भवि चारित्र गुणधामि; अष्टमपद अभिरामीरे । समता रस अंगे पूरण पामी; विपत विदारण कामीरे ॥ वंदो० ॥ १ ॥ अंब प्रभावे अंबुज प्रकटे; परिमल पवन प्रकाशेरे, धर्मनिपुणता ज्ञान विकासे; चारित्र तास उजासेरे ॥ वं० ॥२॥ सामायिक छेदोपस्थापनीय वळी परिहारविशुद्धीरे सूक्ष्मसंपराय दशमे गुणठाणे; अंतर्मुहूर्त असिद्धीरे ॥ वं० ॥ ३ ॥ यथाख्यात चारित्र प्रधाने; केवल

निकट विभासेरे; वरते क्षीणमोह गुणठाणे; कर्म कठोर विनासेरे ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ रंकपण जेह हृदय धरंता; ध्यावे इन्द्र आणंदेरे। वंदे पद्म सूरि निजहेते अष्टम पदसुख कंदोरे ॥ वंदो० ॥ ५ ॥

श्री तपः पद स्तवन

नवमे पद प्रणमुं मुदारे; तप आतम शुद्धि हेतु। समल अथिर पद परिहरीरे; कर्मभंजन धूमकेतु ॥ भविक जीव-धारो तप शिवहेत; ज्वाले कर्मनुं खेत्र ॥ भविकजीव० ॥१॥ विकटसघन वन संहरेरे; दावानल असराल। ज्वाले कम कषायनेरे; क्षमासहित तपपाल ॥ भवि० ॥ २ ॥ द्वा-दशविध तपस्या तणारे;आगळ अंग मझार। बाह्य अभ्यंतर भेद श्युंरे; षट्षट् भेद विचार ॥ भवि० ॥ ३ ॥ अरिहंत जाणे ज्ञानथीरे; इणभव मोक्ष पहोंचंत। क्षमासहित तप आदरेरे; धारे शुचि मन खंत ॥ भवि० ॥ ४॥ आमोसही आदे करीरे; अष्ट महासिद्ध जाम। उपजे गणधर वृन्दनेरे; सारे संघना काम ॥ भवि० ॥ ५ ॥ वनतरुवृन्द विकस्या सहोरे; वाजेवाय.कुवाय। नविफूले नविफली शकेरे;तीम क्षमारहित तप जाय ॥ भवि० ॥ ६ ॥ तपपद शुचि आ-राधतारे; त्रुटे कर्मनी कोड। पद्मसूरि भणे नेहस्युं रे; मान महातम मोड ॥ भविक० ॥ ७ ॥ इति.

कलश

नवपद ध्यान प्रभावथी;शिवशुचि पदपावे। भरमति भिरघन संहरे; समता रस आवे ॥ नव० ॥ १ ॥ करम कलंक पंके करी;भ्रम चेतन पावे। चिहुं दिशि भ्रमत फीरे सदा; मृगनिंद न पावे ॥ नव०॥२॥ सद्गुरु संगपणो वरी; जडपद मीट जावे। उपल अनल प्रभावथी;कलधौत कहावे ॥ नव० ॥ ३ ॥ शुद्ध संवेगपणु वरी; ममता तजी ध्यावे । भवोदधि भ्रमणपणु मटे; चेतन जिन थावे ॥ नव० ॥ ४ ॥ शुद्ध स्वरूपपणे करी;निजकर्म खपावे। कहे जिनपद्म मुनीश्वरु; ज्योतिरूप कहावे ॥ नव० ॥५॥

॥ इति श्री नवपद स्तवन संपूर्णम् ॥

नवपद स्तवन.

अहो भविप्राणी रे सेवो। सिद्धचक्र ध्यान समो नहीं मेवो ॥ अहो० ॥ जे कोइ सिद्धचक्रने आराधे, तेहनो जगमांहि जश वाधे ॥ अहो० ॥ १ ॥ पहेले पदे रे अरिहंत। बीजे सिद्ध बुद्ध ध्यान महंत ॥ त्रीजे पदे रे सूरीश। चोथे उवज्झाय ने पांचमे मुनीश ॥ अ० ॥ २ ॥ छठे दरसण रे कीजे। सातमे ज्ञानथी शिवसुख लीजे। आठमे चारित्र पालो। नवमे तपथी मुक्ति भालो ॥ अ० ॥ ३ ॥ आंबिल ओलो रे कीजे। नोकारवाली वीश ग-

णीजे ॥ त्रणे टंकना रे देवो । पडिलेहण पडिक्कमणुं सेवो ॥ अ० ॥ ४ ॥ गुरुमुख किरिया रे कीजे । देवगुरुभक्ति चित्तमां धरीजे ॥ एम कहे रामना रे शिशो ओली उजवीए जगीशो ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

सिध्धचक्रजीनुं स्तवन.

श्री सिध्धचक्र आराधो । मनवांछित कारज साधो रे ॥ भवियां ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ पद पहेले अरिहंत भावो । जेम अरिहंतपदवी पावो रे ॥ भवियां ॥ श्री० ॥ पद दूजे सिद्ध मनावो । ज्यम सिद्ध सरूपी होइ जावो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ सूरि त्रीजे गुणवंता । जशना एक जग जयवंता रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ चोथे पदे उवझाया । जेणे मारग आण बताव्या रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ साधु सकल गुणधारी; पद पंचमे जग हितकारी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ दरसण पद छठ्ठे वंदो; जेम कीरति होय शीर नंदो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ज्ञानपद सातमे दाखो । चारित्रपद आठमे भाख्यो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ तप नवमे पद शाख्यो; जेम वीरजीने वचने राख्यो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ श्रीपालने मयणा लीधो; नवमे भव कारज सिध्यो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ नवपद महिमा आणी, जिनचंद्रहोए मन आणी रे ॥ भ० ॥ श्री ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विनयविजयजी कृत ॥

श्री सिद्धचक्र स्तवन.

॥ ढाळ पहेली ॥ चेतन चेतोरे आतमा ॥ ए देशी ॥

सरस्वतीने चरणे नमी,प्रणमी सदूगुरु पायरे। सिद्ध-चक्र गुण गाइस्युं, मुझ मन हर्ष उछायरे। धन्य धन्य श्री सिद्धचक्रने ए आंकणी ॥ १ ॥ तेह दिवसे सुरपति मली, जाइ नंदीश्वर द्वीपेरे। उत्सव महोत्सव सुर करी, कर्म कटकने जीपेरे ॥ धन्य० ॥ २ ॥ अट्ठाइ महोत्सव करे, जीवाभिगमनी साखेरे। श्रेणिकराये पूछीयुं, इन्द्रभूति इम दाखेरे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ श्री श्रीपालमयणापरे, जाप-जपो भव्यप्राणीरे। रोगशोकने आपदा जीम चासे ते उकाय प्राणीरे ॥ धन्य ॥ ४ ॥ आसो शुदि सातम थकी पूनम लगे ओलीए करे। एक्यासी नव ओळीए, आंबील तप सुविवेकरे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ साढाचार संवत्सरे, तप-नो एह परिणामरे। गणणु पद एकएकनुं, सहस्रदोय सुविज्ञाने रे ॥ धन्य० ॥ ६ ॥

॥ ढाळ बीजी ॥ आदिजिनेश्वर विनति हमारी ॥ ए देशी ॥

बारगुणे अरिहंतध्याउ, सिद्धभजो गुण आठेरे छत्रीश गुणे आचार्य सोहे, पचवीश ओपद पाठेरे ॥ १ ॥ गुण सतावीश साधु वंदु, दर्शन सडसठ भेदेरे । ज्ञान एकावन गुणे संपूरो, चारित्र सीत्तेर ऊमेदेरे ॥ गु० ॥२॥ पचास भेदे तपने जपीये, गुणणुं ए वर्तमानरे। तेर सह-

सवली बीजे भेदे, विद्याप्रवाद पुराणरे । गुण० ॥ ३ ॥ अरिहंत आदे पंचपद केरा, गुण छे एकसो आठ रे । दर्शन ज्ञानना दश वली जाणो, चारित्रषट् बहुपाठरे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ तपना षट्गुण सर्व मलीने, एकसोत्रीसज थाय रे । नोकारवाली एह प्रमाणे समर्यें भवदुःख जायरे ॥ गु० ॥ ५ ॥ हवे उजमण विधिस्युं बोलुं, सांभळज्यो चित्तलाय रे । ऊजमणाथी फल बहु वाधे; जीम जलपंकज न्याय रे ॥ गु० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रेणिक मन अचरिज हूओ ॥ ए देशी॥

तपजप करीये शक्तिथी, तेहतणो छे भेद रे । शक्ति प्रमाणे ऊजवो, भवभवना दुःख छेद रे । वीरवचनथी जाणज्यो. ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ऊजमणा विण फल कह्युं, जीम अलुणो धान्य रे । शक्ति घणी छे जेहनी, पण उजवे नहिं मनमान्योरे ॥ वीर० ॥ २ ॥ तेहने फल केतो कह्यो, सांभळ श्रेणिकरायरे । कुकश आपे वर्तिने, पुण्य ते जे तो थायरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ आत्मज्ञाने धारीये, धरीये धरीये शीयल जगीशरे । गुरुपडिलाभीने पारीये, स्वामि वत्सले फल ले सीरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ पालणपुरमां प्रेमस्युं, श्री सिद्धचक्र गुणगायारे । चतुर चोमासुं तिहां रही, ऊजमणे मन भायारे ॥ वीर० ॥ ५ ॥

(कलश)

इम सयल सुहकर सयल पुरंदर संस्तव्यो रिसहेश्वरु ।
तपगच्छ राजेवड दीवाजे विजय जिनेन्द्रसूरीश्वरु ॥
तासपसाए स्तवन पभण्यो शिष्यरूप विजयतणो ।
अढार एकासी आसोपूनम रंगविजय ऊलट घणो ॥ १ ॥

इतिश्री सिद्धचक्र नवपद वर्णन ऊजमणा फलदायक स्तवनम् ॥

अथ स्तुतिओ (थोयो.)

॥ अथ श्रीअरिहंतपद स्तुति ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपोजी ॥ केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनंत गुणे करी पूरोजी ॥ तीजे भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरोजी ॥ बार गुणाकर एहवा अरिहंत, आराधो गुण भूरोजी ॥ इति अरिहंतपदस्तुतिः ॥१॥

॥ अथ श्रीसिद्धपद स्तुति ॥

अष्ट करमकुं धमन करीने, गमन कियो शिववासीजी । अव्याबाध सादि अनादि, चिदानंद चिद्-

राशिजी । परमातम पद पूरण विलासी, अघघन दाघ विनाशीजी ॥ अनंत चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवलज्ञानी भाषीजी ॥ इति सिद्धपदस्तुतिः ॥२॥

॥ अथ श्रीआचार्यपद स्तुति ॥

पंचाचार पाले उजवाले,दोष रहित गुणधारीजी। गुण छत्तीसे आगमधारी, द्वादश अंग विचारीजी । प्रबल सबल घनमोह हरणकुं, अनिल समो गुण वाणीजी । क्षमा सहित जे संयम पाले, आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्यपदस्तुतिः ॥३॥

॥ अथ श्रीउपाध्यायपद स्तुति ॥

अंग इग्यारे चउदे पूरव, गुण पचवीसना धारीजी । सूत्र अरथधर पाठक कहीए, जोग समाधि विचारीजी ॥ तप गुणशूरा आगम पूरा, नय निक्षेपे तारीजी । मुनि गुणधारी बुध विस्तारी, पाठक पूजो अविकारीजी ॥ इति उपाध्यायपदस्तुतिः ॥४॥

॥ अथ श्रीसाधुपद स्तुति ॥

सुमति गुपति कर संजम पाले, दोष बयाली-

श टालेजी ॥ षट्काया गोकुल रखवाले, नवविध ब्रह्मव्रत पालेजी ॥ पंच महाव्रत सूधां पाले, धर्म शुक्ल उजवालेजी ॥ क्षपकश्रेणि करी कर्म खपावे, दमपद गुण उपजावेजी ॥ इति साधुपदस्तुतिः ॥५॥

॥ अथ श्रीदर्शनपद स्तुति ॥

जिनपन्नत्त तत्त्व सुधा सरधे, समकित गुण उजवालेजी ॥ भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुर पावेजी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्यो, गणधर अरिहंत शूराजी ॥ ए दरशनपद नित नित वंदो, भवसागरको तीराजी ॥ इति दर्शनपदस्तुतिः ॥६॥

॥ अथ श्रीज्ञानपद स्तुति ॥

मति श्रुत इंद्रिय जनित कहीए, लहीए गुण गंभीरोजी ॥ आतमधारी गणधर विचारी, द्वादश अंग विस्तारोजी ॥ अवधि मनःपर्यव केवल वली, प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी ॥ ए पंच ज्ञानकुं वंदो पूजो, भविजनने सुखकारोजी ॥ इति ज्ञानपदस्तुतिः ॥७॥

॥ अथ श्रीचारित्रपद स्तुति ॥

कर्म अपचय दूर खपावे, आतमध्यान लगावे-जी ॥ बारे भावना सूधी भावे, सागरपार उतारेजी ॥ षट् खंड राजकुं दूर तजीने, चक्री संजम धारेजी ॥ एहवो चारित्रपद नित वंदो, आतमगुण हितकारेजी इति चारित्रपदस्तुतिः ॥८॥

॥ अथ श्रीतपपद स्तुति ॥

इच्छारोधन तप ते भाख्यो, आगम तेहनो साखीजी ॥ द्रव्य भावसे द्वादश दाखी, जोगसमाधि राखीजी ॥ चेतन निज गुण परणति पेखी, तेहीज तप गुण दाखीजी ॥ लब्धि सकलनो कारण देखी, ईश्वर सेमुस भाखीजी ॥ इति तपपदस्तुतिः ॥९॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

वीर जिनेश्वर अति अलवेसर, गौतम गुणना दरीआ जी॥ एक दिन आणा वीरनी लेइने, राजगृही संचरीआ जी ॥ श्रेणिक राजा वंदन आव्या, उलट मनमां आणी जी ॥ पर्षदा आगल बार बिराजे, हवे

सुणो भविप्राणी जी ॥ १ ॥ मानवभव तुमे पुण्ये पाम्या, श्रीसिद्धचक्र आराधो जी ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया, साधु देखी गुण वाधे जी ॥ दरशण नाण चारित्र तप कीजे, नव पद ध्यान धरीजे जी ॥ धुर आसोथी करवां आंबिल, सुख संपदा पामीजे जी ॥ २ ॥ श्रेणिकराय गौतमने पूछे, स्वामी ए तप केणे कीधो जी ॥ नव आंबिल तप विधिशुं करतां, वंछित सुख केणे लीधो जी ॥ मधुरी ध्वनि बोल्या श्री गौतम, सांभलो श्रेणिकराय वयणां जी ॥ रोग गयो ने संपदा पाम्या, श्रीश्रीपाल ने मयणा जी ॥ ३ ॥ रुमझुम करती पाये नेउर, दीसे देवी रूपाली जी ॥ नाम चक्केसरी ने सिद्धाइ, आदि जिनवर रखवाली जी ॥ विघन कोड हरे सहु संघनां, जे सेवे एना पाय जी ॥ भाणविजय कवि सेवक नय कहे, सानिध्य करजो माय जी ॥ ४ ॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ श्री सिद्धचक्र सेवो सुविचार, आणी हैडे हरख अपार, जिम लहो सुख श्रीकार ॥ मन शुद्धे ओली

तप कीजे, अहोनिश नव पद् ध्यान धरीजे, जिनवर पूजा कीजे ॥ पडिक्कमणां दोय टंकनां कीजे, आठे थुइए देव वांदीजे, भूमि संथारो कीजे ॥ मृषा तणो कीजे परिहार, अंगे शीयल धरीजे सार, दीजे दान अपार ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य नमीजे, वाचक सर्वे साधु वंदीजे, दंसण नाण सुणीजे ॥ चारित्र तपनुं ध्यान धरीजे, अहोनिश नव पद गणणुं गणीजे, नव आंबिल पण कीजे ॥ निश्चल राखी मन हो निश्चे, जपीए पद एक एक ईश, नोकारवाली वीश ॥ छेल्ले आंबिल मोटो तप कीजे, सत्तरभेदी जिनपूजा रचीजे, मानवभव लाहो लीजे ॥ २ ॥ सातसें कुष्ठीयाना रोग, नाठा यंत्र न्मण संजोग, दूर हुआ कर्मना भोग ॥ अढारे कुष्ठ दूरे जाये, दुःख दोहग दूर पलाये, मनवंछित सुख थाये ॥ निरधनीयाने दे बहु धन्न, अपुत्रीयाने द्ये पुत्ररतन्न, जे सेवे शुद्ध मन्न ॥ नवकार समो नहीं कोइ मंत्र, सिद्धचक्र समो नहीं कोइ जंत्र, सेवो भवि हरखंत ॥ ३ ॥ जिम सेव्या मयणा श्रीपाल, उंबर रोग गयो सुख रसाल पाम्या मंगलमाल ॥ श्रीपाल तणी पेरे जे

आराधे, दिन दिन दोलत तस घर वाधे, अति शिवसुख साधे ॥ विमलेश्वर यक्ष सेवा सारे, आपदा कष्टने दूर निवारे, दोलत लक्ष्मी वधारे ॥ मेघविजय कवियणना शिष्य, आणी हैडे भाव जगदीश, विनय वंदे निशादेश ४

॥ अथ श्री सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ जिनशासन वंछित, पूरण देव रसाल ॥ भावे भवि भणीए. सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुं काले एहनी, पूजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमरपद, सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध वंदो, आचारज उवझाय ॥ मुनि दरिसण नाण, चरण तप ए समुदाय ॥ ए नव पद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय ॥ ए ध्याने भविनां, भव कोटि दुःख जाय ॥ २ ॥ आसो चैतरमां, सुदि सातमथी सार ॥ पूनम लगे कीजे, नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेवुं, पद सम साडाचार ॥ एकाशी आंबिल तप, आगमने अनुसार ॥ ३ ॥ सिद्धचक्रनो सेवक, श्री विमलेसर देव ॥ श्रीपाल तणी परे, सुख पूरे स्वयमेव ॥ दुःख दोहग

नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्री सुमति सुगुरुनो, राम कहे नित्यसेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रनी स्तुति ॥

अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो, आचारज वाचक साहु नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमो, तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥१॥ अरिहंत अनंत थया थाशे, वली भावनिक्षेपे गुण गाशे ॥ पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं, आंबिल तप गणणुं गणो विधिशुं ॥ २ ॥ छरि पाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परे भव तरशे। सिद्धचक्रने कुण आवे तोले, एहवा जिनआगम गुण बोले ॥ ३ ॥ साडाचारें वरषे तप पूरुं, ए कर्म विदारण तप शूरुं ॥ सिद्धचक्रने मनमंदिर थापो, नय विमलेश्वर वर आपो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

अंगदेश चंपापुरी वासी, मयणाने श्रीपाळ सुखाशी । समकितसुं मनवासी, आदि जिनेश्वरनी उल्लासी, भावपूजा कीधी मन आशी । भाव धरी वि-

श्वासी। गलित कोढ गयो तेणे नाशी, सुविधिसु सिद्ध-
चक्र उपासी, थया स्वर्गना वासी। आशो चैत्र तणी
पौर्णमासी, प्रेम पूजो भक्ति विकाशी, आदि पुरुष अवि-
नाशी ॥१॥ केशर चंदन मृगमद घोळी, हरखसुं भरी
हेम कचोली, शुद्ध जळे अंघोळी। नव आंबिलनी कीजे
ओळी, आसो सुदि सातमथी खोळी, पूजो श्रीजिन-
टोळी। चउगतिमांहे आपदा चोळी, दुर्गतिना दुःख
दूरे ढोळी, कर्म निकाचित रोळी। कर्म कषाय तणा
मद रोळी, जिम शिव रमणी भमर भोळी, पाम्या सुख-
नी ओळी, ॥२॥ आसो शुदि सातमश्यु विचारी, चैत्री
पण चित्तसु निरधारी, नव आंबिलनी सारी। ओळी
कीजे आलसवारी, प्रतिक्रमण बे कीजे धारी, सिद्ध-
चक्र पूजो सुखकारी। श्रीजिनभाषित पर उपकारी,
नवपद जाप जपो नरनारी, जिम लहो मोक्षनी बारी।
नवपद महिमा अति मनोहारी, जिन आगम भाखे
चमत्कारी, जाउं तेहनी बलिहारी ॥ ३ ॥ श्याम भमर
सम वीणा काली, अति सोहे सुंदर सुकुमाळी, जाणे

राजमराली । जलहल चक्र धरे रूपाली, श्रीजिनशासननी रखवाळी, चक्रेश्वरी म्हें भाळी । जे ए ओळी करे उजमाळी, तेनां विघ्न हरे सहु बाळी, सेवक जन संभाळी । 'उदयरतन' कहे आलस टाळी, जे जिन नाम जपे जपमाळी, ते घर नित्य दीवाळी ॥४॥

॥ श्रीसिद्धचक्र स्तुति ॥

जं भत्तिजुत्ता जिणसिद्धसूरिउवज्झायसाहूण कमे नमंति । सुदंसणन्नाण तवो चरित्तं, पुअंतु पावेह सुहं अणंतं ॥१॥ नामाइभेएण जिणिंदचंदा, निच्चं नया जोसि सुरिंदविंदा ' ते सिद्धचक्कस्स तवे रयाणं, कुणंतु भव्वाण पसत्थनाणं ॥२॥ जो अत्थओ वीरजिणेण पुव्विं, पच्छा गणिंदेहि सुभासिओ अ । एयस्स आराहणतप्पराणं सो आगमो सिद्धिसुहं कुणेउ ॥ ३ ॥ सव्वत्थ सव्वे विसलप्पहाईं, देवा तहा सासणदेवयाओ । जे सिद्धचक्कंमि सयावि भत्ता, पूरिंतु भव्वाण मणोरहंते ॥ ४ ॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

भत्तिजुत्ताण सत्ताण मणकामणा—पूरणे कप्पत-

रुकामधेणूवमं। दुक्खदोहग्गदारिद्दनिन्नासयं,सिद्धचक्कं सया संथुणे सासयं ॥ १ ॥ तिजगजणसंथुणिअपाय पंकेरूहा, हेमरूप्पंजणासोगनीलप्पहा । सिद्धचक्कं थुणंताण कयनिव्वुइं, सव्वतित्थंकरा दिंतु नाणुन्नइं ॥२॥ जत्थ जिणसिद्धसूरिवायगजइ दंसणं नाणचरणं तवं नवपइ । सिद्धचक्कस्स वण्णिज्जए तं सया, नमह सिरिवीरसिद्धंतसाणंदिआ ॥ ३ ॥ जक्खिणीजक्खवरिदिसिवालया जयविजयजंभिणीपमुहवरदेवया । दिंतु सत्ताण खुद्दाण निन्नासगं, सिद्धचक्कं भणंताण कल्लाणगं ॥ ४ ॥

॥ नवपद स्तुति ॥ ॥

॥ श्री शत्रुंजय तीरथ सार ॥ ए चाल ॥

श्रीसिद्धचक्रमां छे त्रण तत्व । देवगुरु धर्म तणुं एकत्व । आराधो धरी सत्व॥ बे पद देवतत्त्वमां सारां। गुरुतत्त्वे त्रण पद छे प्यारां । धर्म्ममां चार उदारां ॥ विद्याप्रवाद पूर्वथी सार। सिद्धचक्रनो कर्यो उद्धार। पूर्वधरे धरी प्यार॥ विमलेश्वर सुर पूरे आश। जे करे नवपद तप उल्लास। 'हंस' लहे शिववास ॥१॥

॥ श्री सिद्धचक्र स्तुति ॥

ज्ञात्वा प्रश्नं तदर्थं गणधरमनसं प्रागवद्वीरदेवः, अर्हत्सिद्धार्यसाधुप्रभृतिनवपदान् सिद्धचक्रस्वरूपान् । ये भव्याश्रित्य धिष्णं प्रतिदिनमधिकं संजपन्ते स्वभक्त्या, ते स्युः श्रीपालवच्च क्षितिवरपतयः सिद्धचक्रप्रसादात् ॥ १ ॥ दुस्तीर्णं निस्तरीतुं भवजलनिधिकं पाणियुग्मे गृहीत्वा, यानेकान् कोटिकुम्भान् कनकमणिमयान् षष्टिलक्षाभियुक्तान् । गंगासिन्धुह्रदानां जलनिधितटतस्तीर्थतोयेन भृत्वा, सत्सार्वाधीश्वराणां सुरपतिनिकरा जन्मकृत्यं प्रचक्रुः ॥२॥ कुर्युर्देवास्त्रिवप्रं रजतमणिमयं स्वर्णकान्त्याऽभिरामे, स्थित्वा स्थाने सुवाक्यं जिनवरपतयः प्रावदन् यां च नित्यम् । तां वाचां कर्णकूपे सुनिपुणमतयः श्रद्धया ये पिबन्ति, ते भव्याः शैवमार्गागमविधिकुशला मोक्षमासादयन्ति ॥३॥ देवी चक्रेश्वरी स्त्रग्दधाति च हृदये पत्तने देवकाख्ये; कामे मोदाभिकीर्णे विमलपदयुजि सिद्धचक्रस्य वीजा । श्रीमद्वार्षादियुक्तैर्विजयप्रभवरैर्वर्यरूपैर्मुनीन्द्रैः, स्तुत्या

नित्यं सुलक्ष्मीविजयपदवृतैः प्रेमपूर्णैः प्रसन्ना ॥ ४ ॥
इति श्रीसिद्धचक्रस्तुतयः ।

॥ सिद्धचक्रनी स्तुति ॥

प्रह उठी वंदु, सिद्धचक्र सदाय; जपीये नवपदनो, जाप सदा सुखदाय, विधिपूर्वक ए तप, जे करे थइ उजमाल; ते सवि सुख पामे, जेम मयणा श्रीपाल ॥ १ ॥ मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत । तस कर्मसंयोगे, कोढी मळीयो कंत । गुरु वयणे तेणे, आराध्युं तप एह । सुख संपद वरीया, तरीया भवजल तेह ॥२॥ आंबिलने उपवास, छठ वली अठम । दस अट्ठाइ पंदर, मासी छमासी विशेष ॥ इत्यादिक तप बहु, सहुमांहि शिरदार ॥ जे भवियण करशे, ते तरशे संसार ॥ ३ ॥ तप सांनिध्य करशे, श्री विमलेश्वर यक्ष, सहु संघना संकट, चूरे थइ प्रत्यक्ष । पुंडरीक गणधर, कनक विजय बुद्ध शिष्य । बुद्ध दर्शनविजय कहे, पहोंचे सयल जगीश ॥ ४ ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रस्तुतिः ॥

विपुलकुशलमाला केलिगेहं विशाला, समविभव-

निधानं शुद्धमंत्रप्रधानं ॥ सुरनरपतिसेव्यं दिव्य-माहात्म्यभव्यं, निहतदुरितचक्रं, संस्तुवे सिद्धचक्रम् ॥१॥ दमितकरणवाहं--भावतो यः कृताहं, कृतिनिकृति-विनाशं प्रूरितांगिव्रजांशम् ॥ नमितजिनसमाजं-सिद्ध-चक्रादिबीजं, भजति स गुणराजीः सोऽनिशं सौख्य-राजीः ॥ २ ॥ विविधसुकृतशाखो भंगपत्रौघशाली, नयकुसुममनोज्ञः प्रौढसंपत्फलाढयं ॥ हरतु विनुवतां श्री-सिद्धचक्रं जनानां, तरुरिव भवतापा—नागमःश्री-जिनानाम् ॥३ ॥ जिनपति पदसेवां सावधाना धुनाना, दुरितारिपुकदंबं—कांत(त) कांतिं दधाना ॥ ददतु तपसि पुंसां सिद्धचक्रस्य नव्य-प्रमदामिह रतानां रोहिणिमुख्य-देव्यः ॥ ४ ॥

॥ श्रीसिद्धचक्र स्तुति ॥

पहीले पद जपीये अरिहंत, बीजे सिद्ध जपो जयवंत, त्रीजे आचारज संत। चोथे नमो उवज्झाय-हसंत, नमो लोए सव्वसाहु महंत, पांचमे पद विल-संता, ॥ दंसण छठुं नमो मतिमंत, सातमे पद नमो

नाण अनंत, आठमे चारित्र हुंत। नमो तवस्स नवमे सोहंत, श्रीसिद्धचक्रनुं ध्यान धरंत, पातिकनो होय अंत ॥ १ ॥ केशर चंदन अगर घसीजे, मांहे कस्तुरी भलीजे घन घनसार ठवीजे,। गंगोदकस्युं न्हवण करीजे श्री-सिद्धचक्रनी पूजा कीजे, सुरभि कुसुम चरचीजे ॥ कंदरू अगरूनो धूप डहीजे कामधेनुघृत दीप भरीजे, निर्मल भाव वहीजे। अनुपम नवपद ध्यान धरीजे, रोगादिक दुःख दूर हरीजे, मुक्तिवहु परणीजे ॥ २ ॥ आसो ने वली चैत्र रसाल, उज्वल पक्ष ओली सुविशाल, नव आंबिल चोसाल। रोग शोषनो अे तपकाल, साढा चार वरस तस चाल; वली जीवे त्यां भाल ॥ जे सेवे भावि थई उजमाल, ते लहे भोग सदा असराल, जीम मयणा श्रीपाल । छंडी अलगो आल पंपाल, नित्य आराधे त्रण काल, श्रीसिद्धचक्र गुणमाल ॥ ३ ॥ गज-गामिनी चंपकदलकाय, चाले पग ने उर ठमकाय, हीयडे हार सोहाय। कुंकुम चंदन तिलक रचाय; पहिरे पीत पटोली बनाय, लीलाये लहकाय ॥ बाली भोळी चक्के-सरी माय; जे नर सेवे सिद्धचक्रराय, थे तेहने सुसहाय।

श्रीविजयप्रभसूरि तपगच्छराय; प्रेमविजय सेवी पाय;
कांतिविजय गुण गाय ॥ ४ ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रजीनी स्तुति ॥

श्रीजिनशासन भविक विमासन, कुमतिकुशासन वारेजी। जे शुभ भावे भवियण ध्यावे, नावे कष्ट किंवारेजी, राजग्रही गुरु गौतम आव्या, वीरतणे आदेशेजी; श्रेणीक आगले नवपद महीमा, श्रीमुखथी उपदेशेजी ॥१॥

श्रीअरीहापद मध्ये ठवीये; पूरवादिसि सिद्ध जाणोजी आचारज उवझाय मुनीसर, अनुक्रम अेह वखाणोजी; (अग्निखुणे दर्शनपद जाणो, ज्ञानचरण तप सूत्रोजी) ओँ ह्रीँ बीजाक्षरधुरीः गुणीअे, गुरुगमथी ए मंत्रोजी२

आसो चैत्रसुदि सातमथी; नवदिन आंबेल कीजेजी; आठ थोय कही देव वांदीने, देवत्रिकाल पूजीजेजी; एक एक पदनी नवकारवाळी, वीस गुणो शुभभावोजी; आवश्यक दोय टंक करीने, श्रीसिद्धचक्र गुणगावोजी॥३॥

नव दिन जिनवर चैत्य प्रवाडी; वांद्या जेम श्रीपाळजी

साडाचार वर्षे होळी; नव करी तप उजवालेजी.
मुनि भीमराज चक्केसरी देवी; विमलेसर सुखकारोजी
श्रीसंघ सहु दिनदिन अति दीपे; पामीजे भवपारोजी४

॥ श्री सिद्धचक्र स्तुति (थोय) ॥

त्रिगडे बेठा त्रिभुवननायक, वीर वदे एम वाणीजी, श्री श्रीपालतणी परे सेवो, सिद्धचक्र गुण खाणीजी ॥ अरिहंत आदि सिद्ध आचारज, उवज्झाय उलट आणीजी। साहूदंसण नाण चारित्र तप, इति नव पद जाणीजेजी ॥ १ ॥ आसो चैत्र शुदि सातमथी, नव आयंबिल पच्चक्खीजेजी। पडिक्कमणा दोय त्रिकाल पूजा, देववन्दन त्रण कीजेजी ॥ पद एकेकुं प्रतिदिन मन शुद्धे, तेर हजार गुणीजेजी, चोवीश जिननी सेवा करीने, नरभव लाहो लीजेजी ॥ २ ॥ नव दिननी नव ओळी करतां, आयंबिल एक्याशी थायजी, साढाच्यार वरसे उजमणुं करीने, तेहने सवी सुख दाइजी ॥ सिरि सिद्धचक्रना न्हवणजलथी, कुष्ठ अढार पलायजी, सकल

शास्त्र शिर मुकुट नगीनो, अंगे सुणो चित्त लाइजी ॥ ॥३॥ मातंग यक्ष प्रभु पद सेवे, उलट आणी अंगेजी, ईसिरि सिद्धचक्रनी ओली करता, विघ्न हरे मन रंगेजी॥ हंसविजय गुरु पंडित पुंगव, चरण सरोरुह भृंगजी, धीरविजय वुध मंगलमाला सुख संपत्ति लहे चंगजी ॥ ४ ॥ इति ॥

श्री स्तुति.

आदीश्वरने पूजो आणी मन उल्लास; सिद्धचक्र आराधो जिम प्होंचे मन आश ॥ आसो चैत्र सातमथी ओलीकीजे सार आंबीलस्युं करतां लहीये जय जयकार ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्धादिक आचार्य वली जेह, उवज्झाय सर्व साधु दर्शन ज्ञानश्युं नेह ॥ चारित्रतप धारो नवपद गुणभंडार; पंचवर्णा जिनवर सेवंता सुखकार ॥२॥ श्रीपालनरेश्वर मयणा सुंदरी तपसार, उपदेशे श्रीवीरजी परखद बारमझार ॥ श्रेणीकनृप आदे सांभले हरख अपार। आराधो भवि ऋद्धिवृद्धि उदार

॥३॥ रमझमके नेउरी चीर चुनडी नथी सामु गोमुख चक्केसरी श्री ऋषभशासन हितकार॥ वंछित फल दे ज्यो सुख संपत्तिदातार; गुरु कुंवरविजयनो रवि लहे जयकार ॥ ४ ॥

नवपदनी सज्झाय.

(नणदलनी ए देशी.)

वारी जाउं श्री अरिहंतनी, जेहना गुण छे बार॥ मोहन० ॥ प्रातिहारज आठ छे, मूल अतिशय चार मोहन० ॥ १ ॥ वारि० ॥ वृक्ष अशोक कुसुमनी वृष्टि, दीव्य ध्वनि वाण ॥ मोहन० ॥ चामर, सिंहासन, दुंदुंभि, भामंडल छत्र वखाण ॥ मो० ॥ वारि० ॥ २ ॥ पूजा अतिशय छे भलो, त्रिभुवन जनने मान ॥ मो० वचनातिशय योजनगामी, समजे भविअसमान ॥ ॥ मो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ ज्ञानातिशय अनुत्तरतणा, संशय छेदणहार ॥ मो० ॥ लोकालोक प्रकाशता, केवल ज्ञानभंडार ॥ मो० ॥ वारि० ॥ ४ ॥ रागादिक अन्तररिपु, तेहनो कीधो अन्त ॥ मो० ॥ जिहां विचरे जग-

दीश्वरु तिहां साते ईति संमत ॥ मो० ॥ वा० ५ ॥ एहवा अपायापगमनो, अतिशय अति अद्भूत ॥ ॥ मो० ॥ अहर्निश सेवा सारता, कोडिगमे सुर हुंत ॥ मो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ मार्ग श्री अरिहन्तनो, आदरीये गुणगेह ॥ मो० चारनिक्षेपे वांदीये, ज्ञानविमल गुण गेह ॥ मो० ॥ वा ॥ ७ ॥

॥ इति अरिहंत प्रथम पद सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ सिद्धपदनी सज्झाय ॥

अलबे जो होली हलखेडेरे॥ ए देशी ॥

नमो सिद्धाणं बीजे पदेरे लाल, जेहना गुण छे आठ रे, हुं वारी लाल, शुक्लध्यान अनले करीरे लाल, बाळ्या कर्म कुठाररे ॥ १ ॥ हुं वारी लाल ॥ ज्ञानावरणीक्षये लह्यारे लाल; केवलज्ञान अनंतरे ॥ हुं० ॥ दर्शनावरणी क्षयथी थयारे लाल, केवलदर्शन करंतरे ॥ हुं० न० ॥ २ ॥ अक्षय अनन्त सुख सहजथीरे लाल, वेदनी कर्मनो नाशरे ॥ हुं० ॥ मोहनीय क्षये निर्मलुंरे लाल, क्षायक समकित वासरे, हुं० ॥

न० ॥ ३ ॥ अक्षय स्थिति गुण उपन्योरे लाल, आयु कर्म अभावरे ॥ हुं० ॥ नाम कर्म क्षये नीपन्योरे लाल, रूपादिक गतिभावरे । हुं० न० ॥४॥ अगुरुलघु गुण उपन्योरे लाल, न रहया कोइ विभावरे ॥ हुं० गोत्र कर्मना नाशथीरे लाल, निज प्रकट्या जस भावरे ॥ हुं० न० ॥ ५ ॥ अनन्त वीर्य आतमतणुं रे लाल, प्रगट्यो अंतराय नाशरे ॥ हुं० आठे कर्म नाशीगयारे लाल, अनन्त अक्षयगुण वासरे ॥ हुं० न० ॥ ६ ॥ भेद पन्नर उपचारथी लाल, अनन्त परम्पर भेदरे ॥ हुं० निश्चयथी वीतरागनारे लाल, किरण कर्म उच्छेदरे ॥ हुं० न० ॥ ७ ॥ ज्ञानविमलनी ज्योतिमांरे लाल, भासित लोकालोकरे ॥हुं०॥ तेहना ध्यानथकी थशेरे लाल, सुखीया सघला लोकरे ॥ हुं० न० ॥ ९ ॥

॥ इति सिद्धपद सज्झाय ॥

॥ त्रीजा आचार्य पदनी सज्झाय ॥

आचारी आचार्यनो जी, त्रीजे पद धरो ध्यान; शुभ उपदेश प्ररूपताजी, कह्या अरिहंत समान ॥सूरीश्वर॥

नमतां शिव सुख थाय, भव भवना पातिक जाय ॥ सू० ॥ १ ॥ पंचाचार पलावताजी आपण पे पालंत ॥ छत्रीशी छत्रीश गुणेजी, अलंकृत तनु विलसन्त ॥ सूरीश्वर ॥ नम० ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्रनाजी, एकेक आठ आचार ॥ वारहतप आचारनाजी इम छत्रीश उदार ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ३ ॥ पडिरूपादिक चउदे अछेजी, वली दशविध यतिधर्म ॥ बारह भावना भावतांजी, ए छत्रीशी मर्म ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ४ ॥ पंचेन्द्रिय दमे विषयथीजी, धारे नवविध ब्रह्म ॥ पंच महाव्रत पोषताजी, पंचाचारसमर्थ ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ५ ॥ सुमति गुप्ति शुद्धि धरेजी, टाले चार कषाय ॥ ए छत्रीशी आदरेजी, धन्य धन्य तेहनी माय ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ६ ॥ अप्रमत्त अर्थ भांखताजी, गणि संपद् जे आठ ॥ छत्रीश चउ विनयादिकेजी, इम छत्रीशी पाठ ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ॥७॥ गणधर उपमा दीजीएजी, युगप्रधान कहाय ॥ भावचारित्री तेहवाजी, तिहां जिनमार्ग ठराय ॥

सूरी० ॥ नम० ॥ ८ ॥ ज्ञानविमल गुण राजताजी ॥ गाजे शासन मांहे, ते वांदि निर्मल करोजी ॥ बोधि बीज उच्छाह ॥ ९ ॥ न० ॥ इति नवपद अधिकार तृतीय पद सझाय ॥

॥ चतुर्थ पद सज्झाय ॥

॥ पांडव पांचेवा ॥

चोथे पद उवझायनुं, गुणवंतनुं धरो ध्यानरे, युवराजा समते कह्या, पद सूरिने समानरे ॥ १ चो० ॥ जे सूरि समान व्याख्यान करे, पण न धरे अभिमान रे, वळी सूत्र अर्थनो पाठ दीये, भविजीवने सावधान रे ॥ चो० ॥२ ॥ अंग इग्यार चउद पूर्व जे वळी भणे भणावे जेहरे ॥ गुण पचवीश अलंकर्या, दृष्टिवादे अर्थना गेह रे ॥ चो० ॥ ३ ॥ बहु नेहे अर्थ अभ्यासे सदा, मन धरता धर्मध्यान रे ॥ करे गच्छ निश्चित प्रवर्त्तक, दिये स्थविरने बहु मान रे ॥ चो० ॥ ४ ॥ अथवा अंग इग्यार जे वळी, तेहना बार उपांग रे ॥ चरण करणनी सित्तरी, जे धारे आपणे

अंग रे ॥ चो० ॥ ५ ॥ वळी धारे आपणे अंग, पंचागीसम–ते शुद्धवाणी रे ॥ नयगमभंग प्रमाण विचारने, दाखता जिन आणरे ॥ चो० ॥ ६ ॥ संघ सकल हित कारीया, रत्नाधिक मुनिहितकार रे॥ पण व्यवहार प्ररूपता, कहे दस समाचारी आचार रे ॥ ॥ ७ ॥ इन्दिय पंचथी विषय विकारनें, वारता गुणगेहरे ॥ श्रीजिनशासन धर्मधुरा, निरवाहता शुचिदेहरे ॥ ८ ॥ पचविशि पचविस गुणतणी, जे भाखी प्रवचन मांहे रे ॥ मुक्ताफल मुक्तापरे, दीपे जस अंग उछाहरे ॥ ९ ॥ जस दीपे अति उच्छाहे, अधिक गुणे जीवथी एकतानरे ॥ एहवा वाचकनुं उपमान कहुं किम; तेहथी शुभ ध्यान रे ॥ १० ॥ इति चतुर्थ पद सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ पञ्चमपद सज्झाय ॥

॥ राग धनाश्री ॥

॥ मगधदेश राज गृही नगरी ॥ ए देशी

ते मुनिने करुं वन्दन भावे, जे षट्काय व्रत राखेरे ॥ इन्द्रिय पण दमे विषय घणाथी, वलि शा-

न्ति सुधारस चाखेरे ॥ १ ॥ ते मुनिने करुं वन्दन-भावे ॥ ए टेक ॥ लोभ तणा निग्रहने करता; वली पडिलेहणादिक किरियारे ॥ निराशंसयतनाए वहु पदी; वळी करणशुद्धि गुणदारियारे ॥ ते मुनि० ॥ ॥ २ ॥ अहनिश संजम योगशुं युक्ता; दुर्धर परिसह सहतारे ॥ मन वच काय कुशळता जोगे, वरतावे गुण अनुसरतारे ॥ ते मुनि० ॥ ३ ॥ छंडे निज तनु धरमने कामे, उपसर्गादिक आवे रे ॥ सत्तावीश गुणे करी सोहे. सूत्राचारने भावेरे ॥ ते मुनि० ॥ ४ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तणा जे, त्रिकरण जोग आचार रे ॥ अंगे धरे निःस्पृहता शुद्धि, ए सत्तावीश गुण साररे ॥ ते मुनि० ॥ ५ ॥ अरिहंतभक्ति सदा उप-दिशे; वायगसूरीना सहाइरे ॥ मुनि वीण सर्वे क्रिया नवी सूजे; तीर्थ सकल सुखदाइरे ॥ ते मुनि० ॥ ६ ॥ पद पांचमे इणि परे ध्यावो. पंचमी गति ने साधोरे॥ सुखी करजो शासननायक, ज्ञानविमल गुण वा-धोरे ॥ ते मुनि० ॥ ७ ॥ इति नवपद विषे पंचम मुनिपदनी सज्झाय संपूर्ण.

सज्झाय.

देशी भमरगीतानी.

गुरु नमतां गुण उपजे, बोले आगम वाण
श्री श्रीपालने मयणासुंदरी, सद्दहे गुणखाण
श्री मुनीचंद मुनीसर बोले अवसर जाण ॥१॥
आंबिलनो तप वरणव्यो, नवपद नवेरे निधान
कष्ट टळे आशा फळे, वाधे वसुधा वान ॥ श्री० ॥२॥
रोग जाए रोगी तणा, जाए सोग संताप
वाहलावृंद भेळा मले, पुन्य वधे घटे पाप ॥श्री०॥३॥
उज्वल आसो सातम, तप मांडे तनुहेत
पुरण विध पुनिमलगे कामिनी कंत समेत ॥श्री०॥४॥
चैत्र सुद माहे तीम, नव आंबील नीरसाय
इम एकाशी आंबिले, ए तप पुरो थाय ॥ श्री० ॥५॥
राज नीकंटक पाळतां नवशत वरस वलीन
देशविरतिपणुं आदरी, दीपाव्यो जगजैन ॥श्री० ॥६॥
गजरथ सहस ते न बहुआ नवलख तेजी तोखार
नवकोडी हयदल भलुं नवनंदन वननाव्य ॥ श्री. ७॥

तपजप उद्यापन थकी, लाधो नवमो सग्ग
सुरनरना सुख भोगवी, नवमे भव अपवग्ग ॥श्री० ८॥
हंसविजय कविरायना जी मजलउपर नाव
आप तरे पर तारवे मोहन सुहस्वभाव ॥ श्री० ९ ॥

अथ नोकारवालीनी सज्झाय.

॥ बार जपुं अरिहंतना, भगवंतना रे गुण हुं निशदीस ॥ सिद्ध आठ गुण जाणिये वखाणीये रे गुण सूरि छत्रीश ॥ नोकारवाली वंदीये ॥ १ ॥ चिर नंदिये रे उठी गणीये सवेर ॥ सूत्रतणा गुण गुंथिया, मणिआ मोहन रे मह मोटो मेर ॥ नोका० ॥ २ ॥ पंचवीश उवझायना, सत्तावीश रे गुण श्री अणगार॥ एकशो आठ गुणे करी, इम जपीयें रे भवियण नवकार ॥ नोका० ॥ ३ ॥ मोक्ष जाप अंगुठडे, वैरी जूठडें रे तर्जनी अंगुली जोय ॥ बहु सुखदायकं मध्यमा, अनामिका रे वश्यारथ होय ॥ नोका० ॥४॥ आकर्षण टची अंगुली, वली सुणजो रे ए गणवानी रीति ॥ मेरु उल्लंघन मम करो, मम करजो रे नख

अग्रे प्रीति ॥ नोका० ॥ ५ ॥ निश्चल चित्तें जे गणे, जे गणे संख्यादिकथी एकांत ॥ तेहने फल होए अतिघणुं, इम बोले रे जिनवर सिद्धांत ॥ नोक० ॥६॥ शंख प्रवाल स्फटिक मणि, पन्ना जीव रतांजली मोती सार ॥ रूप सोवन रयण तणी, चंदन अवर अगरने घनसार ॥ नोका०॥ ७ ॥ सुंदर फल रुद्राक्षनी जपमालिका रे रेशमनी अपार ॥ पंचवरण सम सत्रनी, वली वस्तुविशेष तणी उदार ॥ नोका० ॥ ८ ॥ गौतम पुंछंते कह्यो, महावीरे रे ए संयल विचार ॥ लब्धि कहे भवियण सुणो, गणजो भणजो रे नित्य सज्झायो नवकार ॥ नोका० ९ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धनी सज्झाय ॥

आठ कर्म चूरण करीरे लाल, आठ गुण परसिद्ध ॥ मेरे प्यारे ॥ क्षायिक समकितना धणीरे लाल ॥ वंदु वंदु एहवा सिद्ध ॥ मेरे प्यारे ॥आ०॥१॥ अनंत नाण दरसण धरारे लाल, चोथुं वीर्य अनंत ॥ मे०॥ अगुरुलघु सूक्ष्म कह्यारे लाल, अव्याबाध महंत ॥ मे० ॥

आ० ॥ २ ॥ जेहनी काया जेहवीरे लाल, उणी त्रीजे भागे ॥ मे० ॥ सिद्धशिलाथी जोयणेरे लाल, अवगाहना वीतरागे ॥ मे० आ० ॥ ३ ॥ सादिअनंता तिहां घणारे लाल, समय समय तेह जाय ॥ मे० ॥ मंदिर मांहे दिपालीकारे लाल, सघलो तेज समाय ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ मानवभवथी पामीयेरे लाल, सिद्ध तणा सुख संग ॥ मेरे० ॥ एहनुं ध्यान सदा धरीरे लाल, एम बोले भगवइ अंग ॥ मेरे० अ० ॥ ५ ॥ श्री विजयदेव पटोधररे लाल. श्री विजयसेनसूरीश मे० ॥ सिद्धतणा गुण ए कह्यारे लाल, देव दीए आशीष ॥ मे० ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति श्री सज्झाय संपूर्ण.

॥ नवपद महिमानी सज्झाय ॥

॥ सरसती माता मया करो, आपो वचन विलासोरे ॥ मयणासुंदरी सती गायशुं, आणी हीयडे भावोरे ॥ १ ॥ नवपद महिमा सांभळो, मनमां धरी उल्लासोरे ॥ मयणासुंदरी श्रीपालने, फलीयो धर्म उदारोरे ॥ न० ॥ २ ॥ मालव देशमांही वली, उज्जेणी

नयरी जासोरे ॥ राज्य करे तीहां राजीओ, पुहवीपाल नरिंदोरे ॥ न० ॥ ३ ॥ रायतणी मनमोहनी, धरणी अनोपम दोयरे ॥ तासु कुंखे सुता अवतरी, सुरसुंदरी मयणा जोडरे ॥ न० ॥ ४ ॥ सुरसुंदरी पंडित कने, शास्त्र भणी मिथ्यातोरे ॥ मयणासुंदरी सिद्धांतनो, अर्थ लीयो सुविचारोरे ॥ न० ॥ ५ ॥ राय कहे पुत्री प्रत्ये, हुं तुठो तुम जेहोरे ॥ वंछीत वर मागो तदा, आपुं अनोपम जेहोरे ॥ न० ॥ ६ ॥ सुरसुंदरीए वर मागीओ, परणावी शुभ ठामोरे ॥ मयणासुंदरी वयणां कहे, कर्म करे ते होयरे ॥ न० ॥ ७ ॥ करमे तुसारे आवीयो, वर वरो बेटी जेहोरे ॥ तात आदेशे कर ग्रह्यो, वरीयो कुष्टी तेहोरे ॥ न० ॥ ८ ॥ आंबिलनो तप आदरी, कोढ अढारनो कालोरे ॥ सद्गुरु आज्ञा शिरधरी, हुओ राय श्रीपालोरे ॥ न० ॥ ९ ॥ तप प्रसादे सुख संपदा, प्रत्यक्ष स्वर्ग पहुंतोरे ॥ उपसर्ग सवी दूरे टळ्या, पाम्यो सुख अनंतोरे ॥ ॥ न० ॥ १० ॥ देश देशांतर भमी करी, आव्यो ते चरसंतोरे ॥ नव राणी पाम्या भली, राज्य पाम्यो म-

नरंगोरे ॥ न० ॥ ११ ॥ तपगच्छ दिनकर उगीयो, श्री विजयसेन सूरिंदोरे, तास शिष्य विमल एम विनवे, सतीय नामे आणंदोरे ॥ १२ ॥

॥ साधुजीनी सज्झाय ॥

॥ पंचमहाव्रत दशविध यतिधर्म. सत्तर, संजम भेद पालेजी ॥ वैयावच्च दस नवविधब्रह्मचर्य, वाड भली अजुआलोजी ॥ १ ॥ ज्ञानादित्रय बारे भेदे, तप करे जे अ निदानजी ॥ क्रोधादिक चारेनो निग्रह, ए चरणसीत्तेरी मानजी ॥ २ ॥ चउविध पिंड वसती वस्त्र पात्र. निर्दूषण ए लेवेजी, सुमति पांच वली पडिमा बारह, भावना बारह सेवेजी ॥ ३ ॥ पच्चविश पडीलेहण पंचइंद्रिया ॥ विषयविकारथी वारेजी, त्रिण गुप्तिने च्यार अभिग्रह, द्रव्यादिक संभारेजी ॥ ४ ॥ करणसीत्तेरि एहवी सेवे, गुण अनेक वली वाधेजी ॥ संजमी साधु तेहने कहीये, बीजा सवी नाम धरावेजी ॥ ५ ॥ ए गुण विण प्रवज्या बोली, आजीविकाने तोलेजी; ते खटकाय असंजमी जाणो, धर्मदास गणी

बोलेजी ॥ ज्ञानविमल गुरु आणा धरीने, संजम शुद्ध आराधोजी ॥ जिम अनुपम शिवसुख साधो, जगमां कीर्ति वाधेजी ॥ ७ ॥

श्री सिद्धपदनी सज्झाय



श्री मुनिचंद्र मुनीश्वर वंदीए, गुणवंता गणधार, सुज्ञानी; देशना सरस सुधारस वरसता, जिम पुष्करजळधार, सु० श्री ॥ १ ॥ अतिशय ज्ञानी परउपकारीआ, संयम शुद्ध आचार, सु०॥ श्रीश्रीपाळ भणी जाप आपीओ, करी सिद्धचक्र उद्धार, सु० श्री० ॥ २ ॥ आंबिलतप विधि शीखी आराधीयो, पडिक्कमणां दोय वार, सु० अरिहंतादिक पद एक एकनो, गणणुं दोयं हजार, सु० श्री० ॥३॥ पडिलेहण दोय टंकनी आदरे, जिनपूजा त्रण काळ, सु०; ब्रह्मचारी वळी भोंय संथारे, वचन न आळ पंपाळ, सु०, श्री० ॥ ४ ॥ मन एकाग्र करी आंबिल करे, आसो चैतर मास, सु० शुदि सातमथी नव दिन कीजीए, पूनमे ओच्छव खास, सु०, श्री ॥ ५ ॥ एम नव ओळी एकाशी आंबिले, पूरी पूरण हर्ष, सु० उजमणुं पण उद्यमथी करे, साडा चारे रे वर्ष, सु० श्री० ॥ ६ ॥ ए आराधनथी सुखसंपदा, जगमां कीर्ति रे थाय, सु० रोग उपद्रव नासे एहथी, आपदा दूरे पलाय, सु० श्री ॥ ७ ॥ संपदा वाधे अति

सोहामणी, आणा होय अखंड, सु०; मंत्र जंत्र तंत्र सोहंतो, महिमा जास प्रचंड, सु० श्री० ॥ ८ ॥ चक्रेश्वरी जेहनी सवा करे, विमलेश्वर वळी देव, सु० मन अभिलाष पूरे सवि तेहना, जे करे नवपद सेव, सु० श्री० ॥ ९ ॥ श्रीपाळे तेणी परे आराधीओ, दूर गयो तास रोग, सु०; राजऋद्धि दिन दिन प्रत्ये वाधतो, मनवंछित लह्यो भोग; सु० श्री० ॥ १० ॥ अनुक्रमे नवमे भव सिद्धि वर्या; सिद्धचक्र सुपसाय; सु० एणी परे जे नित्य नित्य आराधशे; तस जस वाद गवाय; सु० श्री० ॥ ११ ॥ सांसारिक सुख विलसी अनुक्रमे; करीए कर्मनो अंत, सु०, घाती अघाती क्षय करी भोगवो, शाश्वत सुख अनंत, सु० श्री ॥ १२ ॥ एम उत्तम गुरु वयण सुणी करी, पावन हुवा बहु जीव, सु० पद्मविजय कहे ए सुरतरु समो, आपे सुख सदैव, सु० श्री० ॥ १३ ॥

चरणसित्तरी करणसित्तरीनी सज्झाय.

पंच महाव्रत दशविध यति धर्म, सत्तर संजम भेद पाळे जी; वैयावृत्त्य दश नवविध ब्रह्मचर्य, वाड भली अजवाळें जी. ॥ १ ॥ ज्ञानादिक त्रण बारे भेदे, तप करी जेह निदान जी; क्रोधादिक चारनो निग्रह, ए चरण सित्तरी मानजी. ॥ २ ॥ चउविध पिंड वसति वस्त्र पात्र, निर्दूषण ए लेवे जी; समिति पांच वळी पडिमा बारे, भा-

वना बारे सेवेजी.॥३॥पच्चीश पडिलेहणा पण इंद्रिय,विषय-विकारने वारो जी; त्रण गुप्ति वळी चार अभिग्रह, द्रव्या-दिकथी संभाळो जी. ॥४॥ करणसित्तरी इणविध सेवे, गुण अनेक वळी धारेजी, संजमी साधु तेहने कहीए, बीजा सवि नाम धारी जी.॥५॥ ए गुण विण प्रव्रज्या बोली,आजीविकाने तोले जी; ते षट काय असंजमी जाणो, धर्मदास गणी बोले जी ॥६ ॥ ज्ञानविमळ गुरु आणा धरीने, संजम शुद्ध आरा-धेजी; जिम अनुपम शिव सुख साधे, जगमां सुजस ते वाधे जी. ॥ ७ ॥

॥ श्री अजितसेन मुनिए श्रीश्रीपाळ महाराजाने आपेल उपदेश ॥

हस्तिनागपुर वर भलो-ए देशी.

प्राणी वाणी जिनतणी, तुम्हें धारो चित्त मझाररे;
मोहे मुंज्या मत फिरो, मोह मूके सुख निरधाररे;
मोह मुके सुख निरधार, संवेग गुण पालीयें पुण्यवंतरे;
पुण्यवंत अनंत विज्ञान, वदे इम केवली भगवंतरे. १
दश दृष्टांतें दोहिलो, मानवभव ते पण लब्धरे;
आर्यक्षेत्रें जन्म जे, ते दुर्लभ सुकृत संबंधरे ।
ते दुर्लभ सुकृत संबंधरे ॥ संवे० ॥ २ ॥

आर्यक्षेत्रे जनम हुओ, पण उत्तमकुल ते दुर्लभरे ।
व्याधादिककुलें उपनो, शुं आर्यक्षेत्र अचंभरे, शुं. संवे० ३।
कुल पामे पण दुल्लहो, रूप आरोग आउ समाजरे ।
रोगी रूपरहित घणा, हीण आउ दीसे छे आजरे ॥
हीण आउ दीसे छे आजरे. संवे० ॥ ४ ॥
ते सवि पामे पण सही, दुलहो छे सुगुरु संयोगरे ।
सघळे खेत्रें नहिं सदा, मुनि पामीजें शुभ योगरे ॥
मुनि पामीजे शुभ योगरे, संवे० ॥ ५ ॥
महोटे पुण्यें पामीयें, जो सद्गुरु संग सुरंगरे ।
तेर काठीया तो करे, गुरु दर्शन उत्सव भंगरे. गु. संवे॥६॥
दर्शन पामे गुरुतणुं, धूर्तें व्युद्ग्राहित चित्तरे ।
सेवा करी जन नवि शके, होय खोटो भाव अमित्तरे॥
होय खोटो भाव अमित्तरे. संवे० ॥ ७ ॥
गुरुसेवा पुण्यें लही, पासें पणु बेठा नित्तरे ।
धर्मश्रवण तोहे दोहिलुं, निद्रादिक दिये जो भित्तरे ॥
निद्रादिक दियेजो भित्तरे संवे० ॥ ८ ॥
पामी श्रुत पण दुल्लही, तत्त्वबुद्धि ते नरने न होयरे ।

शृंगारादिक कथारसें, श्रोता पण निज गुण खोयरे.
श्रो० संवे० ॥ ९ ॥

तत्त्व लहे पण दुल्लही, सद्दहणा जाणो संतरे ।
कोइ निज मति आगल करे, कोइ डामाडोल फिरंतरे॥
कोइ डामाडोल फिरंतरे संवे० ॥ १० ॥

आप विचारे पामिये, कहो तत्त्वतणो किम अंतरे ।
आलसुआ गुरु शिष्यनो. इहां भावियो मन वृत्तांतरे ॥
इहां भावियो मन वृत्तांतरे. संवे० ॥ ११ ॥

वठरछात्र गज आवतां, जिम प्राप्त अप्राप्त विचाररे ।
करे न तेंहथी ऊगरे,तेम आपमतिनिरधाररे;ते० संवे०॥१२॥

आगम ने अनुमानथी, वली ध्यानरसें गुणगेहरे ।
करे जे तत्त्वगवेषणा,ते पामे नहि संदेहरे ते०संवे०॥१३॥

तत्त्वबोध ते स्पर्श छे, संवेदन अन्यस्वरूपरे ।
संवेदन वंध्येहुइ, जेस्पर्श ते प्राप्तिरूपरे जे०संवे० ॥१४॥

तत्त्व ते दशविध धर्म छे, खंत्यादिक श्रमणनो शुद्धरे।
धर्मनुं मूल दया कही, ते खंतिगुणें अविरुद्धरे ते०संवे०१५

विनयने वश छे गुण सवे, ते तो मार्दवने आयत्तरे ।

जेहने मार्दव मन वस्युं, तेणें सवि गुणगण संपत्तरे ॥
तेणे सवि गुणगण संपत्तरे. संवे० ॥ १६ ॥
आर्जव विण नवि शुद्ध छे, नवि धर्म आराधे अशुद्धरे ।
धर्म विना नवि मोक्ष छे, तेणें ऋजुभावी होय बुद्धरे ॥
तेणें ऋजुभावी होय बुध्धरे. संवे० ॥१७॥
द्रव्योपकरण देहनां. वलि भक्त पान शुचिभावरे ।
भावशौच जिम नवि चले, तिम कीजें तास बनावरे॥
तिम कीजें तास बनावरे. संवे० ॥ १८ ॥
पंचाश्रवथी विरमीयें, इंद्रिय निग्रहीजें पंचरे ।
चार कषाय त्रण दंड जे, तजीयें ते संजम संचरे ॥
तजीयें ते संजम संचरे. संवे० ॥ १९ ॥
बांधव धन इंद्रियसुख तणो, वलि भय विग्रहनो त्यागरे॥
अहंकार ममकारनो, जे करशे ते महाभागरे जे०संवे०२०
अविसंवाद नजोग जे, वळि तन मन वचन अमायरे।
सत्य चतुर्विध जिन कह्यो, बीजे दर्शन न कहायरे ॥
बीजे दर्शन न कहायरे. संवे ॥ २१ ॥
षड्विध बाहिर तप कह्युं अभ्यंतर षड्विध होयरे ॥

कर्म तपावे ते सही, पडिसोअ वृति पण जोयरे,
पडिसोअ वृत्ति पण जोयरे संवे० ॥ २२ ॥
दिव्य औदारिक काम जे, कृत कारित अनुमति भेदरे।
योग त्रिक तस वर्जवुं, ते ब्रह्म हरे सवि खेदरे।
तें ब्रह्म हरे सवि खेद रे. संवे० ॥ २३ ॥
अध्यात्मवेदी कहे मूर्च्छा ते परिग्रह भावरे ॥
धर्म अकिंचनने भण्यो, ते कारण भवजल नावरे ॥
ते कारण भवजल नावरे ॥ संवे० ॥ २४ ॥
पांच भेद छे खंतिना, उवयारवयार विवागरे ॥
वचन धर्म तिहां तीन छे, लौकिक दोइ अधिक सोभागरे॥
लौकिक दोइ अधिक सोभागरे. संवे० ॥ २५ ॥
अनुष्ठान ते चार छे, प्रीति भक्ति ने वचन असंगरे।
त्रण क्षमा छे दोयमां, अग्रिम दोयमां दोय चंगरे।
आग्रिम दोयमां दोय चंगरे. संवे० ॥ २६ ॥
वल्लभ स्त्री जननी तथा, तेहना कृत्यमां जुओ जुओ
राग रे।
पडिक्कमणादिक कृत्यमां, एम प्रीति भक्तिनो लागरे।

एम प्रीति भक्तिनो लागरे.　　संवे० ॥ २७ ॥
वचन ते आगम आसरी. सहेजें थायें असंगरे ।
चक्रभ्रमण जिम दंडथी, उत्तर तद्भावे चंगरे ।
उत्तर तद्भावे चंगरे.　　संवे० ॥ २८ ॥
विष गरल अनुष्ठान छे, तद्धेतु अमृत वलि होयरे ।
त्रिक तजवा दोय सेववा, ए पांच भेद पण जोयरे ।
ए पांच भेद पण जोयरे.　　संवे० ॥ २९ ॥
विषकिरिया ते जाणीयें, जे अशनादिक उद्देशरे ।
विष ततखिण मारे यथा, तेम एहज भव फललेशरे।
तेम एहज भव फल लेशरे.　　संवे० ॥ ३० ॥
परभवें इन्द्रादिक ऋद्धिनी. इच्छा करतां गरल थायरे।
ते कालांतर फळ दीए, मारे जीम हडकियो वायरे ।
मारे जीम हडकियो वायरे.　　संवे० ॥ ३१ ॥
लोक करे तिम जे करे, उठे बेसे समूर्च्छिम प्रायरे ।
विधि विवेक जाणे नहीं, ते अन्यानुष्ठान कहायरे ।
ते अन्यानुष्ठान कहायरे ॥　　संवे० ॥ ३२ ॥
तद्हेतु ते शुद्धरागथी, विधिशुद्ध अमृत ते होयरे ।

सकल विधान जे आचरे, ते दीसे विरला कोयरे ।
ते दीसे विरला कोयरे ॥ संवे० ॥ ३३ ॥
करण प्रीति आदर घणो, जिज्ञासा जाणनो संगरे ।
शुभ आगम निर्विघ्नता, ए शुद्ध क्रियानां लिंगरे ॥
ए शुद्ध क्रियानां लिंगरे ॥ संवे० ॥ ३४ ॥
द्रव्यलिंग अनंतां धर्यां, करी किरिया फळ नवि लद्धरे
शुद्धक्रिया तो संपजे, पुद्गल आवर्तने अद्धरे ॥
पुद्गल आवर्त्तने अद्धरे ॥ संवे० ॥ ३५ ॥
मारग अनुगति भाव जे, अपुनर्बंधता लद्धरे ॥
किरिया नवि उपसंपजे, पुद्गळ आवर्त्त नें अद्धरे ॥
पुद्गल आवर्त्तने अद्धरे ॥ संवे० ॥ ३६ ॥
अरिहंत सिद्ध तथा भला, आचारिज ने उवज्झायरे
साधु नाण दंसण चरित्त, तव नवपद मुगति उपायरे ।
तव नवपद मुगति उपायरे ॥ संवे० ॥ ३७ ॥
ए नवपद ध्यातां थकां, प्रगटे निज आतमरूपरे ।
आतम दरिसण जेणे कर्युं, तेणे मूंद्यो भवभयकूपरे ॥
तेणे मूंद्यो भवभयकूपरे ॥ संवे० ॥ ३८ ॥

क्षण अर्द्धे जे अघ टले; ते न टले भवनी कोडीरे ।
तपस्या करतां अति घणी, नहि ज्ञानतणी छे जोडीरे
नहि ज्ञानतणी छे जोडीरे ॥ संवे० ॥ ३९ ॥
आतमज्ञाने मगन जे, ते सवि पुद्गलनो खेलरे.
इन्द्रजाल करी लेखवे, न मिले तिहां देई मनमेलरे॥
न मिले तिहां देई मनमेलरे ॥ संवे० ॥ ४० ॥
जाण्यो ध्यायो आतमा, आवरणरहित होय सिद्धरे ।
आतमज्ञान ते दुःख हरे, एहिज शिवहेतु प्रसिद्धरे ॥
एहिज शिवहेतु प्रसिद्धरे संवे० ॥ ४१ ॥
चोथे खंडे सातमी, ढाल पूरण थई ते खासरे;
नवपद महिमा जे सुणे, ते पामे सुजस विलासरे ॥
ते पामे सुजस विलासरे ॥ संवे० ॥ ४२ ॥

॥ श्री श्रीपालमहाराजे करेली श्री सिद्धचक्र भगवंतनी आराधना ॥

हवे नरपति श्रीपाल ते, निज परिवार संयुत्त मेरे लाल;
आराधे सिद्धचक्रने, विधिसहित ग्रही सुमुहुत्त मेरे
लाल. मननो महोटो मोजमां ॥१॥

मयणसुंदरी त्यारे भणे, पूर्वे पूज्युं सिद्धचक्र। मेरे ला०
धन त्यारें थोडुं हतुं, हमणा तुं ऋद्धे शक्र, मे० म०॥२॥
धन मोटे छोटुं करे, धर्म उजमणुं तेह; मेरे लाल।
(पाठांतर) जे करणी धर्मनुं तेह; मे।
फळ पूरुं पामे नहीं, मम करजो तिहां संदेह—मे० म.३
विस्तारे नवपदतणी, तिण पूजा करो सुविवेक; मे०
धननो लाहो लीजीयें, राखी महोटी टेक. मं०म०॥४॥
मयणा वयणां मन धरी, गुरुभक्ति शक्ति अनुसार; मे.
अरिहंतादिक नवपद भलां, आराधे ते सार. मे०म०॥५॥
नव जिनघर नव पडिमा भली, नव जीर्णोद्धार कराव.मे.
नानाविध पूजा करी, जिन आराधन शुभभाव; मे. म.६
एम सिद्धतणी प्रतिमातणुं, पूजन त्रिहुं काल
प्रणाम, मेरेलाल.
तन्मय ध्याने सिद्धनुं, करे आराधन अभिराम। मे.म.७
आदर भगति ने वंदना, वेयावच्चादिक लग्ग० मे०
सुश्रूषा विधि साचवी, आराधे सूरि समग्ग. मे. म.॥८॥
अध्यापक भणतां प्रति, वसनाशन ठाण बनाय. मे०

द्विविध भक्ति करतो थको, आराधे नृप उवज्झाय.
||मे० म०|| ९ ||

नमन वंदन अभिगमनथी,वसही अशनादिकदान,मे.
करतो वेयावच्च घणुं, आराधे मुनिपद ठाण मे०
म० || १० ||

तीर्थयात्रा करी अति घणी, संघपूजा ने रहजत्त. मे०
आराधे दर्शनपद भलुं, शासन उन्नति दृढचित्त.
|| मे० म० ||११||

सिद्धांत लिखावी तेहने, पालन अर्चादिक हेत, मे०
नाण पदाराधन करे, सज्झाय उचित मन देत. ||म०
म० || १२ ||

व्रत नियमादिक पालतो, विरातिनी भक्ति करंत, मे.
आराधे चारित्र धर्मने, रागी यतिधर्म एकंत । मे. १३
तजी इच्छा इह परलोकनी, हुइ सघळे अप्रतिबद्ध; मे०
षट बाह्य अभ्यन्तर षट् करी, आराधे तवपद शुध्ध
मे. म. || १४ ||

उत्तम नवपद द्रव्यभावथी,शुभ भक्ति करी श्रीपाल। मे०
आराधे सिद्धचक्रने, नित पामे मंगळ माळ मे०म०१५

इम सिद्धचक्रनी सेवना; करे साडाचार ते वर्ष मे०
हवे उजमणा विधितणो, पूरे तप उपनो हर्ष। मे, म १६
चोथे खंडे पूरी थइ, ढाल नवमी चढते रंग ॥ मे. ॥
विनय सुजस सुख ते लहे, सिद्धचक्र थुणे जे चंग.
मे० ॥ १७ ॥

श्री मुनिचन्द्रसूरीश्वरजीए श्रीपाल महाराजा तथा मयणासुन्दरीने बतावेल श्री सिद्धचक्राराधननो विधि ॥

श्री मुनिचंद गुरे तिहां, आगमग्रंथ विलोइरे ॥ माखणनी पेरे उद्धरयो, सिद्धचक्रयंत्र जोइ रे ॥ चेतन चेतोरे चेतना, आणी चित्त मोझार रे ॥ १३ ॥

अरिहंतादिक नव पदे, ओँ ह्रीँ पद संयुक्त रे ॥ अवर मंत्राक्षर अभिनवा, लहीए गुरुगम तत्त रे ॥ चेतन० ॥ १४ ॥ सिद्धादिक पद चिहुं दिशे, मध्ये अरिहंत देव रे ॥ दरिसण नाण चरित्त ते, तप चिहुं विदिशे सेव रे ॥ चेतन० ॥१५॥ अष्ट कमलदल इणी परे, यंत्र स-

कल शिरताज रे ॥ निर्मल तन मन सेवतां, सारे वांछित काज रे ॥ चेतन० ॥ १६ ॥ आशो सुदि मांहे मांडीए, सातमथी तप एह रे ॥ नव आंबिल करी निर्मलां, आराधो गुणगेह रे ॥ चेतन० ॥ १७ ॥ विधिपूर्वक करी धोतीयां, जिन पूजो त्रण काल रे ॥ पूजा आठ प्रकारनी, कीजे थइ उजमाल रे ॥ चेतन० ॥ १८ ॥ निर्मल भूमि संथारीए, धरीए शील जगीश रे ॥ जपीए पद एकेकनी, नोकारवाली वीश रे ॥ चेतन० ॥ १९ ॥ आठे थोइए वांदीए, देव सदा त्रण वार रे ॥ पडिक्कमणां दोय कीजीए, गुरु वेयावच्च सार रे ॥ चेतन० ॥ २० ॥ काया वश करी राखीए, वचन विचारी बोल रे ॥ ध्यान धर्मनुं धारीए, मनसा कीजे अडोल रे ॥ चेतन० ॥ २१ ॥ पंचामृत करी एकठां, परिगल कीजे पखाल रे ॥ नवमे दिन सिद्धचक्रनी, कीजे भक्ति विशाल रे ॥ चेतन० ॥ २२ ॥ सुदि सातमथी इणी परे, चैत्री पूनम सीमरे ॥ ओली एह आराधीए, नव आंबिलनी नीम रे ॥ चेतन० ॥ २३ ॥ एम एकाशी आंबिले, ओली नव निरमाय रे ॥ साढे

च्चार संवत्सरे, ए तप पूरण थाय रे ॥ चेतन० ॥२४॥ उजमणुं पण कीजीए, शक्ति तणे अनुसार रे ॥ इह भव परभव सुख घणां, पामीजे भवपार रे ॥ चेतन० ॥ २५ ॥ आराधन फल एहनां, इह भवे आण अखंड रे ॥ रोग दोहग दुःख उपशमे, जिम घन पवन प्रचंड रे ॥ चेतन० ॥ २६ ॥ नमणजले सिद्धचक्रने, कुष्ठ अढारे जाय रे ॥ वाय चोराशी उपशमे, रुझे गुंबड घाय रे ॥ चेतन० ॥ २७ ॥ भीम भगंदर भय टले, जाय जलोदर दूर रे ॥ व्याधि विविध विषवेदना, ज्वर थाये चकचूर रे ॥ चेतन० ॥ २८ ॥ खास खयन खस चक्षुना, रोग मिटे सन्निपात रे ॥ चोर चरड डर डाकिणी, कोइ न करे उपघात रे ॥ चेतन० ॥ २९ ॥ हीक हरस ने हेडकी, नारां ने नासूर रे ॥ पाठां पीडा पेटनी, टले दुःख दंतना सूररे ॥ चेतन० ॥ ३० ॥ निर्धनिया धन संपजे, अपुत्र पुत्रीया होय रे ॥ विण केवली सिद्धयंत्रना, गुण न शके कही कोयरे॥ चेतन० ३१

श्रीमती मयणासुंदरीए अनुभवथी बतावेलुं श्री नव पदजी आराधननुं फल.

नव पद ध्यानेरे पाप पलाय, दुरित न चारो वे ग्रह वक्रनो जी ॥ ४ ॥ अरि करि सागर हरि ने व्याल ज्वलन जलोदर बंधन भय सवे जी ॥ जाय रे जपतां नव पद जाप, लहे रे संपत्ति इह भवे परभवे जी ॥५॥ बीजा रे खोजे कोण प्रमाण, अनभव जाग्यो मुज ए वातनो जी ॥ हुओ रे पूजानो अनुपम भाव, आज रे संध्याए जगतातनो जी ॥ ६ ॥ तदगतचित्त समयविधान, भावनी वृद्धि भवभय अति घणो जी ॥ विस्मय पुलक प्रमोद प्रधान, लक्षण ए छे अमृतकिया तणो जी ॥ ७ ॥ अमृतनो लेश लह्यो इक वार, बीजुं रे औषध करवुं नवि पडे जी ॥ अमृतकिया तिम लही एक वार, बीजां रे साधन विण शिव नवि अडे जी ॥ ॥ ८ ॥ एहवो रे पूजामां मुज भाव, आव्यो रे भाव्यो ध्यान सोहामणो जी ॥ हजीअ न माये मन आणंद,

खिण खिण होये पुलक निकारणो जी ॥ ९ ॥ फुरके रे वाम नयन उरोज, आज मिले छे वालिम माहरो जी ॥ बीजुं रे अमृतकिया सिद्धिरूप, तुरत फले छे तिहां नहीं आंतरोजी ॥ १० ॥

श्री अजितसेन मुनिनी श्रीश्रीपाळ महाराजे करेली स्तवना.

हुओ चारित्तजुत्तो समितिने गुत्तो, विश्वनो तारूजी.
श्रीपाल ते देखी सुगुण गवेषी मोहियो॥ वारूजी.
प्रणमे परिवारे भक्ति उदारे, विश्वनो तारूजी.
कहे तुझ गुण थुणियें पातक हणीयें आपणां ॥वा०॥ १.
उपशम असिधारें क्रोधने मारे ॥ विश्वनो तारूजी.
तुं मद्दववज्जे मदगिरि भज्जे मोटका, वारूजी.
मायाविषवेली मूल उखेडी ॥ विश्वनो तारूजी.
तें अज्जव कीलें सहज सलीलें सामटी ॥ वारूजी. २.
मूर्च्छांजल भरियो गहन गुहरियो ॥ विश्वनो तारूजी.
तें तरियों दरियो मुत्ति तरींशुं लोभनो ॥ वारूजी.

ए चार कषाया भवतरु पाया ॥ विश्वनो तारूजी.
वहु भेदे खेदे सहित निकंदी तुं जयो ॥ वारूजी. ३.
कंदर्प्पें दर्प्पें सवि सुर जीत्या, विश्वनो तारुजी.
ते तें इक धक्के विक्रम पक्के मोडीयो, वारूजी.
हरिनादें भाजे गज नवि गाजे, विश्वनो तारूजी.
अष्टापद आगल ते पण छागल सारिखो, वारूजी. ४
रति अरति निवारी भय पण भारी, विश्वनो तारूजी.
तें मन नवि धरिया तेहज डरिया तुजथी. वारुजी.
तें तजीय दुगंछा शी तुज वंछा, विश्वनो तारूजी.
तें पुग्गल अप्पा विहुं परक्खें थप्पा लक्षणें, वारूजी. ५.
परिसहनी फोजें तुं निज मोजे; विश्वनो तारुजी.
नवि भागो लागो रण जिम नागो एकलो; वारुजी ॥
उपसर्गने वर्गें तुं अपवर्गें; विश्वनो तारुजी ।
चालतां नडियो तुं नवि पडियो पाशमां. वा०॥ ६ ॥
दोय चोर उठंता विषम व्रजंता; विश्वनो तारुजी ।
धीरज पविदंडे तेज प्रचंडे ताडियो; वारुजी ।
नइधारण तरतां पार उतरतां; विश्वनो तारुजी ।
नवि मारग लेखा विगत विशेषा देखियें. वा०॥७॥

तिहां जोगनालिका समता नामे, विश्वनो तारूजी।
तें जोवा मांडि उतपथ छांडि उद्यमें; वारूजी ॥
तिहां दीठी दूरें आनंदपूरे, विश्वनो तारूजी।
उदासीनता शेरी नहि भव फेरी वक्र छे. वा० ॥८॥
ते तुं नवि मूके जोग न चूके, विश्वनो तारूजी।
बाहिर न अंतर तुंज निरंतर सत्य छे; वारूजी ॥
नय छे बहुरंगा तिहां न एकंगा, विश्वनो तारूजी।
तुमें नय पक्षकारी छो अधिकारी मुक्तिना वा० ॥९॥
तुमें अनुभव जोगी निजगुण भोगी, विश्वनो तारूजी।
तुमें धर्मसंन्यासी शुद्ध प्रकाशी तत्त्वना; वारूजी ॥
तुमें आतमदरसी उपशम वरसी, विश्वनो तारूजी।
सींचो गुण वाडी थाये जाडी पुण्यशुं. वारूजी ॥१०॥
अप्रमत्त प्रमत न द्विविध कहीजें, विश्वनो तारूजी।
जाणंग गुणठाणंग एकज भाव ते तें ग्रह्यो; वारूजी ॥
तुमें अगम अगोचर निश्चय संवर, विश्वनो तारूजी।
फरस्युं नवि तरस्युं चित्त तुम केरुं स्वप्नमां. वा० ॥११॥
तुज मुद्रा सुंदर सुगुण पुरंदर विश्वनो तारूजी।

सूचे अति अनुपम उपशम लीला चित्तनी; वारूजी ॥
जो दहन गहन होय अंतरचारी, विश्वनो तारूजी ।
तो किम नवपल्लव तरुअर दीसे सोहतो. वा० ॥१२॥
वैरागी त्यागी तुं सोभागी, विश्वनो तारूजी ।
तुज शुभमति जागी भावठ भागी मूलथी; वारूजी ॥
जग पूज्य तुं मारो पूज्य छे प्यारो, विश्वनो तारूजी ।
पहेलां पण नमियो हवे उपशमियो आदर्यो. वा० ॥१३॥
एम चोथे खंडे राग अखंडे संथुण्यो, विश्वनो तारूजी ।
जे मुनि श्रीपाले पंचमी ढालें ते कह्यो वारूजी ॥
जे नवपदमहिमा महिमायें मुनि गावशे, विश्वनो ता. ॥
ते विनय सुजस गुण कमला विमला पावशे. वा० ॥१४॥

श्रीपाल महाराजाने श्री सिद्धचक्र भगवान्ना आराधनथी मळेल साक्षात् फल.

सिद्धचक्र मुज एह, मनोरथ पूरशे हो लाल, मनोरथ०
एहिज मुज आधार, विघन सवि चूरशे हो लाल, वि०
थिर करी मन वच काय, रह्यो इक ध्यानशुं हो लाल रह्यो०
तन्मय तत्पर चित्त थयुं तस ज्ञानशुं हो लाल, थयुं०८

ततखिण सोहमवासि, देव ते आवियो हो लाल, देव०
विमळेसर मणिहार मनोहर लावियो हो लाल, मनो०
थइ घणो सुप्रसन्न कुंअर कंठे ठवे, होलाल, कुंअर०
तेह तणो करजोडी, महीमा वरणवे हो लाल, महीमा० ९
जेहवुं वंछे रूप ते थायें ततखिणें हो लाल, ते थाये०
ततखिण वांछित ठाम जाये गयणांगणें होलाल जाये०
आवे विण अभ्यास, कळा जे मन धरे होलाल, कळा०
विषना विषम विकार ते सघळा संहरे हो लाल, ते० १०
सिद्धचक्रनो सेवक, हुं छुं देवता होलाल, के हुं छुं०
केइ उद्धरिया धीर, सें एहने सेवता होलाल, से० एहने०
सिद्धचक्रनी भक्ति घणी मन धारजो होलाल, घणी०
मुजने कोइक काम पडे संभारजो हो लाल, पडये. ११

श्री सिद्धचक्र तप उद्यापननी ढाल

हवे राजा निज राजनी, लच्छितणे अनुसार,
उजमणुं तेह तपतणुं, मांडे अतिहि उदार. १
विस्तीरण जिनभुवन विरचीयें, पुण्य त्रिवेदिक पीठ,
चंद्र चंद्रिकारे धवल भुवनतळें, नवरंग चित्र विसीट्ठ. १

तप उजमणुं रे इणिपरें कीजीये, जिम विरचेरे श्रीपाल.
तप फळ वाधेरे ऊजमणे करी, जेम जळ पंकजनाल.
तप उजमणुंरे इणिपरे कीजीये. २
पंच वरणनारे शालि प्रमुख भला, मंत्र पवित्र करी धान्य,
सिद्धचक्रनीरे रचना तिहां करे, संपूरण शुभध्यान.
तप उजमणुंरे इणिपरें कीजीये. ३
अरिहंतादिक नवपदने विषे, श्रीफळगोळ ठवंत,
सामान्यें घृत खंड सहित सवे,नृप मन अधिकीरे खंत.
तप उजमणुं रे इणिपरे कीजीयें. ४
जिनपद धवलुंरे गोलक ठवे, शुचि कर्केतन अठ;
चोत्रीश हीरेरे सहित विराजतुं, गिरुओ सुगुण गरिठ.
तप उजमणुं रे इणिपरे कीजीये. ५
सिद्धपदे अड माणिक रातडां, वळि इगतीस प्रवाळ;
घुसृण विलपितगोलक तस ठवे,मूरति रागविशाळ त. ६
पण मणि पीत छत्रीश गोमेदकें, सूरिपदें ठवे गोळ;
नीलरयण पचवीस पाठकपदें,ठवे विपुल रंगरोलत.त. ७
रिष्टरतन सगवीस ते मुनिपदें पंच रायपट अंक;

सगसट्ठि इगवन्न सित्तरी पंचास ते,मुगता शेष निःशंक.
तप उजमणुं रे इणिपरें कीजीयें.
ते ते वरणेरे चीरादिक ठवे, नव पदतणेरे उद्देश,
बीजी पण सामग्री मोटकी, मांडे तेह नरेश. त० ९
बीजोरां खारेक दाडिम भलां, कोहोलां सरस नारंग,
पूगीफळ वळी कलश कंचतनणा, रतनपुंज अति चंग.
तप उजमणुंरे इणिपरे कीजीये. १०
जे जे ठामेरे जे ठववुं घटे, ते ते ठवेरे नरिंद,
ग्रह दिक्पालपदें फल फूलडां, धरे सवरण आनंद. त०११
गुरुविस्तारेरे उजमणुं करी, न्हवण उत्सव करे राय,
आठ प्रकारीरे जिन पूजा करे,मंगल अवसर थाय, त०१२
संघ तिवारेरे तिलक मालातणुं, मंगल नृपने करेइ.
श्रीजिन मानेरे संघे जे कर्युं,मंगल ते शिव देइ.त०१३
तप उजमणेरे वीर्य उल्लास जे, तेहज मुक्तिनिदान,
सर्व अभव्येरे तप पूरां कर्यां, पण नाव्युं प्रणिधान,
तप उजमणुंरे इणिपरे कीजीयें,
लघुकर्मानेरे किरिया फल दीये, सकल सुगुरु उवएस;

सर होये तिहां कूपखनन घटे, नहिं तो होइ किलेश;
तप उजमणुंरे इणिपरे कीजीये. १५
सफल हुवो सवि नृप श्रीपालने, द्रव्य भाव जस शुद्ध,
मत कोइ राचोरे काचो मत लेइ, साचो विहुं नयबुद्ध.
तप उजमणुंरे इणिपरे कीजीये. १६
चोथे खंडेरे दशमी ढाळ ए, पूरण हुइ सुप्रमाण,
श्रीजिन विनय सुजस भगति करी, पग पग होय
कल्याण, तप. १७

॥ कळश ॥

तपगच्छनंदन सुरतरु प्रगट्या, हीरविजय गुरु-रायाजी। अकबरशाहे जस उपदेशे,पडह अमारि वजाया जी ॥ १ हेम सूरि जिनशासनमुद्राए,हेम समान कहाया जी ॥ जाचो हीरो जे प्रभु होतां, शासन सोह चढाया जी ॥ २ ॥ तास पटे पूर्वाचल उदयो, दिनकर तुल्य प्रतापी जी ॥ गंगाजल निर्मल जस कीरति, सघले जगमांहि व्यापी जी ॥ ३ ॥ शाह सभा मांहे वाद करीने, जिनमत थिरता थापी जी ॥ बहु आदर

जस शाहे दीधो, बिरुद सवाइ आपी जी ॥ ४ ॥ श्री विजयदेव सूरि तस पटधर, उदया बहु गुणवंता जी ॥ जास नाम दश दिशि छे चावुं, जे महिमाए महंता जी ॥५॥ श्रीविजयप्रभ तस पटधारी, सूरि प्रतापे छाजे जी ॥ एह रासनी रचना कीधी, सुंदर तेहने राजे जी ॥ ६ ॥ सूरि हीरगुरुनी बहु कीरति, कीर्त्तिविजय उवझाया जी ॥ सीस तास श्रीविनयविजय वर, वाचक सुगुण सोहाया जी ॥७॥ विद्या विनय विवेक विचक्षण, लक्षण लक्षित देहा जी ॥ सोभागी गीतारथ सारथ संगत सखर सनेहा जी ॥ ८ ॥ संवत् सत्तर अडत्रीसा वरसे, रही रानेर चोमासे जी ॥ संघ तणा आग्रहथी मांड्यो, रास अधिक उलासे जी ॥ ९ ॥ सार्द्ध सप्त शत गाथा विरची, पहोता ते सुरलोके जी ॥ तेहना गुण गावे छे गोरी, मिली मिली थोके थोके जी ॥१०॥ तास विश्वासभाजन तस पूरण, प्रेम पवित्र कहाया जी ॥ श्रीनयविजयविबुधपयसेवक, सुजशविजय उवझाया जी ॥ ११ ॥ भाग थाकतो पूरण कीधो, तास वचन संकेते जी ॥ तिणे वळी समकितदृष्टि जे नर,

तेह तणे हित हेते जी ॥ १२ ॥ जे भावे ए भणशे गुणशे, तस घर मंगलमाला जी ॥ बंधुर सिंधुर सुंदर मंदिर, मणिमय झाकझमाला जी ॥ १३ ॥ देह सबल ससनेह परिच्छद, रंग अभंग रसाला जी ॥ अनुक्रमे तेह महोदय पदवी, लहेशे ज्ञान विशाला जी ॥१४॥

"संबोधप्रकरण"मां बतावेली श्री आचार्य गुणनी ४७ छत्रीशीओ.

१ ली छत्रीशी १४ प्रतिरूपादि, १० यतिधर्म, १२ भावना

२ जी ,, ५ इन्द्रियसंवर; ९ ब्रह्मगुप्ति; ४ कषायत्याग; ५ महाव्रत; ५ आचार, ५ समिति; ३ गुप्ति.

३ जी ,, १ विधिप्रातिपन्नचारित्र; गीतार्थवत्सल, सुशील; सेवितगुरुकुल अनुयत्तिपरदेश, कुल--जाति--रूपवान्, संघयणी--धृति--अनाशंसी--अविकत्थ, अमायी, स्थिर, परिपाटीगृहीतवान् जीतपरिषद्, जीतनिद्र, मध्यस्थ, देशज्ञ कालज्ञ भावज्ञ; आसन्नलब्धप्रातिभ; बहुदेशभाषज्ञ, पंचाचारयुक्त, सूत्रविधिज्ञ

अर्थविधिज्ञ, सूत्रार्थविधिज्ञ, उदाहरणज्ञ; हेतुज्ञ; उपनयज्ञ, नयज्ञ, ग्राहणाकुशल, स्वपर समयज्ञ गंभीरदीप्तिमान् शिव–सौम्य–गुणशतकलित प्रवचनोपदर्शक, ८ गणिसंपदा, ४ आचारादिएकेक, ४ विनयप्रवृत्ति.

४ थी „ ८ ज्ञान; ८ सम्य०; ८ चारित्र; १२ तप

५ मी „ ८ आचारादि; १० स्थितिकल्प, १२ तप; ६ आवश्यक

६ ट्ठी „ १८ पापस्थानत्याग; १२ प्रतिमाधर; ६ व्रतरक्षण

७ मी „ २२ परिषह; १४ जीवभेद रक्षा;

८ मी „ ४ सारणादिशिक्षा; ४ दानादि; १६ ध्यान, १२ भावना

९ मी „ ५ चारित्र; ५ व्रत; ५ समिति, ५ आचार; ५ सम्य० ५ सज्झाय; ५ व्यवहार; १ संवेग

१० मी „ ५ इन्द्रिय, ५ विषय. ५ प्रमाद, ५ आश्रव, ५ निद्रा, ५ भावना, ६ काययतना.

११ मी ,, ६ लेश्या, ६ आवश्यक, ६ द्रव्य; ६ वचन; ६ दोष, ६ भाषा.

१२ मी ,, ७ पिंडेषणा, ७ पानेषणा, ७ भय, ७ सुख-सत्त्व, ८ मद.

१३ मी ,, ८ दर्शनाचार, ८ ज्ञानाचार, ८ चारित्राचार, ८ गुरुगुण, ४ शुद्धि.

१४ मी ,, ८ योगांग, ८ सिद्धि, ८ दृष्टि, ८ कर्मविज्ञान, ४ द्रव्यादि अनुयोग.

१५ मी ,, ९ निदान, ९ ब्रह्मचर्य, ९ कल्पविहार, ९ तत्व,

१६ मी ,, १० उववाय, १० असंवर, १० संक्लेश, ६ हास्यादि.

१७ मी ,, १० सामाचारी १० समाधिस्थान १६ कषायत्याग.

१८ मी ,, १६ समाधिभेद १० अशनशुद्धि १० प्रतिसेवात्याग.

१९ मी छत्रीशी १० मुनिधर्म, १० विनय, १० वैयावच्च, ६ अकल्प त्याग.

२० मी ,, १० रुचि, २ शिक्षा, १२ अंग, १२ उपांग.

२१ मी ,, ११ गृहिप्रतिमा, १२ व्रत, १३ क्रियास्थान.

२२ मी ,, १० प्रायाश्चित, १२ उपयोग, १४ उपकरण.

२३ मी ,, १२ भावना, १२ तप, १२ मुनिप्रतिमा.

२४ मी ,, ८ अंडजादिजीव,१४ गुणस्थान, १४ प्रतिरूप.

२५ मी ,, ३ गारव, ३ शल्य, १५ संज्ञा, १५ योग.

२६ मी ,, १६ उद्गमदोष,१६ उत्पादनदोष,४ द्रव्याभिग्रह.

२७ मी ,, १६ वचन, १७ संयम, ३ विराधना.

२८ मी ,, १८ दीक्षा अयोग्यने दीक्षा न आपे,१८ पापवर्जन.

२९ मी ,, १८ ब्रह्मचर्य शीलांग १८ वसग्ग

३० मी ,, १९ काउस्सगदोष, १७ मरण.

३१ मी ,, १ मिथ्या, २० असमाधि, ५ मंडलिदोष, १० एषणादोष.

३२ मी ,, २१ शबल, १५ शिक्षास्थान.

३३ मी ,, १ मिथ्या०.३ वेद,६ हास्यादि,४ कषाय, १४ अभ्यंतर ग्रंथि, २२ परिषह.

३४ मी ,, २७ मुनिगुण ९ कोटिविशुध्धि

३५ मी „ २५ पडिलेहण ६ कायविराधनात्याग ५ वे-
दिकाशुध्धि.

३६ मी „ ३२ योगसंग्रह ४ भावे (आचरणा–भाषणा
वासना–परावर्त्तना)

३७मी „ २८ लब्धि, ८ प्रभावक.

३८ मी „ २ए पापश्रुतवर्जन, ७ विशोधिगुण.

३९ मी „ ६ अभ्यन्तरारि; ३० मोहस्थान

४० मी „ ३१ सिद्धगुण; ५ ज्ञान.

४१ मी „ दिव्यादि ४ उपसर्ग; ३२ जीवभेद.

४२ मी „ ४ विकथा; ३२ वंदनदोष.

४३ मी „ ३३ आशातना; ३ वीर्याचार.

४४ मी „ २५ व्रतभावना ११ अंगधारी

४५ मी „ १२ अंग; १० पयन्ना; ६ छेद; ४ मूळ; १ नंदी;
१ अनुयोग. २ अरागद्वेष

४६ मी „ १५ त्रिकरणपूर्वक पंचाचार, १० सामाचारी, ५
समिति, ५ स्वाध्याय, १ अप्रमत्त.

४७मी „ ८ प्रव० माता; ८ सुखदुःखशय्या; ३ सत्य;
६ भाषा; २ ध्यान; ७ विभंग; २ धर्म;

१ ॥ श्रीआचार्यगुणनी ३६ छत्रीशीओ ॥

१ प्रथम छत्रीशी ४ देशना; ४ कथा; ४ धर्म; ४ भावना; ४ सारणा; १६ चार ध्याननां प्रत्येकना चार चार भेद.

२ बीजी छत्रीशी ५ सम्यक्त्व ५ चारित्र; ५ व्रत; ५ व्यवहार; ५ आचार; ५ समिति; ५ स्वाध्याय; १ संवेग.

३ त्रीजी „ ५ इन्द्रिय; ५ विषय, ५ प्रमाद; ५ निद्रा; ५ आश्रव; ५ कुभावनात्याग; ६ कायजयणा.

४ थी „ ६ वचनदोष; ६ लेश्या; ६ आवश्यक ६ द्रव्य; ६ तर्क; ६ भाषा.

५ मी छत्रीशी ७ भय; ७ पिंडेषणा, ७ पानैषणा, ७ सुख, ८ मद.

६ ठी „ ८ ज्ञानाचार, ८ दर्शनाचार, ८ चारित्राचार; ८ वादिगुण, ४ बुद्धि

७ मी ,, ८ कर्म ८ योग, ८ सिद्धि; ८ योगदृष्टि, ४ अनुयोग.

८ मी ,, ९ तत्त्व, ९ ब्रह्मगुप्ति. ९ निदान, ९ नवकल्पविहार

९ मी ,, १० असंवर, १० संक्लेश, १० उपघात, ६ हास्यादि.

१० मी ,, १० सामाचारी, १० चित्तसमाधिस्थान, १६ कषायत्याग

११ मी ,, १० प्रतिसेवा, १० शोधिदोष, ४ विनयसमाधि, ४ श्रुतसमाधि, ४ तपसमाधि, ४ आचारसमाधि

१२ मी ,, १० वैयावच्च, १० विनय, १० धर्म ६ अकल्प,

१३ मी ,, १० रुचि, १२ अंग; १२ उपांग; २ शिक्षा.

१४ मी ,, ११ श्रावकप्रतिमा; १२ व्रत; १३ क्रियास्थान

१५ मी ,, १२ उपयोग; १० प्रायश्चित्तदान, १४ उपकरण

१६ मी ,, १२ तपभेद; १२ भिक्षुप्रतिमा, १२ भावना.

१७ मी ,, १४ गुणस्थान; १४ प्रतिरूपादिगुण, ८ सूक्ष्मजीवरक्षा

१८ मी ,, १५ योग; १५ संज्ञा; ३ गारव; ३ शल्य १६
१९ मी ,, उद्गमदोष; १६ उत्पाददोष; ४ अभिग्रह
२० मी ,, १६ वचनविधि; १७ संयम, ३ ज्ञानादि विराधना
२१ मी ,, १८ दीक्षा अयोग्य पुरुष भेद, १८ पापस्थान.
२२ मी ,, शीलांगसहस्र, १८ ब्रह्मचर्यभेद.
२३ मी ,, १९ कायोत्सर्गदोष १७ मरणभेद
२४ मी ,, २० असमाधिस्थान, १० एषणादोष; ५ ग्रासैषणादोष, १ मिथ्यात्व
२५ मी ,, २१ शवलदोष; १५ शिक्षास्थान
२६ मी ,, २२ परिषह, १४ अभ्यन्तरग्रन्थि
२७ मी ,, ५ वेदिकाशुद्धि, ६ दोष, २५ प्रतिलेखना
२८ मी ,, २७ साधुगुण, ९ कोटिविशुद्धग्राहक
२९ मी ,, २८ लब्धि ८ प्रभावकगुण
३० भी ,, २९ पापश्रुतत्याग, ७ शोधिगुण
३१ मी ,, ३० महामोहस्थान ६ अंतरंग शत्रु
३२ मी ,, ३१ सिद्धगुण ५ ज्ञान

३३ मी ,, ३२ जीवरक्षा, ४ उपसर्ग

३४ मी ,, ३२ दोषरहितवंदना, ४ विकथाराहित

३५ मी ,, ३३ आशातना ३ वीर्याचार

३६ मी ,, ४ आचारसंपद् ४ श्रुतसं० ४ शरीर सं० ४ वचनसं० ४ वाचनासं० ४ मतिसं० ४प्रयोगमतिसं० ४ संग्रह परिज्ञासंपद् ४ विनय आचार; श्रुत विक्षेप, तद्दोषप्रतिघात

आ छत्रीशीओमां अप्रशस्त भावथी निवृत्ति अने प्रशस्त भावमां प्रवृतिरूप गुणो समजवा.

—o—

॥ श्री उपाध्याय गुणनी २५ पच्चीशीओ ॥

—

१ पचीशी ११ अंग, १४ पूर्व,

२ ,, ११ अंग, १२ उपांग १ चरणसि०, १ करणसि०

३ ,, १४ ज्ञानाशातना वर्जन, ११ सुवर्णगुणाख्यान,

४ ,, १३ क्रियास्थानवर्जन, ६ द्रव्य, ६ काय.

५ ,, १४ गुणस्थान, ११ श्रावकप्रतिमा.

६ ,, २५ भावना [५ महाव्रतनी] भावे
७ ,, २५ अशुभ भावनावर्जन.
८ ,, ८ प्रकारी पूजा; १७ प्रकारीपूजानी प्ररूपणा;
१० ,, २३ इन्द्रियविषयवर्जन १ शुभ; १ अशुभ अग्रहण.
११ ,, २१ मिथ्या०भेद प्ररूपण ४ प्रकारना संघमां करे.
१२ ,, १४ जीवभेद; ८ भांगा; [ज्ञान–ग्रहण–पालन-नां] ३ अंगादिपूजा प्ररूपण
१३ ,, ८ अनंत; ८ पु० पुरावर्त्त; ९ निदान
१४ ,, ९ तत्व; ९ क्षेत्र; ७ नय
१५ ,, ४ निक्षेप,४ अनुयोग;४ धर्मकथा; ४ विकथा; ४ दानादि; ५ कारण;
१६ ,, ५ ज्ञान;५ व्यवहार; ५ सम्य०,५ प्रवचनांग, ५ प्रमाद,
१७ ,, १२ व्रत, १० रुचि, ३ विधिवाद,
१८ ,, ३ हिंसा, ३ अहिंसा, १९ काउसग्गदोष,
१९ ,, ८ आत्मा, ८ प्रव० माता, ८ मद, १ श्रद्धा

२० „ २१ श्रावकगुण, ४ वृत्तिप्रवर्त्तना

२१ „ ३ अतत्त्व, ३ तत्व,३ गारव,३ शल्य,६ लेश्या, ३ दंड, ४ कारण,

२२ „ २० स्थानक (जीनपदार्जव) ५ आचार,

२३ „ १२ अरि० गुण ८ सिध्धगुण ५ भक्तिनी एकता.

२४ „ १५ सिध्धभेद १० त्रिक

२५ „ १६ आगार ९ संसारी जीव

आ गुणोनी पच्चीशीओमां अप्रशंस्त भावथी निवृत्ति अने प्रशस्त भावमां प्रवृत्ति समजवी.

॥ श्री साधु गुणनी २७ सत्तावीशीओ ॥

सत्तावीशी—

१ ली, ६ व्रत, ६ कायरक्षा,५ इन्द्रिय, १ लोभनिग्रह,१ क्षमा, १ भावशुद्धि, १ पडिलेहणशुद्धि,१ संयम, ३ अकुशलयोगरोध,१ शीतादिसहन, १ मरणांत उपसर्गसहन.

२ जी उरग-गिरि-अग्नि-सागर-गगन-तरु-भ्रमर-मृग-धरणि-कमळ-सूर्य-पवन-विष-तिनिश-वायु-वंजुल-कर्णिकार-उत्पल- भ्रमर-उंदर-नट विगेरे.

३ जी २५ महाव्रतभावना, २ द्रव्य भाव भेदथी

४ थी २५ अशुभ भावना, २ राग द्वेष वडे

५ मी १० श्रमणधर्म, ९ ब्रह्मगुप्ति, ८ प्रव० माता

६ ठी ८ बे शुभध्यानना भेद, ३ ज्ञानादि, १६ मैत्र्यादि भाव० (दरेकना ४-४) भेद

७ मी ८ बे अशुभ ध्यान भेद, १६ कषाय, ३ ज्ञानादिविराधनत्याग

८ मी ७ पिंडेषणा, ७ पानैषणा, ७ सप्तसप्तिका, ६ अशुभभाषा

९ मी १० सत्यवचन, १७ संयम,

१० मी १२ तप, १४ काम, १ असंयमनिग्रह

११ मी १० एषणादोष, १६ उत्पादनदोष,१अगृद्धिभाव

१२ मी १६ उद्गमादिदोष, ५ आश्रव, ५ मंडलिदोष, १ मनसहित

१३ मी १५ शिक्षास्थान, १२ भिक्षुप्रतिमा

१४ मी ८ वसतिदोष, ८ प्रमाद, ८ मद, ३ गारव

१५ मी १० विनय, ५ वरण, असत्यमृषा १२

१६ मी ११ अंग, १२ उपांग, ४ अभिग्रह

१७ मी १० सामाचारी, आवश्यकादि १०, २ शिक्षा, ५ स्वाध्याय,

१८ मी १८ हजारशीलांग, ९ निदान

१९ मी ३ अशुभ लेश्या, १८ ब्रह्मचर्यभेद, ३ शल्य, ३ दंड.

२० मी ८ पडिलेहणा, ८ गोचरी, ८दृष्टि, ३ शुभलेश्या

२१ मी १२ भावना, ४ शय्या (शुभ), ७ भयत्याग, ४ दुखशय्यात्याग

२२ मी १० प्रत्याख्यान, ११ विगय, ६ आवश्यक

२३ मी ४ दिव्यादि (उपसर्ग), २२ परिषह, ए २ मां धीरता

२४ मी १ जिनकल्प, १ स्थ०कल्प, १० अचेलादि-कल्प, ५ चारित्र, १० प्रायश्चित्त

२५ मी २० असमाधि, ७ विभंगस्थान

२६ मी २१ शवल, ते करण—मतिथी २ ४ असंवर

२७ मी ५ स्थावर,१श्वान,१रासभ,१कुर्कट-१कर-१दीपक-
१सुवर्ण-१मुक्ता १हंस,१अंबुज,१पोत,१श्रीफळ,१वंस,
१शंख,१तुंवक, १चंदन,१अगुरु,१मेघ, १चंद्र, १वृषभ,
१गजेन्द्र, १मृर्गन्द्र. १सूर्य सरखा.

आ गुणोमां अप्रशस्तभावथी निवृत्ति अने प्रशस्तभावमां प्रवृत्ति स्वरूप गुणो समजवा.

मन्हजिणाणं सज्झाय.

मन्हजिणाणं आणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ॥
छव्विह—आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥

भावार्थ—हे भव्य श्रावक? श्रीजिनेश्वर भगवाननी आज्ञा मान्य, मिथ्यात्वनो त्याग करय, सम्यक्त्व धारण करय, छ प्रकारना आवश्यकमां प्रति दिवस उद्यमवंत था. १

पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ॥
सज्झायनमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥२॥

भावार्थ—पर्व दिवसने विषे पोसह व्रत करय, दान, शील, तप अने भावना, स्वाध्याय, नमस्कार अने परोपकार करय, तथा जयणा राख्य. २.

जिणपूआ जिणथुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ॥
ववहारस्स य सुद्धा, रहजत्ता तित्थजत्ताय ॥३॥

भावार्थ—जिनेश्वर भगवान्नी पूजा, जिनेश्वर भगवाननी स्तुति, गुरुनी स्तुति, अने साधर्मीने विषे वात्सल्य, व्यवहारनी शुद्धि, रथयात्रा अने तीर्थयात्रा. ३.

उवसम विवेगसंवर, भासासमिइ छजीवकरुणा य ॥
धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥४॥

भावार्थ—उपशम, विवेक संवर, भाषासमिति अने छकाय जीवनी दया, धार्मिक माणसनो सत्संग, इंद्रियोनुं दमन अने चारित्रना परिणाम राखवा (आ सर्व क्रियाओ करवी.) ४.

संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ॥
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥

भावार्थ—श्री संघ उपर बहुमान राखवुं, पुस्तक लखाववां अने तीर्थनी प्रभावना करवी. श्रावकनां आ कृत्यो छे, ते निरंतर सद्गुरुना उपदेशथी जाणवां. ५ इति.

इति श्रावक दिनकृत्य सज्झाय.

॥ अथ संथारा (पोरिसी) विधिसूत्र ॥

निसीहि निसीहि निसीहि, नमो खमासमणाणं गोयमाइणं महामुणीणं ॥

अर्थ—पाप व्यापारनो त्याग करीने [वार त्रण] म्होटा मुनि-ओ एवा गौतमस्वामी विगेरे क्षमाश्रमणोने नमस्कार थाओ.

अणुजाणह जिट्ठि (ठ्ठ) ज्जा ! अणुजाणह पर-मगुरु ! गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा ! बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइयसंथारए ठामि ॥ १ ॥

अर्थ—हे वृद्ध [वडिल] साधुओ ! आज्ञा आपो, म्होटा गुण-रूप रत्नोवडे सुशोभित छे शरीर जेनां एवा हे श्रेष्ठ गुरुओ ! आज्ञा आपो ! पोरिसि लगभग संपूर्ण थइ छे. हुं रात्रि संबंधी संथारो करुं छुं. १.

अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेणं वामपासेणं ॥
कुक्कुडिपायपसारण, अतरंत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥

संकोइए संडासा, उव्वट्टंते अ कायपडिलेहा ॥
दव्वाइउवओगं, ऊसासनिरुंभणालोए ॥ ३ ॥

अर्थ—संथारानी आज्ञा आपो ! [गुरु महाराज आज्ञा आपे एटले] हाथने ओशीकुं करीने डाबा पडखे, कुकडीनी पेठे आकाशमां पग प्रसारवाने असमर्थ छतो जमीनने पुंजे [पुंजीने त्यां पग राखे छे] अने ढींचणो संकोचीने सूवे अने पासुं फेरवतां शरीरनुं पडिलेहण करे. वळी [जागवुं होय त्यारे] द्रव्यादिनो उपयोग करे [तेम छतां निद्रा उडे नहि तो] श्वासोश्वास रुंधीने [निद्रा दूर करवाने जता आवता लोकोने] जुए छे. २—३

जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइरयणीए।
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

अर्थ—जो आ रात्रिने विषे मारा आ शरीरनुं मरण थाय तो आहार, उपकरण अने शरीर वगेरे सर्व त्रिविधे करीने सघळुं [मन, वचन अने कायावडे] वोसराव्युं छे. ४

चत्तारि मंगलं--अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥

अर्थ—चार मने मंगळरूप छे—अरिहंतो मांगलिक छे, सिद्धो मांगलिक छे, साधुओ मांगलिक छे अने केवळीए प्ररूपेल धर्म [श्रुत अने चारित्ररूप] मांगलिक छे. ५

चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो॥६

अर्थ—चार लोकने विषे उत्तम छे—अरिहंतो लोकमां उत्तम छे, सिद्धो लोकोमां उत्तम छे. साधुओ लोकमां उत्तम छे अने केवलिए प्ररुपेल धर्म लोकमां उत्तम छे. ६

चत्तारि सरणं पवज्जामि—अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥

अर्थ—हुं चारने शरण तरीके अंगीकार करुं छुं—अरिहंतोने शरण अंगीकार करुं छुं, सिद्धोने शरण अंगीकार करुं छुं. साधुओने शरण अंगीकार करुं छुं अने केवलिए प्ररूपेल धर्मने शरण अंगीकार करुं छुं. ७.

पाणाइवायमलिअं, चोरिक्कं मेहूणं दविणमुच्छं ।
कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥८॥

कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्नं रइअरइसमाउत्तं ।
परपरिवायं माया--मोसं मिच्छत्तसल्लं च ॥ ९ ॥

अर्थ—प्राणातिपात [हिंसा], मृषावाद, चोरी, मैथुन [स्त्री सेवन], द्रव्य [धन-धान्यादि पौद्गलिक वस्तु] नी मूर्च्छा, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग तेमज द्वेष, क्लेश, अभ्याख्यान [परने आळ देवुं], चाडी अने रति अरतिवडे युक्त, परपरिवाद. मायामृषावाद अने मिथ्यात्वशल्य. ८-९

वोसिरिसु इमाइं मुक्खमग्गसंसग्गविग्घभूआइं ।
दुग्गइनिबंधणाइं अट्ठारस पावठाणाइं ॥ १० ॥

अर्थ—मोक्षमार्गना गमनने विषे अंतराय करनारा अने माठी गतिना कारणभूत एवा ए पूर्वोक्त अढार पापस्थानोने [हे आत्मा!] तुं वोसराव [त्याग कर]. १०

एगोहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ।
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥११॥

अर्थ—हुं एकलो छुं, म्हारुं कोई नथी, हुं अन्य कोइनो नथी; ए प्रकारे अग्लान चित्तवाळो [सावधान चित्तवाळा] आत्माने ... आपे. ११

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलख्खणा ॥१२॥

अर्थ—शाश्वतो [सदा काळ–नित्य रहेनारो] अने ज्ञान दर्शन युक्त, एक मारो आत्मा छे, बाकीना संयोग लक्षणवाळा सर्व भावो माराथी बाह्य अर्थात् माराथी जूदा छे. १२

संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।
तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥१३॥

अर्थ—संयोग (धन कुटुंबादिक) छे मूळ कारण जेनुं एवी दुःखनी श्रेणी जीवे प्राप्त करी छे ते माटे संयोग संबंध में त्रिविधे (मन, वचन, कायाए) वोसिराव्यो छे. १३

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥१४॥

अर्थ—यावज्जीव सुधी अरिहंत म्हारा देव छे, साधुओ म्हारा गुरु छे, वीतराग देव प्ररुपेल तत्त्व (धर्म) मने मान्य छे, ए प्रकारे सम्यक्त्वने में ग्रहण कर्युं छे. १४

खमिअ खमाविअ, मइ खमिअ, सव्वह जीवनिकाय ।
सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥१५॥

अर्थ—सर्व जीव निकायोने खमावीने अने खमीने हुं (कहुं छुं के) मारा सर्व अपराधो खमो. सिद्धनी साक्षीपूर्वक हुं आलोचना करुं छुं, मारे कोइनी साथे वैरभाव नथी. १५

सव्वे जीवा कम्मवस, चउदहराज भमंत ।
ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत ॥१६॥

अर्थ—सर्व जीवो कर्मवशथी चौद. राजलोकने विषे भमे छे ते सर्वने में खमाव्या छे. मने पण तेओ खमे. १६

जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिय पावं ।
जं जं काएण कयं, मिछामि दुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥

अर्थ—जे जे पाप मनवडे बंधायु, जे जे पाप वचन वडे बोलायुं अने जे जे पाप कायावडे करायुं छे ते मारुं (सर्व) पाप फोगट थाओ अर्थात् ते पापनो मिच्छामि दुकडं दउं छुं. १७

॥ देव वांदवानी विधि. ॥

———:०:———

प्रथम खमासमण दइ, इरियावही पडिक्कमी लोगस्स कही, उत्तरासण नांखीने खमा० इच्छा० चै-

त्यवंदन करुं ? इहां कही चैत्यवंदन करी नमुत्थुणं अने जयवीयराय [आभवमखंडा सुधी] कही, खमा० दइ चैत्यवंदन करी, नमुत्थुणं कही ऊभा थइ अरिहंत चे० अन्नत्थ० १ नवकार काउ० पारी नमोऽर्ह० पहेली थोय कहेवी. लोगस्स० सव्वलोये० १ नवकारकाउ० बीजी थोय. पुख्खरवरदी० सुअस्स० १ नवकारकाउ० त्रीजी थोय. सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्च० १ नवकारकाउ० पारी नमोऽर्हत्० चोथी थोय कही बेसीने नमुत्थुणं कहीने बीजी वार पूर्वनी माफक चार थोइओ कहेवी; पछी नमुत्थुणं जावंतिचे० खमा० जावंतकेवि० नमोऽर्हत्० कही स्तवन (उवसग्गहरं अथवा बीजुं) कहेवुं अने जयवीयराय अरधा (आ भवमखंडा सुधी) कहेवा. पछी खमा० दइ चैत्यवंदन करी, नमुत्थुणं कहीने जयवीयराय संपूर्ण कहेवा. त्यारपछी विधि करतां अविधि थइ होय तेनो मिच्छामि दुक्कडं दइने. प्रभातना देववंदनमां छेवटे सज्झाय कहेवी [बपोरे तथा सांजे न कहेवी] ते स-

ज्झायने माटे एक खमा० दइ इच्छा० सज्झाय करुं इछं कही नवकार गणी उभडक पगे वेसी एक जण मन्हजिणाणंनी सज्झाय कहे. (त्यारपछी नवकार न गणवो)

